प्रेममें भगवान

[टॉल्सटॉय की सत्रह शिक्षाप्रद कहानियाँ]

अनुवादक

जैनेन्द्रकुमार

●

१९४९

सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तंड उपाध्याय, मंत्री,
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

चौथी बार : १९४९
दाम
दो रुपये

मुद्रक
महादेव एन० जोशी
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

निवेदन

टॉल्स्टॉयकी ये कहानियां अपने समय, समाज या भूमिके बारेमें जानकारी पहुंचानेके लिए उतनी नहीं, जितनी नैतिक समाधानके विचारसे लिखी गई हैं। अधिकांश मुझे ऐसा ही प्रतीत हुआ है। इससे विषयको सुलभ रखनेके खयालसे अनुवादमें वैसे ब्यौरोंको कुछ देशी कर दिया गया और थोडी स्वतंत्रता बरत ली गई है।

दरियागंज, दिल्ली
२ फरवरी १९४०

जैनेन्द्रकुमार

विषय-सूची

प्रेममें भगवान

: १ :

प्रेममें भगवान

एक नगरमे मार्टिन नामका एक मोची रहा करता था। नीचेके तल्लेमे एक तग कोठरी उसकी थी। वहासे खिडकीकी राह सडक साफ नजर आती जहा आने-जानेवालोके चेहरे तो नही, पर पैर दिखाई दिया करते थे। मार्टिन लोगोके जूतोसे ही उनको पहचाननेका आदी हो गया था। क्योकि वहा एक मुद्दतसे रहता था और बहुतेरे लोगोको जानता था। पास-पडोसमे शायद कोई जोडा जता होगा जो उसके हाथो न निकला हो। सो खिडकीकी राह वह अपना ही काम देखा करता। कुछ जोडियोमे उसने तला बैठाया था तो कुछमे और मरम्मत की थी। कुछ एसे भी होते कि पूरेके पूरे उसीके बनाये हुए। कामकी मार्टिनको कमी नही थी, क्योकि काम वह सचाईसे करता था। माल अच्छा लगाता और दाम भी वाजिबसे ज्यादा नही लेता था। बडी बात यह थी कि वह वचनका पक्का था। जिस दिनको माग होती अगर उस दिन पूरा करके दे सकता तो वह काम ले लेता था, नही तो साफ कह देता था। वादे करके झुठलाता नही था। इसलिए आस-पास सरनाम था और कामकी उसके पास कभी कमी नही होती थी।

यो आदमी वह नेक था और नीतिकी राह उसने कभी नही छोडी। और उमर ज्यादा होनेपर तो वह और भी आत्माकी भलाईकी और ईश्वरकी बाते सोचने लग गया था। अपना निजी काम शुरू करनेका वक्त आनेसे पहले ही, यानी जब वह दूसरे के यहा मजूरीपर काम किया करता था, तभी उसकी

स्त्रीका देहात हो गया था। पीछे एक तीन बरसका बच्चा वह छोड गई थी। बालक तो और भी हुए थे, पर छुटपनमे ही सब जाते रहे थे। पहले तो मार्टिनने सोचा कि बच्चेको देहातमे बहनके यहां भेज दू । पर, फिर बालकको पाससे हटानेको उसका जी नही हुआ। 'वहा दूसरेके घर बालकको जाने क्या भुगतना पडे, क्या नही। इससे चलो अपने पास ही जो रहने दू।'

सो मार्टिन नौकरी छोड, घर किराए ले, बच्चेके साथ वही रहने और अपना काम करने लगा । पर बालकका सुख उसकी किस्मतमे न लिखा था। बालक बारह बरसका हो चला था और उम्मीद बधने लगी थी कि बापके काममे अब कुछ सहाई होने लगेगा कि तभी आया बुखार, हफ्ते भर रहा होगा, और बालक उसमे चल बसा । मार्टिनने बच्चेको दफनाया, लेकिन मनमे उसके ऐसा दु ख समा गया, ऐसा दुःख कि ईश्वरतकको कोसनेको जी होता था। दुखमें बार-बार वह कहता कि हे भगवान, मुझे भी उठा लो। तुम कैसे हो कि मेरा इकलौता, नन्ही-सी उमरका, जो मेरे प्यारका बच्चा था, उसे तो तुमने उठा लिया और मुझ बूढेको छोड दिया ! सो इस करनीपर जैसे उसने हठ ठानकर परमात्माको अपनेसे बिसार दिया।

एक दिन उसीके गावके एक बुजुर्ग, जो घर छोड पिछले आठ बरससे तीरथ-तीरथ घूम रहे थे, यात्राकी राहमे मार्टिनके पास आये। मार्टिनने अपने दिलका घाव उनके आगे खोल दिया और सब दुख कह सुनाया । बोला—"अब भाई, मुझे जीनेकी भी चाह नही रह गई है । बस भगवान करे मै जल्दी यहासे उठ जाऊँ। तुम्ही कहो जगमे अब कौन आस मुझे बाकी है ?"

उन वृद्ध यात्रीने कहा—"ऐसी बात मुहसे नही कहते, मार्टिन। ईश्वरकी लीला भला हम क्या जाने। कोई हमारा चाहा यहा थोडे ही होता है। ईश्वर-की मर्जी ही चलती है। उनकी एसी ही मर्जी है कि बच्चा चला जाय और तुम जीओ, तो इसीमे कोई भलाई होगी । और जो निराशाकी बात करते हो सो वजह यह है कि तुम बस अपने ही सुखके लिए रहना चाहते हो।"

मार्टिनने पूछा—"नही तो भला किसके लिए रहना चाहिए ?"

वृद्धने कहा—"ईश्वरके लिए, मार्टिन । उसने हमे जीवन दिया । सो

उन्हीके लिए हमे रहना चाहिए । उसके निमित्त रहना सीख जाओ, कि फिर कोई क्लेश भी न रहे। फिर सब सहल हो जाय ।"

सुनकर मार्टिन कुछ देर चुप रहा। फिर बोला—"पर ईश्वरके लिए रहना कैसे होगा ?"

वृद्धने उत्तर दिया—"सत लोगोके चरितसे पता लग सकता है कि ईश्वरके लिए जीनेका भाव क्या है। अच्छा तुम बाच तो सकते हो न। तो इंजीलकी एक पोथी ले आना । उसे पढना । उसमे सब लिखा है। उससे पता लग जायगा कि ईश्वरकी मर्जीके अनुसार रहना कैसा होता है।"

ये बचन मार्टिनके मनमें बस गये। उसी दिन वह गया और बड़े छापेकी इंजीलकी पोथी ले आया और पढना शुरू कर दिया ।

पहले विचार था कि छुट्टीके दिन सातवे रोज पढा करूँगा। लेकिन एक बेर पढना शुरू किया कि उसका मन बडा हलका मालूम हुआ। सो वह रोज-रोज पढने लगा । कभी तो पढनेमे इतना दत्तचित्त हो जाता कि लालटेनकी बत्ती धीमी पडते-पडते बुझतक जाती, तब कही पोथी हाथसे छूटती । देर रात-तक पढता रहता । और जितना पढता उसे साफ दीखता कि ईश्वरकी आदमीसे क्या चाहना है और ईश्वरमे होकर आदमीको कैसे जीवन बिताना चाहिए । उसका दिल खूब हलका हो गया था। पहले रातको जब सोने लेटता तो मनपर बहुत बोझ मालूम हुआ करता था। बच्चेकी याद करके वह बडा शोक मानता था। लेकिन अब वह बार-बार हलके चित्तसे यही कहता कि हे भगवान, तू ही है। तू ही जगदाधार है । तेरा ही चाहा हो।

उस समयसे मार्टिनकी सारी जिन्दगी बदल गई । पहले चाय पिया करता था और कभी-कभी दारू भी ले लेता था। पहले कभी ऐसा भी हो गया है कि किसी साथीके साथ जरा ज्यादा चढा आये और आकर बाही-तबाही बकने लगे और खरी-खोटी कहने लगे । लेकिन अब यह सब बात जाती रही। जीवनमें उसके अब शाति आ गई और आनद रहने लगा । सबेरे वह अपने कामपर बैठ जाता और दिनभर काम करनेके बाद सांझ हुई कि दिया लिया और इंजीलकी पोथी खोल बाचने बैठ गया । जितना पढता उतनी ही उसकी बुद्धि साफ होती

और मन खुलकर प्रसन्न होता हुआ मालूम होता।

एक बार ऐसा हुआ कि इजोलकी पुस्तक लेकर मार्टिन रात बहुत देरतक बैठा रह गया। सत ल्यूककी कथनी वह पढ रहा था। छठे अध्यायमे उसने बांचा—

"जो तुझे एक गालपर मारे, तू दूसरा भी उसके आगे कर दे। जो कोट उतारना चाहे, कुरता भी उसे सौप दे। जो मागे सबको दे। और जो ले जाय उससे तू वापिस कुछ न माग। और जो तू चाहता है कि लोग तुझसे ऐसे बरते, वैसे ही तू उनसे बरत।"

फिर वह प्रसग उसने पढा जहा प्रभु मसीह कहते है—

"तुम 'प्रभु', 'प्रभु' तो मुझे कहते हो, पर मेरा कहा करते नही हो। जो मेरे पास आता है, मेरा कहा सुनता है और सुना करता है, वह उस आदमीके समान है जिसने गहरे खोद अपने मकानकी नीव चट्टानपर जमाई है। बाढ आई और लहरे टकरा-टकराकर हार गई, पर मकान नही हिला। क्योकि नीव चट्टानपर खडी थी। पर जो सुनता है और करता नही, वह उस आदमीके समान है जिसने धरतीपे मकान खडा किया, पर बुनियाद न दी। आई पानीकी बाढ, और टकराना था कि मकान ढह पडा। उसका सब डूब गया, कुछ बाकी न रहा।"

मार्टिनने ये वचन पढे तो मन भीतरसे गद्‌गद हो गया। आखसे ऐनक उतार उसने पोथीपर रख दी और माथेपर अगुली देकर उस कथनपर वह गहरा सोच करने लगा। उन वचनोसे वह अपने जीवनकी तोल-परख कर रहा था।

अपनेसे ही वह पूछने लगा कि अब मेरा मकान चट्टानपर है कि रेतपर खड़ा है। चट्टानपर है तो ठीक है। पर यहा इकलेमे बैठे तो सब सही-दुरुस्त मालूम होता है। जैसे ईश्वरकी मर्जीके मुताबिक ही मै चल रहा हूँ। लेकिन आख झपकी कि मनमें विकार हो आता है। तो भी जतन मुझे छोड़ना नही चाहिए, जतनमें ही आनद है। हे भगवान, तुम्ही मालिक हो।

यह सब विचारकर वह फिर सोनेको हुआ। पर पोथी उससे नही छूटती थी। सो फिर वह सातवा अध्याय बाचने लगा। वहा जहा कि सौ-बरसका

बूढा प्रभुके पास आता है और विधवाके पुत्रका जिक्र है और संत जॉनके शिष्य लोग मिलते है। पढते-पढते फिर वह जगह आई जहा एक धनी-मानी ईशु मसीह-को अपने घर भोजन देते है । फिर वह स्थल कि जहां एक पापिनी आसुओंसे उनके चरण पखारती और केशोंसे उन्हे पोछती है। उस समय प्रभु उसका पक्ष लेते और उसे आशीष और आशा देते है। पुस्तकका चवालीसवा बध आया और मार्टिनने पढा—

"तब प्रभु उस स्त्रीकी ओर होकर साइमनसे बोले—'इस स्त्रीको देखो। मै तुम्हारे घर अतिथि हू। पर तुमने मेरे परोपर पानी नही दिया। और यह है कि अपने आसुओंसे इसने मेरे पैर धोये है और केशोसे उन्हे पोछा है । तुम मुझसे बचे हो और जबसे मै आया हूँ, यह मेरे पैरोको ही चूमती रही है। तुमने मेरे सिरपर भी तेल नही दिया, और यह है कि मेरे पाव स्नेहसे भिगोती रही है—"

ये शब्द पढते-पढते मार्टिन सोचने लगा—"उसने पैरोपर पानी नही दिया, उन्ह छूनेसे बचा । सिरको तेल नहीं दिया . " मार्टिनने ऐनक उतार वही पोथीपर रख दी और सोचमे डूब गया ।

"वह आदमी मेरी तरहका रहा होगा। अपनी-ही-अपनी सोचता होगा। कैसे खुद अच्छा खा लेना और आरामसे रह लेना। बस, अपना ही सोच, मेहमान-की चिन्ता नहीं । कुल अपना-ही-अपना उसे खयाल था । मेहमानकी तनिक परवाह नही थी । और कौन मेहमान ? स्वय भगवान । जो कही वह मेरे यहा पधार जाय तो क्या मै भी वैसा ही करूँ ?"

उस समय दोनो बाह चौकीपर डाल उसीपर मार्टिनने अपना सिर टेक दिया। ऐसे बैठे-बैठे जाने कब उसे नीद आ गई।

इतनेमें जैसे बिलकुल कानके पाससे बडे सूक्ष्म सुरमे किसीने कहा—"मार्टिन ! "

मार्टिन मानो नीदसे चौककर उठा । बोला—"कौन है ?" मुडकर दरवाजे के बाहर झाका, पर कोई न था । उसने फिर पुकारा । पुकारके जवाबमें उसे साफ-साफ सुनाई दिया। "मार्टिन, कल गलीपर ध्यान रखना। मै आऊगा।"

अब मार्टिन उठा । खड़ा हो गया, आखें मली। समझ नही सका कि उसने

ये शब्द जागतमे सुने थे, कि सपनेमे। फिर उसने दिया बुझा दिया और सो गया।

अगले दिन तडका फूटनेसे पहले ही वह उठा और भजन-प्रार्थना कर, आग जला, अगीठीपर खाना चढा दिया। फिर अपनी खिडकीके तले आकर काममे जुट गया। काम करते-करते रातकी बात सोचने लगा। कभी तो उसे मालूम होता कि वह सब सपना था। कभी जान पडता कि सचमुचकी ही आवाज उसने सुनी थी। सोचा कि ऐसी बाते पहले भी तो घटती रही है।

खिड़कीके तले बैठा, रह-रहकर, वह सडकपर देखने लगता था। कामसे ज्यादा उसे किसीके आनेका ध्यान था। अनपहचाने जूते गलीपर चलते देखता तो झाक उठता कि उनका पहननेवाला जाने कौन है। इस तरह एक झल्लीवाला नये चमचमाते जूतोमे उधरको निकला। फिर एक कहार गया। इतनेमे एक बूढा सिपाही, जिसने पुराने राजाका राज देखा था, उस गलीमे आया। हाथमें उसके फावडा था। जूतोंसे मार्टिन उसे पहचान गया। पुरानी चालके घिसे-से जूते थे। पहननेवालेका नाम स्टेपान था। एक पडोसी लालाजीके घरमे वह रहता था और उनका कुछ काम-धाम निबाह दिया करता था—यही झाड़ू-सफाई वगैरह कर देना। दया-भावसे लालाने उसे रक्खा हुआ था। वही स्टेपान गलीमे आकर झाड़ूसे बरफ हटाने लग गया था। रात बरफ खूब पडी थी और जमा हो गई थी। मार्टिनने उसे एक निगाह देखा। कुछ देर देखते रहकर फिर नीचे सिर डाल अपने काममें लग गया।

मन ही मन वह हँस पडा। बोला—"मै भी उमरसे बुढागया हू, नही तो क्या। देखो कि मैं भी कैसा बहकने लगा हू। आया तो स्टेपान है गली साफ करने, और मुझे सूझा कि मसीह प्रभु ही आ गए है। है न बात कि मैं सठिया गया हूं।"

लेकिन कुछ टाके भरे होगे कि खिडकीकी राह वह फिर बाहर देख उठा। देखा कि फावडा जरा टेककर दीवारका सहारा ले स्टेपान या तो सुस्ता रहा है या फिर गरम होनेके लिए सास ले रहा है। स्टेपानकी उमर काफी थी। कमर झुक चली थी और देहमे कस बहुत नही रहा था। बरफ हटानेके लायक भी दम नही था। वह हाफ-सा रहा था।

मार्टिनने सोचा—"बुलाकर मै उसे चायको पूछू तो कैसा ! चाय बनी हुई है ही।"

सो, आरीको वही जूतेमें उडसा छोड, खडे होकर झटपट चायकी सब तैयारी कर डालने लगा । फिर खिडकीके पास जाकर थपथपाकर स्टेपानको इशारा किया । स्टेपान सुनकर खिड़कीपर आया । मार्टिनने उसे अदर बुलाया और आगे बढकर दरवाजा खोल दिया । बोला—"आओ, थोडा गरमा न लो। तुम्हें ठड लग रही मालूम होती है ।"

स्टेपान बोला—"भगवान तुम्हारा भला करे। हा, मेरी देहमे सरदी बैठ गई है और जोड दर्द करते है।"

यह कहकर स्टेपान अदर आया और देहकी बरफ द्वारके बाहर ही झाड दी। फिर यह सोचकर कि कही फर्शपर निशान न पड़े वह बाहर ही पैर पोछने लगा। इसमे देह उसकी मुश्किलसे संभली रह सकी और गिरते-गिरते बचा।

मार्टिन बोला—"रहने दो, रहने भी दो । फर्श झड़ जायगा । सफाई तो रोज होती ही है। कोई बात नही भाई आ जाओ। बैठो, लो चाय पियो।"

दो गिलास भरकर एक मार्टिनने स्टेपानके आगे सरका दिया और रकाबीमें डालकर दूसरेमेसे खुद पीने लगा।

स्टेपानने अपना गिलास खत्म कर औंधा रख दिया । वह चायके लिए बहुत धन्यवाद देने लगा। लेकिन प्रकट था कि और भी एक गिलास मिल जाय तो बुरी बात न होगी।

मार्टिनने गिलास भरते हुए कहा—"एक गिलास और लो, अरे, लो भी।"

कहकर साथ ही उसने अपना भी गिलास भर लिया । पर पीता जाता था और रह-रहकर मार्टिन सडककी तरफ देखता जाता था।

स्टेपानने पूछा—"क्या किसीकी बाट जोहते हो ?"

"बाट ? भई, क्या बताऊं। कहते लाज आती है । सच पूछो तो इतजार तो नही है, पर रात एक आवाज सुनी थी जो मनसे दूर नही होती है। वह सच-मुच कोई था, या सपना था, कह नही सकता । कल रातकी बात है कि मै धर्म-पुस्तक इंजील बाच रहा था। उसमें प्रभु ईसाका वर्णन है न कि कैसे उन्होंने

दुख उठाए और किस भांति वह इस धरतीपर प्रेम और भक्तीसे रहे। सो तुमने भी जरूर सुना होगा।"

स्टेपानने कहा—"सुना तो मैंने है। पर मै अपढ आदमी हू और समझता बूझता कम हू।"

"तो सुनो भाई। उनके जीवनके विषयकी बात है। मै पढ रहा था। पढते-पढते वह प्रसग आया जहा मसीह एक धनवान आदमीके यहा जाते है। वह धनी आदमी मनसे उनकी आवभगत नही करता। अब तुम्हे मै क्या कहू। मै सोचने लगा कि उस आदमीने उनका पूरा आदर कैसे नही किया। मैने सोचा कि कही मै होता तो जाने क्या न करता। पर देखो कि उस आदमी ने मामूली भी कुछ नही किया। इसी तरहकी बात सोचते-सोचते मुझे नीद आ गई। फिर एकाएक जो जागकर उठा तो ऐसा लगा कि कोई मुझे नाम लेकर धीमेसे कह रहा है कि देखना, इतजारमे रहना, मै कल आऊगा। ऐसा दो बार हुआ। सच कहूँ तो भाई, वह बात मेरे मनमे बैठ गई। यो तो मुझे खुद शरम आ रही है, पर क्या बताऊ, मनमे आस लगी ही है कि खुद भगवान कही न आते हो!"

स्टेपान सुनकर चुप रहा, और सिर हिला दिया। फिर गिलासकी चाय खतमकर गिलासको अलग रख दिया। लेकिन मार्टिनने सीधा कर फिर उसे चायसे भर दिया।

"लो, लो भाई। पीओ भी। हा, मै सोच रहा था कि इस पृथ्वीपर मसीह प्रभु कैसे रहते थे। नफरत किसीसे नही करते थे और मामूली-से-मामूली लोगोके बीच मिल-जुलकर रहते थे। साथी उनके साधारण जन थे और हम जैसे अधम और पापी लोगोको उन्होने शरण देकर उठाया था। उन्होने कहा कि जो तनेगा उसका सिर नीचा होगा। सो जो झकेगा वही उठेगा। उन्होने कहा, तुम मुझे बडा कहते हो। और मै हू कि तुम्हारे पैर धोऊगा। कहा, कि सबसे आगे वही गिना जायगा जो सबसे पीछे रहकर सेवा करेगा। क्योकि जो दीन है और दयावान है और प्रीत रखते है, वही धनी है।"

स्टेपान सुनते-सुनते अपनी चाय भूल गया। बुड्ढा आदमी था और जल्दी उसे आसू आ जाते थे। सो वहा बैठे-बैठे भगवद-बानी सुनकर उसके दोनों गालो-

पर आसू ढुलकने लगे।

मार्टिनने कहा—"लो, लो। बस एक और।"

लेकिन स्टेपानने माफी मागी, धन्यवाद दिया, और गिलासको अलगकर उठ खडा हुआ।

"तुम्हारा मुझपर बडा अहसान हुआ, मार्टिन। तुमने मेरे तन और मन दोनोको खुराक दी और सुख पहुचाया है।"

मार्टिन बोला—"कब तो अतिथि मिलते है। भाई, फिर भी इधर आया करना। मुझे बडी खुशी होगी।"

स्टेपान चला गया। उसके बाद बाकी बची चाय मार्टिनने निबटाई फैला सामान सगवाया, और कामपर आ बैठा।

बैठकर वही आरीसे जूतेके तलेकी सीवन ठीक करने लगा। तला सीता जाता था और खिडकीसे बाहर देखता जाता था। ईशूकी तस्वीर उसके मनमे थी और उन्हीकी करनी और कथनीकी यादसे उसका अत करण भरा था।

इतनेमे दो सिपाही उधरसे निकले। एक सरकारी जोड़ी पहने था। दूसरेके पैरोमे देसी जूते थे। फिर पडोसके एक मकान-मालिक निकले जिनका बढिया कामदार जोडा था। फिर एक झाबा लिए नानबाई उधरसे गुजरा। ऐसे बहुतसे लोग चलते हुए गये। बाद एक स्त्री आई जिसके पैरोमे देहाती जूतिया थी। वह खिडकीके सामनेसे तो गुजरी, लेकिन आगे दीवारके पास जाते-जाते रुक गई। मार्टिनने खिडकीमेसे उसे देखा। वह इधरके लिए अनजान मालूम होती थी। कपडे मामूली थे और गोदमे बच्चा था। दीवारके पास वह हवाको पीठ देकर खडी हो गई थी। बच्चेको हवाकी शीतसे बचाने को वह उसे बार-बार ढकनेका जतन करने लगी। लेकिन उढानेको कपडा उसके पास नहीके बराबर था। इन जाडेके दिनोमे गरमीके-से कपडे वह पहने थी। ये भी झीने और फटे थे। खिडकीमेसे मार्टिनने बच्चेका रोना सुना। स्त्री उसे मना-मनाकर चुप करना चाहती थी और वह चुप नही होता था। मार्टिन उठा और द्वारसे बाहर जाकर बोला—"सुनना माई। इधर सुनो।"

स्त्री सुनकर मुडी।

"वहां सर्दी खुलेमे बच्चेको लेकर क्यों खडी हो ? अदर आ जाओ, यहा बच्चेको ठीक तरह उढा भी लेना । इधर आओ, इधर।"

एक बुड्ढा आदमी, नाकपर ऐनक चढाए इस तरह उसे बुल रहा है, यह देखकर स्त्रीको अचरज हुआ । लेकिन वह चलती आई।

साथ-साथ दोनो अदर आये और कमरेमे पहुचे । वहा मार्टिनने हाथसे बताकर कहा—"वह खाट है, वहा बैठ जाओ । आग है ही, जरा गरमा लो और बच्चेको भी दूध पिला लो।"

"दूध मेरे कहा है । सबेरेसे मैने कुछ खाया ही नही है ।" यह कहनेपर भी बच्चेको उसने छातीसे लगा ही लिया ।

मार्टिनने सिर खुजलाया। फिर रोटी निकाली और एक तश्तरी। फिर अँगोठीसे उतारकर कुछ शोरबा रकाबीमे दे दिया । दलियेकी पतीली भी उतारी लेकिन वह अभी हुआ नही था । सो बस रोटी-रसा ही सामने कर दिया।

"लो, बैठ जाओ और शुरू करो । बच्चा लाओ मुझे दो । देखती क्या हो, बच्चे क्या मुझे हुए नही है ? देख लेना, मै बच्चोको खूब मना लेता हूँ।"

स्त्री बैठकर खाने लगी । मार्टिनने बच्चेको बिछौनेपर लिटा दिया और खुद बैठ गया । वह तरह-तरहसे बच्चेको बहलाने लगा । कभी कैसी आवाज निकालता और कभी कुछ बोली बोलता। लेकिन दात थे नही और आवाज उससे ठीक नही निकलती थी । सो बच्चेका रोना जारी रहा। तब उगली दे-देकर वह बच्चेको गुदगुदाने लगा । फिर एक खेल किया । उगली सीधी बच्चेके मुहतक ले जाता, फिर चटसे खीच लेता । यह उसने बार-बार किया पर उगली बालकको मुहमें नही लेने दी । क्योकि उसकी उगली कामसे तमाम काली हो रही थी । मोम-वोम जाने क्या उसमे लगा था । बच्चा पहले तो इस उगलीके खेलको ध्यानसे देखने लगा और चुप हो गया । फिर तो एकदम वह हस पड़ा । मार्टिन यह देख बडा ही खुश हुआ।

स्त्री बैठी खाती जाती थी और बतलाती जाती थी कि कौन हूँ और क्यो ऐसी हालतमे हूँ।

बोली—"मेरे आदमीको सिपाहीकी नौकरी थी । फिर कोई आठ महीने हुए जाने उन्हे कहा भेजा गया । तबसे कुछ खबर उनकी नही मिली। उसके बाद मैने रोटी पकानेकी नौकरी कर ली । रोटी बनाती थी । लेकिन यह बालक होनेको हुआ तो मुझे उन्होने कामसे हटा दिया । तीन महीनेसे मै भटक रही हूँ कि कोई नौकरी मिल जाय । जो पास था, पेटके खातिर सब बेच चुकी । अब कौडी नही रह गई है । सोचा, मै धाय बन जाऊँ। लेकिन कोई मुझे रखनेको राजी नही हुआ । कहते थे कि मै बहुत दुबली और दुखिया दीखती हूँ, सो दूध क्या उतरेगा । मै यहा एक लालाइनकी बातपर आई थी । वहा हमारे गावकी एक नौकरनी है । उन्होने मुझे रखनेको कहा था । मै समझती थी कि सब ठीक-ठाक है । पर वहा गई तो कहा कि अगले हफ्तेतक हमे फुर्सत नही है, फिर आना। वह दूर जगह थी, और आते-जाते मेरा दम हार गया है । बच्चा बिचारा भूखा है, देखो कैसी आखे हो गई है। भाग्यकी बात है कि वह तो मकानकी मालकिन दयालु है, भाडा नही लेती। नही तो, मेरा ठौर-ठिकाना न था।"

मार्टिनने सुनकर सास भरी । पूछा—"कोई गर्म कपडे पास नही है ?"

बोली—"गर्म कपडा कहासे हो। अभी कल ही छ आनेमे अपना चदरा गिरवी रख चुकी हूँ।"

इतना कहकर स्त्री बढी और बच्चेको गोदमे ले लिया । मार्टिन खडा हो गया और अपने कपडोमे खोज-छान करने लगा। आखिर एक बडा गर्म चोगा उसने निकाला और कहा—"यह लो। चीज तो फटी-पुरानी है, पर चलो बच्चेके कुछ काम तो आ ही जायगी।"

स्त्रीने उस चोगेको देखा । फिर उस दयावान बूढेकी तरफ आख उठाई फिर चोगेको हाथमे लेते-लेते वह रो पडी।

मार्टिन ने मुडकर खाटके नीचे झुककर वहासे एक छोटा-सा बक्स निकाला। उसमे इधर उधर कुछ खोजा और फिर नीचे सरकाकर बैठ गया ।

स्त्री बोली—"भगवान तुम्हारा भला करे, बाबा। सचमुच ईश्वरने ही मुझे इधर भेज दिया । नही तो बच्चा ठिठुरकर मर चुका होता। मै चली तब सर्दी इतनी नही थी। अब तो कैसी गजबकी ठडी बयार चल रही है। जरूर

यह ईश्वरकी करनी है कि तुमने खिडकीसे बाहर झाका और मुझ गरीबिनीपर दया की।"

मार्टिन मुस्कराया । बोला—"यह सच बात है। उसीने मुझे आज इधर देखनेको कहा था। कोई यह सयोग ही नही है कि मैंने तुम्हें देखा।"

यह कहकर मार्टिनने उसे अपनी सपनेकी बात सुनाई। बताया कि कैसे ईश्वरकी वाणी हुई थी कि इतजार करना, मै आऊँगा।

स्त्री बोली—"कौन जाने ? ईश्वर क्या नही कर सकता।" वह उठी और अपने बच्चेको चारो ओरसे ढकते हुए चोगा कधोपर डाल लिया। तब झुककर मार्टिनको फिर एक बार धन्यवाद दिया ।

"प्रभुके नामपर—यह लो।"

मार्टिनने कहा और चदरा गिरवीसे छुडानेके लिए छ आने स्त्रीके हाथ में थमा दिये । स्त्रीने ईशु प्रभुको स्मरण किया । मार्टिनने भी प्रभुका नाम लिया और फिर उसे बाहर पहुँचा आया ।

स्त्रीके चले जानेपर मार्टिनने देगची उतार कुछ खाया-पीया, बासन-वस्त्र सभालकर रख दिये और फिर काम करने बैठ गया। वह बैठा रहा, बैठा रहा, और काम करता रहा। लेकिन खिडकीको नही भूला। छाया कोई खिड ीपर पडती, कि हर बार वह तुरत निगाह करता कि देखू, कौन जा रहा है। उनमे कुछ जानके लोग निकले तो कुछ अनपहचाने भी । पर कोई खास नजर नही आया ।

थोडी देर बाद एक सेववाली स्त्रीको मार्टिनने ठीक अपनी खिडकीके सामने रुकते देखा । वह एक बडी टोकनी लिये थी, लेकिन सेव उसमे बहुत नही रह गये दीखते थे । साफ था कि वह बहुत कुछ उसमेसे बेच चुकी है । उसकी कमर-पर एक बोरा था जिसमे छिपटिया भरी थी । उसे वह घर ले जा रही थी । कही इमारतकी मदद लगी होगी, सो वहीसे बटोरकर लाई होगी । बोरा उसे चुभ आया था और एक कधेसे दूसरेपर उसे बदलना चाहती थी । सो बोरेको उसने रास्तेके एक ओर रख दिया और टोकरीको किसी खभेसे टिका दिया । फिर बोरेकी छिपटियोको हलहलाने लगी । लेकिन तभी फटीसी टोपी ओढ़े

एक लडका उधर दौडा और टोकरीसे एक सेव ले भागनेको हुआ । पर बुढियाने देख लिया और मुडकर चटसे उसकी बाह पकड़ ली । लडकेने बहुतेरी खीचातानी की कि छुट जाय, लेकिन बुढियाने अपने हाथ जमाये रक्खे । टोपी बालककी उतारकर फेंक दी और उसे बालोसे पकडकर झझोटने लगी । लडका चिल्लाया जिसपर बुढिया और धिक्कार उठो । यह देख मार्टिनने हाथकी आरी उडसी भी नही, कि हाथसे उसे वही डाल झटमे दरवाजे के बाहर आ गया । जल्दीमे ऐनक भी छूटी । लड़खड़ाते पैरो वह सीढ़ी उतर और दौड सडकपर आ खडा हुआ । बुढ़िया लडकेके बाल झझोट रही थी और गालिया दे रही थी। कहती थी—"तुझे पुलिसमे दूगी।" लडका छूटनेको मचल रहा था। चिल्ला रहा था कि "मैंने कुछ नही लिया, मुझे क्यो मार रही हो ? मुझे छोड दो।"

मार्टिनने आकर उन्हें अलग कर दिया । लड़केको हाथमे लेकर कहा—"जाने दो, माई। भगवानके लिए उसे अब माफ कर दो।"

"अजी, मे उसे दिखा दूगी । जिससे साल-एक याद तो रक्खे। बदमाशको थाने ले जाऊँगी !"

मार्टिन बुढियाको निहोरने लगा ।

"जाने दो, माई। फिर ऐसा नही करेगा। भगवानके लिए उसे जाने दो।"

बुढियाने लडकेको छोड दिया। लडका भाग जानेको हुआ। लेकिन मार्टिनने उसे रोक लिया ।

बोला—"इन मासे माफी मागो । और फिर ऐसा न करना। मैंने देखा था तुम्हे सेव ले जाते हुए।"

लडका रो उठा और माफी मागने लगा ।

"ठीक। और यह लो अब अपने लिए एक सेव।" कहते हुए मार्टिनने टोकरीसे एक सेव लिया और लडकेको दे दिया । फिर बोला—"इसके पैसे मै दूगा तुम्हे, माई।"

"इस तरह इन छोकरोको तुम बिगाड़ दोगे।" बुढ़िया बोली, "इसे कोडे लगने चाहिए थे, कि हफ्ते भर तो याद रहती।"

"ओह, माई", मार्टिन कह उठा, "छोडो-छोडो । यह तरीका हम लोगोका

हो, ईश्वरका यह तरीका नही है । अगर एक सेवकी चोरीके लिए उसे कोडे लगाने चाहिए तो हमे अपने पापोके लिए क्या मिलना चाहिए, सोचो तो ?"

बुढिया चुप रह गई।

तब मार्टिनने उसे उस कथाकी याद दिलाई जहा प्रभु तो अपने सेवकपर सारा ऋण छोड देते है, पर वह दास जरासेके लिए अपने कर्जदारका गला जा दबोचता है। बुढियाने यह सब सुना और लडका भी पास खडा सुनता रहा।

"सो प्रभुकी बानी है कि हम माफ करे।" मार्टिनने कहा, "नही तो हम भी माफी नही पायेगे । हर किसीको माफ करो। अनजान बालकको तो और भी पहले माफी मिलनी चाहिए ।"

बुढियाने सिर डुलाया और सास भरी।

बोली—"यह तो सच है । लेकिन वे इतने बिगडे जो जा रहे है।"

मार्टिन बोला, "यह तो हम बडोपर है न कि अपने उदाहरणसे उन्हे हम अच्छी राह दिखाए।"

"यही तो मै कहती हूँ" बुढिया बोली, "मेरे खुद सात हो चुके है । उनमे सिर्फ अब एक लडकी है।" बुढिया बताने लगी कि कैसे और कहा वह अपनी बेटीके साथ रहा करती थी और कितने धेवती-धेवते उसके थे । बोली—"यह देखो अब मुझमे अगर्चे कुछ कस नही रह गया है, फिर भी उनके लिए मै काममे जुटी ही रहती हू । और बच्चे भी वे भले है । उन्हे छोड और कोई भी तो मेरे पास नही लगता । नन्ही ऐनी तो अब मुझे छोड किसीके पास जायगी ही नही । कहेगी, "हमारी नानी, हमारी प्यारी अच्छी नानी ।" और ऐनीकी यह याद आते ही बुढियाकी आखे एकदम भीग आई ।

लडकेके लिए बोली—"सच तो है। बिचारेका बचपन था, और क्या । ईश्वर उसका सहाई हो।"

यह कहकर जैसे ही वह बोरा उठाकर अपनी कमरपर रखनेको हुई कि लडका कूदकर उसके सामने आ खडा हुआ और बोला—"लाओ यह मै ले चल, मा। मै उसी तरफ जा रहा हूँ।"

बुढियाने 'हा' में सिर हिलाया और बोरा लडकेकी कमरपर रख दिया ।

फिर दोनो साथ-साथ गलीसे चलते चले । मार्टिनसे सेवके पैसे मांगना बुढिया बिलकुल ही भूल गई। दोनो आपसमे बोलते-चालते वहासे गये, और मार्टिन खडा-खडा उन्हे देखता रहा।

आखसे वे ओझल हो गये तो मार्टिन घर वापस आया। जीनेपर उसे अपनी ऐनक पडी मिली जो कि टूटी नही थी। उसे उठा और आरी हाथमे ले वह फिर कामपर बैठ गया। थोडा-सा काम किया था कि चमडेके सूराखोसे सूआ निकालना उसकी आखोको मुश्किल होने लगा। तभी बाहर क्या देखता है कि लैंपवाला गलीके लैंप जलाने गलीसे निकला जा रहा है ।

सोचा—रोशनीका समय हो गया दीखता है । सो उसने भी लैंप ठीक किया, उसे टागा, और फिर अपने कामपर बैठ गया। एक जूता उसने पूरा कर लिया । फिर अदल-बदलकर उसे जाचने लगा। सब दुरुस्त था। सो उसने अपने औजारोंको समेटा, कटनी-छटनीको बुहार दिया और मोम-धागा और सब चीज-बस्तको ठीक-ठाक रख दिया । फिर लैंप उतार मेजपर रख ली और आलेसे अपनी इजीलकी पोथी ली । चाहता था कि वहीसे खोलू जहा पहले दिन निशान लगा छोडा था। लेकिन किताब दूसरी जगह खुल गई। उसे खोलना था कि कलका सपना फिर मार्टिनके सामने आ रहा। साथही उसे पैरोकी आहटसी सुन मिली, मानो कोई उसके पीछे चल-फिर रहा हो। मार्टिन मुडा । उसे लगा जैसे अधेरे कोनेमे कोई आदमी खडे हो। लेकिन वह चीन्ह न सका कि कौन है। उसी समय एक आवाज फुसफुसाकर मानो कानमे बोली—"मार्टिन, मार्टिन, क्या तुम मुझे नही पहचानते ?"

मार्टिन सदेहके सुरमे बोला—"कौन।"

आवाज बोली—"यह मै।"

कहनेके साथ अधियारे कोनेसे निकल स्टेपान आ आगे हुआ। वह मुस्कराया और बादलकी भाति फिर अतर्धान हो गया।

फिर आवाज हुई—"और यह मै।"

और इसपर अधेरेमेसे वह स्त्री गोदमे बच्चा लिये आ निकली। वह मुस्कराई बच्चा हसा और ये दोनो भी अतर्धान हो गये ।

फिर तीसरी आवाज आई—"और यह मै।"

और कहनेके साथ ही वह बुढिया और सेब लिए वह लडका आ सामने हुए दोनो मुस्कराये और अतर्धान हो गये ।

इसपर मार्टिनका हृदय आनदसे भर आया। उसने प्रभुको स्मरण किया, ऐनक आखोपर रक्खी और ठीक जहा इजील खुली थी, पढने लगा। सफेके ऊपर ही पढा—

"मै भूखा था और तूने मुझे खाना दिया। मै प्यासा था, तूने मुझे पानी दिया। मै अजनबी था और तूने मुझे ग्रहण किया।"

और सफेके अतमे पढा—

"इन भाइयोमेसे एकके लिए, अदनासे अदनाके लिए, जो तूने किया वह मुझको किया समझ। जो दिया मुझे पहुचा समझ।"

उस समय मार्टिनको प्रत्यक्ष हुआ कि उसका सपना सच्चा हुआ है। उसको प्रतीति हुई कि रक्षक प्रभु सचमुच ही उसके घर पधारे थे और उन्होने उसका आतिथ्य पाया था।

: २ :

खोखला ढोल

इमेल्यान नामका एक मजदूर एक दिन अपने मालिकके कामपर जा रहा था। जाते-जाते एक खेतकी मेढपर कहीसे एक मेढक फुदककर उसके सामने आ गया। मेढक इमेल्यानके पैरसे कुचल ही गया था कि वह तो इमेल्यान की तरकीबसे बच गया। इतनेमे ही सुना कि पीछेमे कोई उसका नाम लेकर पुकार रहा है।

मुडकर देखता है कि एक बडी सुन्दर लडकी है। उस लडकीने कहा—"इमेल्यान, तुम शादी क्यो नही कर लेते हो?"

इमेल्याननें कहा कि भला मै शादी कैसे कर सकता हूँ। जो पहने खडा हूँ वही कपडे मेरे पास है, और कुछ भी नही है। सो कौन मुझसे शादी करनेको राजी होगा?

लड़कीने कहा—"तुम कहो तो मै राजी हूँ। मै बुरी नही हूँ।"

लड़की इमेल्यानके मनको बहुत अच्छी लग रही थी। वह बोला—"तुम तो परी दीखती हो। पर मेरा ठौर-ठिकाना भी तो नही है। हम लोग रहेंगे कहा और कैसे ?"

लड़की बोली—"इसकी क्या सोच-फिकर है। आलस कम किया और मेहनत ज्यादा की तो अपने लायक खाने-पहननेको तो सब कही हो जायगा।"

इमेल्यानने कहा—"यह बात है, तो चलो, शादी कर ले। लेकिन बताओ कि चले कहा ?"

"आओ शहर चलो।"

सो इमेल्यान और लड़की दोनो शहर चले। वहा शहरके परले सिरेपर दूर एक झोपडीमे इमेल्यानको लड़की ले गई। दोनोकी शादी हो गई और वे घर बसाकर रहने लगे।

एक दिन शहरका राजा वहासे गुजरा। इमेल्यानकी बीबी भी राजाकी सवारी देखने झोपडीमे बाहर निकली। राजाने जो उसे देखा तो दग रह गया।

राजाने मनमे कहा—"ऐसी परी-सी सुदरी यहा कहासे आ गई!" उसने अपनी सवारी रोककर उसे पास बुलाया। पूछा—"तुम कौन हो ?"

सुदरीने कहा—"मै इमेल्यान किसानकी बीबी हूँ।"

राजाने कहा—"ऐसी सुदर होकर तुमने किसानसे ब्याह क्यो किया ? तुम तो रानी होने लायक हो।"

सुदरीने कहा—"आप मुझसे ऐसी बात मत कहे। मेरे लिए तो किसान ही अच्छे है।"

इस कुछ देरकी बातके बाद राजाकी सवारी आगे बढ गई। लौटकर राजा महलोमे आ तो गया, पर इमेल्यानकी स्त्रीकी मूरत उसके मनसे दूर नही हुई। वह रातभर नही सोया। सोचता रहा, कैसे उसे पाऊ। पर उसकी समझमें कोई ठीक जुगत नही आई। तब उसने अपने नौकरोंको बुलाया और कहा—"कोई तदबीर उस परीको पानेकी निकालो।"

राजाके नौकरोने बताया—"इमेल्यानको काम करनेके लिए महलमें बुलाइए।

यहा हम उससे इतना काम लेगे, इतना काम लेंगे कि आखिर वह मर ही जाय। तब उसकी बीबी अकेली रह जायगी और आप उसे ले लीजिएगा।"

राजाने वैसा ही किया। फर्मान हो गया कि इमेल्यान महलमे काम करनेके लिए आवे और स्त्रीके साथ वही रहे।

हुक्म इमेल्यानको मिला, तब उसकी स्त्रीने कहा—"इमेल्यान, जाओ दिनभर काम करना, पर रातको सोने घर आ जाना।"

सुनकर इमेल्यान चला गया। महल पहुचनेपर राजाके दीवानने पूछा—"इमेल्यान, बीबीको छोडकर तुम अकेले क्यो आये ?"

इमेल्यानने कहा—"उसकी जगह तो वही है। घर उससे बनता है। यहा उसे क्या ?"

राजाके महलोमे उस अकेलेको दो आदमियोका काम दिया गया। आशा तो नही थी कि वह काम पूरा होगा, पर इमेल्यान उसमे जुट गया। और शाम होते-होते अचरजकी बात देखो कि काम सब पूरा हो गया। दीवानने देखा कि काम सब निबट गया है। तब अगले दिनके लिए उससे चौगुना काम बता दिया।

इमेल्यान घर लौटा। वहा सब चीज साफ-सुथरी थी, खाना तैयार था, पानी गरम रक्खा था और बीबी बैठी कपडे सी रही थी और पतिकी बाट देख रही थी। उसने पतिकी आवभगत की, हाथ-पैर धुलाये, खाने-पीनेको दिया और कामकी बात पूछी।

इमेल्यानने कहा कि कामकी बात क्या पूछती हो! काम तो इतना देते है कि बिसातसे ज्यादा। कामके बोझमे मुझे मारना चाहते है।

स्त्रीने कहा—"कामके बारेमे झीकना अच्छा नही होता। कामके वक्त आगे-पीछे भी नही देखना चाहिए कि कितना हमने कर लिया, कितना बाकी रह गया। बस काम करते चलना चाहिए। बाकी सब अपने-आप ठीक हो जायगा।"

सुनकर इमेल्यान बेफिकरीसे रात को सोया। सवेरे उठकर वह कामपर गया और बिना दाए-बाए देखे उसमे लग रहा। होनहारकी बात कि साझसे पहले सभी काम पूरा हो गया और अधेरा होते-होते रात बिताने वह अपने घर पहुँच गया।

राजाके लोग दिन-ब-दिन उसका काम बढ़ाते गये । पर हर रोज शाम होनेसे पहले सब काम खतम हो जाता और इमेल्यान सोने अपने घर पहुँच जाता । ऐसे एक हफ्ता बीत गया । राजाके नौकरोंने देखा कि भारी काम दे-देकर तो वे इमेल्यानका कुछ नही बिगाड़ सकते । उन्होंने तबसे मुश्किल और बारीक काम दिया । पर उससे भी कुछ न हुआ । क्या बढईका, क्या राज-गिरीका, और क्या और तरहका, सब काम इमेल्यान ठीक तरह और ठीक वक्तसे पहले कर देता और मजेमें रातको घर रवाना हो जाता । ऐसे दूसरा हफ्ता भी निकल गया ।

इसपर राजाने अपने आदमियोको बुलाकर कहा—"क्या मै तुम्हें मुफ्तका माल खिलाता हूँ ? दो हफ्ते बीत गये है, तुमने क्या करके दिखाया ? कहत थे, तुम कामसे इमेल्यानको थका दोगे । पर शाम होती नही कि खुशीसे उसे रोज गाते हुए घर लौटते मै अपनी आखोसे देखता हूँ । क्या तुम लोग मुझे बेवकूफ बनाना चाहते हो ?"

बादशाहके सामने वे लोग इधर-उधर करने लगे । बोले—"हमने अपने बस तो भारी-से-भारी काम उसे दिया । पर उसने तो सब ऐसे साफ कर दिया जैसे झाडूसे बुहार दिया हो । वह तो थकता ही नही । फिर हमने बारीक काम सौपे । उन्हे भी उसने पार लगा दिया । कुछ भी काम दो वह सब कर देता है । जाने कैसे ! वह, या उसकी बीबी, कोई-न-कोई जादू जरूर जानते मालूम होते है ! हम तो खुद उससे तंग है । हा, एक बात सोची है । इमेल्यानको बुलाया जाय, कहा जाय कि महलके सामने दिनभरके अदर एक मदिरकी इमारत तुमको खडी करनी है । अगर वह न कर सके तो उसका सिर कलम कर दिया जाय ।"

राजाने इमेल्यानको बुला भेजा । कहा—"सुनो इमेल्यान, महलके सामने एक नया मदिर बनवाना है । कल शामतक वह तैयार हो जाना चाहिए । अगर कर दोगे तो इनाम दूगा । नही करोगे तो सिर उतरवा लूंगा ।"

बादशाहकी आज्ञा चुपचाप सुनी और इमेल्यान लौटकर चला आया । उसने सोच लिया कि अब जान गई । घर पहुँचकर पत्नीसे कहा—"सुनती हो ? अब तैयारी करो और यहासे भाग चलो; नही तो बेमौत मरना होगा ।"

उसकी स्त्रीने कहा—"ऐसे डर क्यो रहे हो ? और हम क्यो भाग चले ?"

इमेल्यानने कहा—"डरनेकी बात ही है । राजाने कल कलमें एक पूरा नया मदिर खडा करनेका हुक्म दिया है । नही कर सकूगा तो सिर देना होगा । बस, बचनेकी एक ही राह है । वह यह कि वक्त रहते हम लोग यहासे भाग चलें ।"

लेकिन उसकी बीबीने इस बातको अपने कानपर भी नही लिया । बोली—"राजाके पास बहुत-से सिपाही हैं । कहीसे भी वे हमें पकड लायेगे । हम बच नही सकते । और जबतक बस हो हमे राजाका हुक्म मानना चाहिए ।"

"हुक्म मैं कैसे मानू जबकि काम मुझसे होना मुमकिन नही है ।"

स्त्रीने कहा—"तो भी जी क्यो हलका करते हो ? जो होगा देखा जायगा । अभी तो खा-पीकर आरामसे सोओ । सबेरे तड़के उठ जाना और सब काम ठीक हो जायगा ।

इसपर इमेल्यान आरामसे सोया । अगले दिन पौ फटते ही बीबीने उसे जगाया । कहा—"झटपट तैयार होकर जाओ और मदिरका काम पूरा कर डालो । यह हथौड़ी है, ये कीले हैं । अभी वहा एक दिनके लायक बाकी काम मिलेगा ।"

इमेल्यान शहरमे गया । चौकमे पहुँचा तो देखता क्या है कि मदिर बना-बनाया खड़ा है । वह ऊपरी कुछ काम करनेमे लग गया जो शामतक सब पूरा हो गया ।

राजाने जगनेपर देखा कि सामने मदिर तैयार खडा है और इमेल्यान यहा-वहा कुछ कीले गाड रहा है । मदिर बना देखकर राजाको खुशी नही हुई । इमेल्यानको सजा अब वह कैसे दे ? और उसकी बीबी कैसे हाथ लगे ? फिर उसने नौकरोको इकट्ठा किया । कहा—"इमेल्यानने यह काम भी पूरा कर दिया । बताओ उसे किस बातपर खत्म किया जाय ? इस बार कोई पक्की तरकीब निकालो । नही तो उसके साथ तुम सबके भी सिर उतारे जायगे ।"

इसपर उन दोनोने तय किया कि इमेल्यानसे महलके चारो तरफ एक दरिया बहानेको कहा जाय, जिसमें किश्तिया तैर रही हो और किनारे-किनारे पक्के घाट हों । राजाने इमेल्यानको बुला भेजा और यही हुक्म सुना दिया ।

कहा—"अगर एक दिनमे तुम पूरा मंदिर बना सकते हो, तो यह काम भी एक रातमें कर सकते हो। कल सब हो जाय। नही तो तुम्हारा सिर धडपर न रहेगा।"

इमेल्यान अब सब आस छोड बैठा और भारी जीसे घर आया। घरमें पत्नीने पूछा—"ऐसे उदास क्यों हो ? क्या राजाने और नया काम बताया है ?"

जो हुआ था इमेल्याननने कह सुनाया। बोला—"चलो, अब भी भाग चलें।"

लेकिन बीबीने कहा—"राजाके सिपाही है। उनसे कहा बचेगे ? जहा पहुँचोगे वहीसे वे पकड लेंगे। इससे भागना नही, हुक्म मानना ही भला है।"

"लेकिन मुझसे उतना सब काम कैसे होगा ?"

स्त्रीने कहा—"जो मत छोटा करो। खा-पीकर आरामसे सोओ। सवेरे उठ पडना और भगवानने चाहा तो सब ठीक हो जायगा।"

चिंता छोड़कर इमेल्यान सो गया। सवेरे ही उसकी पत्नीने उठाकर कहा—"उठो, अब महल जाओ। वहा सब तैयार है। महलके सामने दरियाके किनारे जरा जमीन उठी हुई है। लो यह फावडा, उसे हमवार कर देना।"

सवेरे उठते ही राजाने अचभेसे देखा, जहा कुछ नही था वहा दरिया मौजें ले रहा है, पाल खोले किश्तिया तैर रही हैं और इस तरफ जरा-सी जमीनको इमेल्यान फावड़ेसे हमवार कर रहा है। राजाको अचरज तो हुआ, पर न तो पानीसे भरी नदी और न उसपर खेलती हुई हसिनी-सी नौकाओंको देखकर उसके मनमे जरा खुशी हुई। इमेल्यानको पकड न पानेपर वह इस कदर बेचैन था। उसने सोचा कि अब मैं करूँ तो क्या करूँ ? यह सोचकर उसने फिर अपने नौकरों-को बुलवाया।

"देखो तुम लोग", राजाने कहा, "कोई-न-कोई काम निकालो जो उससे न हो। समझे ? जो कहते है वह सब कर देता है। और अबतक उसकी औरत हमको नही मिल सकी है।"

सोचते-सोचते नौकरोंने एक युक्ति लगाई। राजाके पास जाकर कहा—"इमेल्यानको बुलाकर कहिए कि देखो इमेल्यान, वहा जाओ कि जाने कहां और वह चीज लाओ कि जाने-क्या। तब वह बचकर नही निकल सकेगा। वह फिर जहा कही भी जायगा, आप कह दीजिए कि वहाके लिए नही कहा था।

और जो लायेगा, कह दीजिए कि वह हमने मंगाया ही नही था। यह कहकर मौतकी सजा दे दीजिए और उसकी बीबी ले लीजिए ।"

राजा सुनकर खुश हुआ। कहा—"यह तुमने ठीक सोचा है ।"

इमेल्यानको बुलाया गया और राजाने कहा—"इमेल्यान, वहा जाओ कि जाने-कहा और वहासे वह लाओ कि जाने-क्या। अगर नही ला सके तो तुम्हारा सिर सलामत नही है ।"

इमेल्यानने घर जाकर बीबीसे राजाकी बात कह सुनाई। सुनकर बीबी सोचमे पड गई।

बोली—"लोगोने राजाको इस बार तुम्हें पकड़नेकी ठीक तरकीब बता दी है । अब हमे होशियारीसे चलना चाहिए।"

यह कहकर वह बैठी सोचती रही। आखिर बोली—"देखो, दूर एक दादी बुढिया है । सिपाहियोकी वह धरती-मा जैसी है। उससे मदद मागना । अगर वह तुम्हे कुछ दे, या बताये, तो उसे लेकर महलमे आना । मै वही रहूगी। मै अब राजाके लोगोसे बच नही सकती ।वे मुझे जबर्दस्ती ले जायगे ।पर थोडे दिनकी बात है । अगर तुम दादीकी बात पर चलोगे तो मुझे जल्दी बचा लोगे ।"

उसने यात्राके लिए पतिको तैयार कर दिया। साथमे कुछ कलेवेको बांध दिया और चरखेका एक तकुआ दे दिया । कहा—"देखो, यह तकुआ दादीको देना। इससे वह पहचान जायँगी कि तुम कौन हो।" यह कहकर ठीक रास्ता बताकर उसे भेज दिया ।

इमेल्यान चलते-चलते एक जगह पहुचा जहा सिपाही कवायद कर रहे थे। इमेल्यान खडा होकर उन्हे देखने लगा । कवायदके बाद बैठकर सिपाही आराम करने लगे। उसने पास जाकर पूछा—"भाइयो, आप लोग जानते है कि कौन रास्ता वहा-जाने-कहा जाता है और मै कैसे वह-जाने-क्या चीज पा सकता हूँ ?"

सिपाहियोंने अचरजसे उसकी बातें सुनी । फिर पूछा—"तुमको किसने यह काम देकर भेजा है ?"

"मुझको राजाने यह हुक्म दिया है।"

सिपाहियोंने कहा—"हम भी जिस दिनसे सिपाहीकी नौकरीमें आये हैं उसी दिनसे वहा-जाने-कहा जा रहे हैं और अभी कही नही पहुचे है। और वह-जाने-क्या ढूंढ रहे हैं और अभीतक कुछ नही पा सके है। हमसे भाई, तुम्हें कुछ मदद नही मिल सकती।"

इमेल्यान कुछ देर सिपाहियोंके साथ ठहरकर आगे बढा। कोस-पर-कोस चलता गया। आखिर एक जगल आया। जगलमें एक झोपडी थी और सिपाहियों की धरती-मा, वही बुढिया दादी, चर्खेपर सूत कात रही थी और रो रही थी। कातते-कातते वह उगलियोंको ले जाकर मुहके नही आखके पानीसे गीला करती थी। इमेल्यानको देखकर बुढियाने चिल्लाकर कहा—"कौन है? तू यहा क्यों आया है?"

तब इमेल्यानने वह नकुआ बुढियाको दिया और कहा—"मेरी स्त्रीने यह देकर मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"

बुढिया इसपर एकदम मुलायम पड गई और हाल-चाल पूछने लगी। इमेल्यानने सब बता दिया। कैसे लडकी मिली, कैसे वे ब्याह करके गावमें बसे, कैसे मदिर बनाया और किश्ती-घाटवाला दरिया बनाया, और कैसे अब उसे राजाने वहा-जाने-कहा जाने और वह जाने-क्या लानेका हुक्म देकर भेजा है—यह सब उसने बता दिया।

सुनकर दादीका रोना रुक गया। मनमें बोली—"अब मेरे सकट कटनेका वक्त आया है।" प्रकटमें इमेल्यानसे कहा—"अच्छा बेटा, बैठो, कुछ खा-पी लो।"

खिला-पिलाकर दादीने बताया कि देखो, यह सूतका पिंडा है, इसे लो और सामने लुढका दो। इसके सूतके पीछे-पीछे तुम चलते जाना। चलते-चलते समदरतक पहुच जाओगे। वहा एक बडा शहर दीखेगा। उसमें चले जाना। शहरके पार आखिरी मकानपर एक रात ठहरनेको जगह मागना। वहां आख खोलकर रहना। तब तुम्हारी चीज मिल जायगी।

इमेल्यानने कहा—"दादी, मैं पहचानूगा कैसे कि यही वह चीज है?"

बुढियाने कहा—"जब तुम ऐसी चीज देखो जिसकी लोग मा-बापसे भी ज्यादा सुनें, समझ लेना वही है। उसीको राजाके पास ले जाना। तब राजा कहेगा,

यह वह चीज नही ह। तुम कहना, अगर यह वह नही है तो लाओ मैं उसे तोड़े देता हूँ, और तब तुम उसे घमाधम पीटने लगना। पीटते-पीटते नदीतक ले जाना और टुकड़े-टुकडे करके उसे नदीमे फेक देना । तब तुम्हारी स्त्री तुम्हे वापिस मिल जायगी और मेरे आसू पुछ जावेगे ।"

इमेल्याननं दादीको प्रणाम करके विदा ली और सूतके गोलेके पीछे-पीछे चला । गोला लुढकता और खुलता हुआ आखिर समदरके किनारेतक पहुँच गया । वहा एक बड़ा शहर था और उसके दूसरे सिरेपर एक बडा मकान। इमेल्यानने रातको ठहरनेके लिए वहा जगह मागी और मिल गई।

सवेरे उसने सुना कि घरमे बाप लडकेको जगा रहा है कि भैया, उठकर जाओ, जगलसे कुछ लकडी काट लाओ ।

लेकिन लडकेने सुना-अनसुना करके कहा—"अभी बहुतेरा वक्त है । ऐसी जल्दी अभी क्या है।"

माने कहा—"उठो बेटा, जाओ । तुम्हारे पिताजीके बदनकी हड्डी दुखती है। तुम नही जाओगे तो उन्हे जाना पडेगा। बेटा, दिन बहुत निकल आया है।"

पर लडकेने कुछ बहाना बना दिया और करवट लेकर फिर सो गया। इमेल्यानने यह सब सुना।

तभी एकाएक बाहर सडकपरसे किसी चीजकी जोरकी आवाज होनी शुरू हुई । और देखता क्या है कि वह आवाज सुनते ही लडका फौरन उछलकर उठा और चट कपडे पहन घर से निकल भागा । इमेल्यान भी कूदकर देखने पीछे लपका कि क्या चीज है जिसका हुक्म लडका मा-बापसे ज्यादा मानता है । देखता क्या है कि सडकपर एक आदमी पेटके आगे बाधे एक चीज लिये जा रहा है जिसे वह दोनो तरफ दो कमचियोसे पीट रहा है । वही चीज थी जो इस जोरसे गूज रही थी और जिसकी आवाजपर लड़का घरसे भाग आया था । वह चीज गोल थी। दोनो सिरोंपर खाल मढी थी। पूछा, कि इसका क्या नाम है ?

लोगोने बताया—"ढोल।"

"क्या यह अदर खोखला है ?"

"हा, अदर यह खोखला है ।"

इमेल्यान ताज्जुबमे रह गया । उसने कहा—"यह हमें दे दो ।" पर देनेवालेने नही दिया । इसपर इमेल्यान ढोलवालेके पीछे-पीछे हो लिया । सारे दिन साथ लगा रहा । आखिर जब ढोलवाला सोया, तब ढोल उठाकर इमेल्यान भाग आया ।

भागा-भाग, भागा-भाग, आया अपनी बस्तीमे । पहले तो बीबीको देखने पहुचा घर । पर वह वहा नही थी, इमेल्यानके जानेके अगले दिन उसे राजाके लोग ले गये थे । इसपर इमेल्यान महलकी ड्योढीपर पहुचा और अदर खबर भिजवाई कि इमेल्यान लौट आया है जो वहा गया था कि जाने-कहा और वह ले आया है कि जाने-क्या'।

सुनकर राजाने हुक्म दिया कि कह दो, अगले दिन आवे ।

इसपर इमेल्यानने कहलवाया—"मै वह चीज लेकर आया हूँ जो राजाने चाही थी । राजा मेरे पास उसे लेने नही आ सकते तो मै ही उनके पास आता हूँ ।"

इसपर राजा बाहर आये । उन्होने पूछा—"अच्छा, तुम कहा गये थे ?"

इमेल्यानने ठीक-ठीक बता दिया ।

राजाने कहा—"वह असली जगह नही है । अच्छा, लाये क्या ?"

इमेल्यानने ढोल दिखा दिया । लेकिन राजाने उसे देखा भी नही । कहा—"यह वह चीज नही है ।"

इमेल्यानने कहा—"अगर यह वह चीज नही है तो मै इसे पीटकर तोडे देता हूँ । फिर देखा जायगा ।"

यह कहकर इमेल्यान ढोल पीटता हुआ महलसे बाहर निकल आया । ढोलका पिटना था कि पीछे-पीछे राजाकी फौज निकल आई और इमेल्यानको सलाम करके उसके हुक्मके इतजारमे खडी हो गई ।

राजाने अपनी खिडकीमेसे यह देखा तो अपनी फौजको चिल्ला-चिल्लाकर कहा कि इमेल्यानके पीछे मत जाओ । पर किसीने कुछ नही सुना और सब ढोलके पीछे चल पडे ।

राजाने जब यह देखा तब हुक्म दिया कि इमेल्यानकी बीबी उसको दे दो और वापिस वह ढोल मागा ।

पर इमेल्याननें कहा—"यह नही हो सकता । इसको तोड़कर मुझे नदीमें फेक देना है ।"

यह कहकर इमेल्यान ढोल पीटता हुआ नदीकी तरफ बढ गया । सिपाही सब उसके पीछे थे । नदी पहुचकर ढोलके टुकडे-टुकडे करके इमेल्याननें नदीकी धारमें फेक दिया । और सिपाही सब अपने-अपने घर भाग गये ।

तब इमेल्यान अपनी बीबीको साथ लेकर अपने घर पहुच गया । उसके बाद राजाने उन्हे नही सताया और वे सुखसे रहने लगे ।

: ३ :

सूरतकी बात

हिदुस्तानके सूरत शहरमे एक अतिथिशाला थी । उसीकी बात है। सूरत शहर उन दिनो बढा-चढा बदरगाह था और दुनियाभरसे देश-विदेशके यात्री वहां आया करते और उस अतिथिशालामें मिला करते थे।

एक दिन एक फारसी आलिम वहा आये । उन्होंने ईश-तत्त्वपर मनन-चितन करनेमे जीवन बिताया था और उस विषयपर बहुत कुछ लिखा पढा था । ईश्वरके बारेमे उन्होने इतना सोचा, इतना पढा और इतना लिखा था कि आखिर उनकी बुद्धि भ्रममे पड गई थी और ईश्वरकी सत्तासे भी उनका विश्वास जाता रहा था । यह पता पाकर वहाके शाहने अपने देश फारिससे उन्हे देश निकाला दे दिया था।

जीवनभर सृष्टिके आदि-कारणपर विवाद करते-करते यह बिचारे तत्त्वभेदी आखिर विभ्रममे पड़ गये थे और बजाय यह समझनेके कि उनकी बुद्धिमे विकार है, वह मानने लग गये थे कि सृष्टिकी व्यवस्थामे ही कोई मूल-चेतना काम नही कर रही है ।

इन आलिम फाजिलके साथ अफ्रिकाका एक हब्शी गुलाम भी था । वह सग-सग रहता था। आलिम अतिथिशालामें आये तो गुलाम दरवाजेके बाहर ही ठहर गया । वहा वह धूपमे एक पत्थरपर बैठ गया, और मक्खिया बहुत थी, सो बैठा-बैठा मक्खिया उडाने लगा।

वह फारसी आलिम अदर पहुचकर आरामसे मसनदपर जम गये और एक अफीमके शरबतके प्यालेका हुक्म दिया। उसकी घूट लेनेपर उनके दिमागकी नसोमे तेजी आ गई। उस वक्त शालाके खुले दरवाजेमेंसे उधर बैठे गुलामसे वह बोले—"क्यो रे, क्या खयाल है तेरा ? खुदा है या नही ?"

"वह तो है—"

गुलामने कहा और कमरपर बधी अपनी पेटीमेंसे लकडीकी एक मूरत उसने निकाली। बोला—

"—जो, देखिए, यह है। इसी खुदाने मेरे पैदा होनेके रोजसे मुझे बचाया और पाला है। हमारे देशमे हरेक आदमी जिस बरगदकी पूजा करता है, यह खुदा मेरा उसीकी लकडीका बना है।"

वहा अतिथिशालामे जमा हुए और लोग आलिम मालिक और बेवकूफ गुलामका यह बातचीत अचरजसे सुनने लगे। पहले तो उन्हें मालिकके सवालपर आश्चर्य था। लेकिन गुलामके जवाबपर और भी आश्चर्य हुआ।

उन्ही लोगोमे एक ब्राह्मण पडित थे। गुलामकी बात सुनकर उन्होने उस तरफ मुह किया और बोले—

"अरे मूर्ख, क्या तुम सभव समझते हो कि ईश्वरको तुम अपनी पेटीमे लिये फिर सकते हो ? ईश्वर एक है, अखिल है। वह ब्रह्म है। समस्त सृष्टिसे वह बडा है, क्योकि स्रष्टा है। ब्रह्म ही सत् है, वही सत्ताधीश ईश्वर। उसीकी महिमा-पूजामें गगा-तटपर अनेकानेक हमारे मदिर बने हुए है जहा सन्निष्ठ ब्राह्मण उसकी पूजा-अर्चामे निरत रहते है। सत्य परमेश्वरका ज्ञान उन्हीको है और किसीको नही है। सहस्र-सहस्र वर्ष हो गये, परन्तु कई काल-चक्रोके अनतर भी ब्राह्मण ही उस ब्रह्म-ज्ञानके अधिकारी है, क्योकि स्वय ब्रह्मा उनके रक्षक है।"

ब्राह्मण पडितने इस भावसे यह कहा कि उपस्थित मडली सब उनके प्रभावसे विश्वस्त हो रहेगी। लेकिन वही एक यहूदी दल्लाल बैठे थे। जवाबमे वह बोले—

"नही, सच्चा ईश्वर हिंदुस्तानके मदिरोमें नही है। न ब्राह्मण लोग ईश्वरको विशेष प्रिय है। सच्चा ईश्वर ब्राह्मणोवाला ईश्वर नही है। बल्कि इब्राहीम,

इसाक, याकूबका खुदा सच्चा खुदा है । और उसका साया सबको छोड़ पहले इजराईलवालोको मिला है । दुनिया शुरू हुई तब हमारी जातिको ही उसकी शरणका वरदान मिला है । हम लोग जितने उसके निकट है और कोई नही। अगर हम आज दुनियापर छितरे हुए फैले है, तो इसका और कोई मतलब नही है, यह तो हमारी परीक्षा है । क्योकि उसका वचन है कि एक दिन होगा कि उसकी प्रिय (हमारी) जातिके सब जन येरुशलममे जमा होगे । तब येरुशलमका हमारा प्राचीन मदिर अपनी पहली महिमापर आ जायगा और हजरत इजराईल वहा बैठकर तमाम जातियो और मुल्कोपर हुकूमत करेगे।"

इतना कहते भावावेशसे उस यहूदीके आसू आगये । वह और भी कहना चाहते थे, लेकिन एक रोमन पादरी भी वहा थे । वह बीचमे पडकर यहूदीकी तरफ मुखातिब होकर बोले—

"तुमने जो कहा सत्य नही है । तुम ईश्वरके माथे अन्याय मढते हो। वह तुम्हारी जातिको औरोसे ज्यादा प्यार नही कर सकते । नही, अगर यह सच भी हो कि पहले इजराईलके लोग ईश्वरको विशेष प्यारे थे, तो इधर १९०० सालसे उन लोगोने अपनी करतूतोसे उसे नाराज कर दिया है। जभी तो ईश्वरने अपने क्रोधमे तुम्हारी तमाम जातिको तितर-बितर कर डाला है । अब अपने मजहबमें औरोको तुम बढा भी नही सकते हो, और उसके माननेवाले जहा-तहा थोडे-ही-बहुत रहते जा रहे है। परमात्मा किसी खास जातिके साथ पक्षपात नही करता। हा, रोमन-चर्चको उसने विशेष प्रकाश दिया है और जिसका कल्याण होनेवाला है उसको वह उस चर्चकी शरण भेज देता है । इससे रोमन-चर्चके सिवाय मुक्ति-का उपाय दूसरा नही है ।"

वहा एक प्रोटेस्टेट भी थे । रोमन पादरीके ये वचन सुनकर उनका चेहरा पीला हो आया और रोमन पादरीकी तरफ मुडकर वह बोले—

"कैसे कहते हो कि मुक्ति तुम्हारे धर्ममें है । असलमे रक्षा और मुक्ति उन्हीको मिलेगी जो ईशुके उपदेशोको मनसे और सचाईसे मानेगे और उसके अनुसार चलेगे ।"

उस समय एक तुर्क, जो सूरतमे ही चुगी दफ्तरमे अफसर थे, चुरट पीते वहीं

बैठे थे, उन दोनो पादरियोंकी तरफ उन्होने ऐसे देखा मानो दोनो भ्रममें हैं। और बोले—

"रोमन या दूसरे ईसाई धर्ममे आपका ईमान रखना अब फिजूल है। बारह सौ बरस हुए कि उसकी जगह एक सच्चे मजहबने ले ली है। उसके नबी हजरत मोहम्मदपर ईमान लाइए। वह मजहब है इस्लाम। आप देखते ही है कि इस्लाम किस तरह दोनो मुल्क योरप और एशियामे बढता जा रहा है। यहातक कि इल्मो-हुनरके मरकज चीनमे भी वह फैल रहा है। आपने अभी खुद कहा था कि खुदा ने यहूदियोका साथ छोड दिया है। यह इससे भी साबित है कि यहूदियोकी छीछा-लेदर हो रही है और उनका मजहब फल नही रहा है। तो फिर इस्लामकी सचाई-का आपको इकबाल करना होगा, क्योकि उसको दूर-दराजतक फतह हासिल हो रही है। आखिर बहिश्तमे उन्हींको जगह होगी जो मोमिन होगे। और मोहम्मदको खुदाका आखिरी पैगबर मानकर उसपर ईमान लावेगे। उनमें भी वह जो उमरके पैरोकार होगे, अलीके नही। अलीको माननेवाले काफिर है।"

इसके जवाबमें उस फारसी आलिमने कुछ कहना चाहा, क्योकि वह अलीके तबकेके थे। लेकिन तबतक तो वहा उपस्थित नाना मत-सप्रदायोके लोगोंके बीच खासा विवाद छिड़ आया था। अबोसीनियाके ईसाई वहा थे और तिब्बतके लामा, इस्माईली और अग्निपूजक सब-के-सब परमात्माके बारेमें और उसकी सच्ची राह-पूजाके बारेमे झगड़ रहे थे। सबका आग्रह था कि उन्हीकी जाति और देशको सच्चे ईश्वरका ज्ञान मिला है और उन्हीकी विधि सच्ची है।

बहस हो रही थी और चिल्लाहट मची थी। पर उनके बीच एक महाशय चुप थे। वह चीन देशके थे और कनफ्यूशसमे श्रद्धा रखते थे। एक कोनेमें अपने शात बैठे थे और विवादमे भाग नही ले रहे थे। चुपचाप वह चाय पी रहे थे और दूसरे लोग जो बोल रहे थे सबकी सुनते थे पर अपनी कुछ नहीं कहते थे।

उस तुर्कने उन सज्जनको इस तरह बैठे देखा और बोला—"ऐ चीनी दोस्त, जो मैंने कहा उम्मीद है उसकी ताईद मुझे तुमसे मिलेगी। तुम चुप बाधे बैठे हो, लेकिन अगर बोले तो मै जानता हूँ कि मेरी रायकी ताईद ही करोगे। तुम्हारे

मुल्कके व्यापारी जो चुगीके मामलेमे मेरी मदद लेने आते है, उनका कहना है कि चीनमे अगर्चे बहुतेरे मत चले, लेकिन चीनके लोगोंको इस्लाम ही सबसे बढकर मालूम हुआ और वे खुशीसे उसे कबूल करते जा रहे है । मेरी बातकी तुम ताईद करोगे मै जानता हूँ । इससे बोलो कि खुदा और उनके सच्चे रसूलकी बाबत तुम्हारा क्या खयाल है ।"

दूसरे लोगोंने भी उन चीनी आदमीकी तरफ मुडकर कहा—"हा, हा, बताओ कि इस विषयमे तुम क्या सोचते हो ?"

कनफ्यूशसके अनुयायी उन चीनी सज्जनने आखे बद की, जैसे अपनी ही थाह ली । फिर आखे खोली, और अपनी चौड़ी आस्तीनोमेसे बाहर निकाल दोनो हाथोको अपनी छातीपर ले लिया और शात और सौम्य वाणीमे उन्होंने कहना आरंभ किया—

"भाइयो मुझे मालूम होता है कि बडा कारण अहकार है । वही धर्म-विश्वासके मामलोमे हमको आपसमें सहमत होनेसे रोकता है । आप लोग मेहरबानी करे और आपकी इच्छा हो तो एक कहानी कहकर मै इस बातको साफ करना चाहूँगा ।

"हम लोग यहा चीनसे एक अग्रेजी जहाजपर सवार होकर आये है। वह जहाज दुनियाभरका चक्कर लगा चुका है । राहमे पानीके लिए हमे ठहरना था। सो सुमात्रा द्वीपके पूरबी किनारेपर हम उतरे । दुपहरीका वक्त था और ऊपर धूप थी । इससे उतरकर हम कुछ जने समुद्रके किनारे नारियलोकी छाहमें बैठ गये । पास ही वहाके लोगोंका गाव था । हम उस समय जगह-जगह और मुल्क-मुल्कके आदमी वहा जमा थे ।

"बैठे हुए थे कि एक अधा आदमी उसी तरफ आया। पीछे मालूम हुआ कि लगातार बहुत काल सूरजकी तरफ देखते रहनेसे वह आदमी अधा हुआ है ।

"असलमें आख गाडकर वह सूरजका भेद और उसकी ज्योतिको अपनी समझमें पकड़ रखना चाहता था। उस कोशिशमे वह एक अर्सेतक रहा । सदा उधर ही ताका करता । नतीजा यह हुआ कि सूरजकी रोशनीसे उसकी आखोका नुकसान हुआ और वह अधा हो गया ।

"अधा होनेपर तो और भी वह अपने मनमें तर्क चलाने लगा। सोचता कि सूरजकी रोशनी कोई तरल पदार्थ तो है नही, क्योकि तरल होती तो इस बरतनसे उस बरतनमे ढाली जा सकती और पानीकी भांति हवासे वह यहा-वहा भी हिलती-डुलती दीखती। और न वह आग है। आग होती तो पानी उसे बुझा सकता। न ही वह चेतन आत्मा है, क्योंकि आत्मा तो अदृश्य है और रोशनी आखोसे दीखती है। फिर न वह कोई जड वस्तु है, क्योंकि उसे उठा-पकड नही सकते। और यदि सूरजकी रोशनी तरल नही है, अग्नि अथवा चेतन या जड भी नही है तो सिद्ध हुआ कि वह है ही नही। अत वह असिद्ध है।

"इस तरह उसका तर्क चलने लगा। और सदा सूरजकी तरफ देखने और बुद्धि लगाये रखनेसे उसने अपनी आख भी और बुद्धि भी दोनोंको खो दिया। सो जब वह अधा हो गया तब तो उसे और पक्का हो आया कि सूरजकी रोशनी कोई सत्-वस्तु ही नही है।

"इस अधे आदमीके साथ एक दास भी था। उसने मालिकको नारियलके पेडोकी छाहमे बिठा दिया था और जमीनपरसे एक नारियल उठाकर रातके लिए रोशनीका इतजाम करने लगा। बटकर नारियलकी जटाकी उसने बत्ती बनाई; गिरीको कुचलकर उसीके खोलमे तेल निकाल लिया और बत्तीको उस तेलमे भिगोकर रख दिया।

"वह दास वहा बैठा जब यह कर रहा था तभी उसका अधा मालिक उससे बोला कि क्यो रे, मैने तुझे ठीक कहा था न कि सूरज नही है। देखो यह कैसा गुप्प अंधेरा चारो तरफ है। फिर भी लोग कहते हैं कि सूरज है . . अगर है तो भला क्या है ?

"दास बोला—'यह तो मै नही जानता कि सूरज क्या है। सो जाननेसे मुझे है भी क्या। पर रोशनी क्या है यह तो मै जानता ही हूँ। यह मैने अपना दीया तैयार कर लिया है। उसके सहारे उगली पकड़कर मै आपको राह दिखानेके काम भी आ जाऊगा और रातको झोपड़ीमे उससे जो चीज आप चाहें पाकर दे भी सकूंगा।'

"इतना कहकर उसने अपने नारियलके दीपकको ऊपर उठा लिया। बोला—

" 'सो मेरा तो यही सूरज है ।'

"पास ही वहां एक लंगड़ा आदमी भी बैसाखी रखे बैठा था । यह सुनकर वह हस दिया और अधे आदमीसे बोला—'मालूम होता है तुम जनमके अधे हो। तभी तो नही जानते सूरज क्या है । मै बताता हू क्या है। वह एक आगका गोला है । हर सबेरे समदरमेसे उगता है और शाम हमारे टापकी पहाड़ियोमे जाकर छिप जाता है । हम यह रोज देखते है । आखे होती तो तुम भी देख लेते।'

"यह बात-चीत एक मछुआ मल्लाह भी सुन रहा था । वह लगडे आदमीसे बोला कि दीखता है तुम अपने इस छोटेसे टापूसे बाहर कभी कही गये नही हो। जो तुम लगडे न होते और मेरी तरह डोगी लेकर बाहर निकल सकते तो देखते कि सूरज तुम्हारी पहाडियोमे जाकर नही छिपता है। लेकिन जैसे कि हर सवेरे वह निकलता समदरसे है, वैसे ही हर रात डूबता भी समंदरमे ही है । जो कह रहा हूँ उसको तुम बिल्कुल सच्ची बात मानना । क्योंकि हर रोज मै यह अपनी आखों देखता हूँ।

"उस समय हमारे दलमे एक हिंदुस्तानी भी थे । बातके बीचमे पडकर वह बोले—'कोई समझदार आदमी तो नासमझोकी ऐसी बात कर नही सकता । तुमने जो कहा उसपर मुझे अचरज होता है । आगका गोला पानीमे उतरे तो भला बिना बुझे कैसे रहेगा ? असलमे वह गोला नही है, न आग है । वह तो एक देवता है जो सात घोडोके रथमे बैठकर स्वर्ण-पर्वत मेरुकी प्रदक्षिणा करते है । कभी राहु और केतु नामके असुर उन देवतापर चढाई करते है और ग्रस लेते है । तब दुनियापर अधकार छा जाता है। लेकिन हमारे पडित-पुरोहित होम-स्तवन आदि करते है । उससे देवता मुक्त हो जाते है और फिर प्रकाश देने लगते है। तुम जैसे अनजान लोग जो बस अपने द्वीपके इर्द-गिर्द रहते है और आगेका कुछ नही जानते, वही ऐसी बचपनकी बात कह सकते है कि सूरज उन्हीके देशके लिए होता है ।'

"एक मिस्री सज्जन भी वहा मौजूद थे । उनका पहले एक अपना जहाज था । अपनी बारी लेकर वह बोले—'तुम्हारी बात भी सही नही है। सूरज कोई देवता नही है । और न तुम्हारे हिंदुस्तानके या तुम्हारे स्वर्ण-पर्वतके चारों

तरफ ही घूमता है । मै दूर-दूर घूमा हूं । काले सागर गया हूं, अरबका किनारा मेरा देखा हैं, मेडागास्कर और फिलिपाइन टापू भी मैने घूमे हैं। सूरज हिंदुस्तान-को ही नही सारी धरतीको रोशनी देता है । कोई एक पहाडका चक्कर वह नहीं करता, पर पूरबमें दूर कही जापानके टापूके पार वह उगता है और पच्छिममें उधर इंग्लिस्तानके द्वीपोके परली तरफ कही छिपता है । जभी तो जापानके लोग अपने देशको 'निपन' कहते हैं, जिसका मतलब होता है सूर्योदय । मै इस बातको पूरे भरोसेसे कह सकता हूँ, क्योकि अव्वल तो मैने खुद कम नही देखा-जाना है, और फिर अपने दादासे सुनकर भी मै बहुत जानता हूँ। ओरसे छोरतक समदर तमाम हमारे बाबाका छाना हुआ था।'

"अभी वह मिस्री सज्जन और आगे भी कहते । लेकिन हमारे जहाजके एक अंग्रेजी नाविक जो वही थे, बीचमें काटकर बोलने लगे—

" 'असलमें तो हमारे इग्लैंड देशके रहनेवाले लोगोसे सूरजकी गतिके बारेमें ज्यादह और कोई नही जान सकता। हमारे मुल्कका बच्चा-बच्चा जानता है कि सूरज न कहींसे निकलता है, न कही छिपता है । वह तो सदा पृथ्वीके चारो तरफ घूमता रहता है । इसका पक्का सबूत यह है कि हमने धरतीका पूरा चक्कर लगाया है, पर सूरजसे तो जाकर हम कही नही टकराये। जहा गये, सूरज सरेवे दीखने लगता और रातको छिप जाता । ठीक जैसे कि यहा होता है।'

"यह कहकर वह अंग्रेज छड़ीसे रेतमें नकशा बनाकर अपनी बात समझाने लगे कि किस तरह सरज धरतीके चारो तरफ आसमानमें चक्कर लगाता है । लेकिन वह साफ-साफ नही समझा सके । इससे जहाजके बडे अफसरको बताकर बोले कि वह मुझसे ज्यादह इन बातोको जानते है । वह ठीक-ठीक आपको समझा सकेंगे ।

"वह सज्जन समझदार और बुर्दबार थे । अबतक चुपचाप सब सुने जा रहे थे । खुद कहे जानेसे पहले वह नही बोले थे । अब सबका उनसे अनुरोध होने लगा । इसलिए बोले—

" 'आप सब लोग एक-दूसरेको असलमें बरगला रहे हैं और खुद भी धोखा

खा रहे हैं। सूरज धरतीके चारो तरफ नही घूमता, बल्कि धरती उसके चारों तरफ घूमती है। इस सफरमें वह खुद भी अपनी धुरीपर घूमती जाती है। उसका एक चक्कर चौबीस घटेमें पूरा होता है। इतने समयमें न सिर्फ जापान, फिलिपाइन या जहा हम बैठे है, वह सुमात्राका टापू ही सूरजके सामने आ जाते है, बल्कि अफ्रीका, योरप, अमरीका या और जो मुल्क हो उस सूरजके सामने हो रहते है। सूरज किसी एक पहाड या टापू या एक समदर या एक धरतीके लिए नही चमकता। बल्कि हमारी पृथ्वीकी तरह और ग्रह है, उनको भी वह चमकाता है। अगर आप अपने पैरके नीचेकी धरतीके बजाय ऊपर आसमानपर भी निगाह रक्खा करें तो आप सभी लोग यह आसानीसे समझ सकते है। तब यह माननेकी जरूरत आपको न रहेगी कि सूरज आपके लिए या आप हीके देशके लिए उगता और प्रकाश करता है।'

"जगतके देश-देश देखे हुए और ऊपर आसमानपर भी निगाह रखनेवाले उन अनुभवी ज्ञानीने उनको यह सद्बोध दिया।"

कन्फ्यूशसके चेले वह चीनी महोदय ऊपरकी कहानी सुनाकर अतमें बोले—"इस तरह मत-मतातरके बारेमें यह अहकार ही है जो हममें फूट डालता है और भूल करवाता है। सूरजकी उपमासे ईश्वरको भी जान लीजिए। सब लोग अपना-अपना परमात्मा बनाना चाहते है। या कम-से-कम अपने देश-जातिके लिए एक विशेष ईश्वरको मानना चाहते है। हरेक मुल्क और जातिके लोग उस ईश्वरको अपने मदिर-गिरजोमें घेरकर बाध लेना चाहते है, जो सारे ब्रह्माडसे भी बडा है और कुछ जिससे खाली नही है।

"क्या आदमीका बनाया कोई मदिर-गिरजा इस कुदरतके मदिरकी बराबरी कर सकता है? खुद भगवानने यह जगत सिरजा है कि सब लोग यहा एक रहे और सिरजनहार मानें। अरे, आदमीके तमाम देवालय उसीकी नकल तो है। और भगवानका आलय स्वय यह जगत है। मदिर क्या होता है? उसमें आगन होता है, छत होती है, दीपक होते है, मूर्ति-चित्र होते है। वहा उपदेश लिखे मिलते है, शास्त्र पुराण रक्खे होते है। वेदी होती है, पुजारी होते है और पुजापेकी भेंट-पूजा चढती है। लेकिन किस देवालयका समदर जैसा खुला आगन है?

आकाशके चदोए जैसा किस मदिरका कलश है ? सूरज, चाद और तारे किसके प्रकाश-दीप है ? सजीव भक्तिसे भीगे उदार सतोके समान स्फूर्तिदायक चित्र-मूर्तिया और कहा है ? आदेश और आलेख्य ईश्वरकी महिमाके ऐसे सुलभ और कहा है जैसे इस जगतीपर ? यहा हर कही तो उस दयाधामकी दयाके अनुकपाके स्मृति-चिन्ह है । और कहा वह नीति-शास्त्र है जिसका वचन आदमीके भीतरकी वाणी जितना स्पष्ट और अविरोधी है ? कौन पूजक और कौन पुजापा उस आत्माहुतिमे बढकर है जो इस पृथ्वीपर स्त्री-पुरुष नित्य एक-दूसरेके प्रति दे रहे और देकर जी रहे है ? और कौन वेदी है जो सत्पुरषके हृदयकी वेदीकी उपमा में ठहर सके, कि जहाका चढा उपहार स्वय भगवान ग्रहण करते है ?

"ईश-कल्पना जितनी ही ऊची उठती जायगी उतना सद्ज्ञान बढेगा। उस ज्ञानके साथ-साथ मनुष्य स्वय उत्तरोत्तर वैसा ही होता जायगा। उसी महामहिमकी भाति कल्याणमय, दयामय और प्रेममय । फिर वह जीवमात्रको उसीकी भाति स्नेह करेगा ।

"इसलिए सब जगह जो उसीका प्रकाश और उसीकी महिमा देखता है, वह किसीकी त्रुटि नही निकालेगा, न किसीको हीन मानेगा । जो उस ज्योतिकी बस एक रेख लेकर, मूर्ति बना उसीमें भगवानको देख लेता है, उसकी श्रद्धा भी स्खलित नही करेगा। न तो वह उस नास्तिकको हीन भावसे देखेगा जो दुर्दैवसे ही अधा होकर सूरजकी रोशनीसे अकस्मात वचित बन गया है।"

इन शब्दोमें कन्फ्यूशसके शिष्य चीनके उस सत्पुरुषने अपनी मान्यता प्रकट की। सुनकर वहा मौजूद सब आदमी शात और गभीर हो आये और मत-मतातरके बारेमें अपना सब विवाद भूल गये।

: ४ :

देर हो अंधेर नहीं

पाटनपुर नगरमें हरजीतराय नामका एक व्यापारी रहता था। उसके दो दुकानें थी और रहनेका अपना निजका घर। हरजीत जवान था। स्वस्थ शरीर, बाल घघराले, हसता चेहरा। विनोदी स्वभावका था और गानेका उसे

शौक था। उमरपर उसे शराबका चस्का भी लगा था और पैसा होनेपर उसे रगरेली सूझती थी। लेकिन शादी हो गई, तो उसकी आदतें धीमे-धीमे बदल गई। खास मौकोकी बात दूसरी, नही तो शराब उसने अब छोड दी थी।

एक बार वह कातकीके मेलेको जा रहा था। जाने लगा और पत्नीसे विदा ले रहा था कि वह बोली, "देखो, आज न जाओ, मुझे बुरा सपना दीखा है।"

हरजीत हस दिया। बोला, "मै जानता हूँ कि तुमको यह डर है कि मै मेलेमें गया तो बहक जाऊंगा और पैसा बरबाद करके आऊगा। यही न?"

बीबीने कहा कि ठीक मालूम नही कि यही डर है कि दूसरा है। लेकिन मुझे बुरा सपना हुआ है। सपनेमें दीखा कि तुम जब लौटे और टोपी उतारी तो सारे बाल तुम्हारे सफेद-फक पडे हुए है।

हरजीत और भी हसा। बोला, "यह तो और अच्छे भाग्यका सपना है। देख लेना कि इसका फल होगा कि मै जितना माल ले जाता हूँ, वह सब बिक जायगा और तुम्हारे लिए तरह-तरहकी सौगात लेकर लौटूगा।"

इस भाति उसने परिवारसे राजी-खुशी विदा ली और चल दिया।

आधे पडाव चलनेपर उसे अपनी जान-पहचानका एक और व्यापारी मिला। वे दोनो एक साथ सरायमें ठहरे। साथ ही खाया-पीया और फिर पास-पासके कमरोमें सोने चले गये।

सवेरे देरतक सोनेकी हरजीतकी आदत नही थी। और ठड-ठडमें रास्ता चलना भी आसान होता है। इसलिए तडका फूटनेसे पहले उसने गाडीवानको जगाया। कहा कि गाडी जोतो और चलो।

यह कहकर वह सरायके मालिकके पास गया जो वही पिछवाडे रहता था। सरायवालेका लेना चुकाया, उसे धन्यवाद दिया और हरजीत अपने सफरपर आगे बढा।

कोई दसेक कोस चलनेपर उसने बैल खोले कि कुछ उन्हें खिला-पिला दे। खुद भी जरा आराम किया। सुस्तानेके बाद फिर सरायवाले को चायके लिए कहकर अपनी बसरी निकाल बजाने लगा।

तभी एक इक्का आकर वहा रुका। इक्का सजा-बजा था और घोडेके

गलेमें घंटी बज रही थी। उसमेंसे एक अफसर उतरे, पीछे दो सिपाही। आकर अफसरने हरजीतसे सवाल पूछने शुरू किये कि तुम कौन हो, कहासे आये हो ?

हरजीतने सवालोका माकूल जवाब दिया और कहा—"आइये, चायमें मेरा साथ दीजिएगा ?"

लेकिन अफसर निमत्रणको अनसुना करके अपनी जिरहपर कायम रहे। "पिछली रात तुम कहा थे ? अकेले थे ? या और कोई व्यापारी साथ था ? आज सवेरे वह दूसरा आदमी तुम्हे मिला ? अधेरे-तडके तुम सरायसे क्यो चल दिये ?" इत्यादि—

हरजीत अचरजमें था कि ये सब प्रश्न उससे क्यो किये जा रहे है ? तो भी जैसा था, वह सब बताता चला गया। फिर उसने कहा, "आप तो मुझसे इस तरह सवाल-पर-सवाल पूछ रहे है जैसे मै कोई चोर-डाकू हू। अपने कामसे मै जा रहा हू, मुझसे ऐसे और सवाल पूछनेकी जरूरत नही है।"

अफसरने इसपर साथके सिपाहियोको पास बुला लिया। कहा, "मै इस जिलेका पुलिस अफसर हू। सवाल मै इसलिए पूछता हू कि जिसके साथ तुम कल रात ठहरे थे, उसका आज गला कटा हुआ पाया गया है। अब हम तुम्हारी तलाशी लेंगे।"

इसपर वे तीनो कमरेमें आ गये और अफसर-सिपाही सबने मिलकर हरजीतका सामान खोलना और खोजना शुरू किया और देखते क्या है कि सामानमेंसे एक छुरा बरामद हुआ !

अफसरने कहा—"यह किसका है ?"

हरजीत देखता रह गया। खूनसे दागी उस छुरेको अपने सामानमेंसे निकलते देखकर वह अचकचा गया था। वह डर गया।

"इस चाकूपर खूनके निशान कैसे है ?"

हरजीतने जवाब देनेकी कोशिश की। लेकिन शब्द उसके मुहसे ठीक नही निकले। लडखडाती आवाजमें कहा, "मै—मेरा नही—मै नही जानता।"

पुलिस-अफसरने कहा, "इसी सवेरे अपने बिस्तरपर वह व्यापारी मरा पाया गया है। किसीने गला काट दिया है। एक तुम्ही हो सकते हो जिसने यह

काम किया। मकान अदरसे बद था और तुम्हारे सिवाय वहा और कोई न था। फिर तुम्हारे सामानमेंसे यह छुरा भी निकलता है । इसपर खूनके निशान तक मौजूद हैं। तिसपर तुम्हारा चेहरा और तरीका भी भेद खोले दे रहा है । इसलिए सच कहो कि तुमने उसे कैसे मारा और कितना रुपया तुम्हारे हाथ लगा ?"

हरजीतने शपथ-पूर्वक कहा, "यह मेरा काम नही है। शामको साथ ब्यालू करनेके बाद मैंने उस व्यापारीको फिर देखा तक नही। मेरे पास अपने पाच हजार रुपयोके अलावा और कुछ नही है । यह चाकू मेरा नही है ।"

लेकिन यह कहते हुए उसकी जबान लडखडाती थी, चेहरा पीला था और डरमे वह ऐसा काप रहा था कि मुजरिम ही हो।

पुलिस-अफसरने सिपाहियोको हुक्म दिया कि इसको बाधकर गाडीमें ले लो।

सिपाहियोने हाथ-पैर बाधकर उसे गाडीमें पटक दिया। हरजीतके आसू आ गये और उसने प्रार्थनाकी शरण ली । उसके पास न माल रहा, न रकम। सब छीनकर उसे नजदीक कस्बेकी हवालातमें बद होने भेज दिया गया । पाटन-पुरमे उसकी बाबत पूछताछ हुई कि वह कैसे चाल-चलनका आदमी है । वहाके व्यापारियोने और दूसरे लोगोने बताया कि पहले तो वह पिया करता था और वक्त मौजमें गवाता था। लेकिन वह आदमी भला है और इधर आकर राह-रास्तपर चलता है । खैर, मुकदमा चला और अजबपुरके एक व्यापारीकी हत्या करने, और उसके आठ हजार रुपये चुरानेका आरोप उसके सिर लगा ।

हरजीतकी स्त्री सुनकर शोकमें बेसुध-सी हो गई। उसे समझ न पडा कि कैसे वह अपने कानोपर विश्वास करे । बच्चे उसके सब छोटे थे। एक तो दूध पीती बच्ची थी। सबको साथ ले वह शहरमें गई जहा उसका पति जेलमें था। पहले तो उसे मुलाकातकी इजाजत न मिली। बहुत उनहार करने और कोशिश करनेसे आखिर इजाजत उसे मिली और वह पतिके पास ले जाई गई। जेलके कपडो और बेडियोमें चोर-डाकुओके साथ बद जब उसने अपने पतिको देखा तो वह सह न सकी और धडामसे गिरी। काफी देर बाद उसे होश हुआ। तब उसने बच्चेको गोदमें खीच पतिके पास बैठकर घर-बारकी बातचीत शुरू की। उसने पूछा कि यह क्या हुआ ?

हरजीतने जो हुआ था सब बतला दिया ।

पूछने लगी—"अब क्या करना चाहिए ?"

"राजाके पास अर्जी भेजनी चाहिए कि एक निरपराध आदमीकी मौतसे रक्षा की जाय।"

स्त्रीने कहा, "अर्जी तो मैने भेजी थी । लेकिन वह मजूर नही हुई।"

हरजीत इसका जवाब नही दे सका। आखें नीची डालकर देखता रहा।

स्त्रीने कहा, "सुनते हो, सपना वह मेरा बेमतलब नही था कि मैने एकदम तुम्हारे बाल सफेद देखे थे । याद है ? उस रोज तुम्हे चलना नही चाहिए था। लेकिन—"

आगे वह खुद कुछ नही कह सकी । फिर पतिके बालोमें उगली फिराते हुए बोली, "मेरे स्वामी, अपनी स्त्रीसे देखो झूठ न कहना। सच कहना—तुमने हत्या नही की ?"

"ओ, सो तुम भी मुझे सदेह करती हो !" कहकर हाथोमें मुहको छिपा हरजीत फूटकर रोने लगा।

उस वक्त सिपाहीने आकर कहा कि मुलाकातका वक्त पूरा होगया। अब चलो।

स्त्री-बच्चे चल दिये और हरजीतने आखिरी बार अपने परिवारको हसरतसे देखकर विदा किया ।

उनके चले जानेपर हरजीतको ध्यान हुआ कि सब तरफ क्या-क्या कहा जा रहा है । और तो और, स्त्री तकने उसपर शुबह किया। यह यादकर उसने मनमें धार लिया कि ईश्वर ही बस सचाई जानता है। उसीसे अब तो प्रार्थना करनी चाहिए। उसीसे दयाकी आशा रखनी चाहिए। और कुछ नही। यह सोच हरजीतने फिर कोई दरख्वास्त नही की। आशा-अभिलाषा उसने छोड दी और ईश्वरकी प्रार्थनामें लीन रहने लगा।

उसे कोडोकी और डामुलकी सजा मिली। सो पहले उसे भीगे बेतमे कोडे लगे । जब उसके जख्म भर आये तो और कैदियोके साथ उसे फिर डामुल भेज दिया गया।

छब्बीस बरस वह वहा कालेपानीमें कैदी रहा। इस बीच बाल उसके रुईसे

सफेद हो गये । मैले सनके-से रंगकी दाढी बढ आई। हसी-खुशी उसकी उड गई। कमर झुक आई। अब धीमे चलता था, थोडा बोलता था, और हसता कभी न था। अक्सर प्रार्थनामें रहता था। और कही उसे आस न थी।

जेलमें उसने जूते गाठना सीख लिया था। उससे कुछ पैसोकी बचत भी हो गई थी । उन पैसोसे उसने 'सतोकी जीवनी' नामकी किताब मगा ली थी । जेलमें पढने लायक चादना रहता कि वह उस किताबको पढने लगता और पढता रहता। इतवारके दिन वह भजन-पद गाकर सुनाता । उसकी आवाज अब भी खासी थी और बडी भाव-भक्तीके साथ वह पद कहता था।

जेल-अफसर हरजीतको चाहते थे । वह सीधा, नेक और विनयी था। और कैदी भी उसकी इज्जत करते थे । वे उसे 'दादा' या 'भगतजी' कहा करते थे । जब उन्हें जेलवालोसे किसी बातके लिए दरख्वास्त करनी होती, या कुछ कहना-सुनना होता तो हरजीतको ही अपना मुखिया बनाते थे। और जब आपस में झगडा होता, तब भी उसीके पास आकर निबटारा और फैसला मागते थे।

घरसे हरजीतको कोई खबर नही मिली। उसे पता नही था कि उसकी बीबी-बच्चे जीते भी है कि नही ।

एक दिन उनकी जेलमें कैदियोकी एक नई टुकडी आई। सो शामको पुराने कैदी नयेवालोके आस-पास जमा हो बैठे। पूछने लगे कि कहा-कहासे आये हो? और कितनी-कितनी सजा लाये हो? और किस-किस जुर्मकी सजाए है? इत्यादि । इन्ही सबके बीच हरजीत भी था । वह नये आनेवालोके पास बैठा था और निगाह नीची डाले, जो कहा जाता, सुन रहा था।

नये कैदियोमेंसे एक आदमी अपना किस्सा बयान कर रहा था। वह लम्बा, तगडा कोई साठ बरसका आदमी था। दाढी उसकी बारीक छटी थी । मजेमें आप-बीती कह रहा था—

"दोस्तो, मैं बताता हूँ। बात यह कि मैंने गाडीमेंसे खोलकर एक घोडा ले लिया । सो उसके लिए मै पकडा गया और चोरीका इल्जाम लगा । मैंने कहा कि वाह, मैंने घर आनेके लिए घोडा खोला था ताकि जल्दी पहुंच जाऊँ। घर आकर मैंने उसे पास भी नही रक्खा, खुला छोड दिया। तिसपर वह गाडी-

वाला आदमी मेरा दोस्त था। इसलिए मैंने अदालतसे कहा, 'इसमें कोई बुराई नही है।'

"उन्होने कहा, 'चुप रहो। तुमने चोरी की है।'

"लेकिन कहा और कैसे चोरी की है, यह वह साबित न कर सके। एक बार हा, मैंने सचमुच जुर्म किया था और उसके लिए कालेपानी की सजा कभीकी मिल जानी चाहिए थी। लेकिन मरे उस जुर्मका किसीको पता ही न चला और मैं नही पकडा गया। और अब यहा आया तो एक न-कुछ बातके लिए ... लेकिन दोस्तो, मैं झूठ बकता हूं। मैं यहा पहले भी आ चुका हू। लेकिन ज्यादा दिन नही ठहरा।"

एकने पूछा—"हो कहाके ?"

"पाटनपुर मेरा गाव है। वतन मेरा वही है। नाम बलवत। वैसे मुझे 'बल्ली-बल्ली' कहते है।"

हरजीतने पाटनपुरका नाम सुनकर सिर उठाया। पूछा, "तुम पाटनपुरके राय घरानेके लोगोको जानते हो? उनका क्या हाल है? क्या उनमें कोई अभी जीता है?"

"क्या पूछा, जानता हू? खूब, जानूगा क्यो नही। वे मालदार लोग हैं। हा, उनका बाप यही-कही डामुलमें हम चोर-डाकुओकी तरह कैद है। लेकिन दादा, तुम यहा कैसे आये?"

हरजीतको अपने दुर्भाग्यकी कथा कहना नही रुचा। उसने लबी सास ली। बोला, "छब्बीस सालसे यही अपने पापकी सजा काट रहा हू।"

बलवतने कहा, "पाप क्या?"

हरजीतरायने कहा, "अह, छोडो भी। कुछ तो किया ही होगा।"

हरजीत और कुछ न कहता। लेकिन साथियोने बल्लीको बताया कि हरजीतराय क्योकर यहा जेलमें पहुचे। किसी हत्यारेने एक सौदागरकी हत्या की और चाकू इनके सामानमें छिपा दिया। इस तरह बेकसूर इन्हें सजा मिली।

यह सुनकर बलवत हरजीतरायकी तरफ देख उठा। फिर घुटनोपर हाथ

मारकर बोला कि यह खूब रहो ! वाह, यह एक ही रही ! लेकिन दादा, तुम बता कितने गये हो ?

और लोग पूछन लगे कि तुमको इनके बारेमे इतना अचभा क्यो हो रहा है, जी ? क्या तुमने पहले इनको कही देखा था ? कहा देखा ?

लेकिन बल्लीने जवाब नही दिया । उसने सिर्फ यही कहा कि दोस्तो, है सजोगकी बात कि हम लोग यहा आकर मिले !

इन शब्दोसे हरजीतको भी आश्चर्य हुआ । मनमें उसके गुमान हुआ कि यह आदमी जानता है कि किसने उस व्यापारीको मारा था। पूछा, "बलवत्त, शायद तुमने उस मामलेकी बाबत सुना होगा । हा, हो सकता है कि तुमने मुझे पहले देखा भी हो।"

"सुनता कैसे नही ? दुनिया बातोसे भरी है । कान किसीके बद थोडे रह सकते है । लेकिन एक मुद्दत हुई। अब क्या याद कि मैने क्या सुना था।"

हरजीतने पूछा कि शायद तुमने सुना हो कि किसने व्यापारीका खून किया ?

बलवंत इसपर हसने लगा। बोला, "क्यो, जिसके सामानमेंसे छुरा निकला, वही तो हत्यारा । अगर किसी औरने वहा रख दिया तो वह जबतक पकडा न जाय, मुजरिम कैसा ? तिसपर दूसरा कोई तुम्हारे थैलेमें चाकू रख कैसे सकता था, जब कि थैला तुम्हारे सिरके नीचे था ! ऐसे तुम जग न जाते ?"

हरजीतको यह सुनकर पक्का हो गया कि इसी आदमीने वह हत्या की होगी। इसपर उसका जी खराब हो आया और उठकर वह वहासे चला गया।

सारी रात वह जागता रहा । उसको बहुत कष्ट था। कल पलको न थी। तरह-तरहकी तस्वीरें उसके मनमें आती थी। स्त्रीका चेहरा आया, जब वह मेलेमें जानेके लिए उससे विदा ले रहा था। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह सामने जीती-जागती मौजूद हो । ऐसी प्रत्यक्ष, कि उसे छू सकता हो। मानो उसकी हसीकी आवाज और बातचीतका एक-एक शब्द सुन पाता हो। फिर उसके मनमें बच्चोकी तस्वीरें आई। फूलसे बच्चे ! एक बडेसे चोगेमें दुबका था, दूसरा माका दूध पी रहा था। अनतर वह खुद अपनेको देखने लगा, जैसा कि हुआ करता था । जवान, खुश, और तदुरुस्त और खूबसूरत । उसे याद

आया कि सरायमें कैसा मगन मैं बंसी बजा रहा था। चिताकी रेख छू नही गई थी कि तभी पकड लिया गया। फिर वह जगह और दृश्य याद आया जहा कोडे लगे थे। अफसर लोग और कुछ कैदी इर्द-गिर्द खडे थे। इसके बाद इन जेलके छब्बीस बरसोका समूचा जीवन उसकी आखोके आगे फिर गया। वहाकी मुसीबतें, कुसग, बेडिया और समयसे पहले उसपर आ उतरा बुढापा। इस सबको यादकर उसका जी भारी हो आया। उसे बडी व्यथा हुई, ऐसी कि मौत मागनेकी इच्छा हुई।

"और यह सब उस दुष्टके कर्म है।" हरजीत सोचने लगा। उस बलवतके खिलाफ उसे बडा गुस्सा आया। मनमें होने लगा कि चाहे मरना पडे, पर उस बदमाशको फल देना चाहिए। वह रातभर प्रार्थना करता रहा, पर उसे शाति नही मिली। दिनमें वह बलवतके पाससे बचता रहा, न ऊपर नजर उठाई।

इस तरह दो हफ्ते निकल गये। रातको हरजीत सो न सकता था, उसे इतना त्रास था। समझ नही आता था कि क्या करूँ, क्या न करूँ?

एक रात जेलमें घूम रहा था कि उसे पास कहीसे मिटटी गिरती हुई मालूम हुई। वह रुका कि क्या है। इतनेमें देखता है कि एक तरफ दीवारके नीचेसे बलवतका मुह उझक आया है। हरजीतको देखकर बलवतका चेहरा डरसे राख हो गया। हरजीतने चाहा कि इस बातको दरगुजर कर दे। पर बलवतने बाहर निकलकर उसको हाथसे पकड लिया। कहा कि मैंने कोठरीमेंसे रास्ता खोद डाला है। रोज मिट्टीको जूतोमें रखकर कामपर बाहर जानेके वक्त इधर-उधर फेंक आया करता था। लेकिन अब तुम चुप रहो। हल्ला मत करना। चलो, तुम भी मेरे साथ निकल चलो। और अगर तुमने कुछ आवाज की तो मुझे पकडकर, चाहे मार-मारकर, वे फिर मेरी जान ही निकाल लें, लेकिन तुम्हे तो पहले ही खत्म कर दूगा।"

हरजीत अपने शत्रुको देखकर गुस्सेसे कापने लगा। उसने अपना हाथ झटककर अलग कर लिया। कहा—"मैं भागना नही चाहता और तुम अब क्या और मुझे खत्म करोगे। पहले ही सब कर चुके हो। और तुम्हारी खबर

देनेकी जो बात हो—तो मैं नही जानता। जो परमात्मा करेगा होगा।"

अगले दिन जब कैदी बाहर कामपर गये तो वार्डरोंने देखा कि एक जगह मिट्टीका ढेर-सा हो रहा है। किसी कैदीने ही ला-लाकर यहा डाली होगी, और कौन डालता ? जेल तलाश किया गया तो उस चोर रास्तेका भी पता लग गया। जेल सुपरिंटेंडेंट आये और सबसे पूछा कि किसकी यह करतूत है ? सबने इन्कार कर दिया कि हमें पता नही। जो जानते थे उन्होंने भी भेद नही दिया। क्योंकि बता देते तो बलवतकी जानकी खैर न थी। आखिर सुपरिंटेंडेंटने हरजीतसे पूछा। सुपरिंटेंडेंट भी उसका मान करते थे और मानते थे कि हरजीत सत्यवादी है।

"हरजीत, तुम सच्चे और नेक आदमी हो। ईश्वरसे डरते हो। सच बताओ कि यह काम किसका है ?"

बलवत ऐसा बना रहा जैसे उसे मतलब न हो। सुपरिंटेंडेंटपर उसने आख लगा रक्खी और भूले भी हरजीतकी तरफ नही देखा। साहबके सवालपर हर-जीतके हाथ कापने लगे और ओठ भी कापे। बहुत देरतक एक भी शब्द उसके मुहसे न निकला। एक बेर सोचा कि जिसने मेरी जिदगी बरबाद कर दी, उसे ही मैं किसलिए बचाऊ ? मैंने कितना दु ख उठाया है। अब मिलने दू उसे बदला। लेकिन फिर खयाल हुआ कि मै कह दूगा तो जेलवाले इसकी जानके गाहक हो जावेंगे। तिसपर क्या पता कि मेरा शक ही हो और बात सच न हो। जो हुआ सो हुआ, अब उसकी तकलीफसे क्या हाथ आनेवाला है ?

सुपरिंटेंडेंटने दुहराकर पूछा, "सुनते हो न, हरजीत ? तुम पापसे डरते हो। सच बताओ दीवारमें छेद किसने किया है ?"

हरजीतने बलवतकी तरफ देखा। फिर कहा, "मैं नही बता सकता हुजूर ! ईश्वरकी आज्ञा नही है कि मैं बताऊ। इसके लिए मेरा जो चाहे कीजिये, मैं आपके हाथमें हूँ।"

साहबने और जेल-दारोगाने बहुतेरी कोशिश की। लेकिन हरजीतने आगे कुछ नही कहा। अब क्या होता ? सो मामलेको वही छोड देना पडा।

उस रात जब हरजीत अपने बिस्तरपर पडा था और आखोमें नीद उतर चली थी कि कोई दबे पाव आया और चुपचाप पास बैठ गया। अधेरेमें भेदकर

हरजीतने पहचाना तो वह था बलवत।

हरजीत बोला, "अरे, और तुम मेरा क्या चाहते हो? तुम यहा क्यों आये हो? क्या जी नही भरा ?"

बलवंत चुप सुनता रहा। हरजीत उठकर बैठ गया और बोला, "क्या है तुम्हारी मशा? बुलाऊं पहरेदार?"

बलवत हरजीतके चरणोमें झुका जाने लगा। धीमेसे बोला, "हरजीत, भाई, मुझे माफ कर दो।"

"माफ किसलिए ?"

"मै गुनहगार हूं। पापी हू। मैने ही उस व्यापारीको मारा था और छुरा तुम्हारे सामानमें रख दिया था। मै तुम्हे भी मारना चाहता था, लेकिन बाहर शोर सुन, छुरा तुम्हारे सामानमें दुबका, खिडकीकी राह मै भाग गया था।"

हरजीत चुप था। उसे कुछ भी बोल न सूझा। बलवत धरतीपर घुटनोके बल आ बैठा। बोला, "हरजीत, भाई, मुझे माफ कर दो। मै सब इकबाल कर लूगा। कहूगा, मै हत्यारा हूँ। तब तुम छूट जाओगे। और घर जा सकोगे। हरजीत, देखो म तुम्हारे पैरो पडता हू।"

हरजीतने कहा, "बलवत, अब मै क्या कहू। कहना तो आसान है। पर यह छब्बीस बरस जाने मै क्या-क्या नही उठाता रहा हूँ। क्यो ? सब तुम्हारी वजहसे। लेकिन अब मै कहा जाऊगा। मेरी स्त्री स्वर्ग गई, बच्चे मुझे भूल चुके! कौन मुझे पहचानेगा? बलवत, अब मेरे पास जानेको कोई जगह नही है।"

बलवत धरतीपरसे उठा नही, वही फर्शपर अपना सिर पटककर पीटने लगा।

"हरजीत, मुझे माफ करो। मुझे बेतसे पीटा तब इतनी तकलीफ नही हुई जितनी अब तुम्हे देखकर होती है। मुझसे सहा नही जाता. . . मै तुम्हें सताता गया, तुम मुझे बचाते गये हरजीत हान्हा खाता हू, परमात्मा के लिए मुझे क्षमा करो। मै बडा अघम हूं, पापी हूं, दुराचारी हूं।"

बलवतकी सुबकी भर-भरकर रोते हुए सुना तो हरजीत भी रो आया। बोला—"ईश्वर तुम्हे क्षमा करेगा, बलवंत। कौन जानता है कि मैं तुमसे सौ गुना अघम नही हू।"

यह कहते-कहते उसके अतरमें जैसे एक प्रकाशका उदय हो आया । सब चाह जैसे उसकी मिट गई। घर जानेकी अभिलाषा और कलख भी उसे अब नही रह गई। जेलसे रिहाईकी जरूरत ही उसमे न रही। बस ईश्वरकी आखिरी घडी अब आये, यही आस उसे शेष रह गई ।

हरजीतने कितना ही कहा, लेकिन बलवत अपने जुर्मका इकबाल करके ही माना। पर हरजीनके जेलसे छुटकारेका हुक्म आया कि वह तो देहसे ही छुटकारा पा चुका था।

: ५ :

धर्मपुत्र

(१)

एक दीन किसानके घर एक बालक जनमा । उसने अपने भाग्य सराहे और बडा कृतार्थ हुआ। खुश-खुश एक पडोसीके घर गया कि आप इस बालकके धर्म-पिता बन जावे। पर गरीबके बेटेको कौन अपनावे । सो पडोसीने इनकार कर दिया । तब दूसरे पडोसीसे कहा, उसने भी इन्कार कर दिया । इसपर बेचारा किसान घर-घर घूमा, लेकिन कोई उसके बालकका धर्म-पिता बननेको राजी न हुआ। यह देख वह दूसरे गाव चला । चलते-चलते राहमे एक आदमी मिला। पूछने लगा—"जयरामजीकी, भाई चौधरी, कहा जा रहे हो?"

किसान बोला—"भगवानकी दया हुई है कि जीवनको सारथ करने और बुढापेमे सहारा होने घरमें हमारे उजियाला जनमा है । मरनेपर वही हमारी मिट्टी लगायेगा, और हमारी आत्माको दया-धर्मसे सीचेगा । लेकिन मै गरीब हू और गावमें कोई उसका धर्म-पिता बननेको राजी नही है । सो मै उसके धर्म-पिताकी खोजमें जा रहा हू।"

मुसाफिरने कहा—"चाहो तो मै धर्म-पिता बन सकता हूं।"

किसान सुनकर प्रसन्न हुआ और धन्यवाद देने लगा। फिर सोचकर बोला—"यह तो आपने मुझे धन्य किया, लेकिन अब सोचता हू कि धर्म-माताके लिए मै किसे कहू।"

मुसाफिरने कहा—"धर्म-माके लिए सुनो, सीधे उस नगरमें जाओ। वहा चौकमें एक पत्थरकी हवेली होगी। सामने नीली खिडकिया दीखेंगी। वहा पहुचोगे तो द्वारपर ही तुम्हे मकानके मालिक मिलेंगे। उनसे कहना कि अपनी बेटीको बालककी धर्म-माता बन जाने दें।"

किसान सुनकर अचकचा आया। बोला—"एक धनी आदमीसे मैं ऐसी बात कैसे कहूगा ? वह मुझे तिरस्कारसे देखेंगे और अपनी लडकीको पास न आने देंगे।"

"सो चिता न करो। तुम जाओ, कहो तो। और कल सवेरे तैयारी रखना। मैं ठीक सस्कारके वक्त पहुच जाऊगा।"

किसान घर लौट आया। फिर उन धनी व्यापारीकी तलाशमें शहरकी तरफ गया। चौकमें पहुचकर उसने बहली खोली, और मकानकी ड्योढीपर पहुचा था कि सेठ वही मिले। पूछने लगे—"कहो चौधरी, क्या चाहते हो?"

किसानने कहा कि भगवानने दया की है और घरमें दीपक जनमा है। वही हमारी आखोका तारा है, बुढापेका सहारा है और मौतके बाद हमारे प्रेतको पानी देगा। बडी मेहरबानी होगी जो आप अपनी बेटीको उसकी धर्म-माता बनने दें।

व्यापारीने पूछा—"सस्कार कब है?"

"कल सवेरे।"

"अच्छी बात है। तसल्ली रक्खो। कल सवेरे सस्कारके समय वह आ जायेगी।"

अगले दिन धर्म-माता आ गई, धर्म-पिता भी आ गये और शिशुका संस्कार होतेही धर्म-पिता चले गये। किसीको पता भी नही चला कि वह कौन है, कहा रहते है। न वह फिर दीखे।

(२)

बालक चादकी तरह बढने लगा। मा-बापके उछाहका पूछना क्या! बढकर माता-पिताके लिए छोटी उमरसे ही वह सहाई होने लगा। तदुरुस्त था और कामको उद्यत, चतुर और आज्ञाकारी। दस बरसका हुआ कि लिखना-

पढ़ना सीखनेके लिए उसे मदरसेमें भेजा गया। जो और पाच बरसमें सीखते वह एक ही बरसमें सीख गया और कुछ ही अरसेमें वहाकी सब विद्या उसने समाप्त कर दी।

पूजा-दशहरेके दिन आये और छुट्टियोमें वह अपनी धर्म-माताको प्रणाम करने गया। जाकर चरण छुए और सामने भेंट रक्खी।

फिर लौटकर घर आया तो मा-बापसे उसने पूछा—"जी, धर्म-पिता कहा रहते है ? इस विजयादशमीके दिन मै उनको भी प्रणाम करना चाहता हूँ और दक्षिणा भेंट दूगा।"

पिताने कहा—"बेटे, तुम्हारे धर्म-पिताका हम कुछ पता नही है। हमें अक्सर उनका खयाल आता है। तुम्हारा नाम-सस्कार हुआ उसी रोजसे उनकी कोई खबर नही मिली। यह तक मालूम नही कि कहा रहते है और अब है भी कि नही।"

पुत्र बोला कि माताजी और पिताजी, आप दोनो मुझे इजाजत दीजिए। मै अपने धर्म-पिताकी खोजमें जाऊगा। उन्हें खोजकर रहूगा और उनके चरणोकी रज लूगा।

माता-पिताने बालकको अनुमति दे दी और वह अपने धर्म-पिताकी खोजमें चल पडा।

(३)

घरसे निकल वह सीधो सडक चल दिया। घटो चलता रहा। चलते-चलते एक मुसाफिर मिला। उसने पूछा कि लडके, तुम कहा जा रहे हो ?

लडके ने जवाब दिया—"मै धर्म-माताके दर्शन करने और उन्हें प्रणाम करने गया था। फिर घर जाकर मैने धर्म-पिताके बारेमें पूछा, जिससे उनके भी दर्शन पाऊ और चरण छू सकू। लेकिन मेरे माता-पिता भी उनका पता नही जानते है। कहने लगे कि मेरा सस्कार हुआ था उसके बादसे ही उनकी कोई खबर नही मिली, जाने जीते भी है कि नही। लेकिन मै जरूर अपने धर्म-पिताके दर्शन चाहता हू। सो मै उसी खोजमें निकला हू।"

मुसाफिरने कहा—"तुम्हारा धर्म-पिता तो मै ही हूं।"

बालक सुनकर कृतार्थ हुआ। उसने उनके चरणोंमें मस्तक नवाया। फिर पूछने लगा कि धर्म-पिता, आप अब किधर जा रहे हैं? हमारी तरफ जा रहे हो तो मैं भी आपके साथ चल रहा हूं।

पथिकने कहा कि अभी तो मेरे पास तुम्हारे घर चलनेको समय नहीं है। जगह-जगह बहुत काम है। लेकिन कल सवेरे मैं अपनी जगह पहुंच जाऊंगा। तब वहां आकर तुम मुझे मिलना।

"लेकिन धर्म-पिता, मुझे जगहका पता कैसे चलेगा?"

"सुनो, अपने घरसे सवेरे सामने सूरजकी सीधमें चलते चले जाना। चलते-चलते जंगल आ जायगा। जंगलको पार करना। फिर एक घाटीमें पहुंचोगे। घाटीमें पहुंचकर वहां बैठना और थोड़ा विश्राम करना। पर चौकस होकर देखते रहना कि आसपास क्या होता है। फिर घाटीके परले किनारे तुम्हें एक बगीचा दीखेगा। वहां मकान होगा, जिसकी छत सुनहरी झलकती होगी। वही मेरा घर है। तुम सीधे दरवाजेपर आ जाना—वहां तुम्हें मैं खुद खड़ा मिलूंगा।"

इतना कहकर धर्म-पिता धर्मपुत्रके सामनेसे अंतर्धान हो गये।

(४)

बालकने धर्म-पिताके कहे अनुसार किया। वह उठकर सूर्य-भगवानकी तरफ चलता चला गया। चलते-चलते बन आया। उसे पार करनेपर घाटी आई। घाटीमें क्या देखता है कि ऊंचा एक बरगदका पेड़ खड़ा है। उसकी एक शाखपर रस्सी बंधी है। रस्सीमें एक भारी लकड़ीका लट्ठा लटका हुआ है। लट्ठेके नीचे लकड़ीकी बड़ी-सी कठौती रक्खी है जो शहदसे भरी हुई है। बालक यह देखकर अचरजमें हुआ कि क्यों इस तरह शहद वहां भरा हुआ रक्खा है और उसके ठीक ऊपर यह लकड़ीका लट्ठा क्यों लटक रहा है। लेकिन अचरजका समय भी नहीं मिला कि उसे किसीके उधर आनेकी आहट सुनाई दी। देखता क्या है कि कुछ रीछ चले आ रहे हैं। एक रीछनी है, पीछे-पीछे तीन बच्चे हैं। दो तो नन्हें-नन्हें हैं, एक तगड़ा है। रीछनी सूंघती-सूंघती शहदकी कठौती तक सीधी पहुंच गई। बच्चे भी पीछे लगे रहे। वहां पहुंचकर उसने शहदमें मुंह डाल दिया और चाटने लगी और बच्चोंने भी चारों ओरसे उसे घेर लिया। वे भी

नांदपर चढ़कर लदर-पदर शहद चाटने लगे। थोड़ा ही चाटने पाये होंगे कि ऊपरका लट्ठा आया और उन बच्चोंके बदनमें आकर लगा। रीछनीने मुंहसे उस लट्ठेको परे हटा दिया था। हटकर वह गया कि लौटकर अब फिर आ गया था। रीछनीने यह देखकर दूसरी बार अपने पंजोंसे उस लटठेको धकिया दिया। वह दूर चला गया। लेकिन फिर उतने ही जोरसे लौटा। लौट आकर इस बार जोरसे वह एक बच्चेकी पीठ और दूसरेके सिरसे टकराया। बच्चे दर्दके मारे चीखते चिल्लाते भागे। उनकी माने यह देखकर गुस्सेके साथ उस लटठेकी लकड़ीको अपने अगले हाथोंमें भीचकर पकड़ा और उठाकर जोरसे फेंक दिया। लट्ठा दूर चला गया और मौका देखकर वह रीछका जवान पट्ठा आया और नादमें मुह डाल चटचट शहद खाने लगा। देखा-देखी छोटे बच्चे भी चले आये। लेकिन वे पास पहुचे न होंगे कि लट्ठा लौटकर आया और ऐसी जोरसे उस जवान बेटेके सिरमें लगा कि वह वही ढेर हो गया। रीछनीको इसपर और भी गुस्सा चढा। झुंझलाकर उसने लट्ठेको जोरसे पकड़ा और पूरी शक्तिसे उसे परे फेंक दिया। जिस डालसे बधा था उससे भी ऊंचा वह लट्ठा जा पहुचा— इतना ऊचा कि रस्सी ढिला गई। इस बीच रीछनी फिर नादपर आ गई और बच्चे भी उसी किनारे आ लगे। लट्ठा ऊँचा चलता गया, ऊचा चलता गया, आखिर वह रुका और फिर गिरना शुरू हुआ। जैसे-जैसे नीचे गिरता, जोर उसका बढ़ता जाता था। आखिर पूरे बलसे रीछनीके सिरमें आकर लगा। लगना था कि रीछनी लोट-पोट हो गई। उसके पाव आसमानमें हिलते रहे और वही जान दे दी। बच्चे बनमें भाग गये।

(५)

बालक अचरजमें भरा यह देखता रहा। फिर उसने आगेकी राह पकडी। जगल पार कर घाटीके परले किनारे उसे एक आलीशान बगीचा मिला। वहा था एक महल-का-महल। छत उसकी सुनहरी झकझकाती थी। महलके दरवाजे-पर बालकको धर्म-पिता मिले। मुस्कराकर उन्होंने बालकका स्वागत किया और दरवाजेमेंसे उसे अदर बगीचेमें ले गये। लडकेने जो सपनेमें भी नही देखा वह सचमुचमें यहा था। क्या बहार, क्या आनद! फिर धर्म-पिता उसे महल-

के अदर ले गये । वहाकी विभूतिका तो कहना ही क्या ! वह अपूर्व थी । धर्म-पिताने चलकर बालकको महलका एक-एक कमरा दिखाया । उसकी तो आखें न ठहरती थी । एक-से-एक बढ-चढकर ऐसी शोभा और ज्योति और उल्लास था कि—

आखिर एक कमरेपर पहुचे जहाका दरवाजा मुहरबद था । धर्म-पिताने कहा कि यह दरवाजा देखते हो न । इसमें ताला नही है, बस मुहरबद है । वह खुल सकता है, लेकिन खबरदार, उसे खोलना नही। तुम यहां रहो, जी चाहे जहां फिरो। यहाका सब तुम्हारा है । सब भोग और सब आराम । लेकिन मेरी एक ताकीद है । यह दरवाजा मत खोलना । जो कही तुमने उस खोला, तो याद कर लो जंगलमें तुमने क्या देखा था।

यह कहकर धर्म-पिता अंतर्धान हो गये। लडका उस महलमें रहता रहा। वहा वह सुख और वह आनंद थे कि तीस साल ऐसे बीत गये जैसे तीन घटे। जब एक-एक कर तीस साल गुजर गये तो एक दिन धर्मपुत्र मुहरबंद दरवाजेके पाससे गुजर रहा था। वह ठिठका और अचरजमें आकर सोचने लगा कि धर्म-पिताने इस कमरेमें जानेकी मनाही क्यो की थी ।

सोचने लगा कि जरा देखनेमें क्या हर्ज है । यह सोचकर उसका दरवाजेको हाथसे तनिक-सा धकियाना था कि मुहर गिर गई और दरवाजा खुल गया। अन्दर देखता क्या है कि और सभीसे बढकर और सबसे बडा यह हॉल है। बीचमें उसके सिंहासन रक्खा है । कुछ देर वह उस खाली हॉलके वैभवको देखता हुआ इधर-उधर घूमता रहा। अनंतर सीढी चढ वह सिंहासनपर जा पहुचा और वहा बैठ गया । बैठकर देखता है कि सिहासनसे टिककर शासन-दड रक्खा हुआ है। उसने उसे हाथमें ले लिया । उसका हाथमें लेना था कि हॉलकी सब दीवारें हवा होगईं । धर्मपुत्रने देखा तो सारी दुनिया उसके सामने बिछी थी और लोग जो कुछ वहा कर-धर रहे थे, सब उसे दीखता था। वह सामने देखने लगा कि समंदर फैला है और जहाज उसपर आ-जा रहे हैं । दायें हाथ अजब-अजब तरह-की जगली जातिया बसी हुई है । बायें, हिंदुस्तानके अलावा और लोग बसे दीखते ह। चौथी तरफ मुह जो उसने मोडा तो देखा कि उसकी आख आगे समचा

हिंदुस्तान फैला है और उसीके जैसे लोग घूम-फिर रहे है।

उसने सोचा कि देखें हमारे घर क्या हो रहा है और खेती-बाड़ीका क्या हाल है । उसने अपने बापके खेतोको देखा कि बालें खड़ी है और पकनेके नजदीक है। वह अदाज लगाने लगा कि फसल कितनेकी बैठेगी । इतनेमें गाडीमें उसे आता कोई दिखाई दिया। रातका वक्त था। धर्मपुत्रने सोचा कि पिता ही होगे, रातको गल्ला ढो ले जाना चाहते है। लेकिन देखता क्या है कि वह आदमी तो है नत्थूसिह जो कि एक नबरी चोर है । रातको आया है कि चुराकर खेतका सारा नाज भर ले जाय। यह देख धर्मपुत्रको गुस्सा आ गया । उसने पुकारकर कहा—"बापा, ओ बापा, उठो हमारे खेतसे नाज चुराया जा रहा है ।"

बाप रातको अपनी मढैयामें चौकन्ना होकर सोया करता था। वह एकदम जाग बैठा । सोचा कि मैंने सपनेमें सही, लेकिन अपने खेतका नाज चोरी होते देखा है । चलू, देखू क्या बात है । भागकर वह खेतमें आया तो वहा देखता है कि नत्थूसिह मौजूद है । हल्ला मचाकर पास-पडोसवालोको भी उसने इक्ट्ठा कर लिया और नत्थूसिहकी खूब मरम्मत बनाई। उसे पीटा-कूटा और बाधकर थाने ले गये ।

उसके बाद धर्मपुत्रने शहरकी ओर निगाह उठाई जहा धर्ममाता रहती थी। अब उनका विवाह हो गया था। इस घडी वह चैनकी नीद सो रही थी। इतनेमें उनका पति उठा और दबे पाव घरसे निकल चला। धर्मपुत्रने वहीसे पुकारकर कहा—"मा, उठो, उठो, देखो तुम्हारा पति जाने किस कुकर्मके लिए घरसे निकल चला है ।"

इसपर धर्मन्मा झटसे उठी और कपडे पहनकर उस कुलटाके यहा पहुची जहा पति गया था । जाकर उस नारीको खूब बुरा-भला सुनाया, मारापीटा और बाहर खदेड दिया ।

इसके बाद धर्मपुत्रने अपनी पेटकी माका खयाल किया। वह अपने घरमे छप्परके तले सो रही थी । देखता क्या है कि एक चोर घरमें घुस गया है और बक्सका ताला तोड रहा है जिसमें माकी जमा-जोखो रक्खी है । इतनेमें मा जग उठी। यह देख डाकूने गड़ासा ऊपर उठा मापर वार करना चाहा।

यह देख धर्मपुत्रसे रहा न गया और उसने उस दुष्टपर हाथका शासन-दंड खींचकर मारा। वह जाकर कनपटीपर लगा और चोर वहींका हो रहा।

(६)

धर्मपुत्रका चोरको मारना था कि दीवारें फिर चारो ओर घिर आईं और हॉल जैसे-का-तैसा हो गया।

उसी समय दरवाजा खुला और धर्म-पिता अंदर आते दिखाई दिये । वहा पहुंच, हाथ पकड़कर उन्होंने धर्मपुत्रको सिंहासनसे नीचे उतारा और अपने साथ ले चले।

बोले—"तुमने मेरा कहना नही माना और मना करनेपर दरवाजा खोला, यह पहली गलती । सिंहासनपर जा बैठे और शासन-दंड हाथमें ले लिया । यह दूसरी गलती । उसके बाद यह तुमने तीसरी गलती की जिससे दुनियामें अंधेर फैला जा रहा है । ऐसे तो तुम घडीभर सिंहासनपर और रहते तो आधी दुनिया बरबाद हो चुकी थी।"

यह कहकर धर्म-पिता अपने साथ धर्मपुत्रको फिर सिंहासनपर ले गये और शासन-दड अपने हाथमें रक्खा । दीवारें फिर उसी तरह सामनेसे गायब हो गईं और दुनियाका सब कुछ दिखाई देने लगा।

धर्म-पिताने कहा—"अब देखो । देखते हो न कि तुमने अपने पिताके हकमें क्या किया । नत्थूसिहको एक सालकी सजा हुई । अब जो वापिस आया है तो जेलसे बची-खुची और बुराइया सीख आया है । रहा-सहा भी अब वह पक्का हो गया है। देखते नही कि उसने अब तुम्हारे बापके दो बैल चुरा लिये है और खलिहानमें आग लगाये दे रहा है। सो अपने बापके लिए ये बीज तुमने बोये।"

और सचमुच धर्मपुत्रने देखा कि आख-आगे उसके बापका खलिहान आगकी लपटोमें धू-धू करके जल रहा है।

उसके बाद धर्म-पिताने वह दृश्य दूर कर दिया और दूसरी तरफ देखनेको कहा—

'देखो, यह तुम्हारी धर्म-माताके पति है। एक साल हुआ कि उन्होंने बीबीको छोड दिया है। अब औरोके पीछे लगे है । उनकी पहली प्रेयसीकी हालत देखते हो ? वह कितनी पतिता हो गई है। दुखसे पत्नीका हाल भी बेहाल है ।

गमके मारे उन्हें दौरे पडने लगे हैं। सो यह सेवा तुमने अपनी धर्म-माताकी की है!"

धर्म-पिताने यह दृश्य भी फिर हटा दिया। अब उसके आगे अपने गावका मकान था। वहा देखता है कि उसकी मा रो रही है और अपने अपराधोकी क्षमा माग रही है। पछतावा करती सिर धुनती कह रही है—"हाय, भला होता मुझे चोर उसी रात मार डालता। फिर मुझे ऐसे भोग तो न भोगने होते!"

धर्म-पिताने कहा—"देखते हो? यह है जो तुमने अपनी माके लिए करके रक्खा है!"

वह पर्दा भी दूर हुआ। फिर धर्म-पिताने सामने देखनेको कहा। अब जो उसने सामने देखा तो दो वार्डर जेलखानेके आगे एक डाकूको पकडे खडे है।

धर्म-पिताने कहा—"पहचानते हो? इस आदमीके सिरपर दस खून हैं। वह खुद कर्म-फलका भोग लेकर अपने आप उतारता। लेकिन उसको मारकर उसके पाप तुमने बढाकर अब अपने सिर ले लिये है। अब उन सब पापोके लिए तुम्हे जवाब देना होगा। यह है जो तुमने अपने हकमें किया है! याद करो, रीछनीने लट्ठेको एक बार हटाकर अपने बच्चोको चोट पहुचाई। फिर हटाया तो अपने जवान बेटेको खोया। तीसरी बार जोरसे हटाया तो अपनी जानसे हाथ धो बैठी। वही तुमने किया है। अब मैं तुमको तीस साल और देता हूँ कि दुनियामें जाओ और डाकूके और अपने पापोके लिए प्रायश्चित्त करो। प्राय-श्चित्त पूरा नही करोगे तो तुमको उसकी जगह लेनी होगी।"

धर्मपुत्रने पूछा—"उसके पापका उतारा मुझे कैसे करना होगा, पिता?"

दुनियामें जो बदी लानेके तुम भागी हो उसे मिटाना तुम्हारा काम है। उतना कर लोगे, तो उस डाकूके और तुम्हारे दोनोके पापोका उतारा हो जायगा।"

धर्मपुत्रने पूछा—"मैं दुनियाकी बदीको कैसे मिटाऊगा, पिता?"

धर्म-पिताने कहा—"जाओ, सूरजकी दिशामें सीधे चलते चले जाना। चलते-चलते एक खेत मिलेगा, जहा कुछ आदमी होगे। देखना कि आदमी क्या कर रहे है और जो तुम जानते हो उन्हें बतलाना। फिर आगे बढना। ऐसे ही बढते जाना। राहमें जो देखो याद रखना। चौथे दिन तुम एक बनमें पहुचोगे।

उस वनके बीचों-बीच एक कुटी मिलेगी। वहां एक साधु रहता है। उसे जाकर जो हुआ हो सब सुनाना। वह बतायेगा कि तुम्हे क्या करना होगा। उसका कहा कर चुकोगे तब डाकूके और तुम्हारे अपन पापोका उतारा पूरा हो जायगा।"

यह कहकर धर्म-पिताने उसको महलके दरवाजसे बाहर कर दिया।

(७)

धर्मपुत्र अपनी राह बढ चला। सोचता जाता था कि म जगतमेंसे बदीका नाश कैसे करूगा। बदकारोका नाश हो, ऐसे ही तो बदीका नाश होता है। उन्हें जेलमें डाल दिया जाय या उनका अत कर दिया जाय। तब फिर बिना औरोका पाप अपने ऊपर लिये बदीसे लडना कैसे होगा?

धर्मपुत्रने बहुतेरा विचारा, पर निश्चयपर नही आ सका। वह चला-चलना गया। चलते-चलते एक खेत आया। वहा खूब घनी और ऊची गेहूकी बालें खडी थी। बस बालें पक ही गई थी और कटनेको तैयार थी। इतनेमें क्या देखता है कि एक बछडा खेतमें घुस गया है। उसे खेतमें मुह मारते देख कुछ लोग लाठी ले उसके पीछे पड गये है। खेतमेंसे वे उसे कभी उधर खदेडते हैं, कभी इधर। बछडा बाहर भागनेके लिए खेतके जिस किनारे आकर लगता कि उधर ही कुछ लोग सामने मिलते हैं। डरके मारे वह फिर भीतर लौट जाता है। सब जने खेतमेंसे होकर इधर-उधर उसका पीछा कर रहे है और खेत खूब रौंदा जा रहा है। इधर यह है, उधर बाहर सडकपर खडी एक औरत रो रही है कि हायरे, मेरे बछडेको ये लोग भगा-भगाकर मारे डाल रहे हैं।

धर्मपुत्रने उन किसानोको कहा—"तुम लोग यह क्या कर रहे हो? सब जने खेतसे बाहर आ जाओ। यह औरत अपने बछडेको आप बुला लेगी।"

आदमियोने ऐसा ही किया। वह स्त्री भी खेतके किनारे आकर पुकारने लगी, "आओ भैया, आओ मुनवा, यहा आओ।" बछडेने कान खडे किये। एक पल सुनता रहा। फिर अपने आप भागा आया और मचलकर अपना मुह स्त्रीकी गोदमें ऐसे मारने लगा और ऐसी किलोल भरने लगा कि वह बेचारी गिरते-गिरते बची। सब आदमी इससे खुश हुए, स्त्री भी खुश थी, और बछडा भी मगन दिखाई देता था।

धर्मपुत्र फिर वहासे आगे बढा। सोचने लगा कि ऐसे ही बदी-से-बदी फैलती है । जितना आदमी बुराईके पीछे पडते है, वह उतनी ही बढती है। मालूम होता है बुराई बुराईसे दूर नही होगी। फिर कैसे दूर होगी, यह भी ठीक पता नही चलता था। बछडेने तो अपनी मालकिनका कहना मान लिया और चलो सब ठीक हुआ। पर कहना न मानता तो उसे खेतसे बाहर करनेका क्या उपाय था?

धर्मपुत्र फिर सोचमें पड गया और किसी नतीजेपर नही पहुच सका। खैर, वह बढता ही गया।

(८)

चलते-चलते एक गाव मिला। गावके पार परले किनारे उसने रातभर टिकनेको जगह मागी। घरकी मालकिन अकेली थी और घरको सफाई कर रही थी। उसने उसे ठहरा लिया। घरके अदर धर्मपुत्र पीढेपर बैठा स्त्रीको काम करते देखने लगा। वह बुहारीसे फर्श झाड चुकी थी, अब चीज-बस्त झाडनसे झाडने लगी। सबके बाद उस धूल-भरे मैले झाडनसे उसने जोर-जोरसे मेज पोंछना शुरू की। कई बार पोछी, पर मेज साफ नही होती थी। कपडेके मैल-की लकीरें रह ही जाती थी। यह देख वह दूसरे सिरेसे हाथ फेरकर पोछना शुरू करती। पर पहली लकीरें मिटती तो उनकी जगह दूसरी बन जाती। फिर उसने सब-की-सब मेज फिर दुबारा साफ की। लेकिन फिर वही बात। मैलकी लकीरें अब भी मौजूद। धर्मपुत्र कुछ देर चुपचाप देखता रहा। फिर बोला—"माई, तुम यह क्या कर रही हो?"

"भैया, देखते हो कि मै सफाई कर रही हूँ त्योहार सिरपर है। पर यह मेज साफ ही नही होती। मै तो थक आई।"

धर्मपुत्र बोला—"मेज झाडनेसे पहले झाडनको तो साफ कर लो, माई।"

स्त्रीने वैसा ही किया। तब मेज भी साफ चमक आई।

स्त्रीने कहा—"तुमने भली बात बतलाई, भैया। तुम्हारा अहसान मानती हूं।"

अगले सवेरे वहासे विदा ले धर्मपुत्र अपनी राह आगे बढ लिया। काफी दूर चलनेपर एक वनका किनारा आया। वहा देखा कि देहातके कुछ लोग लोहेकी

मोटी हाल लेकर उसे मोडना चाह रहे हैं। और पास आया तो देखता है—कई लोग मिलकर लोहेका सिरा पकडकर जोर लगा रहे है। वे घूम तो रहे हैं, पर हाल मुडती नही है।

खडा होकर वह उन्हे देखने लगा। लोग चक्कर लगाते है, पर लोहा नही मुडता। बात यह थी कि जिस चीजमें लोहा अटका रक्खा था, वह चीज खुद लोगोंके घमनेके साथ घूम जाती थी। यह देख धर्मपुत्रने कहा—"भाइयो, यह आप क्या कर रहे हैं ?"

"देखते तो हो कि हम पहियेकी हाल मोड रहे है। सब कर लिया, थककर चूर हुए जा रहे हैं। पर यह हाल मुडती ही नही।"

धर्मपुत्रने कहा—"पहले उसे तो थिर कर लो जहा हाल अटका रक्खी है। नही तो आपके घूमनेके साथ वह भी घूम जायगी। यो हाल कैसे मुडेगी ?"

किसानोने बात मान ली। वैसा किया तो काम ठीक चलने लगा।

वह रात उन लोगोके साथ बिता अगले दिन धर्मपुत्र आगे बढा। सारा दिन और सारी रात वह चलता रहा। आखिर तडका होते उसे कुछ बनजारे मिले। वह भी फिर वही रह गया। बनजारे बैलोका सौदा-बौदा कर चुके थे। अब आगेकी तैयारीमें आग जलाना चाह रहे थे। सूखी छिपटी और पात-फूस वगैरह इकट्ठा करके उन्होंने दियासलाई दिखाई। वह जल नही पाई कि ऊपरसे हरी घासका ढेर रख दिया। कुछ धुआ उठा, घासमें सिसकारी-सी हुई और आग बुझ गई। बनजारे फिर सूखी छिपटिया बीनकर लाये, फिर जलाया, और फिर वैसी ही गीली घास ऊपर ला रक्खी। आग फिर नही जली और बुझ गई। इस तरह बहुत देरतक बार-बार चेष्टा करते रहे। पर आग जलती ही न थी।

उस समय धर्मपुत्रने कहा—"दोस्तो, घास ऊपर रखनेमें जल्दी न करो। पहले सूखी लकडी ठीक तरह बल चले, तब ऊपर कुछ रखना। आग एक बार लहक आने दो, फिर चाहे जितनी घास ऊपर रख देना।"

बनजारोने बात मान ली। पहले आग खूब बल जाने दी। इस तरह जरा देरमें आग लपटें दे उठी।

धर्मपुत्र कुछ देर उनके साथ रहा, फिर अपनी राह आगे हो लिया। चलता रहा, चलता रहा। सोचता जाता था कि ये तीन बातें जो उसने देखी हैं उनका क्या मतलब हो सकता है। लेकिन उसे थाह छू नही मिलती थी।

(६)

धर्मपुत्र दिनभर चलता रहा। सध्या समय दूसरे बडे जगलका किनारा आया। वहा साधूकी कुटिया मिली। उसपर जाकर धर्मपुत्रने खटखटाया। अदरसे आवाजने कहा—"कौन है ?"

धर्मपुत्र—मै एक बडा पापी हू जिसे अपने और एक दूसरेके भी पापोका प्रायश्चित्त करना है।"

यह सुनकर साधू बाहर आये।

"वह पाप कौन है जिन्हें दूसरेके लिए तुम्हे उठाना पड रहा है ?"

धर्मपुत्रने साधूको सब बात सुना दी। धर्म-पिताकी बात कह, रीछनी और उसके बच्चोकी घटना सुनाई, मुहरबद कमरे और सिहासनका हाल बताया। फिर धर्म-पिताने जो आदेश देकर उसे भेजा था, वह कह सुनाया। रास्तेमें जो किसान बछडेका पीछा करनेमें खूब खेत रौद रहे थे और कैसे फिर बछडा मालिककी पुकारपर अपने आप खेतसे बाहर आ गया, यह सुनाया। अतमें बोला कि यह तो मै देख चुका हू कि बुराईका मेट बुराईसे नही किया जा सकता। पर यह समझमें नही आता कि उसे फिर मिटाया कैसे जा सकता है। मुझे बताइए कि यह कैसे किया जाय।

साधूने कहा—"और कुछ तुमने रास्तेमें देखा हो तो बताओ।"

धर्मपुत्रने बतला दिया कि कैसे मेज साफ करती औरत देखी थी और कुछ देहाती हाल मोडते हुए मिले थे और बनजारे आग जलाना चाह रहे थे।

साधू सब सुनते रहे। फिर कुटियामें चले गये और अदरसे एक पुराना कुल्हाडा लेकर आये। कहा—"मेरे साथ आओ।"

कुछ दूर जानेपर साधूने एक पेड बताया। कहा—"इसे काट डालो।"

धर्मपुत्रने वह पेड काट गिराया।

साधूने कहा—"अब इसके तीन टुकडे करो"

धर्मपुत्रने पेडके तीन टुकड कर दिये ।

इसपर साधू फिर कुटियामें गये और वहासे कुछ जलती लकड़िया लाये बोले—"इनसे उन तीनो टुकडोको आग दे दो ।"

धर्मपुत्रने आग जलाई और पेडके उन बडे-बड़े तीनो टुकड़ोको उसमें डाल दिया । जलते-जलते उनकी जगह तीन काले कुदे ठूठ रह गये ।

साधूने कहा—"अब इनको धरतीमें गाड दो, ऐसे कि आध धरतीमें रहे, आधे ऊपर।"

धर्मपुत्रने वैसा ही किया ।

"अब देखो, वहा सामने पहाडीकी तलहटीमें एक नदी है । वहासे मुहमें पानी भरकर लाओ । लाकर इन ठूठोकी जडम सीच दो । पहले ठूठको सीचो, जैसे कि तुमने पहले स्त्रीको सीख दी थी । दूसरेको सीचो, क्योकि हाल मोडनेवाले किसानोको उपदेश दिया था। और इस तीसरेको बनजारोके नामपर सीचे जाओ । जब इनमें जडें जम आयेंगी और कल्ले फूटने लगेंगे और उन काले ठूठोकी जगह सेवके दरख्त हो आयेंगे तब तुम भी समझ जाओगे कि आदमी-में बुराईको कैसे मेटा जाना चाहिए । तब तुम्हारे सब पाप धुल जायगे।"

इतना कहकर साधू अपनी कुटियामें चले गये । धर्मपुत्र बहुत देरतक सोचता-विचारता रहा । लेकिन साधूकी बातका भेद न पा सका। तो भी साधूने जैसा बताया था वैसा ही करना उसने शुरू कर दिया ।

(१०)

धर्मपुत्र नदीपर गया, मुहमें पानी लिया और लौटकर पहले ठूठमें सींच दिया । बार-बार इसी तरह मुहमें पानी ला-लाकर वह तीनो ठूठोको सीचता रहा। जब उसे बहुत भूख लगी और थकानसे चूर हो आया, तो कुटियाकी तरफ चला कि साधूसे कुछ खानेको माग ले । इधर-उधर देखनेपर उसे कुटियामें कुछ सूखी हुई रोटी मिल गई। थोडा खाकर उसने भूख शात की और भीतर कुटीका दरवाजा खोला तो देखता है कि साधूकी देह वहा मृतक पडी हुई है । तब वह मृतक देहके कर्मके लिए लकडी जमा करनेमें लगा । दिनमें यह किया, रातको

मुंहमें पानी ला-लाकर ठूठ सीचने म लगा रहा । रातभर, जबतक बना, वह ऐसा ही करता रहा।

अगले दिन पासके गावके कुछ लोग साधूके लिए खाना लेकर वहा पहुंचे । आकर देखते है कि साधका तो शरीरात हो गया है। अपनी जगह वह धर्मपुत्र-को छोड गये है और उसको आशीर्वाद भी दिया है। सो उन्होने साधूकी देहका क्रिया-कर्म किया और जो खाना लाये थे धर्मपुत्रकी भेंट कर दिया ।

धर्मपुत्र साधूकी जगह रहता रहा । लोग जो खानेको दे जाते थे उससे गुजर करता और साधूके आदेशानुसार उसी नदीसे मुहमें भरकर पानी लाता और उन जले ठूठोपर सीच देता ।

इस तरह एक साल बीत गया । इस बीच बहुत लोग उसके दर्शनको आये । उसकी ख्याति दूर-दूर फैल गई। लोगोमें शोहरत हो गई कि एक पहुचा हुआ सत है जो आत्माके उद्धारके लिए पहाडीकी तलहटीकी नदीसे मुहमें पानी लेकर आता है और जले ठूठ सीचता है । सो ठठ-के-ठठ लोग दर्शन करने वहा पहुंचने लगे । मालदार. धनी, व्यापारी लोग वहा आते और बहुत भेंट-उपहार लाते। पर वह उसमें अपने तन जितनी चीज रखता। बाकी सब गरीबो को बाट देता।

इस तरह धर्मपुत्र रहने लगा। आधे दिन ठूठमें पानी सीचता, बाकी आधा दिन आने-जानेवालोमे मिलने-बतानेमें जाता । वह सोचने लगा कि बुराईको मिटाने और पाप धोनेके लिए यही तरीका शायद होगा।

एक दिन वह कुटियामें बैठा था कि कोई आदमी घोडेपर सवार उधरसे निकला । अपनी मौजमें वह तराने गाता हुआ चला जा रहा था। धर्मपुत्र कुटीसे बाहर आया कि कौन आदमी है। देखा कि एक अच्छा मजबूत जवान है, चुस्त कपडे है और खूब जीन-वीनसे लैस एक बढिया घोडेपर सवार है।

धर्मपुत्रने रोककर पूछा—"तुम कौन हो जी, और कहा जा रहे हो ?"

लगाम खीचकर उस आदमीने कहा—"मैं डाकू हू । ऐसे ही घूमा करता हू और जो हाथ लगता है उसे पार करता हू। शिकार जितने ज्यादह मिलते हैं उतनी ही खुशीके मैं गीत गाता हूँ।"

धर्मपुत्रके जीमें दहल समा गई । सोचने लगा कि ऐसे आदमीमेंसे बदीको

कैसे मिटाया जा सकता है। जो अपने आप भक्ति-श्रद्धामें मेरे पास आते है उनको कहना तो आसान है और वे अपने गुनाह सहज मान लेते है। लेकिन यह तो अपने पाप हीकी डींग मारता है।

मनमें यह सोच उसने उधरसे मुह मोड़ लिया। खयाल आया कि अब मै कैसे करूँगा। यह डाकू यही आस-पास घूमता रहेगा और मेरे दर्शनको आनेवाले लोग डरके मारे रुक जायगे, वे आना छोड़ देंगे। इससे उनकी भलाई भी रुक जायगी। और मै भी भला फिर कैसे रहूगा?

इसलिए फिर लौटाकर उसने डाकूको पुकारकर कहा—"यहा बहुत लोग मेरे पास आया करते है। वे पापकी डींग भरते नही आते, बल्कि पछतावेसे भरे हुए आते है। वे भगवानसे क्षमाकी प्रार्थना करते हैं। ईश्वरका डर हो तो तुम भी अपने पापोकी क्षमा मागो। और जो तुम्हारे दिलमें पछतावेकी कनी न हो तो यहासे चले जाओ और फिर कभी इधर न आना। मुझे मत सताना और मेरे पास आनेवाले आदमियोको भी मत सताना। अगर नही मानोगे तो ईश्वरसे सजा पाओगे।

डाकू ठठ मारकर हसने लगा। बोला—"मुझे ईश्वरका डर नही है और तुम्हारी बातकी परवा नही है। तुम कोई मेरे मालिक नही हो। तुम अपनी धर्माईपर रहते हो, तो मैं अपनी डकैतीपर रहता हूँ। रहना सभीको है। बुढिया औरतें जो पास आयें उन्हीको पट्टी पढाया करो। मुझे तुमसे सीखनेको कुछ नही है। और जो ईश्वरकी बात तुमने कही, सो इसी नामपर कल मैं रोजसे दो ज्यादा आदमियोको जमघाट लगाऊगा। तुम्हे भी मै मार सकता हू, लेकिन अभी मैं अपने हाथ खराब करना नही चाहता। पर देखना, आयदा मेरी राह न काटना।"

इस तरह धमकी देकर डाकू एड लगा अपना घोडा दौडा ले गया। वह फिर लौटकर नही आया और धर्मपुत्र पहलेकी तरह पूरे आठ साल वहा शातिसे रहता रहा।

(११)

एक रात धर्मपुत्र अपनी कुटीमें बैठा था। ठूठोमें पानी दे चुका था। अब

जरा विश्रामका समय था। उसकी निगाह रास्तेपर लगी थी कि कोई आयेगा। वह जैसे प्रतीक्षामें था। लेकिन उस दिनभर कोई नहीं आया। वह शामतक अकेला बैठा रहा। उसका जी इकलेपनसे ऊब गया। उसे सूना-सूना लगने लगा। उसे पिछली बातें याद आने लगी। याद आया कि डाकूने तानेसे कहा था कि तुम अपनी धर्माईपर जीते हो, मैं अपनी डकैतीपर रहता हूं। इसपर उसे विचार हुआ कि साधूने बताया था वैसे मैं नही रह रहा हूं। उन्होने मुझपर एक प्रायश्चित्त डाला था। लेकिन उसमेसे मैं तो खाने-कमाने लगा हूं। और गुजर भी पाने लगा हू। होते-होते भक्तोका और चढावेका ऐसा आदी हो गया हूँ कि अब वे नही आते तो जी ऊबता है और सूना लगता है। जब लोग आते हैं तो मुझे इसीलिए खुशी होती है न कि वे मेरी धर्माईकी तारीफ करते हैं। यह तो रहनेकी ठीक विधि नही है। मैं प्रशसाके मोहमें बहक रहा हूं। अपने पुराने पाप तो क्या उतारता और नये जोडे जा रहा हू। यहासे कही दूर दूसरी तरफ जगलमें मुझे चले जाना चाहिए, जहा लोग मुझे पा न सकें। वहा फिर मैं ऐसे रहूगा कि पुराने पाप धुलते जाय और नया कोई जमा न हो।

यह मनमें धारकर थैलीमें कुछ रूखी रोटी बटोर, एक फावडा ले, धर्मपुत्र कुटी छोड चल दिया। बराबर घाटीमें उसे एक एकात जगहकी याद थी। सोचा कि बस वहा पहुचकर एक गुफा-सी अपने लिए खोदकर तैयार कर लूगा और लोगोसे छुटकारा पाऊगा।

अपना थैला लटकाए और फावडा लिये वह जा रहा था कि उसीकी तरफ आते हुए डाकूके कदम उसे सुनाई दिये। धर्मपुत्रको डर लग आया और वह तेज कदम बढ़ चला। लेकिन डाकूने उसे पकड़ लिया। पूछा, "कहा जा रहे हो?"

धर्मपुत्रने कहा—"मैं लोगोसे दूर चला जाना चाहता हू। कही ऐसी जगह रहना चाहता हू जहा कोई पास न आये।"

यह सुनकर डाकूको अचरज हुआ। बोला—"लोग पास नही आयेंगे तो तुम्हारा गुजारा कसे होगा?"

धर्मपुत्रको यह सूझा भी नही था। डाकूकी बातसे याद आया कि हा, आहार तो आदमीके लिए जरूरी है। बोला—"जो परमात्माकी दया हो जायगी

उसीपर बसर कर लूगा।"

डाकूने कुछ नही कहा और आगे बढ लिया।

धर्मपुत्र सोचने लगा कि मैंने डाकूसे अपने रंग-ढग बदलनके बारेमें इस बार क्यो नही कहा। शायद अब उसे पछतावा हो। आज तो उसका रुख कुछ मुलायम मालूम होता था। अबकी उसने मुझे मारनेकी भी धमकी नही दी।

यह सोचकर उसने डाकूको पुकारकर कहा कि सुनते हो, अभी तुम्हे अपने गुनाहोकी माफी मागनी चाहिए। ईश्वरसे तो सदा बच नही सकते।

यह सुनकर डाकूने घोडा मोड पेटीमेंसे खजर निकाला और धर्मपुत्र को मारनेको हुआ। धर्मपुत्र यह देखकर चौंका और सहमा हुआ सीधा अंदर जगलमें बढ गया।

डाकूने उसका पीछा नही किया। बस जोरसे सुनाकर कहा—"दो बार मैं तुम्हे छोड चुका हू। अगली बार जो कही तुमने मुझे टोका, तो तुम्हारी खैर नही है, यह समझ लेना।"

यह कहकर वह डाकू अपने रास्ते हो लिया।

उस शाम धर्मपुत्र ठूठमें पानी देने जो पहुंचता है कि क्या देखता है कि उनमेंसे एक ठूठ कल्ले दे रहा है और उसमेंसे नन्हें सेवकी कोपलें उग चली हैं।

(१२)

सबसे अपनेको छिपाकर धर्मपुत्र बिलकुल अकेला रहने लगा। रोटी खत्म हो गई तो उसने सोचा कि चलू, खानेके लिए कही कुछ कंद-मूल देखू। यह सोच-कर वह कुछ दूर चला था कि देखता क्या है कि एक पेड़की टहनीपर अंगोछेमें बंधी रोटिया लटकी हुई है। उसने वे रोटिया ले ली और जबतक बना, उनपर गुजारा करता रहा।

वे खत्म हो गईं तो उसी पेडपर दुबारा वैसे ही अगोछा लटका मिला। इस तरह उसका गुजारा होता रहा। बस अब कुछ बात थी तो डाकूका डर बाकी था। आस-पास कही जाते-आते उसकी आहट सुनता तो सहमकर दुबक रहता था। सोचता कि कही ऐसा न हो कि मै अपने पाप धोने न पाऊं, उससे पहले ही डाकू मुझे मार दे।

इस तरह दस साल और हो गये। एक तो उनमें सबका पेड होकर हरिया आया था, लेकिन और दो ठूठके ठूठ रहे। एक सवेरे धर्मपुत्र जल्दी उठा और कामपर पहुचा। ठूठोकी जमीनको मुहके पानीसे काफी गीली करते उसे खूब मेहनत पडी। आखिर थककर वह आराम करने लगा। बैठे-बैठे सोचने लगा। सोचा कि मैंने पाप किया है, इसीसे मै मौतसे डरता हू। ईश्वरकी मरजी कौन जानता है। हो सकता है कि मौतसे ही मेरे पाप धुलनेवाले हो। तब उसका भी स्वागत किये बिना मै कैसे रह सकता हू।

यह खयाल करके मनमें आया ही था कि उधरसे घोडेपर सवार जाने किसे गाली देता हुआ डाकू उस तरफ ही आता मालूम हुआ। धर्मपुत्रने सोचा कि सिवा ईश्वरके किसी औरसे मेरा कुछ बन-बिगड क्या सकता है। यह सोचकर वह आगे बढकर डाकूको मिला। देखता क्या है कि डाकू अकेला नही है। पीछे घोडेसे एक और आदमी बधा है। मुह उसका बद है और हाथ-पैर कसे हुए है। वह आदमी कुछ नही कर रहा है, पर डाकू उसे मन-आई गाली दिये जा रहा है।

धर्मपुत्र बढता हुआ जाकर घोडेके सामने खडा हो गया। पूछा—"इस आदमीको कहा ले जा रहे हो?"

डाकूने जवाब दिया—"जंगलके अदर लिए जा रहा हू। यह एक मालदार बनियेका बेटा है, पर बताता नही है कि बापका माल कहा छिपा है। सो कोडोसे इसकी खबर लूगा तब बतायेगा।"

यह कहकर वह घोडेको एड लगानेको हुआ कि धर्मपुत्रने घोडेकी रास पकड ली और जाने नही दिया। कहा—"इस आदमीको छोड दो।"

डाकूको गुस्सा चढ आया और उसने मारनेको हाथ उठाया—

"क्या, तुम भी कुछ मजा चखना चाहते हो? जो इस आदमीको मार मिलेगी वह तुम भी चाहो तो वैसी कहो। मै कह चुका हू कि ज्यादा करोगे तो मेरे हाथसे जान खोओगे। सुना? अब रास छोडो।"

लेकिन धर्मपुत्र डरा नही। बोला—"तुम जा नही पाओगे। मुझे तुम्हारा डर नही है। बस एक ईश्वरका मुझे डर है। उसका हुक्म है कि मै तुम्हे न जाने दू। इस आदमीको तुम छोड़ दो।"

डाकूको गुस्सा तो आया, लेकिन उसने चाकू निकालकर उस आदमीके हाथ काट दिये और उसे आजाद कर दिया। फिर बोला—"अब जाओ, तुम दोनो चले जाओ। और खबरदार, जो फिर मेरी राह आडे आये।"

वह वैश्यपुत्र तो घोडेकी पीठसे खिसक चट भाग गया। डाकू भी घोडेपर सवार हो चलनेको था कि धर्मपुत्रने फिर उसे रोका और कहा कि देखो, अपनी इस वदीसे बाज आओ। लेकिन डाकू सब चुपचाप सुनता रहा। आखिर बिना कुछ बोले वह चला गया।

अगले दिन धर्मपुत्र फिर ठूठमें पानी देने गया। और अचरजकी बात देखो कि दूसरा ठूठ भी हरा हो रहा था। उसमें भी सेवके पेडकी कोपलें फूटने लगी थी।

(१३)

दस साल और बीते। धर्मपुत्र एक दिन शातिसे बैठा था। न कोई कामना थी, न आशका। प्रसन्नतासे मन भरा आता था।

सोचा—"ईश्वरने आदमीको कैसी-कैसी न्यामतें बख्शी हैं। फिर भी नाहक वह कैसा हैरान और परेशान रहता है। क्यो वह खुश नही रहता। क्या उसे अडचन है ?"

फिर आदमी खुद जो अपने लिए मुसीबत पैदा करता है और बुराईके बीज बोता है, उसके फल यादकर धर्मपुत्रका जी भर आया। उसने सोचा कि जैस मै रह रहा हू, वैसे ही रहते जाना गलत है। मुझे चाहिए कि जो सीखा है, चलू और वह औरोको भी सिखाऊ। जो पाता हू, सबको दू।

यह विचार मनमें आना था कि डाकूके घोडेकी टाप उसे सुन पडी। लेकिन वह उसे रोकने नही बढा। सोचा कि उसे कहने-सुननेसे क्या फायदा है। वह कुछ समझ नही सकता।

पहले तो यह विचार आया, फिर मन बदल गया और धर्मपुत्र बढकर सडक-पर आ पहुचा। आते हुए डाकूको देखा कि वह उदास है और आखें उसकी झुकी हुई है। धर्मपुत्रको यह देखकर दया आई और पास पहुंचकर उसकी रानोपर हाथ रखकर उसने कहा—"भाई, अपनेआपपर अब रहम करो। तुम्हारे अंदर

ईश्वरका वास है। तुम तकलीफ पाते हो इसीसे औरोंको सताते हो। नतीजा यह कि आगेके लिए और तकलीफ जमा करते जा रहे हो। लेकिन ईश्वर तुम्हे प्यार करता है और तुम्हें अपनानेको सदा तैयार है। देखो, अपनेको बिलकुल बरबाद न करो। अभी बदल सकते हो।"

पर डाकू नाराज होकर अपनी राह चलनेको हुआ। बोला—"अपने कामसे-काम रक्खो—"

लेकिन धर्मपुत्रने डाकूको और कसके पकड लिया और उसकी आखोसे तार-तार आसू गिरने लगे।

डाकूने इसपर आख उठाई और धर्मपुत्रकी तरफ देखा। जाने कैसे और कितनी देर देखता रहा। फिर एकाएक घोडेसे नीचे उतर वह धर्मपुत्रके चरणोमें घुटनो आ बैठा।

बोला—"तुमने आखिर मुझे जीत लिया, भाई। बीस सालतक मै अडा रहा, लेकिन आखिर तुमने मुझे जीत ही लिया। अब जो चाहे मेरा करो, मै तुम्हारे हाथ हू और बेबस हू। जब तुमने पहले मुझे सीख देनेकी कोशिश की, उससे मुझे और गुस्सा चढ आया था। पर तुम जब लोगोसे अपने-आपको दूर ले गये तब मुझे तुम्हारे शब्दोपर खयाल हुआ। क्योंकि तब मैंने देखा कि उन लोगोसे तुम्हे अपनी कोई गरज नही है। उसी दिनके बादसे मै तुम्हे खाना पहुंचाने लगा। मै ही पेडपर अगोछा बाध जाया करता था।"

धर्मपुत्रको याद आई वही पुरानी बात। उस स्त्रीकी मेज तभी साफ झड सकी थी जब पहले झाडनको साफ कर लिया गया था। इसी तरह जब कोई अपनी परवाह और गरज छोडकर अपने दिलको साफ कर लेगा तभी वह दूसरोके दिलकी सफाई कर सकेगा।

डाकू आगे बोला—"जब मैने देखा कि तुम्हे मौतका डर नही है उस समयसे मेरा दिल भी बदल चला।"

और धर्मपुत्रको याद आई वह हाल मोडनेकी घटना। जबतक एक जगह लोहेका सिरा किसी थिर चीजमें नही अटका दिया गया कि हाल नही मुडी। ऐसे ही जबतक मौतका डर दूर कर जीवनको ईशनिष्ठामें थिर नही कर लिया

गया तबतक इस आदमीके अक्खड मनपर काबू पाना भी नही हो सका।

डाकूने कहा—"लेकिन मेरा मन तब तो पिघलकर पानी-पानी हो आया जब करुणाके मारे तुम्हारी आखोसे अपने लिए मैंने आंसू ढरते देखे।"

धर्मपुत्र सत्यकी यह महिमा सुनकर मग्न हो आया। फिर वह अपने ठूठोके पास गया और डाकूको भी साथ ले गया। जाकर दोनो देखते है तो तीसरे ठूठमें भी सेवका कल्ला फूट गया है और हरी भाकी दे रहा है! उस समय धर्मपुत्रको याद आया कि बनजारोकी घास तबतक आग न पकड सकी थी जबतक पहले छिपटिया अच्छी तरह न सुलग लेने दी गई थी। इसी तरह जब उसका अपना दिल सहानुभूतिकी गरमीस जलने-जैसा हो गया था तभी वह दूसरेके दिलको अपनी लौसे जगा भी सका, पहले नही।

और धर्मपुत्रने इस भाति प्रकाश पाने और अपने पापोके क्षय हो जानेपर बहुत आभार और आनद माना।

फिर उसने डाकूको अपनी सारी जीवन-कथा कह सुनाई। इस भाति अपना सब मर्म उसे भेंट करनेके अनतर धर्मपुत्रने शरीर छोड दिया। डाकूने उसकी देहकी अत्येष्टि की और धर्मपुत्रके कहे अनुसार ही रहने लगा। धर्मपुत्रसे जो उसने पाया था, सब कही उसीका वितरण करनेमें वह लग गया।

: ६ :

दो साथी

(१)

एक बारकी बात है कि दो बूढे आदमी थे। उन्हें परम तीर्थ-धाम येरुशलमके यात्रा-दर्शनकी चाह हुई। उनमें एकका नाम था एफिम शुऐव। यह एक खासा खुशहाल काश्तकार था। दूसरेका नाम था एलीशा। एलीशाकी हालत उतनी अच्छी नही थी।

एफिम आदमी औसत तरीकेका था। सजीदा, इरादेका मजबूत, आदतका नेक। शराब उसने जीवनमें कभी नही पी थी। न बीड़ी पीता था, न तंबाकू।

और कभी उसके मुहपर गाली नहीं आती थी । दो बार गावमें वह सरपच चुना गया था और उसके कालमें हिसाब पाई-पाईका दुरुस्त रहता था। बडा उसका कुनबा था । दो बेटे थे और एक नाती । नातीका भी ब्याह हो गया था और सब जने साथ रहते थे । वह मिलनसार था और उसकी काया अभी तदुरुस्त बनी थी । दाढी नीचेतक आती थी और साठ पार हो गये तब दाढीके एक-आध बाल कही चादीके होने शुरू हुए थे।

एलीशा न सपन्न था, न दीन । काम उसका बढ़ईगीरीका था और बाहर बस्तीमें जाकर मजदूरी कर लिया करता था । पर उमर हो आई तो बाहर अब नही जा सकता था। सो घर रहकर उसने मधुमक्खी पाल ली। इसका एक बेटा कामकी तलाशमें दूर देश चला गया था। दूसरा घर रहता था । एलीशा दयावान और खुशमिजाज आदमी था। कभी-कदास पी लेता था और सुघनीकी आदत भी थी और गानेका भी कुछ शौक था। लेकिन आदमी वह शात प्रकृतिका था और पास-पडोसके साथ या घरमें सबसे बनाकर रहता था । कदमें जरा नाटा, रग कुछ पक्का । दाढी घुघराली घनी । और सिर अपने हमनाम पुराने ऋषि एलीशाकी भाति हमारे इन एलीशाका भी बालोसे एकदम सूना था।

इन दोनो वृद्ध जनोने, एक मुद्दत हुई कि, साथ येरुशलमकी यात्राको चलनेका सकल्प किया था । लेकिन एफिमको फुरसतका समय नही निकला। काम उसे बहुत रहा करता था । एक निबटता कि दूसरा हाथ घेर लेता । पहले तो नातीकी शादीकी बात ही आगे आ गई । फिर अपने छोटे बेटेके लामपरसे लौटनेके इतजारमें रहनेमें समय निकल गया । उसके बाद एक नये मकानके सिलसिलेमें मदद लगनी शुरू हो गई ।

सो एक इतवारके दिन दोनो जने, जहा मदद लग रही थी, उस नये घरके आगे मिले। वहा बल्लियोके चट्टेपर बैठकर बात करने लगे ।

एलीशाने कहा—"क्योजी, वह यात्राका सकल्प हमारा कब पूरा होनेमें आयेगा ?"

एफिमका मुह कुछ लटक गया । बोला—"अभी थोड़ी बार और देखो।

यह साल तो तुम जानो कैसा कठिन मुझे पडा है । सोचा था रुपये दो-सौ एकमें यह झोपडी खडी हो जायगी । लेकिन चार-सौसे ऊपर लग गये और अभी कितना काम बाकी है । गरमी आनेतक और ठहरो । भगवानने चाहा तो गरमीमें जरूर-ही-जरूर चलेंगे ?"

एलीशाने कहा—"मेरी राय तो है कि हमें जल्दी-से-जल्दी चल देना चाहिए। मौसम बसतका है, सो समय अच्छा भी है ।"

"समय तो अच्छा है, लेकिन इस लगी मददका क्या करू ? इसे छोड कैसे द ?"

"तुम तो ऐसे कहते हो जैसे देखने-भालनेको दूसरा कोई है ही नही । तुम्हारा बेटा ही जो है ।"

"बेटा ! भली कही ! उसका एतबार मुझे नही है । कभी हजरत ज्यादा भी चढा जाते हैं ।"

"भाई, आख मिचनेपर भी तो हमारे सबकुछ काम चलेगा न । सो बेटा बडा हुआ आप भुगतके सब सीख जायेगा ।"

"तुम्हारा कहना तो ठीक है, लेकिन काम छेटा तो अधबीचमें उसे छोडा भी नही जाता है ।"

"भाई सब कुछ तो इस जन्ममें कभी पूरा हुआ नही हैं । उस दिनकी बात है कि हमारे घर ईस्टरके लिए झाडा-बुहारी और सफाई-धुलाई हो रही थी । सो कुछ यहा करनको है, तो कुछ वहा निपटाना है । इस तरह यह-कर वह-कर, बस यही लगा-लगी रही । फिर भी सब काम पूरा नही हुआ । सो बडे-बेटेकी बहू जो हमारी है बडी समझदार है । बोली, "परब-त्यौहारका दिन हमारी बाट नही देखता, यही गनीमत है । नही तो कितना ही करें, हम उसके लिए कभी तैयार न हो पायें और ऐसे तो त्यौहार कभी न मनें ।"

एफिम सुनकर सोच-विचारमें पड गया । बोला, "इस झोपडपर मेरा खासा खर्चा आ गया है और यात्रापर तुम जानो खाली हाथ तो जाया नही जाता। हरेकपर सौ-सौ रुपया तो भी लगेगा । और सौ रुपया कोई छोटी रकम नही है ।"

एलीशा यह सुनकर हंस पडा । बोला—"छोडो भी, कैसी बात करते हो । मुझसे दस-गुना तुम्हारे पास होगा । फिर भी पैसेकी बात चलाते हो। मुझे बता दो कि कब चलना है और आज पास कुछ नही तो क्या, तबतक मै चलने जोग कर ही लूगा ।"

एफिम भी इसपर हसा । कहने लगा—"भई, पता नही था कि तुम ऐसे रईस हो। अच्छा, यह रकम ले कहासे आओगे ?"

"घरमें मिल-मिलाकर जमा-बटोर कुछ तो हो ही जायगा। वह काफी न हुआ तो कुछ मधुमक्खीके छत्ते एक पडोसीके हाथ उठा दूगा । वह अरसेसे लेना भी चाह रहा है ।"

"अगर कही शहद उनमें पीछे खूब पका तो तुम्हे बेचनेका अफसोस होगा।"

"अफसोस ? नही भाई, अफसोस मैं नही जानता । अपने पापके सिवा मैं किसी और बातके लिए पछतावा नही करता । भई, अपनी आत्मासे बढकर तो दूसरा कुछ है नही।"

"सो तो ठीक है, फिर भी घरके काम-धामका हर्ज करना भी ठीक नही लगता ।"

"लेकिन आत्माका हर्ज हो रहा है, सो ? वह तो उससे बुरी बात है ना। हम दोनोने तीर्थका सकल्प किया था। सो चलना ही चाहिए।

(२)

एलीशाने आखिर अपने साथीको मोड ही लिया। खूब सोच-विचारनेके बाद सवेरेके समय एफिम एलीशाके पास आये। बोले—"भई, तुम्हारी बात सही है । चलो, चलें । मौत-जिदगी परमात्माके हाथ है। सो जबतक देहमें सामर्थ है और दम बाकी है तभी चल दें तो अच्छा है।"

सो सात रोजके अदर दोनो जने यात्रा प्रस्थानके लिए तैयार मिले। एफिमके पास नकद पैसा काफी हो गया । सौ-एक रुपया उसने साथ ले लिया। दो-सौ बीबीके पास छोड दिया ।

एलीशाने भी तैयारी कर ली थी । दस छत्ते उसने पडोसीको उठा दिये थे। जो नई मधुमक्खीकी मुहाल उन छत्तोपर आकर लगें, वे भी उसीकी।

इस तमामपर सत्तर रुपये उसे मिले । सौमेंके बाकी उसने अपने कुनबेके और लोगोसे जमा बटोरकर पूरे कर लिये । इसमें इधरके और लोग सब खोखले ही रह गये । बीबीने अपनी मौतके बाद क्रिया-कर्मके वास्ते बचाकर कुछ जमा रख छोडा था सो सब दे दिया। बहूने भी पासका अपना सब कुछ सौंप दिया।

एफिमने अपने बडे लडकेको ठीक-ठीक पूरी तरह सबकुछ समझाकर ताकीद दे दी थी कि कब और कितनी घास कहासे कटेगी खादका क्या इतजाम होगा और छत कैसी पडेगी । उसने एक-एक बातका विचार रक्खा था और पूरा बदोबस्त समझा दिया था। दूसरी तरफ एलीशाने अपनी बीबीको बस इतना कहा कि उन छत्तोको जो बेच दिये है न अपनी मक्खी न लगने देना कि कही उनका शहद कम हो जाय । और देखना, सब छत्ते पूरे-के-पूरे पडोसीको मिल जाय, कुछ अपनी तरफसे चूक न हो। बाकी घरकी और बातोके बारेमें एलीशा किसी तरहका कोई जिक्र भी मुह पर नही लाया। बोला—"जसी जरूरत देखना, वैसा अपने कर लेना। तुम्ही लोग तो मालिक हो। सो जो ठीक जानो अपने सोच-विचारकर वह कर ही लोगे ।"

इस तरह दोनो वृद्ध जन तैयार हो गये। लोगोने खाना बनाकर साथ बाध दिया और पैरोके लिए पट्टिया तैयार करके दे दी। जूते उन्होने एक जोडी पहन लिये, एक साथ रख लिये। परिवारके लोग गावके किनारेतक साथ-साथ आये और वहा दोनोको विदा दी। दोनो जने अपनी यात्रापर चल दिये।

एलीशा मनसे हलका और प्रसन्न था। गावसे निकलना था कि घर-बारकी सब बातें उसने मनसे भुला दी। उसको बस अब यह लगन थी कि अपने साथीको कैसे आरामसे और खुश रक्खू । किसीको कोई सख्त कडुआ शब्द न कहू और सारी यात्रा कैसी प्रीति और शातिसे पूरी करू । सडकपर चलते हुए एलीशा या तो मन-मनमें प्रार्थना दुहराता रहता, या सत-महात्माओके जीवनका विचार करता रहता । जो थोडा-बहुत उनके बारेमें उसने सुना-जाना था वही उसे बहुत था। रास्तेमें कोई मिलता या रातमें कही ठहरना होता तो वह बडी विनयसे बात करता और सबसे मीठे बैन बोलता । इस तरह मगन भावसे वह अपनी यात्रापर आगे बढता रहा। एक बात बेशक उसके बसकी नही हुई। सुघनी

उससे नही छोडी गई । सुघनीकी डिबिया तो उसने घर छोड दी थी, लेकिन उसके बिना अब उसे कल नही पडती थी । आखिर एक राहगीरने उसे कुछ सुघनी दी। सुघनी पाकर वह फिर चलते-चलते राहमें रुक जाता (कि कही उसके साथीको बुरा न लगे या मन न चले) और पीछे रहकर सुघनीकी वह जरा नक्की ले लेता और फिर आगे बढता था ।

एफिम भी मजबूत तबियतसे चल रहा था। कोई खोटा काम नही करता था और अहकारके वचन नही बोलता था, लेकिन मन उसका वैसा हलका नही था। घरकी फिकरका बोझ उसके मनपर बना था । जाने घरपर कैसे चल रहा हो। देखो, बेटेसे यह और कहनेकी याद न रही। और हा वह भी नही बतलाया। लडका ठीक-ठीक चला भी लेगा कि नही। रास्तेमें कही खादकी गाडी जाती उसे दीखती या आलू ढोते हुए लोग मिलते तो एफिमके मनमें एकदम खयाल होता कि घरपर हमारे सब काम ठीक-ठीक हो रहे होगे कि नही। उसकी कभी तो मानो यही तबियत मचलती कि चलू वापिस लौटकर पहले सब उन्हें अपने हाथोसे करके बता और समझा आऊ।

इस तरह पाच हफ्ते वे दोनो चलते गये, चलते गये । उनके जूतेके तले बेकार हो गये । छोटा-रूस आते-आते दूसरे जूतोके बदोबस्तकी उन्हें सोचनी पडी। घरसे चले तबसे अबतक खाने और रातके ठहरनेके उन्हें दाम देने हुआ करते थे । यहा आकर अब लोग उन्हे ठहराने और सत्कार करनेमें मानो आपसमें होड-सी करने लगे । अपने घर ठहराते, खिलाते-पिलाते और बदलेमें पैसा एक न छूते । इतना ही क्यो, आगे राहके लिए वे आग्रहके साथ खाना भी उनके साथ बाध दिया करते थे।

कोई पाच-सौ मीलकी यात्रा इन लोगोने इस तरह बे-लागत की। इसके बाद जो जगह आई, वहा उस साल कास्त सूख गई थी। वहाके किसान लोग ठहरा तो मुफ्त लेते थे, पर खाना बे-लागत नही दे सकते थे। सो कभी तो रोटी उन्हें मिलती भी नही थी। दाम देनेको तैयार थे, पर रोटी मयस्सर नही होती थी । लोग बोले कि खेती पारसाल एकदम सत्यानाश हो गई। जिनके खलिहान भरे रहा करते थे, उन्हे ही अब घरका बासन-कूसन बेच देना पड रहा है। उनसे

कुछ उतरी हालत जिनकी थी, उनका हाल बेहाल है। और जो गरीब थे, उनमें भाग गये सो गये, बाकी जो बचे माग-तागकर पेट पालते या घरमें पडे भूखों मर रहे हैं। जाडोमें तो चोकर और पत्तिया खाकर तन जोडे रहे।

एक रात दोनों आदमी एक छोटे देहातमें ठहरे। रात वहा नीद ली और अगले दिन तडका फूटनेसे पहले चल दिये। वहासे काफी रोटी ले रक्खी। धूपमें ताप चढनेतक खासी राह उन्होने तय कर ली। कोई आठ मील चलनेपर एक चश्मा आया। वहा दोनो जने बैठ गये और पानी लेकर उसके साथ रोटी भिगो-भिगोकर खाई। फिर पावोकी पट्टी खोल जरा विश्राम किया। एलीशाने अपनी सुघनीकी डिबिया निकाली।

देखकर एफिमने नापसदगीमें सिर हिलाया। कहा—"यह क्या बात जी? यह गदी लत तुम नही छोड पाते?"

एलीशाने कहा—"यह लत मेरे बससे भारी हो गई दीखती है। नही तो और क्या कहू?"

विश्रामके उपरात उठकर वे लोग वहासे आगे बढ लिये। कोई आठ मील और चलनेपर एक बडा गाव आया जिसके ठीक बीचमेंसे गुजरना हुआ। अब घामका ताप बढ गया था। एलीशाको थकान हो आई थी और जरा वहा ठहरकर पानी पी लेनेको उसका जी था। लेकिन एफिम बिना रुके चला जा रहा था। दोनोंमें एफिम अच्छा चलनेवाला था और एलीशाको उसका साथ पकडे रहनेमे भी कठिनाई होती थी।

एलीशाने कहा—"जो कही यहा पानी मिल जाता, तो अच्छा था।"

एफिमने कहा—"अच्छी बात, पियो पानी, पर मुझे प्यास नही है।"

एलीशा ठहर गया। बोला—"तुम चलते चलो। मैं जरा उस झोपडीतक जाकर पानी पी आताहू। थोडी देरमें बढकर तुम्हारा साथ ले लूगा।"

"अच्छा।"

यह कहकर एफिम सडकपर अकेला ही आगे बढ लिया। एलीशा झोपडीकी तरफ मुडा।

झोपडी छोटी-सी थी। दीवारें मिट्टीसे पुती थी। फर्श काले रगका और

इस्तेमालसे चिकना था। ऊपर सफेद पोता । लेकिन दीवारोकी मिट्टी गिरने लगी थी । मालूम होता था मिट्टी थोपे मुद्दत हो गई है। ऊपर एक तरफसे छप्पर-छत छिदीली थी । दरवाजेके आगे एक आगन-सा था । एलीशा आगनमें आया। देखा कि मिटटीके डडेका घेर जो घरके चारो तरफ खिचा हुआ है, उसके तले अदर एक आदमी ढेरकी मानिंद पडा है । देहका मजबूत, दाढी नही है, और कुर्ता पाजामेके अदर उडसा हुआ है । आदमी वह वहा छायामें ही लेटा होगा, लेकिन अब सूरज घूमकर पूरा उसके ऊपर पड रहा था। वह सोया नही था, फिर भी पडा हुआ था। एलीशाने उसके पास जाकर पानी मागा लेकिन आदमीने कुछ जवाब नही दिया ।

एलीशाने सोचा कि या तो यह बीमार है, या जानबूझकर सुनना नही चाहता। दरवाजेके पास गया तो अदरसे एक बच्चेके रोनेकी आवाज आई। उसने कडी पकड दरवाजेको खटखटाना शुरू किया।

"भाई, कोई है ?"

एलीशाने पुकारा । पर जवाब कोई नही । अपने डडेसे किवाडको ठोकते हुए उसने फिर पुकारा, "ए जी, कोई सुननेवाला अदर है ?"

पर कोई उत्तर नही।

"ए सुनो, कोई है ?"

जवाब नदारद।

एलीशा लौटनेको हुआ। लेकिन तभी ऐसा मालूम हुआ कि जैसे दूसरी तरफसे कोई कराहनेकी आवाज उसके कानमें पडी हो।

"कोई मुसीबत इन लोगोपर पडी मालूम होती है । चलू। देखू तो।" और एलीशा झोपडेमें घुसा।

खटका उसने खोला । दरवाजेकी कुडी अदरसे बद नही थी, वह सहज खुल गया और एलीशा जिस कमरेमें पहुचा उसमें बाई तरफ चूल्हा था। सामने आलेके ऊपर मसीहका क्रूस टगा था। पास एक मेज थी। वही बेंच पडी थी। बेंचपर थी एक स्त्री। सिर उसका खुला था, तनपर अकेला एक कपडा। उमर-की बुढिया थी। मेजपर सिर रक्खे झुकी बैठी थी । पास ही पोनामिटटी-सा

पीला दुबला एक बालक था जिसका पेट आगेको निकला हुआ था। वह कुछ माग रहा था और जोर-जोरसे रोकर बुढियाका पल्ला खीचता था। एलीशा घुसा तो हवा वहाकी उसे बहुत गंधीली मालूम हुई। उसने मुडकर देखा तो चूल्हेके पास धरतीपर एक औरत और पडी थी। आखें बद थी। और गलेमें कुछ घर-घर आवाज हो रही थी। वह वहा चित पडी आसमानमें रह-रहकर टागें फेंक रही थी। कभी उन टागोको सिकोडती, समेटती और फिर फेंकने लगती। दुर्गंध वहीसे आ रही थी। मालूम होता था कि वह खुद उठ-बैठ सकती है नही, न कोई और देखने-भालनेवाला है। बुढियाने सिर उठाया और आगतुकको देखा। बोली, "क्या है? कुछ चाहते हो? यहा कुछ नही।"

भाषा उसकी दूसरी थी। फिर भी एलीशा बात समझ गया। बोला, "भगवानकी दया हो। जरा पीनेको पानी चाहता था।"

"यहा कोई नही है, कुछ नही है। पानी काहेमें लाकर रक्खें? जाओ, रास्ता देखो।"

उस समय एलीशाने पूछा—"क्यो जी, कोई तुममें नही जो वहा उस बिचारी बीमारको जरा सभालने लायक हो?"

"नही, कोई नही। लडका मेरा बाहर बेबस मर रहा है। हम यहा अदर मर रहे है।"

बच्चेने एक नये आदमीको देखकर रोना बद कर दिया था। लेकिन बुढ़िया बोली तो फिर उसने वही राग शुरू कर दिया। बुढियाका आचल खीचकर बोला—"दादी रोटी, दादी रोटी।"

एलीशा बुढियासे पूछनेवाला था कि बाहरसे वह आदमी लडखडाता-लडखडाता वहा पहुचा। वह दीवारको पकडे-पकडे आ रहा था, पर कमरेमें घुसा कि देहलीके पास धडामसे गिर पडा। फिर उठकर चलने और पास आनेकी उसने कोशिश नही की। वहीसे टूटती जबानमें बोलने लगा। एक शब्द निकलता, कि फिर सास लेनेको वह रुक जाता और हाफता हुआ फिर आगेका शब्द मुहसे बाहर होता।

बोला—"महामारीने हमें पकड़ लिया है। और अकाल . वह

भूखा है मर रहा है ।"

कहकर उसने बच्चेकी तरफ इशारा किया और खुद फूटकर रोने लगा।

इसपर एलीशाने कंधेपर लटके अपने बकचेको लिया और कमरपरसे उतारकर धरतीपर रख दिया। फिर बेंचपर उसे खोल उसमेंसे रोटी (डबल रोटी) निकाली। चाकू लेकर उसमेंसे एक टुकडा काटा और उस आदमीकी तरफ बढा दिया। लेकिन आदमीने उसे तो लिया नही, बल्कि उस बच्चे और चूल्हेके पीछे दुबकी बैठी एक दूसरी लडकीको इशारेसे एलीशाको बताया। मानो कहा—"देते हो तो उन्हें दो, उन्हें।"

यह देख एलीशाने रोटी बालककी ओर बढाई। रोटीका देखना था कि बालकने दोनो हाथ बढाकर उसे झपट लिया और नन्हें-नन्हें हाथोमें टुकडेको पकड उसमें ऐसा मुह गाडकर खाने लगा कि उसकी नाकका पता चलना मुश्किल था। पीछेसे लडकी भी चलती वहा आ पहुची और रोटीपर आख गाडे खडी हो गई। एलीशाने उसे भी टुकडा दिया। फिर एक और टुकडा काटकर उस बुढिया स्त्रीको दिया। वह बुढिया भी अपने बूढे मुहमे उसे कुतरकर खाने लग गई।

बोली—"जो कही थोडा इस वक्त पानी कोई और ले आता! तालू तो बेचारोके सख रहे है! कल मै पानी लेने गई थी, या आज, याद नही .. सो बीचमें ही गिर पडी। आगे फिर जा नही सकी। डोल वही पडा रह गया। कोई ले न गया हो, कौन जान वही पडा हो।"

एलीशाने कुएका पता पूछा। बुढियाने बता दिया। सो एलीशा गया, डोल लिया और पानी लाकर सबको पिलाया। बच्चोने और बुढियाने पानी आनेपर उसके साथ फिर और भी कुछ रोटी खाई। लेकिन आदमीने एक कन मुहमे न डाला। बोला, "मै खा नही सकता।"

अबतक वहा पडी दूसरी स्त्रीको कोई होश नही मालूम होता था। वह वैसे ही अधरमें टाग फेंक रही थी। एलीशा तब फिर गावकी एक दूकानपर गया। वहासे कुछ जईका चून लिया। नमक, दाल और तेल ले लिया। एक कुल्हाड़ी भी कहीसे खोज ली और काटकर लकड़ी जमा की। फिर आग

जलाई। लड़की भी आकर उसमें मदद देने लगी। उपरात उन्होंने खाना तैयार किया और भूखे जनोको खिलाया।

(५)

उस आदमीने तो नाममात्र खाया। बुढ़ियाने भी कम ही खाया। पर बच्चोंने तो बरतनको चाटकर साफ कर दिया। फिर वे दोनो बालक आपसमें गलबाही डाले गुडी-मुडी होकर सो गये।

उस वक्त बुढ़िया स्त्री और उस आदमीने एलीशाको अपने दुःखकी सारी कथा सुनाई कि कैसे उनकी यह दशा हुई। बोले—"गरीब तो हम पहले ही थे। पर इस सालके सूखेने मुसीबत ला दी। जो जमा था कठिनाईसे सर्दीतक चला। जाडोंके दिन आते-आते यह नौबत हुई कि पडोसीसे या जिस-तिससे मागकर काम चलाना पडा। पहले तो उन्होंने दिया, पीछे वे भी इन्कार करने लगे। चाहते थे कि दें, पर देनेको उनके पास होता नही था। और हमें भी मागते शर्म आती थी। सो कर्जमें हम गले तक डूबते गये। एक-एक कर सबका लेना हमपर हो गया। किसीका पैसा चाहिए था तो किसीका नाज वाजिब था और किसी तीसरेकी और कोई चीज उधार चढ गई थी।

"ऐसी हालत होनेपर", आदमी बोला, "मै कामकी तलाशमें लगा। पर कोई काम नही मिला। पेट रखने जितना नाज मिल जाय, तो उसी मजूरीपर काम करनेके लिए बेतादाद लोग तैयार थे, और कभी कुछ काम मिला भी, तो अगले दिन फिर खाली। फिर और काम ढूंढो। मैं इस चक्करमें बीत चला। बुढ़िया और लडकीने उधर कही दूसरी जगह जा भीख मागना शुरू कर दिया था। पर कभी बेखाये, तो कभी अधपेट, जीते ही गये। आस थी कि अगली फसल आनेतक ज्यो-त्यो चले चलें तो फिर देखा जायगा। पर पतझड आनेतक तो हमें भीखमें भी कुछ मिलना बद हो गया। ऊपरसे बीमारीने आ पकडा। हालत बदसे बदतर होती गई। आज कुछ मिल जाता, तो दो दिन फाकेके होते। आखिर घास खाकर हम लोग तन रखने लगे। मालूम नही घासकी वजह थी कि क्या, मेरी बीवी बीमार पड गई। टागोपर उससे चला नही जाता, न खडी रह पाती है। मेरा भी दम छीन होता गया। और मदद कही कोई दीखती नही....।"

"तो भी" बुढिया बोली, "मै कुछ बची थी । पर निराहार काया कबतक चलती। आखिर मै भी गिरती गई। लडकी यह दुबला गई और डरी-सहमी-सी रहने लगी । मै कहती कि जा, पडोसियोसे कुछ माग-ताग ला । पर वह घरसे बाहर न जाती और कोनेमें सरककर गुमदुबक बैठ जाती। अभी परसो एक पड़ो-सन यहा घर भाकने आई। पर यहांका हाल देख उल्टे पाव चली गई। देखा कि यहा तो खुद सब बीमार और भूखे पडे है । असलमें उसके आदमी ने कहा था कि जा, कहीसे इन नन्होके मुह डालनेके लिए तो कुछ ला। सो उस आसमें बेचारी आई थी। पर हम पहले ही यहा मौतकी बाट देखते पडे थे ।"

उनकी यह दुख-कथा सुनी तो एलीशाने उस रोज जाने और अपने साथीका संग पकडनेका विचार छोड दिया । रात वह वहां रहा । अगले सवेरे अधेरे-दम उठा और घरका काम-धाम सहारने लगा । काममें वह ऐसे अनायास लग गया कि उसीका घर हो । आग जलाई और आटा गूदा । बुढिया उसका साथ देती जाती थी। फिर वह लडकीको साथ लेकर पास-पडोससे जरूरी चीज-वस्त लेने चला । क्योकि घरमें कुछ था नही, नाज पानेमें सब कुछ बिक गया था । न दो बासन रह गये थे, न कोई वस्त्र । सो एलीशा जरूरी सामान जुटाने लगा। कुछ अपने पाससे ही मुहय्या हो गया, बाकी खरीदकर ला दिया । सो वहा वह एक दिन रहा, फिर दूसरे दिन, और फिर तीसरे दिन । छोटे बालकमें अब दम आ गया और एलीशा बैठा होता तो वह सरक-सरककर उसकी गोदमें चढ जाता। लडकीका चेहरा भी खिल आया और वह हर काममें दौडकर मदद करने लगी। और जरा बात हो तो झट एलीशाके पास भाग आती । कहती, "दादा, ओ दादा !"

बुढियामें भी अब ताकत आती जाती थी और पास-पडोसमें अब वह घूम आ सकती थी । आदमीके बदन में भी बल आ रहा था और दीवारका सहारा लेकर अब वह चल-फिर सकता था। बस उसकी बीबी चगी होनेमें नही आ रही थी । लेकिन तीसरा दिन होते उसे भी होश हुआ और उसने खानेको मागा।

एलीशा सोचने लगा कि रास्ते में इतना वक्त बरबाद हो जायगा, इसका

भला क्या पता था । चलो, अब बढ़ना चाहिए ।

(६)

चौथा रोज ईस्टरके व्रत-पर्वका आखिरी रोज था । वह रोज उपवासके पारणका दिन होता है और लोग खा-पीकर खुशी मनाते हैं। एलीशाने सोचा कि इस दिनको तो यही इन्ही लोगोके साथ मुझे गुजारना चाहिए । जाकर दुकान-से इनके लिए कुछ ला-लू दूगा और त्यौहारके आनदमें साथ दूगा। फिर निबटकर शामको अपनी राह चल दूंगा।

यह सोचकर एलीशा गावमें गया और दूध-सेवईका इतजाम किया और घर पहुचकर अगले रोजके त्यौहारकी तैयारीमें मदद देने लगा। कही कुछ उबल रहा है तो कुछ सिक रहा है। पर्ववाले दिन एलीशा गिरजे गया। आकर तब सबके सग-साथमें उपवास तोडा और जीमन किया । उस रोज बीबी भी उठकर कुछ-कुछ टहलने लायक हो आई थी और पतिने हजामत की और बुढियाने धोकर कुर्त्ता नया कर रक्खा था सो पहना । तब वह गावके महाजनके पास क्षमावनी मागने गया । जमीन और चरागाह उनकी उसी महाजनके यहा गिरवी रक्खी थी। वह कहने गया था कि महाजन, खेत और जमीन बस एक फसलके लिए दे दो । लेकिन शामको लौटा तो बडा उदास था। आकर वह आसू गिराने लगा । असलमें महाजनने कोई दया नही दिखलाई थी। सीधे कह दिया था कि पहले मेरा रुपया दो।

एलीशा इसपर फिर सोच-विचारमें पड गया । मनमें बोला कि अब ये लोग रहेंगे कैसे ? और जने काटकर घास तैयार करेंगे तब ये क्या काटेंगे? इनकी जमीन तो गिरवी रखी है । जई पकनेके दिन आये। और इस साल देखो धरती-माताने फसलमें क्या धन-धान उगला है, पर दूसरे लोग कटाई कर रहे होगे और इन बेचारोके पास कुछ है नही । उनकी तीन एकड जमीन महाजनके तावे है । सो मेरे पीछे इन बेचारोकी दशा वैसी ही न हो जायगी जैसी आनेपर मैंने देखी थी ?

सोचकर एलीशा दुबिधामें हो गया । आखिर तय किया कि आज शाम न जाऊ, कलतक और ठहर जाऊं। यह विचार पक्का करके रातमें

सोनेको वह ओसारेमें गया और प्रार्थना करके बिछावनपर लेट गया। पर वह सो नही सका। एक तरफ तो सोचता था कि चलू, क्योकि यहा उसका काफी समय और काफी पैसा लग गया था। पर दूसरी तरफ इन लोगोपर उसके मनमें करुणा भी आती थी। और ।

मनमें बोला—"इसका तो कोई अत ही नही दीखता है । पहले तो मैंने इतना ही सोचा था कि लाकर इन्हें पानी दिये देता हूँ और यह पासकी रोटी। तब क्या जानत. था कि बात ऐसी बढ जायगी। लो, अब तो खेत और चराईकी धरतीको गिरवीसे छुडानेकी बात सामने आ गई है । यह किया तो फिर उनको गाय भी लेकर देनी होगी। फिर एक घोडा भी चाहिए जिससे गाडीमें लान-वान ढोया जा सक। वाह दोस्त एलीशा, तुमने तो गलेमे यह अच्छा फदा डाल लिया है । अपनी सुध बिसार तुम तो खासे गडबडझाल्मेें पड गये हो।" यह सोचता हुआ एलीशा उठा और सिरहानेसे कोट निकाल, तह खोल, अपनी सुँघनीकी डिबिया बाहर की और उसमेंसे एक नक्की ली । सोचता था कि सुघनीसे मदद मिलेगी और झमेला कटकर मनके ख्याल साफ होनेमें आयेंगे ।

लेकिन कहा ? बहुतेरा सोचा, बहुतेरा विचारा । पर निश्चय न होता था । एक मन होता कि चल देना चाहिए । पर दया रोक लेती थी । उसे सूझ न पडती थी कि करूँ तो क्या। कोटकी तह कर आखिर फिर उसने सिरहाने ले लिया । ऐसे बहुत देर पडा रहा । होते-होते मुर्गेकी पहली बाग उसे सुनाई दी । तब उसकी पलकोपर नीद उतरने लगी । पर सो न पाया होगा कि उसे ऐसा लगा कि किसीने उठा दिया है । देखा, तो वह सफरके लिए तैयार है, बकचा कमरपर कसा है, हाथमें लाठी लिये है । बाहर दरवाजा भी इतना खुला है कि वह तरकीबसे चुपचाप निकल जा सकता है । वह निकलकर जा ही रहा था कि कमरके बकचेके बध एक तरफ तारमें हिलग गये । वह उसे छुडानेमें लगा कि इतनेमें दूसरी तरफ बायें पैरकी पट्टी अटक गई और खिचकर खुलने लगी। आखिर उचककर बकचेको उसने ठीक कमरपर लिया, पर देखता क्या है कि तारने उसे नही हिलगाया, बल्कि छोटी लडकी उसे पल्लेसे पकडे हुए है । कह रही है—

"दादा, रोटी ! दादा, रोटी !"

फिरकर पैरकी तरफ जो उसने देखा तो क्या देखता है कि छोटा बच्चा उसके पांवकी पटटीको पकडे हुए है । और बराबरकी खिडकीमेंसे बुढिया और घरका मालिक वह आदमी, दोनो जने उसे जाते देख रहे है ।

एलीशा इसपर जग आया । उठकर अपने आपसे ऐसे बोलने लगा कि दूसरा भी सुन ले । कहने लगा कि कल मे उनके खेत उन्हें छुडा दूगा और एक घोडा ले दूगा । बच्चोके लिए एक गाय और फसल आनेतकके लायक नाज भी भर दूगा । नही तो मैं उधर समदर पार भगवानको पाने जाऊँ, तो कही ऐसा न हो कि अपने अदरके भगवानको ही मैं खो बैठू ।

इस विचारके बाद एलीशा अपनी गाढी नीद सो गया, तडका फूटनेपर उठा । अध-सवेरे ही उठ महाजनके पास जाकर उसने चराईकी धरती और खेतीकी जमीन दोनोको पैसा चुकाकर छुडा लिया । फिर एक दरात ली (क्योकि अकालमें यह भी काम आ गई थी) और उसे साथ लेकर घर लौटा । आकर आदमीको तो कटाई करने भेज दिया और खुद फिर गावकी तरफ चला । वहा पता लगा कि चौपालपर एक गाडी और घोडा बिकाऊ है । मालिकसे भाव-सौदा करके उसने दोनो खरीद लिये । फिर एक बोरा नाज भी ले लिया और उसे गाडीमें रखवा लिया । उसके बाद गायकी तलाशमें चला । जा रहा था कि दो औरतें मिली । आपसमें बात बतलाती जा रही थी । वे अपनी भाषामें बोल रही थी, तो भी एलीशा समझ सका कि वे क्या कह रही हैं ।

"अरी, पहले तो वे समझे नही कि कौन है । सोचा, आता-जाता होगा कोई भला-मानस । पीनेको पानी मागता आया था कि फिर वह वही रह गया । बहिन, सुना कुछ, क्या-क्या सामान उनके लिए उसने ले डाला है । रामदुहाई, कहते है कि एक घोडा और एक गाडी तो अभी सवेरे ही चौपालमें उसने मोल लिये है । ऐसे आदमी दुनियामें बिरले मिलते है । चलती हो, चलो उन पुण्यात्माके दर्शन ही करें ।"

एलीशा सुनकर समझ गया कि यह उसीकी तारीफ की जा रही है । सुनकर वह आगे गाय लेने नही गया । लौटा, चौपालपर आया, दाम चुकाये और गाडी

जोतकर घर आ गया । गाडीसे उतरा तो घरके लोगोंको घोडा-गाडी देखकर बडा अचंभा हुआ । उन्होंने सोचा तो कि कही सब यह उन्हीके वास्ते न हो,—पर पूछनेकी हिम्मत नही हुई। इतनेमें आदमी भी घरका दरवाजा खोल बाहर आया । बोला—"दादा, यह घोडा कहासे ले आये ?"

एलीशाने कहा, "अजब सवाल करते हो । खरीदे लिये आ रहा हूँ, नही तो सस्ता बिका जाता था। अच्छा, जाओ और काटकर घास नादमें डाल दो कि रातको इसके लिए हो जाय। और गाडीमेंसे यह बोरा भी उतार लो।"

आदमीने घोडा खोल लिया और बोरा नाजका कोठेमें ले गया । फिर घास काटकर नादमें डाल दी । आखिर निबट-निबटा सब जने अपने सोने चले गये। एलीशा आज रात सोनेके लिए बाहर रास्तेसे लगे ओसारेमें आ रहा था । उस शाम उसने अपना बकचा भी पास ले लिया था। सब-के-सब सो गये थे, उस वक्त वह उठा । बकचा अपना सभाला और कमरपर कस लिया । पट्टिया टागोसे बाध ली, कोट पहन लिया और जूते चढा आगे राहपर एफिमको पकडने बढ़ लिया ।

(७)

एलीशा कोई तीन मीलसे ऊपर चलते चला गया होगा कि चादना होने लगा । तब एक पेडके नीचे बैठ उसने बकचा खोला और पासके पैसे गिने। कुल सात रुपये और पाच आनेके पैसे बचे थे ।

सोचने लगा कि उतने पैसे लेकर समदर पारकी यात्रा की सोचना वृथा है । अगर भीख मागकर यात्रा पूरी करूँ तो उससे तो न जाना अच्छा है। एफिम मेरे बिना भी येरुशलम पहुँच ही जायगे और मदिरमें वहा मेरे नामका भी एक दिया रख देंगे । और मेरी बात पूछो तो इस जन्ममें अपना प्रण पूरा करनेको मुझे अब क्या मौका मिलेगा । बडा शुक्र है कि प्रण और सकल्प मैंने मालिकके सामने ही किये थे कि जो दयासागर है और पापियोके पाप माफ कर देते हैं।

एलीशा उठा, झटककर फिर अपना बकचा कमरपर लिया, और वापिस मुड चला । वह यह नही चाहता था कि कोई मुझे पहचान ले । सो गावको बचानेके लिए चक्कर लेकर वह अपने देशकी तरफ तेज चाल चल दिया । घरकी

तरफ जाते इस बार वही रास्ता उसे हलका लगा जो पहले कठिन मालूम हुआ था। पहले एफिमका साथ पकड़े रहनेमें मुश्किल होती थी, अब ईश्वरकी दयासे लंबी राह चलते उसे थकान न आती थी। चलना बालकका खेल-सा लगता था। लाठी हिलाता, एक दिनमें चालीससे पचास मीलतक आसानीसे नाप लेता था।

देश अपने घर जाकर पहुँचा तो फसल हो चुकी थी। कुनबेके लोग उसे वापिस आया पाकर बहुत खुश हुए। सब पूछने लगे कि क्या हुआ, कैसे बीती, कैसे पीछे और अकेले रह गये? येरुशलम जाये बिना क्यो लौट आये? पर एलीशाने उनको कुछ कहा नही। इतना ही कहा कि भगवानकी इच्छा नही थी कि मै वहा पहुंचू। सो राहमें मेरा पैसा जाता रहा और साथीका साथ छूटकर मैं पीछे पड गया। भगवान मुझे माफ करेंगे और आप लोग भी माफ करें।

इतना भर कहकर जो पैसा पास बचा था सब अपनी बुढिया बीबीके हाथोंमें दे दिया। फिर घर-बारके हाल-अहवाल पूछे।'सब ठीक-ठाक चल रहा था। काम सबने पूरा किया था। किसीने कोर-कसर नही की थी और सब जने मेल और शातसे रहे थे।

उसी दिन एफिमके घरके लोगोंको भी उसके लौटनेकी खबर मिली। वे भी अपने दादाकी खबर लेने आये। उनको भी एलीशाने यही जवाब दिया।

कहा—"एफिम तेज चलते हैं। संत पीटरके पर्वके दिनसे तीन रोज इधर मेरा उनका साथ छूट गया। सोचता था कि मैं फिर साथ पकड लूगा। लेकिन ईश्वरका चाहा होता है। मेरा पैसा जाता रहा और फिर आगे बढ़ने लायक मै नही रहा। सो अधबीचसे लौट आया।"

लोग अचरज करते थे कि ऐसे समझदार आदमी होकर उन्होने क्या यह मूरखपनेकी बात की। चलनेको चल पड़े; पर जाना था वहां पहुंचे नहीं और रास्तेमें ही सब पैसा फूक दिया। कुछ काल तो वे इसपर विस्मयमें रहे। फिर धीरे-धीरे सब भूल चले। एलीशाके मनसे भी सब बिसर गया। वह अपने घरके काम-धंधेमें लग गया। अपने बेटेकी मददसे जाड़ोंके लिए लकडी काटकर भर ली। औरतोंने और सबने मिलकर नाज गाह रक्खा, फिर बाहरके छप्परको ठीक कर लिया। मक्खियोंके छत्तोको छा दिया और पड़ोसीको उसने वे दस

छत्ते दे दिये जो बेचे थे। उसपर जितना मधु-मुहाल आया, सबका सब ईमानदारीसे पड़ोसीकी तरफ कर दिया। बीबीने कोशिश भी की कि न बताऊ कि इन छत्तोपरसे कितने मधु-मुहाल हुए है। लेकिन एलीशा खूब जानता था कि कौन छत्ते फले है, कौन नही। सो दसकी जगह पडोसीको सत्रह भरे छत्ते मिले। जाडोकी सब तैयारी करके उसने लकडेको काम तलाश करने भेज दिया। खुद मधु-मक्खीके कोटर तैयार करने और लकडीकी खडाऊ वगैरह बनानेके काममें जुट गया।

(८)

एलीशा उधर पीछे गावमें रह गया था तो उस दिनभर एफिमने राहमें उसका इतजार देखा। आगे कुछ ही कदम चलनेपर वह बैठ गया था। बाट देखता बैठा रहा, बैठा रहा। झोक आई और एक नीद वह सो भी लिया। उठकर फिर बाट जोहने लगा। लेकिन उसका साथी नही लौटा। बाट देखते उसकी आखें दुख आई। उस पेडके पीछे सूरज अब डूबने लग रहा था, पर एलीशाका उस सडकपर न अता दीखता था न पता।

एफिमने सोचा—"शायद हो कि इसी रास्ते वह मुझसे आगे निकला चला गया हो। क्या पता किसीने अपनी गाडीपर बिठा लिया हो, मै सो रहा हू तभी बिना मुझे देखे आगे बढता गया हो। लेकिन ऐसा हो कैसे सकता है कि मै उसे न देखू। यहा तो पटपर मैदानमें दूर-दूरतक साफ दीखता है। चलू, लौटकर देखू। लेकिन जो कही वह आगे बढ गया होगा तब तो फिर ऐसे हम दोनो बिछुड ही जायंगे और कोई किसीको न मिलेगा। सो अच्छा है मै चला ही चलू। रातको जहा पडाव होगा, वहा तो आखिर दोनो मिलेंगे ही।"

सो चलते-चलते गाव आया। वहा उसने चौकीदारसे कहा कि इस-इस शकलका कोई मेरी उमरका आदमी चलता हुआ आयेगा, तो उसे जहा मै ठहरा हू वही ले आना। लेकिन एलीशा उस रात भी नही आया। एफिम अकेला आगे बढा। राहमें जो मिलते सबसे पूछता कि नाटे कदका, सिर साफ, बूढी उमरका कोई मुसाफिर तो तुमने नही देखा है? पर किसीने उसे नही देखा था। एफिमको अचरज होता और फिर अकेला आगे बढ़ लेता। सोचा, कि आखिर ओडेसा

पहुचकर तो हम दोनो मिलेंगे ही । नही तो जहाजपर मुलाकात पक्की है। यह सोच उसने फिर उस बाबत सब फिकर छोड दी ।

चलते-चलते रास्तेमें उसे एक यात्री मिला जो एक लबी कफनी पहने था। बाल बढे थे और सिरपर ऐसी टोपी थी जैसे उपदेशक हो। वह थौसके तीरथकी यात्रासे आता था और अब दूसरी बार येरुशलम धामको जा रहा था। वे दोनों रात एक ही जगह ठहरे थे, सो वहा मिल गये। फिर तो साथ-ही-साथ वे चलने लगे ।

ओडेसा दोनो कुशलपूर्वक पहुंच गये । वहा जहाजके लिए तीन दिन बाट देखनेमें रुकना पडा । जगह-जगह और दूर-दूरसे और बहुतसे यात्री भी उसी तरह जहाजकी प्रतीक्षामें थे । वहा फिर एलीशाके बारेमें एफिमने पूछताछ की। पर किसीसे कुछ पता नही मिला ।

एफिमने वहा फिर अपने पासपर सही कराई जिसकी फीस पाच रुपये बैठी । चालीस रुपयेमें येरुशलमका वापिसी टिकिट मिला । सफरके लिए खाने-पीनेके लिए सामान भी साथ खरीदकर उसने रख लिया ।

साथके यात्रीने तरकीब बताई कि किस तरह बिना पैसे भी जहाजपर जाना हो सकता है । लेकिन एफिमने उधर ध्यान नही दिया। बोला, "मै खर्चके लिए तैयार होकर आया हू। सो मै तो पैसा देकर चलूगा।"

जहाजकी सवारिया पूरी हो गईं और सब यात्री उसपर आ रहे । एफिम और उसके साथी भी उनमें थे । लगर उठा और जहाज समदरमें बढ लिया।

दिनभर तो मजेमें चलता गया । पर रात होते हवा कुछ तेज उठ आई। पानी पडने लगा और जहाज डगमग-डगमग होने लगा । लोग डर गये। स्त्रियां चीखने-चिल्लाने लगी और आदमियोमें जो कमजोर थे, वे भी बचतकी जहातहा जगह ढूढते भागने लगे । डर एफिमको भी लगा, लेकिन उसने जाहिर नही किया । डेकपर जहा पहले जमकर बैठ गया था वही बैठा रहा । वहा पास टाबोके और लोग भी बैठे थे । सो तमाम दिन और तमाम रात वे सब जने अपने अपने थैले या बक्ससे लगकर चिपके हुए चुपकी मार बैठे रहे। तीसरे दिन जाकर हवा थमी । समदर शात हो आया और पाचवें दिन जहाज कुस्तुनतुनियाके बंदर-

घर आकर लग गया । कुछ लोग उतरकर संत-सोफियाके गिरजाघरके, जो तुर्कोंके अधिकारमें था, दर्शन करने किनारे उतर गये । और लोग तो गये; लेकिन एफिम जहाजपर ही रहा । उसने तो बस किनारेसे ही कुछ रोटी खरीदकर कनात मानी । जहाज वहा चौबीस घंटे रहा और फिर आगे बढा । फिर समर्ना बंदरपर वह ठहरा उसके बाद इलेक्जेंड्रेटा । आखिर सब लोग सकुशल जाफा बदरपर आ पहुचे । वहा सब यात्रियोको उतरना था। अभी यहासे भी येरुशलम पक्की सडक चालीस मीलसे कुछ ऊपर ही था । जहाजसे उतरते भी लोगोको बडा डर लगा । जहाज ऊचा था और नाव इतनी नीची कि जैसे नावमें एक-एक करके वे लोग उतारे क्या, गिराये जाते थे । और नीचे पानीमें खडी नाव इससे बडी डगमगाया करती थी । यह भी डर था कि जरा कुछ हो जाय, कि नावमें तो आदमी पहुचे नही और पानीमें ही गिर जाय । दो-एक आदमी इस तरह गिरकर भीगे भी । खैर, आखिर जैसे-तैसे सब लोग सकुशल किनारे पहुच गये।

वहासे ये पाव-पाव चले और तीसरे दिन दुपहरीके वक्त येरुशलम पहुच गये। शहरके बाहर रूसके लोगोके लिए एक जगह बनी थी, वहा सब जने ठहरे। सबके पासोपर वहा भी सही की गई। फिर खा-पीकर एफिम अपने उस यात्रीके साथ तीर्थ-धाम देखने निकला। पर मदिर खुलनेका यह समय नही था । सो वे धर्माचार्यके रहनेकी जगह चले गये । वहा सब-के-सब यात्री जमा थे। स्त्री अलग और पुरुष अलग, सबको दो घेरोमें बैठाया गया था । जूते बाहर छोडनेको कह दिया था और सब वहा नगे पैर थे । बैठनेके बाद एक साधू आये जिनके कधेपर तौलिया था और साथ जल । उन्होने अपने हाथोसे सबके पाव धोये तौलियेसे पोछे और माथा नवाकर सबके चरन छुये । घेरोमें बैठे हर स्त्री-पुरुषके साथ उन्होने ऐसा किया । औरोमें एफिमके पैर भी धोये और माथेसे छुये गये थे । सो सवेरे-शाम प्रभु-कीर्तनमें एफिम शामिल हुए, प्रार्थना की और वेदीपर, अपना दीपक जलाकर रक्खा । अपने मा-बापके नामकी लिपि लिखकर पुरोहितको दी कि उसके नाम भी धर्म-प्रार्थनाके बीच ले लिये जाय । धर्माचार्यके यहा सब यात्रियोको खाने-पीनेको भी दिया गया । अगले सवेरे मिस्रकी मरियम माताकी गुहा देखने वे लोग गये। वहा ही माता मरियमने तपस्या

की थी। यहा भी उन्होने दीप जलाये और स्तुति पढी। वहासे हजरत इब्राहीमके मठमें गये और वह जगह देखी जहा हजरत, परमात्माकी भेंट-स्वरूप, अपने पुत्रको मारनेको तैयार हो गये थे। फिर वह स्थान देखा जहां मरियम मगदालिन-को प्रभु ईसाके दर्शन मिले थे। जेम्सका चर्च भी उन्होने देखा। इस तरह साथके यात्रीने एफिमको ये सभी स्थान दिखाये। वह बताते भी गये कि कहा क्या चढाना चाहिए। दोपहर बीते वे अपने स्थानपर लौटे और भोजन किया। उसके बाद लेटकर आराम करनेकी तैयारी कर रहे थे कि साथका यात्री चीखने-चिलाने लगा और अपने सब कपडे फेक-बिखेरकर टटोलने लगा। बोला—"मेरा बटुआ किसीने चुरा लिया है। उसमे तेईस रुपये थे। दो तो दस-दसके नोट थे, बाकी खरीज।"

वह यात्री झीकता-रोता रहा, पर रंज मनानेसे क्या होता था। कोई और चारा नही था। सो फिर चुपचाप अपनी जगह ही वह जा लेटा और नीद लेनेकी कोशिश करने लगा।

(६)

बराबरमें एफिम पडा हुआ था। उस समय उसके मनमें विकार हो आया।

वह सोचने लगा कि इसका किसीने कुछ चुराया नहीं मालूम होता। सब झठ-मूठकी बात है। जान पडता है उसके पास था ही कुछ नही। देखो न, कही जो पैसा उसने दिया हो। जहा देना होता, पट्ठा मझसे ही दिलवाता। और हा, मुझसे एक रुपया भी तो उधार ले रक्खा है!

यह खयाल आना था कि एफिमने मनकी लगाम खीची। अपनेको झिडक-कर कहा कि दूसरे आदमीके दोष देखनेका मुझे क्या हक है। यह तो पापकी बात है। नही, मै उस बारेमें और खयाल नही लाऊगा। पर जैसे ही मन और तरफ फेरा कि छूटकर फिर वह वही अपने साथीकी बातपर पहुच जाता था। उसे खयाल होता कि देखो, पैसेका वह कैसा नदीदा है। और जब चिल्ला रहा था कि मेरा बटुआ चोरी चला गया है तो आवाज उसकी कैसी खोखली और नकली मालूम होती थी।

सो फिर सोचा कि नही जी, उसके पास पैसा-वैसा कुछ था ही नही। सब

झूठ-मूठकी बात है ।

साझको दोनो जने उठे और बडे मदिरमें सध्याकी आरतीमें शामिल हुए। साथका यात्री एफिमसे लगा-लगा ही चल रहा था। हर कही कधेके पास दीखता। मंदिरमें आये, जहा बहुतसे यात्री थे । रूसी थे, उसी भाति और बहुतेरे देशोंके लोग थे । ग्रीकके, अरमीनियाके, तुर्किस्तानके, सीरियाके । एफिम भी उनके साथ मंदिरके तोरणद्वारमेंसे दाखिल हुआ । पुजारी उन्हें तुर्की सतरियोंके पाससे होकर मदिरके दालानमें उस जगह ले गया जहा ईशूमसीहको क्रूससे उतारा गया था और उनकी देहका अभिषेक हुआ था। वहा बडे-बडे नौ शमादान रक्खे थे और बत्तिया जल रही थी। पुजारीने उनको सब दिखाया और बताया। एफिमने अपने नामका भी एक दीपक वहा रक्खा। फिर पुजारी सीढिया चढकर सीधे वहा उन्हें ले गया जहा मसीहका सलीब खडा था। एफिमने वहा झुककर इबादत की । फिर वह जगह उन्हें दिखाई जहा धरती पातालतक फट गई थी। फिर वह स्थान देखा जहा मसीहके हाथ और पैर कीलोंसे ठोककर सलीबमें जडे गये थे। फिर आदमकी दरगाह देखी जहा मसीहकी देससे खून चूकर उसपर गिरा था। फिर वह पत्थर देखा जहा मसीह बैठे थे और सिरपर उनके काटोका ताज चढाया गया था । फिर वह खभा दिखाया जहा प्रभुको बाधकर बेंत लगाये थे। फिर पत्थरपर मसीहके चरणचिह्नके दर्शन किये । और आगे भी कुछ देखनेको था कि तभी भीडमें सनसनी पडी और लोग मदिरके भीतर आगनकी तरफ भागने लगे । वहा एक पूजा हो चुकी थी, अब दूसरे कीर्तनका आरभ था। एफिम भी भीडके साथ पत्थरकी चट्टानमें कटे मसीहके ताबूतकी तरफ बढा चला ।

वह साथके यात्रीसे पीछा छुडाना चाहता था । मन-मनमें उसके बारेमें बुरे भाव उसमें आ रहे थे । उसे इस बातका चेत था । लेकिन यात्री साथ नही छोडता था । पास-ही-पास लगा हुआ वह भी ताबूततक आया । वे बढकर आगेकी पगतमें पहुचना चाहते थे। लेकिन अब कुछ नही हो सकता था, वे बिछुड़ गये थे। भीड इतनी थी कि न आगे हिलना बन सकता था, न पीछे जाना मुमकिन था। एफिम अपने सामने निगाह रक्खे मनमें दुआ दोहरा रहा था। रह-रहकर अपने बटुएकी सभाल भी कर लेता था। चित्त उसका दो तरफ बटा था। कभी

तो सोचता कि यात्रीने उसके साथ छल किया है । पर फिर खयाल होता कि कौन जाने वह सच ही बोलता हो और सचमुच बटुआ उसका चोरी गया हो। आखिर मेरे ही साथ ऐसा हो सकता है कि नही।

(१०)

ताबूतके ऊपर छत्तीस शमादान जल रहे थे । वेदी छोटी थी और एफिम उधर ही निगाह जमाये खडा था। औरोके सिरके ऊपर से निगाह ऊंचीकर वह सामने देख रहा था । कि कुछ उसे दीखा और वह अचभेमें रह गया। उन शमा-दानोके ठीक नीचे जहा अखड जोत जल रही थी, सबके आगेकी पक्तिमें देखता क्या है कि एक बूढी उमरका आदमी, बडा-सा कोट पहने वहा खडा है । सिर बालोसे साफ चमकीला चमक रहा है । ऐनमैन वह एलीशा मालूम होता है।

एफिमने सोचा कि मालूम तो होता है, लेकिन एलीशा हो नही सकता। मुझसे आगे भला कैसे वह यहा पहुच सकता था । हमसे पहलेका जहाज तो एक हफ्ता पेश्तर ही छूट गया था। वह तो एलीशाको किसी हालतमें नही मिल सकता था। रहा हमारा जहाज, सो उसपर तो वह था नही, क्योकि मैंने एक-एक यात्रीको देख और पूछ लिया था।

एफिम यह सोच ही रहा था कि वह सामनेका वृद्ध पुरुष इबादतमें झुका और फिर उठकर तीन बार तीनो दिशाओमें झुककर उसने सबको नमस्कार किया। पहले तो सामने ईश्वरको नमन किया फिर दायें-बायें अपने सब भाइयोको। दाईं तरफ मुडकर जब वह व्यक्ति प्रणाम कर रहा था, उस वक्त एफिमने साफ-साफ देखा । सदेहको जगह न थी। वह तो एलीशा ही है। वही दाढी, वही भवें। आखें और नाक वही । सब-का-सब चेहरा वही-का-वही। और कोई नही जी, एलीशा ही है ।

एफिमको अपने बिछुडे साथीके मिलनेपर बडी खुशी हुई । विस्मय भी हुआ कि उसके आगे एलीशा आया तो कैसे ?

सोचा कि शाबाश एलीशा! देखो न कैसे वह बढ़ता हुआ ठेठ आगे पहुंच गया है । कोई जरूर साथ लेकर रास्ता बताता उसे आगे ले गया होगा। यहांसे निकलकर उसको पाना चाहिए । और यह जो भलामानस यात्री साथ लग

गया है, सो इसे छोड एलीशाका संग पकडना ठीक होगा। उससे शायद मुझे भी आगे पहुंचनेकी राह मिल जायगी।

एफिम टक सीधमें निगाह जमाये रहा कि एलीशा आखसे अलग न हो जाय। पर कीर्तन पूरा हुआ, भीडमें हलचल हुई और सब जने ताबूतपर माथा टेकनेको बढ़ने लगे। इस धक्कम-धक्केमें एफिमको फिर भय हुआ कि कही ऐसेमें बटुआ कोई चुरा न ले। हाथसे उसे दबाये, भीडमें कोहनी मारता, वह पीछेकी ओर बढ़ने लगा। अब तो वह बस किसी तरह बाहर हो जाना चाहता था। बाहर खुलेमें आया और वहा बहुत काल एलीशाकी खोजमें रहा। गिरजेके अदर देखा, बाहर देखा। बाहर आगनमें या धर्मशालामें खाते-पीते, पुस्तक बेचते, या सोते उसे बहुत भातिके बहुतेरे आदमी मिले पर एलीशा कही नही दीखा। सो एफिम बिना अपने साथी को पाये अपने ठहरनेकी जगह लौटकर आया। उस शाम साथका यात्री भी फिर नही लौटा। उधारका रुपया बिना चुकाये वह चला गया था और एफिम अकेला पड गया था।

अगले दिन एफिम फिर दर्शनको मदिर गया। अबकी जहाजपर मिले एक दूसरे बूढे यात्रीका साथ उसने ले लिया था। मदिरमें जाकर फिर उसने अगली पक्तिमें पहुचनेकी कोशिश की। लेकिन भीडके दबावमें पीछे ही रह गया। खैर, वहा एक खभेके सहारे टिककर उसने अपनी इबादत पूरी की। पर सामने जो देखता है तो ठीक अखड ज्योतिके नीचे वेदीके ऐन पास सबके आगे खडा है कौन ?—वही एलीशा। बाहें उसकी पुजारीकी भाति वेदीकी तरफ फैली हैं और सिर उसका रोशनीमें चमचम चमक रहा है।

एफिमने सोचा कि इस बार तो मैं उसे खोने नही दूगा।

सो धकियाता हुआ वह आगे बढा। लेकिन वहा पहुचा तो एलीशा वहां नही था। अनुमान किया कि चला गया होगा।

तीसरे दिन एफिम फिर दर्शनके लिए आया और देखता क्या है कि मंदिरमे वेदीसे लगकर सबसे खास और अगली और पवित्र जगहपर सबकी निगाहके बीचोबीच खडा है एलीशा! बाहें फैली हैं और निगाह आकाशकी ओर है। जैसे ऊपर उसे कुछ प्रकाश दीख रहा हो। और उसका साफ सिर सदाकी भाति

चमकीला चमक रहा है ।

एफिमने सोचा कि इस बार तो किसी तरह मै उसे अपनेसे जाने नहीं दूंगा जाकर दरवाजेपर खडा हुआ जाता हू । फिर एक-दूसरेको पाये बिना हम किसी तरह भी नही रह सकेंगे।

एफिम गया और दरवाजेसे लगकर खडा हो गया। ऐसे खडे-खडे दोपहर बीत गया । तीसरा पहर भी बीत चला । हर कोई मदिरसे जा चुका था। लेकिन एलीशाकी मूरत नही दीखी, नही दीखी।

येरुशलममें एफिम छ. हफ्ते रहा और सब धाम देखे। बैथलेहमके दर्शन किये, बेथैनी गया और जार्डन भी देखा । मंदिरमें अपने नामका एक दीपक छोडा। जार्डनके पवित्र जलकी शीशी भरकर साथमें ली और वहाकी मिट्टी भी बाध ली । और कुछ मोमबत्तिया भी ली जिन्हें अखड ज्योतिसे छूकर एकबार जगा लिया गया था। आठ जगहपर उसने अपने नामकी प्रार्थनाके अर्थ दान दिया। बस राह खर्च भरको उसने पैसा पास रक्खा, बाकी सब पुन्न कर दिया । आखिर तीर्थ पूराकर अपने घरकी तरफ वापिस हो लिया। जाफातक पैदल यात्रा की। वहासे ओडेसातक जहाजमें । और फिर आगे पाव-पाव घर चला ।

(११)

जिस राह गया उसी राह एफिम लौट रहा था। ज्यो-ज्यो घर पास आता उसपर चिंता चढती जाती थी कि पीछे घरके काम-धामकी क्या हालत हुई होगी। कहते है न कि एक सालमें कितना कुछ नही बह जाता। बनानेमें जिदगी लग जाती है, पर बिगड सब छनमें सकता है। सो वह सोचता था कि उसके लडके ने पीछे जाने क्या कुछ करके रक्खा होगा । कैसा मौसम वहा चल रहा होगा । जाडोमें चौपायोपर कैसी बीती होगी और मकान भी ठीक-ठीक पूरा हुआ होगा कि नही । एफिम जब उस देशमें आया जहा पारसाल एलीशा बिछुड गया था तो गावोको वह मुश्किल से पहचान सका। हालत अब कुछ-की-कुछ थी। पिछली साल तो नाजके दानेका ठिकाना न था । अब सब खुशहाल थे । फसल ऐसी भरी हुई थी कि क्या कहा जाय। अब सबके घर भर-पुर गये थे और पहली मुसीबत याद भी न आती थी।

एक शाम एफिम ठीक वहा पहुचा जहा एलीशा रुककर पीछे रह गया था। वहांसे पहले घरके पास आना था कि एक लडकी बाहर भागती आई। सफेद फ्रॉक पहने वह बडी भली लगती थी।

बोली—"दादा, ओ दादा! चलो हमारे घर।"

एफिम अपनी राह बढे जाना चाहता था। लेकिन उस नन्ही नटखटने जाने न दिया। कोटका छोर पकड लिया और हसती हुई घरकी तरफ खीचकर ले चली। वहा छोटा बच्चा लिये एक स्त्री मिली। उसने आवभगतके भावसे कहा कि आइये दादा, कुछ खा न लीजिए और यह रात यहा विश्राम कीजिए।

सो एफिम अदर पहुचा। सोचा कि यहा एलीशाकी बाबत पूछकर देखना चाहिए। मै समझता हू कि पानी पीने एलीशा इसी घरकी तरफ बढकर आया था।

स्त्रीने आगे बढकर मेहमानका बकचा कधेपरसे उतरवाया और हाथ-मुह धोनेको पानी दिया। फिर मेजपर बिठाकर सामने दूध रक्खा और चपातिया, दलिया वगैरह लाकर दिया। एफिमने बहुत शुक्रिया माना कि चलते राहगीरपर आप ऐसी दया दिखलाती है। एफिमने उनके इस सत्कारकी बहुत तारीफ की।

लेकिन स्त्रीने मानो इन्कारमें सिर हिलाया। बोली—"यात्रियोकी खातिर करनेका तो हमारा धर्म है। और वजह भी है। असलमें एक यात्री ही थे जिन्होने हमें जीवनमें धरमका रास्ता दिखाया। हम ईश्वरको भूलकर रहा करते थे। सो ईश्वरने हमें ऐसा दड दिया कि बस मौत हीसे बचे। पिछली गरमियोमें हालत ऐसी आ गई कि हम सब लोगोको बीमारीने घेर लिया। बिल्कुल बेबस और मोहताज हो गये। खानेको पास दाना नही था। वह तो हम मर ही जाते, कि ईश्वरके दूत बनकर एक वृद्ध पुरुष हमारी मददको आ पहुचे। वह ऐसे ही थे जैसे आप। एक दिन पीनेको थोडा पानी मागते आये थे, लेकिन हमारी यह हालत देखी तो उन्हे दया हो आई। फिर हमारे साथ ही कुछ दिन रह गये। उन्होने हमें खानेको दिया, पीनेको दिया और फिर हमें अपने पैरोपर खडा किया। धरती हमारी गिरवीसे छुडा दी और एक गाडी-घोडा खरीदकर हमको दे दिया।"

इसी समय एक बूढी मा वहा आई और बीचमें बात काटकर बोली—

"अजी, हम कैसे कहें कि वह मनुष्य ही थे और ईश्वरके भेजे कोई फरिश्ते

नही थे । उन्होंने हम सबको प्रेम किया और करुणा की । और गये ऐसे कि हमें नाम भी नही बता गये । सो हम यह भी नहीं जानते कि किसके नामकी हम माला फेरें और दुआ करें । वह हालत मेरी आखोके आगे है। मैं मौतकी बाट देखती वहा पड़ी थी, कि आये वह वृद्ध। उनका सिर साफ था। देखनेमें कोई खास बात नही थी। आकर उन्होंने पीनेको पानी मागा । और मैं थी कि मनकी पापिनी। सोचने लगी कि जाने यह आदमी किस ताकमें यहा आया है। मै तो ऐसी थी, और देखो कि उन्होने हमारे साथ क्या किया। ठीक यही जगह जहा तुम बैठे हो, वही, बेंचपर, हमें देखते ही अपनी कमरसे सामान उतारकर रक्खा और खोलने लगे ।"

तभी वह लडकी बीचमें बोली—"ना दादी, ना। पहले तो उन्होने गठरी यहा बीचमें रक्खी थी, कोई बेंचपर थोडी रक्खी थी। बेंचपर तो फिर पीछे उठाकर रक्खी थी ।"

इसके बाद वे सब जन उन्ही पुरुषकी याद करने लगे और उन्हीकी बाबत बहस और चर्चा करने लगे, कि उनके मुहसे क्या-क्या शब्द निकले, क्या उन्होने दिया, कहा वह बैठते थे, कहा सोते थे और किससे कब और क्या-क्या बातें उन्होने की थी।

रातको घरका मर्द भी अपने घोडेपर घर आया और वह भी एलीशाके बारेमें बखान करने लगा कि कैसे वह दयावान यहा रहा करते थे ।

"वह न आते तो हम अधम अपने पापके बीच मरे ही हुए पडे थे। निराश, पलपल मौतके मुहमें हम सरकते जा रहे थे । ईश्वरको कोसते और आदमीको कोसते थे । लेकिन वह दयालु आये और हमें अपने पैरो खडा किया। उनसे हमने परमात्माको जानना जाना । उनसे हमने विश्वास पाया कि आदमीमें नेकीका बास है । भगवान उनका भला करे । हम जानवरकी तरह रहते थे। उन्होने हमें आदमी बनाया ।"

एफिमको खिला-पिलाकर उन्हें बिछौना बतला दिया और फिर वे खुद अपने सोने चले गये ।

एफिम लेट तो गया, पर सो नही सका । एलीशा उसके मनसे बाहर नहीं

होता था। उसे स्मरण हुआ कि येरुशलम तीर्थमें तीन बार सबसे आगेके स्थानपर उसने एलीशाको देखा था ।

सोचा कि एलीशा इसी भाति मुझसे आगे निकला है । भगवानने मेरी तीर्थ-यात्राको तो स्वीकार किया हो या नही भी स्वीकार किया हो, पर एलीशाके पुण्यको तो प्रत्यक्ष ही उन्होने ग्रहण कर लिया है ।

अगले सवेरे एफिमने उन लोगोसे विदा मागी । परिवारके लोगोने राहके लिए उसके साथ कलेवा बाध दिया और एफिम घरकी तरफ आगे बढा ।

(१२)

पूरा सालभर एफिमको यात्रामें लग गया । गर्मी लगते गया था कि उन्ही दिनो लौटा । पर जिस शाम घर पहुचा तो उसका लडका वहा था नही । बाहर दारू-घरपर गया था । लौटा तो ज्यादा चढा आया था। एफिमने उससे घरके हाल-चालकी बाबत पूछा । पर साफ ही दिखाई देता था कि बापके पीछे उसने जमकर कुछ नही किया है । पैसा जहा-तहा खर्च डाला है और कामका खयाल नही रक्खा है । सो बापने लडकेको डाटना शुरू किया ।

लडकेने भी बेअदबीसे जवाब दिया । बोला—"तो तुम्हीने यहा रहकर क्यो नही सब देखा-भाला । पैसा बांधकर आप खुद तो चल दिये तीरथ करने और अब कहते हैं कि कमाकर रक्खू मैं ।" बूढेको सुनकर गुस्सा आ गया और पीटने लगा ।

सवेरे एफिम गावके चौधरीके पास अपने बेटेके चाल-चलनकी शिकायत करने गया । रास्तेमें एलीशाका मकान पडता था । वहा उसकी बीबी उसारेमें खडी थी । बोली—"आओजी, आओ । कब आये ? क्या हाल है ? तीरथ आपका राजी-खुशी तो हुआ न ?"

एफिम रुक गया । बोला—"हा, ईश्वरकी दया है । तीरथ सब राजी हुआ । पर एलीशा तो बीचमें कही छूट गये कि फिर दीखे ही नही । वह कुशलसे घर आ गये हैं न ?"

स्त्रीको बात करनेका चाव था । बोली—"हाजी, वह वापिस घर आ गये हैं । आये उन्हे दिन भी हो गये । मैं समझूं कातिक बीते ही वह आ गये थे ।

भगवानकी कृपा हुई कि उन्हें जल्दी वापस भेज दिया। उनके बिना यहां सब सूना लगता था। कामकी तो उनसे अब बहुत आस नही है। कामकी उमर उनकी गई। पर तुम जानो घरके बडे तो वही हैं। और वह होते है तो घरमें उछाह रहता है। और हमारा लड़का तो—उसके आनंदकी क्या पूछो। बोला—'भाभी, सूरज छिप जाता है न, सो पिताजीके बिना बस वैसी हालत हो जाती है जैसे धूप उठ गई हो। अजी, उनके पीछे तो सब बिरथा लगता है और घरमें उमग नही रहती। हम लोग सब उनका खयाल रखते हैं और आराम देते है। और हमें भी तो वह कितना प्यार करते है।"

"वह घर ही है न ?"

"हाजी, घर ही है। अपनी मधु-मक्खियोके पास होगे। वही सदा दीखते है। कहते थे इस साल खूब मधु होगा। भगवानने ऐसी कृपा की है कि खूब मक्खी फली है। ऐसी कि कभी उन्होने भ। अपनी उमरमें नही देखी। वह कहते है कि भगवान हमारे औगुनके माफिक तो यह हमें इनाम नही दे रहे हैं। आओ, बड़ेजी, तुम आओ। तुमसे मिलकर उन्हें बहुत खुशी होगी।"

एफिम उधर बरामदेमेंसे निकलता हुआ दूसरी तरफके घरमें गया। वहां एलीशा मिला। वही लंबा चोगा था। न मुह ढकनेको कोई जाली थी, न हाथमें दस्ताने। पेडोके कुजके नीचे, खुले सिर, बाह फैलाये खड़ा था। एफिमको येरु-शलमके मंदिरमें दीखे चित्रकी याद हो आई। उसी भाति सिर उसका चमक रहा था और पेडोके ऊपरसे छनकर आनेवाली धूप भी ठीक मदिरकी अखंड-जोत-सी दीखती थी। और मक्खियोने उसके सिरके आस-पास उड़-उडकर अपने सुनहरे पंखोंसे वहीके जैसा एक उज्ज्वल प्रभा-मंडल-सा बना रक्खा था। प्रेमसे सब उसके चारो तरफ मंडरा रही थी और कोई काटती नही थी।

एफिम रुक गया। और दूरसे ही स्त्री अपने पतिको पुकारकर बोली—

"अजी, देखो भी, यह बड़ेजी आये है।"

एलीशाने मुड़कर देखा। चेहरा उसका प्रसन्न था। धीमेसे दाढ़ीमें उलझी दो-एक मक्खियोको निकालते हुए एफिम बढकर मित्रकी तरफ आया।

"आओ भाई, आओ। कहो तीरथ कुशलसे तो हुआ ?"

"हां, काया तो मेरी तीरथ करने गई ही थी । और जार्डनका जल भी तुम्हारे लिए भरकर लाया हू । पर उसके लिए तो तुम हमारे घर आओगे, है न ? लेकिन मालिकको मेरी तीरथ-यात्रा स्वीकार हुई कि नही . . "

एलीशा बोला—"अजी, तारन-तरन वही है । भगवानका ही सब है ।"

एफिम कुछ देर चुप रहा । फिर बोला—"काया तो मेरी वहा पहुंची, पर सच पूछो तो आत्मा मेरी वहा पहुची कि दूसरेकी, यह "

बीचमें एलीशाने कहा—"भाई, यह तो भगवानके देखने का काम है । भगवान सब देखते हैं ।"

एफिम—"और वापसीमें मे उस घरपर भी ठहरा था जहा तुम पीछे छूट गये थे "

एलीशा सुनकर जैसे भयसे भर गया । जल्दीसे बोला—

"भगवानका काम है, भाई, सब भगवानका । आओ, अदर आओ । हमारा शहद तो जरा देखो ।"

कहकर एलीशाने बात बदल दी और घरके हाल-चालकी चर्चा छेड दी।

एफिम मनकी सास मनमें रोके रह गया । फिर उस घरके उपकृत लोगोकी बात उसने नही की । न यही बतलाया कि किस रूपमें परमतीर्थ येरुशलमके मंदिरकी ठीक वेदीके पास एलीशाको उसने तीन बार देखा था । पर वह अब मनके भीतर खूब समझ गया कि ईश्वरकी प्रतिज्ञा और उसके आदेशको पालन करनेका सबसे अच्छा मार्ग क्या है । यही कि आदमी जबतक जीये औरोकी भलाई करे और प्रेमसे व्यवहार करे ।

: ७ :

जीवन-मूल

(१)

एक रैदास-मोची अपने स्त्री-बच्चोके साथ एक किसानकी झोंपडीमें रहा करता था । नाम था ननकू। उसके पास अपनी जमीन नही थी, न घर। रोज

जूते गांठकर रोजी चलाता था। पर कामका भाव सस्ता था और नाजका महंगा। सो जो कमाता था, खाना जुटानेमें खर्च हो जाता। स्त्री-मर्दके बीच जाड़ोंके लिए बस एक लोई थी। वह भी चिथडे हो चली थी। यह दूसरा साल था कि दोनों सोचते थे कि अबके दोहर-लिहाफ बनवायेंगे। सो जाड़ोंके दिनोंतक ननकूने उसके लिए कुछ पैसा बचा भी लिया था। पांचका एक नोट घरके बक्सकी तलहटीमें रक्खा था और कोई इतना ही पैसा बस्तीमें लोगोंसे उसे लेना निकलता था।

सो एक सवेरे कंबल-लोई लेनेके खयालसे ननकू बस्ती जानेको तैयार हुआ। उसने कुर्त्ता पहना, उसपर बीबीके बदनकी मिरजई, और ऊपर एक गाढ़ेकी चादर डाल ली। नोट जेबमें रक्खा, झाडसे लकडीका एक डंडा तोड़ सहारेको हाथमें लिया, और कलेऊ करके राम-नाम ले रवाना हो लिया। सोचा कि जो पांच रुपये बस्तीमें लेने निकलते है वे भी उगाह लूगा। सो पाच तो वो, पाच ये—दस रुपयेमें जाडेके लिए खासे गर्म कपडे हो जायेंगे।

बस्तीमें आया और अपने कर्जदार एक किसानके घर गया। लेकिन किसान घरपर मिला नही। स्त्री थी, सो स्त्रीने बचन दिया कि पैसा अगले हफ्ते मिल जायगा, मैं खुद तो दे कहासे सकती हूं। तब ननकू दूसरे द्वारे पहुंचा। उस आदमीने भी कसम दिलाकर कहा कि इस वक्त पास पैसा है नही, नही तो मैं क्या मुकरनेवाला था। ये पांच आने हैं, चाहो तो ले जाओ। हालत यह देख ननकूने कोशिश की कि कुछ तो नकद दे दू, बाकी उधार हो जाय, और ऐसे एक लोई ले ही चलू। लेकिन दुकानदारोंमेंसे किसीने भी उसका भरोसा न किया। कहा कि पैसा ले आओ, फिर मन-पसद कोई छाट ले जाना। तुम जानो वसूलीमें भाई, बड़ी मेहनत लगती है।

नतीजा यह कि बस्तीमें ले-देकर जो ननकूने कमाई की सो कुल जमा पांच आने! हा, एक आदमीने अपना जोडा भी दिया था कि इसके तले मोटा चमड़ा लगाकर ठीक कर देना।

ननकूका मन इसपर ढीला हो आया। पाच आने जो मिले थे, उन्हें दारूमें फूक, बिना कुछ लिये दिये, खाली हाथ वह घरको वापिस चल दिया। सवेरे

आते उसे सरदी लगी थी; लेकिन अब दारू चढानेके बाद बे-कपडे भी उसे कुछ गरमी मालूम होती थी। हाथकी लकडीको धरतीपर पटकता हुआ, दूसरे हाथमें जूता-जोड़ा लटकाये, अपनेआपसे बात करता हुआ, ननकू चला जा रहा था।

"कंबल नहीं है, न लोई, तो भी खासी गरमाई आ गई। एक घूट क्या लिया कि नस-नसकी ठड भी भाग गई। अजी, क्या जरूरत है लोई की। मजेमें चल रहा है। फिक्र काहेकी। मैं तो ऐसा ही आदमी हूँ, फिक्र नही पालता। परवाह क्या, बिना लोई मजेमें कट जायगी। क्या है, अंह, छोडो भी। पर बीबी झीकेगी, झिड़केगी ... जरूर झिड़केगी । और सच तो है । यह बेशक शर्मकी बात है। आदमी दिनभर काम करे और उसे मजूरी न मिले ! ...ठहरो, अगर तुम पैसा नही देते तो क्या समझा है ! मै चमड़ी उधेड दूगा। देख लेना जो न उधेड़ू । मेरा नाम ननकू है । क्या ? देनेके नाम पाच आने ! पाच आनेका भला बन क्या सकता है ? सिवा इसके कि चुल्लू ताडी पी ली जाय। आये कहने, तंगी है । होगी तंगी। लेकिन हम ? हमारी तगी भी कोई पूछता है ? तुम्हारे पास मकान है, बगिया है, सब है । मेरे पास जो पहने खड़ा हू, वही है। तुम्हारे पास अपनी खेतीका नाज है । मुझे एक-एक दानेका पैसा देना होता है। कुछ करूँ, नाज तो चाहिए ही। और खाली रोटीके लिए काममें पसीना बहाता हूं तो भी नही जुडती । तीन रुपयेकी मजूरी हफ्तेमें बनती होगी। हफ्तेका अंत आया कि चून खतम। वह तो जैसे-तैसे रुपया-धेली ऊपर बना लेता हूं तो काम चलता है। नही तो बस रामका नाम। सुनते हो जी, जो हमारा लेना आता है अभी रख दो । हील-हुज्जत न चलेगी"।

यह कहता-सुनता वह सड़कके मोडतक आ गया था। वहा था एक शिवजीका मंदिर । देखता क्या है कि शिवालयके पिछवाडे धौला-सा कुछ दीखता है। दिनका चादना धीमा हो रहा था, उसमें ननकू आख गाडकर देखने लगा कि वह धौला-धौला क्या है ? पर उसे पहचान कुछ नही आया। सोचा कि जाते वक्त तो यहा कोई सफेद पत्थर था नही। क्या फिर बैल है? लेकिन बैल भी नहीं है । सिर तो आदमीका-सा मालूम होता है । पर इतना सफेद ! और आदमीका इस वक्त यहा काम क्या है ?

पास आया तो साफ-साफ दिखाई देने लगा। अचंभा देखो कि वह सचमुच आदमी था। जीता हो, चाहे मुर्दा, उघाड़े बदन मंदिरकी दीवारसे सटा बैठा था। हलन-चलनका नाम नहीं। ननकूको डर लग आया। सोचा कि किसीने उसे मारकर कपड़े खोस लिये हैं और वहा छोड़ दिया है। मैंने कुछ छेड़ा तो मुसीबतमें ही पड़ना होगा।

सो वह ननकू देखी-अनदेखी कर आगे बढ़ लिया। वह उधरसे फेर देकर निकला जिससे आदमी फिर उसे दिखाई ही नहीं दिया। कुछ बढ़ गया, तब उसने पीछे मुड़कर देखा। देखता क्या है कि वह आदमी दीवारसे लगा हुआ, अब झुका नही बैठा है, बल्कि चल-फिर रहा है। कही वह मेरी तरफ तो नहीं देख रहा है ?

उसको पहलेसे भी ज्यादा भय हुआ। सोचा कि मैं वापिस उसके पास चलूं या कि अपनी राह बढ़ता जाऊं। पास गया तो जाने क्या मामला निकले। उसमें जोखिम भी हो सकता है। जाने कौन बला है। यहा सुनसानमें किसी नेक इरादेसे तो वह आया न होगा। पास जानेपर हो सकता है कि कूदकर मेरा गला धर दबाये और भागनेको भी रास्ता न रहे,। यह भी नही, तो ऐसे आदमीका मैं करूंगा क्या। मेरे सिर वह बोझ ही हो जायगा, और क्या ? नंग-धड़ंग, भला उसमें मेरा होगा क्या ? अपने बदनके कपड़े तो उतारकर मैं उसे दे नहीं सकता। सो अपने राम मैं चला ही चलूं।

यह सोचकर ननकू बढ़ा ही चला। मंदिर पीछे छूट गया कि तभी उसके भीतर दूसरा खयाल आया। बीच सड़क रुककर उसने अपनेसे कहा कि ननकू, तू यह कर क्या रहा है ? क्या जाने वह आदमी भूखा मर रहा हो, और तू डरके मारे पाससे कतराकर निकला जा रहा है ! क्या तू भी ऐसा मालदार हो गया कि चोर-डाकूका डर लगे ? ननकू, तेरे लिए यह शर्मकी बात है।

यह कहकर ननकू वापिस लौट चला और उस आदमीके पास पहुंचा।

(२)

पास पहुंच जो देखा तो जवान आदमी है, तंदुरुस्त, और शरीरपर कोई चोट-रोगका निशान नही है। पर सर्दीके मारे ठिठुरा जा रहा है और सहमा

हुआ है । वहा दीवारसे कमर टिकाये चुपचाप बैठा है, ननकूकी तरफ आख उठाकर नही देखता । जैसे कि उसमें इतना दम ही नही है। ननकू और पास गया तब उस आदमीको चेत होता मालूम हुआ। सिर मोडकर उसने आखें खोली और ननकूकी तरफ देखा। उस एक नजरपर ननकू तो निछावर हो गया। वह तो जैसे निहाल हो आया और उसके मनको यह आदमी एकदम भा गया। उसने हाथ की जूता-जोडी जमीनपर रख दी । दुपट्टा उतारकर वही रख दिया और मिर्जई भी उतारने लगा। बोला—

"सुनो दोस्त, कहने-सुननेकी बात नही है। अब चटपट ये कपडे पहन डालो।"

कहा और बाहसे पकड़कर उसने अजनवीको उठाया। खडे होनेपर ननकने देखा कि उसका शरीर साफ और स्वस्थ है। हाथ-पैरका बनाव सुघड, और चेहरा भला, भोला और सुदर है । ननकूने अपनी मिर्जई उसके कधेपर डाल दी । लेकिन उस भले आदमीको आस्तीनमें बाह करना न आया। खैर, ननकूने खुद मिर्जई पहना दी, दुपट्टा लपेट दिया और जूता पहना दिया ।

ननकूने सिरकी टोपी भी उतार उसको दे देनी चाही। लेकिन इसमें उसके अपने सिरको बडी ठड लगती । उसने सोचा कि एह, मेरा सिर गजा है और उसके बडे-बडे घुघराले बाल हैं । इससे टोपी अपने सिरपर ही रहने दो । बोला—"अच्छा दोस्त, अब जरा चलो-फिरो । ऐसे गरमी आयेगी । बाकी फिर देखेंगे । चल सकते हो न ?"

अजनवी खडा हो गया और सदय भावसे ननकूको देखने लगा । लेकिन मुह खोलकर शब्द वह कुछ भी नही कह सका ।

ननकूने कहा, "भाई, बोलते क्यो नही हो ? यहां सरदी बहुत है । ठिठुर जाओगे। चलो, घर चलें। यह लो लकडी। चला न जाय तो उसे टेकते चलो। लेकिन बढ़े चलो। चलो, बढ़ाओ कदम ।"

आदमी चल पडा । वह ऐसे चला जैसे कदम तिरते हो। उसके किसीसे पीछे रहनेकी तो बात ही न थी ।

चलते-चलते ननकूने पूछा, "भाई, तुम हो कहांके ?"

"मै इस तरफका नही हूं।"

"यही मैं सोचता था । इधरके लोगोंको मैं पहचानता हूं । पर यहां तुम शिवालेके पास कैसे आन पहुंचे ?"

"मालूम नहीं।"

"किसीने तुम्हें लूटा-ठगा तो नहीं है ?"

"नहीं, सब ईश्वरका दंड है ।"

"सो तो है ही । वह सबका मालिक है । तो भी कुछ खाने और कहीं सिर टेकनेको जगह पानेकी तदबीर तो करनी ही होगी न। तुम्हें जाना कहां है?"

"मुझे सब जगह समान है ।"

ननकूको अचरज हुआ । आदमी वह दुष्ट नहीं मालूम होता था । कैसा मीठा बोलता था । लेकिन उसका अता-पता जो न था । तो भी ननकूने सोचा कि कौन जानता है बेचारे के साथ क्या अनहोनी हुई हो ।

यह सोच उस अजनबी आदमीसे उसने कहा—"अच्छा, ऐसा है तो मेरे साथ घर चलो। वहां थोड़ा आराम करना, फिर देखा जायगा।"

यह कहकर ननकू घरकी तरफ चल दिया । नया आदमी साथ-साथ था। हवा तेज हो चली थी । ननकूको अकेले कुरतेमें सरदी लग आई। नशा छूट रहा था और अब ठंड ज्यादा सताती थी। तो भी सीटी बजाता अपने वह चला जाता था । पर रह-रहकर उसे सोच होता था कि घरमें कैसी बीतेगी ! चला था कंबल लेने और आ किस हालमें रहा हू ! खाली हाथ तो हूँ ही, तिसपर बदन-की मिर्जई बदनपर नही है। और भी बढकर यह कि साथ एक आदमी लिये हुए जिसका अता-न-पता और जिसके पास कपड़ा न लत्ता। मन्नो भी क्या कहेगी ? निश्चय ही बहुत खुश तो होनेवाली वह है नही।

यह सोच-सोचकर उसका मन बैठा जाता था । पर जब वह इस अजनबी आदमीकी तरफ देखता और उसकी हालतको और उसकी भीगी कृतज्ञ निगाहको याद करता तो उसे खुशी और हौसला भी होता था ।

(३)

उस दिन सबेरे ही ननकूकी बीबीने सब काम पूरा कर लिया । पानी ले आई, बच्चोंको खिला-पिला दिया, खुद खा-पीकर निबट चुकी और चौका-बासन

भी सब कर डाला। फिर बैठी सोचने लगी कि शामको खाना बनाऊं कि नही। अभी रोटी तो काफी बची है। अगर कही ननकूने बस्तीमें ही कुछ खा-पी लिया तो फिर यहा क्या खायंगे। फिर तो कलके लिए भी यही रोटी चल जायंगी।

यह सोचकर उसने बची रोटियोंको हाथोंपर लेकर जैसे तोला। बोली—"बस, अब आज और नही बनाऊंगी। घरमें आटा भी बहुत नही बचा है। तो भी यह इतवार तो इसमें निकालना ही है।"

सो मानवतीने रोटी अलग ढककर रख दी और पतिका कुरता ठीक करने बैठ गई। काम करती जाती थी और सोचती जाती थी—"जाडोके लिए वह कोई भी खरीदकर लाते होगे।" वह सोचने लगी, पर कही दुकानदार उन्हें ठग न ले। वह सीधे बहुत हैं। छल-कपट जानते नही। एक बच्चा भी उन्हे बेवकूफ बना सकता है। दस रुपये पास हैं—कोई कम रकम नही है। लोई और दोहर उतनेमें दोनो हो सकते हैं। बिना कपडे जाड़ोमें चलेगा कैसे? लोई हो गई तो ठीक हो जायगा। नही तो बाहर कही निकलनेके लायक भी हम नही। पर देखोजी, उनको भी कि जो था सब कपडा अपने बदनपर वही लेते गये। कुछ नही छोड गये। मेरी मिर्जई भी नही छोड गये। कब आयेंग? ऐसे बहुत सवेरे तो नही गये; पर वक्त हो गया है, अब उन्हे आना ही चाहिए। ओ राम, कही बहक न गये हो। ताडीकी गध . . ."

यह सोच रही थी कि बाहर दरवाजेपर कदमोकी आहट हुई। सुईको वही कपडमें उडस मानवती उठकर दरवाजेकी तरफ लपकी। देखती क्या है कि एक छोड दो आदमी है। एक तो ननकू है, दूसरा उसके साथ कोई और भी है। उसके सिरपर टोपी है नही, और ऊंचे जूते चढाए हुए है।

मानवतीने फौरन ताड लिया। ताडीकी गंध आती थी। सोचा कि हजरतने पी दीखती है। और जब देखा कि बदनपर मिर्जई नही है, दुपट्टा नदारद है, लोई-वोई भी कोई साथ नही दीखती है, और आकर सिमटे-से चुप खडे है, तो उसका दिल निराशासे टूट आया। सोचा कि मालूम होता है कि रुपया सब दारूपर उड़ा डाला है और कहीके उठाईगीर इस आदमीके साथ मौज-चैन उडाई गई है और अब उसे ले आये हैं मेरे सिर पटकनेको!

द्वारकी राह छोड उसने दोनोंको अंदर आने दिया। पीछे खुद आई। देखा कि दूसरा आदमी नाजुक बदनका है, जवान है, और मेरी मिर्जई उसके तनपर है। नीचे उसके कुरता न कमीज, न सिरपर टोपी। आकर सींक-सा सीधा खडा हो गया है, न हिलता है न ऊपर देखता है। मानवतीने सोचा कि जरूर कोई बदकार है। नहीं तो ऐसा डरता क्यो?

वह गुस्सेमें एक तरफ खडी हो गई, कि देखू, ये क्या करते हैं।

ननकूने टोपी उतारी और खटियापर ऐसे आ बैठे जैसे कोई खास बात न हुई हो, सब ठीक ही ठाक हो।

बोला—"मन्नो, खाना हो तो लाओ कुछ दो न!"

मानवती कुछ बुदबुदाकर रह गई। हिली-डुलीतक नही। एकको देखा, फिर दूसरेको देखा। फिर माथा पकड चुप रह गई। ननकूने देखा कि पत्नी बिगडी हुई है। उसने इस बातको दरगुजर कर देना चाहा, जैसे कुछ न हुआ हो। अपने साथीकी बाह पकडकर कहा—"अरे, बैठो भी। अब कुछ खाओगे कि नही?"

सो वह अजनबी आदमी भी पास ही खाटपर बैठ रहा।

ननकूने कहा—"कुछ हमारे लिए क्या पकाकर रक्खा है? न हो तो वैसा कहो।" मानवतीका गुस्सा उबल पडा। बोली, "रक्खा है पकाकर, पर तुम्हारे लिए नही। मालूम होता है अकल तो तुम दारूके साथ पी आये हो। लेने गये थे लोई-कपडे, आये तो पासकी मिर्जई भी गायब। फिर साथमें लिय आ रहे है जाने किस उठाईगीरको, पास जिसके तनपर ढंकनेको भी चियडा नही। सुनते हो, तुम-जैसे लतखोरोके लिए मेरे पास कोई खाना-वाना नही है।"

"बस, बस करो, मानवती। बेमतलब ज्यादा जबान नही चलाया करते। भला, पूछ तो लिया होता कि ये कैसे आदमी हैं, कौन हैं—"

"तो लो, पहले पूछती हूं कि बताओ तुमने रुपयोका क्या किया है?"

ननकूने जेबसे पाचका नोट निकाला और तह खोलकर सामने कर दिया।

"यह पाचका नोट है। बंसीने कुछ दिया नही। जल्दी देने कहता है।"

मानवतीका गुस्सा कम नहीं हुआ। देखो न, लोई तो लाना कैसा, खुद

अपनी मिर्जई जो तनपर रहने दी हो। वह भी इस फकीरको दे डाली। फिर उसीको साथ लेते आये हैं घर !

उसने नोटको ननकूके हाथसे झपट लिया और संभालकर उसे अंदर रखने चली गई। बोली—"मेरे पास नही है खाना देनेको। दुनियाके तमाम नंगे बदकारोको खिलानेको कोई मैं ही नही रह गई हूं।"

"सुनो मन्नो, जरा तो चुप रहो। कुछ दूसरे आदमीकी भी सुनो।"

"बड़ी सुनू। नशेबाजसे मिल गई बड़ी अकल। अभी तो मैं तुम्हें ब्याहना नही चाहती थी। शराबी बदखोर ! मेरी माने जो दिया, सब पी डाला। अब लोई लेने गये, उसे भी पीकर खत्म किया।"

ननकूने बहुतेरा कहना चाहा कि कुल पांच आने पैसे मैंने खर्चे हैं, और कि कैसे और कहां यह आदमी मिला और क्यों साथ है। लेकिन मानवतीने न एक कहने दी, न एक सुनी। वह एक के बदले दस कहती थी। और दसियो बरस पुरानी जानें कहा-कहाकी गडी बातें उखाडकर बीचमें ले आती थी।

बकते-झीकते उसने तेजीमें आकर ननकूको बाहसे पकड़ खीचा। कहा कि लाओ, मेरी मिर्जई दो। वह अकेली तो मेरे पास है, उसे भी छीन ले गये, हा—तो, और दूसरेको दे डाला। अभी मैं उतरवा लूगी। समझते हो ?—अभी, अभी। सत्यानासी कहीके !

ननकूने कहा—"ले, ले।"

और उसने जोरसे झिटककर अपना कुर्ता बदनसे खीच उतारा।

मानवती चिल्लाई—"इसका क्या करूंगी मैं, नास-जाय !"

लेकिन तैशमें ननकूने कुर्ता तनसे उतार ही डाला और अलग खीचकर उसे मानवतीके सिरपर दे मारा।

मानवती कुर्तेको लेकर झीकने लगी। वह सामनेसे चली जाना चाहती थी, पर नही भी चाहती थी। असलमें किसी तरह गुस्सा निकालकर वह खत्म कर देना चाहती थी। गुस्सेमें उसे तसल्ली नही थी। और यह भी उसे मालूम हो रहा था कि इसमें उस बिचारे दूसरे आदमीका कोई कसूर तो है नहीं।

(४)

आखिर रुककर बोली—"अगर वह भलामानस होता तो उघाडे बदन न होता । उसकी देहपर कुर्त्ता तक तो नहीं है । और ठीक-ठिकाना होता तो तुम्ही न बतला देते कि कहा और कैसे मिला ?"

ननकू—"यही तो बतला रहा हूं । सडकका वह पहला मोड़ पड़ता है कि नही, वही शिवालेपर मै पहुंचा कि यह आदमी वहां बैठा था । बे-कपडे, मारे जाडेके ठिठुरा जा रहा था । भला यह मौसम है बदन उघाडे बैठनेका ? यह तो ईश्वरकी मर्जी जानो कि मै वहा पहुंच गया । नहीं तो यह बचता नही । तब मै क्या करता ? हमें किसीके मनका या करनीका क्या पता है। न जाने क्या किसीके साथ बीती हो ! सो मैने उसे ढारस दिया, कपडा दिया, और उसे साथ ले आया । इसपर गुस्सा मत करो, मानो । गुस्सा पाप है । आखिर एक दिन हम सबको कालके गालमें जाना है कि नहीं ?"

मानवतीके मुहतक फिर क्रोधके वचन आये, लेकिन उस नये आदमीको देखकर चुप रह गई। वह खटियाकी पाटीपर बैठा था। हिलना न डुलना, बाहोमें घुटने पकडे, सिर छातीपर डाले, आंखें बंद, ऐसा बैठा था कि शिथिल। माथेपर भौंहोके बीच जैसे उसके डरकी सिकुडन थी। सो देख मानवती चुप रह गई।

ननकूने कहा—"बताओ, तुम्हे बिल्कुल ईश्वरका खयाल नही है ?"

मानवतीने ये वचन सुने । फिर नये आदमीको देखा तो एकाएक उसका जी उसकी तरफ कोमल हो आया। वह अंदर गई और चौकमेंसे खानेको ले आई। वही खाटपर थाली रख दी और पानीके गिलास भी रख दिये ।

बोली—"लो, भूख हो तो यह लो। अब खाते क्यो नही ?"

ननकूने अपने साथीको कहा—"सुनते हो, भाई, लो, शुरू करो।"

रोटी तोड़ी और मठेके साथ मिलाकर दोनो जने खाने लगे। मानो आंगनमें बोरी डाल, अलग बैठ गई और हथेलीपर सिर रक्खे वह इस अजनबीको देखने लगी। देखते-देखते इस आदमीके लिए उसके मनमें करुणा भर आई । जैसे उसपर प्यार हो आने लगा । इसी समय उस आदमीका चेहरा खिल आया । भवें पहलेकी तरह सिकुड़ी न रहीं, आंखें उठाकर उसने मानोकी तरफ देखा और

मुस्करा दिया ।

मानोका जी हलका हो गया । खानेके बरतन उसने हटा दिये और फिर उस नये आदमीसे बातचीत करने लगी।

पूछा—"कहाके रहनेवाले हो?"

"यहाका नहीं हू।"

"फिर इस राह कैसे आ लगे ?"

"कुछ कह नही सकता ।"

"ऐसा हाल तुम्हारा क्यो है ? किसीने लूटा-लाटा तो नही?"

"जी, सब दड परमात्माका है ।"

"और वहा तुम नंगे पडे थे?"

"जी, कपडे बिना ठिठुरा जाता था। इन्होने मुझे देखा और दया की। अपने कपडे उतारकर मुझे दे दिये और यहा घरमें ले आये और आपने मुझे यहा भोजन दिया और मुझपर कृपा की। ईश्वर आपकी बढवारी करेगा ।"

मानवती उठी और जो ननकूका कुर्त्ता संभाल रही थी, लाकर उस आदमीको दे दिया । साथ कहीसे धोती-जोडा भी निकाल लाई ।

बोली, "यह लो, भाई । पहन लो। अच्छा सोओगे कहा ? खैर, जगह पडी है, पुआल है ही । सो जी चाहे जहा सोओ।"

उसने कपडे पहन लिये और जाकर भीतर कोठरीमें पुआलपर लेट गया। मानोने फिर घरकी चीज-बस्त संभाली, और दीया बुझा वह भी खटियापर पहुंच गई।

उसी चीथडा रजाईको पति-पत्नी दोनो जने ऊपर ले लेट रहे। लेकिन मानवतीको नीद न आई। वह आदमी उसके मनसे बाहर ही नही होता था। सोचती थी कि घरमें सब रोटी खतम हो गई है, कलको चून भी नही बचा है और ले-देके जो कपडे बचे थे सो उसको दे देने पडे है। इसपर थोडा उसका मन मंद होता था। लेकिन जब उस आदमीकी मुस्कराहटकी याद आती थी, तो मन खुशीसे खिलनेको होता था ।

सो देरतक मानवती जगती रही। देखा कि ननकू भी जग रहा है । रजाई

उसने उसकी तरफ करके कहा—

"ननकू !"

"हां ।"

"रोटी तो सब चुक गई। चून दो-एक मुट्ठी बचा होगा। अब कैसे होगा ? भुनिया मौसीसे आटा उधार लेना होगा, और क्या ?"

"अरे जो जिलाता है वह पेट भरनेको भी देगा।"

स्त्री फिर कुछ देर सोचती जगती पडी रही। अनंतर बोली—"आदमी वह भला मालूम होता है । फिर बताता क्यो नही कि है कौन ?"

"कोई बात होगी।"

"ननकू !"

"हा।"

"क्यो जी, हम देते है, तो फिर हमें कोई कुछ क्यो नही देता ?"

ननकूको इसका कोई जवाब नहीं जुडा। उससे बोला—"ऊंह, छोडो भी, सोओ, सोओ।" और करवट ले वह सो चला ।

(५)

सबेरे ननकू उठा। बच्चे अभी सोये थे । स्त्री कही पडोसमें आटेका बंदोबस्त करने गई थी । सायका आदमी अकेला ओसारेमें उन्ही कपडोमें बैठा आसमानको देख रहा था। चेहरा उसका कलसे खुला हुआ और खुश था।

ननकूने कहा—"सुनो दोस्त, पेटको खाना चाहिए, तनको कपडा। इसके लिए उपाय है, मेहनत । सो कामसे रोजी चला करती है । बोलो, कुछ काम-धाम जानते हो ?"

"जानता तो मैं कुछ नही हूं।"

ननकूको यह सुनकर अचरज हुआ । लेकिन बोला—"कोई सीखनेवाला हो तो सब सीख सकता है।"

"अच्छी बात है । सब काम करते हैं, मै भी करूंगा।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"नाम !—मंगल।"

"अच्छा मंगल, तुम अपनी बाबत कुछ नहीं बताते हो जाने दो। तुम जानो तुम्हारा काम ! लेकिन गुजारेके लिए उद्यम तो कुछ करना होगा न । जैसे मैं बताऊं करते चलोगे तो तुम्हारे रहने और खाने-पीनेके बंदोबस्तमें हमें कोई अड़चन नहीं होगी।"

"परमात्माकी दया हुई तो मैं काम सीखता जाऊंगा। भगवान आपका भला करें। मुझे बताते जाइए।"

ननकूने सूत लिया, पैरके अंगूठेसे बांधा, और उसे बंटने लगा। बोला—

"देखते हो न ? कुछ भी तो मुश्किल नहीं है ।"

मगल गौरसे देखता रहा । फिर उसी तरह अंगूठेमें सूत बांध वह भी बटने लगा। न-कुछमें यह उसे आ गया और सूत उसने अच्छा बट लिया ।

फिर ननकूने बताया कि कैसे मोमसे इसे चिकना करते है । यह भी मगल सीख गया । फिर बताया कि कैसे फंदा डालते हैं, कैसे सीते हैं । यह भी मगल आसानीसे सीखता चला गया ।

ननकू जो बताता, मंगल झट समझ जाता । तीन दिनके बाद तो मंगल ऐसा काम करने लगा मानो जिदगी भर यही करता रहा हो। लगनसे सब दिन वह यही किया करता और थोडा खाता। कामके बाद अपने चुपचाप आसमानकी तरफ देखने लगता । वह शायद ही कही इधर-उधर जाता था। बस काम जितनी बात करता था । न हसी, न मजाक, न कुछ। पहले दिन जब मानवतीने उसे खानेको दिया था, उस वक्तको छोड फिर वैसी मुस्कराहट भी उसके चेहरेपर नही दीखी।

(६)

दिनपर दिन चलते गये । इस तरह साल निकल गया । मंगल ननकूके साथ रहता और काम करता । उसका नाम सरनाम हो चला था। लोगोम हो गया था कि ननकूका आदमी यह मगल जैसे जूते सीता है, वैसा आस-पास क्या दूरतक भी कोई नही सी सकता। काम ऐसा खूबसूरत और मजबूत और सुबुक कि क्या बात । सो ननकूके यहा दूर-दूरके लोग जूते बनवाने आने लगे। इससे ननकूकी हालत सुधर आई और खुशहाली बढ़ने लगी।

एक बार जाड़ोंके दिन थे। ननकू और मंगल काम करने बैठे थे। तभी दो घोड़ोंकी बग्घी टनन-टनन करती हुई उनके गावमें आई। उन्होंने झांककर देखा। देखते क्या है कि बग्घी उनके द्वारपर आकर रुक गई है और एक वर्दीदार कोचवानने गाड़ीके रुकते ही चटसे नीचे कूदकर दरवाजा खोल दिया है। दरवाजेमेंसे कीमती कपड़े पहने कोई रईस आदमी उतरे और उसी घरकी तरफ बढे। मानवतीने झटपट आकर अपने घरके दरवाजे चौपट खोल दिये। सज्जनको अदर आनेके लिए दरवाजेमें झुकना पडा। फिर आकर जो खड़े हुए तो सिर उनका छतको छूता मालूम होता था और जैसे वह सारी जगह उनसे भर गई थी।

ननकूने उठकर सलाम किया। वह अचभेमें इन्हें निहार रहा था। इनके जैसा आदमी उसने नसीबमें नही देखा था। वह खुद दुबला था। मगलकी देह भी इकहरी थी और मानवतीके तो हाड़ निकल रहे थे। पर यह सज्जन जैसे दूसरी दुनियाके थे। चेहरा सुर्ख, दोहरी देह, गर्दन ऐसी कि क्या पूछिए। पूरे देव मालूम होते थे।

सज्जनने ऊपरका चोगा उतारा नही कि उसे पास खडे नौकरने हाथो-हाथ संभाल लिया। वह बोले—"तुममें कौन है जिसका जूता मशहूर है ?"

ननकूने आगे बढकर और झुककर कहा, "जी, हाजिर हूं।"

तब सज्जनने जोरसे पुकारकर कहा—"ऐ छोकरे, वह चमड़ा इधर तो लाओ।"

नौकर चमडेका बंडल लेकर दौड़ा आया।

"खोलो।"

नौकरने खोला। सज्जनने छड़ीसे चमडेको दिखाते हुए कहा—"देखते हो, यह चमड़ा है।"

"जी।"

"जी नहीं, जानते हो यह कैसा चमडा है ?"

ननकूने हाथसे टटोलकर चमडेको देखा। बोला—"अच्छा चमड़ा है।"

"अच्छा है! बेवकूफ, ऐसा कभी तुमने अपने जन्ममें देखा भी है? असल जर्मनीका है, और अकेला यह टुकड़ा बीस रुपयेका है।"

ननकू सहमकर बोला—"जी, ऐसा चमड़ा हमें कहां देखनेको मिलता है, हुजूर !"

"हां, सो ही तो। अच्छा इसके जूते तैयार कर सकोगे ?"

"जी हुजूर, कर सकूगा ।"

वह सज्जन जोरसे बोले—"कह दिया, कर सकूगा ! अरे, कर भी सकोगे ? याद रखना कौन कह रहा है और क्या चमड़ा है । समझे ? ऐसा जूता बनाना होगा कि सालभर पूरा चले । न उघड़े, न बिगडे । कर सकते हो तो लो चमड़ा और शुरू करो। नही कर सको तो सीधे कहो। समझते हो न, अगर सालभरके अदर जूतेमें उधडन आ गई या उनकी शकल बिगड़ चली तो तुम हो और जेलखाना ! क्या समझे ? और जो वह फटे नही और शकल भी कायम रही, तो कामके तुम्हें दस रुपया मिलेंगे । सुना ?"

ननकू तो रोबके मारे डर गया था। उससे जवाब नही दिया गया। उसने मगलको देखा और धीमेसे कोहनी मारकर मानो उससे पूछा—"क्या कहते हो? यह काम ले लू ?"

मंगलने सिर हिला दिया, जैसे कहा कि हां, ले लो ।

मंगलकी कही मानकर ननकूने काम ले लिया । वादा किया कि ऐसे जूते तैयार कर दूगा कि सालमें न एक उनकी सीवन जायगी, न शकलमें फरक आयगा।

तब नौकरको बुलाकर सज्जनने कहा—"ए, हमारे पैरका यह जूता उतारो तो।" यह कहकर बाईं टाग उन्होने आगे बढा दी । फिर ननकूसे कहा—"देखते क्या हो ? लो, अपना नाप लो ।"

ननकूने कागज लिया । उसे धरतीपर हाथसे बार-बार चपटा किया, झुका, अपने कुर्तेसे अच्छी तरह हाथ पोंछे कि सज्जनके मोजे मैले न हो जायं, और नाप लेना शुरू किया । तली नापी, टखना नापा और पिंडलीका नाप देखने लगा। पर कागज उसका छोटा निकला। पिंडलीकी मोटाई इतनी थी कि कागज ओछा रहा ।

"देखना, नाप कही इस जगह सख्त न हो जाय !"

ननकूने उसमें फिर दूसरा कागज जोड़ा । सज्जन मोजेमेंसे अपना अंगूठा

चला रहे थे और वहां खड़े लोगोंको देख रहे थे। इसी दरमियान उनकी नजर मंगलपर पड़ी।

"ऐ, यह कौन है ?"

"हुजूर, यह मेरा आदमी है। यही जूते सियेगा।"

सज्जनने मंगलको कहा—"यह! अच्छा, सुनते हो जी तुम, देखो भूलना नही कि जूते पूरे सालभर चलें। नही तो..... "

ननकूने अचरजसे मंगलको देखा। देखा कि मंगल उन रईसको जैसे देख ही नहीं रहा है, बल्कि उनके पार जाने कहा देख रहा है। जैसे पार पीछे कुछ सचमुच हो। उधर देखते-देखते मगल एकाएक मुस्करा आया और उसके चेहरेपर एक चमक झलक गई।

उन सज्जनने गरजकर कहा—"दांत क्या निकालता है, बेवकूफ ! ख्याल रखना, वक्ततक जूते तैयार हो जायं। सुना न ?"

मंगलने कहा—"जी, समयपर तैयार लीजिए।"

"हां, तैयार।"

यह कहा, जूते पहने, चोगा चढ़ाया और दरवाजेकी तरफ बढ़े। लेकिन झुकनेकी याद न रही और दरवाजेकी चौखट खट्-से सिरमें लगी।

झुझलाकर उन्होने गाली दी और सिर मलते हुए गाड़ीमें बैठ चलते बने।

चले गये तो ननकूने कहा—"क्या खूब, आदमी हो तो ऐसा हो। डील-डौल ऐसा कि देव ! एक बार घन पडे तो शायद पता न चले, ऐसी देह ! देखो न, सिर लगा तो चौखट टूटते बच गई। पर सिरका कुछ न बिगड़ा।"

मानवती बोली—"जो खाएगा-पीएगा वह मजबूत न होगा तो क्या तुम होगे। ऐसी शिलाको तो मौत भी छूते बचे !"

(७)

उनके चले जानेपर ननकू मंगलसे बोला—"दोस्त, काम ले तो लिया; पर कहीं मुसीबतमें न फंसना पडे। चमडा कीमती है और आदमी तुम समझो वह मुलायम नही है। सो काममें कोई नुक्स नही रहना चाहिए। सुना न ? तुम्हारी आंख सही और हाथ सच्चे है। मैं तो फूहड़ हुआ। इससे भाई, इस चमड़ेकी

काट-कूटको तुम्हीं संभालो । मैं इतने तले सिये डालता हूं।"

मंगलने वह चमड़ा ले लिया। उसे बिछाया, मोड़ा और रापी लेकर काटना शुरू कर दिया ।

मानवती आकर देखने लगी । देख रही थी कि उसे अचरज हुआ। उसने बूट बनते देखे थे, लेकिन मगल बूटके ढगपर चमड़ेको नही काट रहा था, और ही तरीकेपर काटने लगा था।

उसने रोककर कहना भी चाहा, लेकिन फिर सोचा कि मै ज्यादा तो जानती नही, शायद कोई खास बूट इसी तरहसे बनते हो। और मगल खुद होशियार है, सो मुझे दखल नही देना चाहिए ।

चमडा काट चुका तो मगलने सीना शुरू किया। लेकिन दोहरी सिलाई नही की, जैसे कि बूट सिये जाते हैं । बल्कि इकहरी सिलाई शुरू की, जैसे कि सुबुक कामके या बचकाने स्लीपर सिये जाते है ।

ननकूने यह देखा तो उसके मनमें बडा पछतावा हुआ । सोचा कि मगल सालभर मेरे साथ रहा है, कभी उसने गलती नही की । अब यह उसको हो क्या गया है ? वह ऊचे पूरे बूटको कह गये थे और मगलने इकहरी तलीके सुबुक स्लीपर बना डाले है। ऐसे सारा चमडा खराब हो गया कि नही हो गया। अब उनको मैं क्या जवाब दूगा । ऐसा दूसरा चमड़ा कहासे लाकर दूगा ।

बोला—"यह कर क्या रहे हो, मगल ! तुमने तो सारा नाश करके रख दिया । उन्होने ऊचे-ऊचे पूरे बूटके लिए कहा था और यह तुमने क्या बनाकर रख दिया है ।"

ऐसे सख्त-सुस्त सुनाकर चुका होगा कि बाहरसे किसीके आनेकी आहट आई । इतनेमें तो अपने द्वारपर ही कुडेकी खटखटाहट सुनाई देने लगी। देखें तो घोडेपर सवार कोई आया है ।

किवाड़ खुले और उन सज्जनके साथवाला वही आदमी सामने दिखाई दिया । बोला—"जय रामजीकी, चौधरी ।"

"जय रामजीकी भाई", ननकू बोला, "कैसे आना हुआ ?"

"मालकिनने जूतोंकी बाबत मुझे भेजा है ।"

"जूतोकी बाबत ! क्या मतलब ?"

"अब बूटोंकी जरूरत नही हैं, क्योकि मालिक तो रहे नही, उन्होने प्राण छोड दिये ।"

"क्या—आ !"

"वह यहासे घरतक भी नही पहुच सके, गाडीमें ही मौतने ले लिया । घर पहुंचकर हम सबने जो उन्हें उतारना चाहा तो देखते क्या है कि वह बोरोकी तरह लुढके पड रहे है । उनमें जान नही रह गई थी। बदन ऐसा अकड गया था कि जैसे-तैसे गाडीसे बाहर उन्हें लिया जा सका। मालकिनने मुझे यहा भेजा है कि जूतेवालोसे कहना कि बूट जिन्होने बनवाये थे, उन्हें अब उनकी जरूरत नही रही । लेकिन अब उनकी जगह मुलायम इकहरी स्लीपर तैयार कर दें। कहा है, जबतक वे तैयार नही हो, वही रहना और साथ लेकर आना। सो इस वास्ते मै आया हू ।"

इसपर मगलने बचे-खुचे चमडेको समेटा, स्लीपर लिये, दोनोंकी तह की, आस्तीनसे फिर एक बार पोछकर उन्हें साफ कर दिया, और दोनो चीजें उस आदमीके हवाले की ।

"अच्छा, जयरामजीकी चौधरी ।" कहता हुआ वह आदमी चला गया ।

(८)

दूसरा साल निकला, फिर तीसरा । इस तरह ननकूके साथ रहते मगलको छ साल हो गये । वह पहलेकी तरह रहता था। इधर-उधर कही जाता नही था, जरूरतपर बोलता था। उस सब कालमें वह सिर्फ दो बार मुस्कराया था । एक जब कि मानवतीने उसे खाना दिया था, दूसरे जब वह रईस यहा आये थे । ननकू उससे बहुत खुश था और अब ज्यादे सवाल उससे नही पूछता था । उसे खयाल था तो यही कि मगल पाससे कही चला न जाय ।

एक दिन सब जने घरमें थे । मानवती खानेकी तैयारी कर रही थी, बच्चे खेल रहे थे, ननकू एक तरफ बैठा सी रहा था और मंगल एक जोडीकी एडी नई कर रहा था ।

इतनेमें एक लडका भागा आया और मंगलकी कमरपर आ कूदा। बोला—

"चाचा, ओ चाचा, देखो कौन आ रही हैं । छोटी दो लडकिया भी हैं। यही आ रही मालूम होती है । ओ चाचा ओ, एक लडकी लगडी चलती है ।"

लडकेके यह कहनेपर मगलने औजार नीचे रक्खे और सब काम छोड द्वारसे बाहर देखने लगा ।

ननकूको इसपर अचरज हुआ । मंगल कभी भी आख उठाकर बाहरकी तरफ नही देखता था । लेकिन अब तो जाने क्यो वह एकटक देख रहा था । ननकून भी उझककर बाहर देखा । देखता क्या है कि सचमुच एक स्त्री अच्छे कपडे पहने उसीके घरकी तरफ चली आ रही है। हाथ पकडे दो लडकिया है । ऊनी, गर्म, सलीकेके कपडे पहने है और कधोपर दुशाला पडा है। लडकिया दोनो एकसी है । एकको दूसरेसे पहचानना मुश्किल है। लेकिन दोनोमें एकका बाया पैर खराब है और वह लगडाकर चलती है ।

वह स्त्री उन्हीके ओसारेमें आई। आगे-आगे लडकिया थी, पीछे वह। आकर स्त्रीने उन लोगोका अभिवादन किया ।

ननकूने कहा—"आइए, आइए '। हमारे लायक क्या काम है ?"

स्त्री बेंचपर बैठ गई । दोनो लडकिया भी उसके घुटनेसे चिमट बैठी। वे जैसे यहा इन नये लोगोके बीच डर गई थी ।

"मै इन दोनो बच्चियोके लिये जूते बनवाना चाहती हू । जरा मुलायम होने चाहिए, गरमियोके लायक ।"

"जरूर लीजिए, जरूर। ऐसी बचकानी जोडी हमने बनाई तो नही है, लेकिन बना देंगे । रुयेंदार, सादे या फैसी, जैसे कहें। मेरे आदमी इस मगलके हाथमें हुनर है—"

कहकर ननकूने मगलको देखा । देखता क्या है कि मगलका तो काम-धाम सब छूट गया है और उसकी निगाह उन लडकियोपर जम गई है । ननकूको अचभा हुआ । लडकिया नन्ही-नन्ही बडी सुदर थी । काली आखें, गुलाबी गाल और तदुरुस्त बदन । और अच्छे कपडे भी पहने थी। लेकिन ननकूको समझ न आया कि मगल यह उन्हें ऐसे क्यो देख रहा है—मानो पहलेसे जानता

हो । वह उलझनमें पड गया, पर उन महिलासे कामकी बात भी चलाता जाता था । कीमत पट गई और ननकू पावका नाप लेने बढा। स्त्रीने लंगडी लडकीको गोदमें उठाकर कहा—"इस लडकीके ही दो नाप ले लो। एक लगडे पैरके लिए और तीन दूसरे परके जूते बना देना । दोनोके एक पाव है । जुडवा बहनें जो ठहरी । "

ननकूने नाप लिया और बोला—"जी, ऐसा हो कैसे गया ? कैसी सयानी सुदर लडकी है । क्या जनमसे पाव ऐसा है ?"

"नही, नही, उसकी मासे ही यह टाग कुचल गई थी।"

इस समय मानवती भी वहा आ गई थी। उसे अचरज हुआ कि यह महिला कौन है और ये बच्चियां किसकी है। पूछने लगी, "तो क्या तुम इनकी मा नही हो ?"

"नही, बीबी, मै मा नही हू । न नातेमें कुछ लगती हू। मै इनको पहले जानती भी नही थी । लेकिन अब तो दोनो मेरी गोदमें है, मेरी है।"

"तुम्हारी नही है, फिर भी तुम इन्हें इतना लाड-प्यार करती हो ! "

"प्यार नही तो और क्या करूं ? दोनोको अपना दूध पिलाकर मैंने पाला है । मेरे अपना भी एक बालक था । ईश्वरने उसे उठा लिया । पर उसका मुझे इतना प्यार नही था जितना इन नन्हियोका मोह मुझे हो गया है ।"

"तो फिर ये किसके बालक है ?"

(६)

इस तरह एक बार शुरू होना था कि स्त्री पूरी ही कहानी कह चली—

"कोई छ साल होते है कि इनके मा-बाप मर गये । दोनो तीन दिन आगे-पीछे इस धरतीसे उठ गये । मगलवारको पिताकी अर्थी उठी तो बृहस्पतिको माने ससार तज दिया। बापके मरनेके दो दिन बाद इन बेचारे अनाथोने जनम लिया। माका सहारा तो इनको एक दिनका भी नही मिला। हम तब उसी गावमें रहते थे। हमारे यहा खेती होती थी। दोनो हम पडोसी थे, हमारे घरके घेरे तो मिले ही हुए थे । बाप इनका अकेला-सा आदमी था और पेड़ काटनेका काम करता था। जंगलमें पेड़ काटे जा रहे थे कि एकके नीचे वह आ गया। पेड़ ठीक उसके ऊपर आकर गिरा । और वह पिच गया, आंतें बाहर आ गई फिर दम निकलना

कै घडीकी बात थी ? घरतक ला न पाये कि जान जा चुकी थी । उसके तीसरे दिन माने इस जुगल जोडीको जनम दिया। वह अकेली थी और गरीबिनी थी। जवान या बुड्ढा, कोई उसका न था। बेचारी अकेलीने इन नन्हियोको जनमा और अकेली जाकर मौतसे मिल गई ।

"अगले सवेरे मै उसे देखने गई । झोपडेमें घुसती हू और देखती हू कि उस बेचारीकी देह तो ठडी पडी थी और अकड गई थी । मरते समय दर्दमें करवट ली होगी कि उसमें इस बच्चीकी टाग जाती रही। फिर तो गावके लोग आ गये । देहको उठा अर्थीपर रक्खा और क्रिया-कर्म किया । दोनो बेचारे वे नेक आदमी थे । बच्चे उनके बाद अकेले रह गये। तब उनका क्या होता ? गांवमें मै ही थी कि जिसकी गोदमें दूध-पीता बच्चा था। कोई डेढ महीनेका मेरा पहलौता मेरी छातीमे था । इससे उन दोनोको भी मैने ही ले लिया । गावके लोगोने बहुतेरा सोचा कि क्या हो। आखिर उन्होने मुझे कहा कि भगवती, अभी-अभी तो तुम्ही इन्हें पाल सकती हो। पीछे देखेंगे कि फिर क्या किया जावे। सो मै छातीका दूध पिलाकर एक बच्चीको पालने लगी। दूसरीको पहले-पहल मैंने दूध नही दिया। सोचती थी कि वह क्या बचेगी! लेकिन फिर मैंने खुद ही ख्याल किया कि वह बेचारी बेकसूर क्यो दुख पाये और भूखी रहे । सो मुझे दया आई और मै उसे दूध पिलाने लगी। इस भाति मै तीनोको, अपने बालकको और इन दोनोको भी, अपनी छातीके दूधसे पालने लगी । मेरी भरी उमर थी और मै तदुरुस्त थी और खाना अच्छा खाती थी । सो परमात्माने इतना दूध दिया कि कभी तो वह अपनेआप ही खिरने लगता था । कभी मै दो-दोको एक साथ दूध देती। एकको पूरा हो जाता, तो तीसरेको ले लेती। अब परमात्मा की लीला कि ये दोनो बच्चिया तो पनपती गईं, और मेरा अपना बालक दो बरसका हो न पाया कि जाता रहा । उसके बाद मेरे कोई सतान नही हुई, लेकिन हम बराबर खुशहाल होते चले गये । अब मेरा आदमी एक किराने के व्यापारीका एजेंट है । तनख्वाह खासी है और हम लोग मजेमें है । हमारे अपना कोई बालक नही है और ये नन्ही मुझे न मिल जाती तो जीवन सूना ही मुझे मालूम होता। सो इनको प्यारके सिवा भला मै क्या कर सकती हूं। यही मेरी आखोकी रोशनी

है और जीवनका धन है ।"

यह कहकर उस स्त्रीने लगडी लडकीको एक हाथसे गोदमें चिपटा लिया और दूसरेसे उसके गालके आसू पोछने लगी ।

सुनकर मानवतीने सास भरी । बोली—"सच है, मा-बापके बिना जीना हो सकता है, पर ईश्वरके बिना कोई भी नही जी सकता ।"

इस तरह वे आपसमें बातें करने लगी कि एकाएक उस जगह जैसे बिजलीकी रोशनी हो गई हो, ऐसा लगने लगा। सबको बडा आश्चर्य हुआ देखते हैं कि ज्योति उधरसे फूट रही है, जहा मगल बैठा था । सबकी नजर उधर गई। देखते क्या है कि घुटनोपर हाथ रक्खे मगल बैठा ऊपरकी ओर देख रहा है और चेहरेपर उसके मुस्कराहट खेल आई है ।

(१०)

महिला लडकियोको लेकर चली गई । तब मगल अपनी जगहसे उठा । औजार नीचे रख दिये और ननकू और उसकी स्त्रीके सामने हाथ जोडकर बोला—"अब मुझे विदा दीजिए । ईश्वरने मेरे अपराध क्षमा कर दिये हैं। जो भूल हुई हो उसके लिए आपसे भी माफी मागता हू ।"

सुनकर दोनो जने देखते क्या है कि मगलके चेहरेसे एक आभा फूट रही है। यह देख ननकू मगलके आगे आ सिर नवाकर बोला—"मगल, मै देखता हू तुम साधारण आदमी नही हो । न मै तुम्हे रुकनेको कहने लायक हू, न कुछ पूछने लायक । पर इतना बतलाओ कि यह क्या बात है कि जब तुम मुझे मिले और मै तुम्हे घर लाया तब तुम उदास मालूम होते थे । लेकिन मेरी बीबीने खाना दिया तो तुम उसकी तरफ मुस्करा पडे और चेहरा खिल गया। उसके बाद फिर जब वह रईस बूट बनवाने आये तब तुम दूसरी बार हसे और पहलेसे भी ज्यादा तुम्हारे चेहरेपर रौनक दीखी । और अब यह श्रीमती अपनी लडकियोके साथ आईं कि तुम तीसरी बार हसे और ऐसे खिल आये जैसे उजली धूप । मगल, मुझे बताओ कि तुम्हारे चेहरेपर ऐसी शोभा उन तीन बार क्यो आई और तुम मुस्कराये क्यो ?"

मगलने उत्तर दिया—"शोभा इसलिए कि मुझे दड मिला था, सो अब ईश्वरने मुझे माफ कर दिया है । और मै तीन बार हंसा, क्योकि ईश्वरने मुझे

तीन सत्य जाननेके लिए यहा भेजा था, और अब मै उन्हें जान गया हूं । एक मैने तब जाना जब तुम्हारी स्त्रीने मुझपर करुणा की । इसलिए पहली बार तो मै तब हंसा । दूसरा सत्य मैने जाना जब वह रईस यहां जूते बनवाने आये थे । इससे दूसरी बार मै उस समय मुस्कराया । और अब इन लडकियोको देखकर मैने तीसरा और अतिम सत्य जान लिया । इससे अब मै तीसरी बार हंसा हू । और मेरा दुःख कट गया है ।"

इसपर ननकू बोला—"मंगल, हमें बतलाओ कि ईश्वरने तुम्हे दंड क्यों दिया था और वे तीन सत्य क्या हैं, कि हम भी उन्हें जान सकें ।"

मगलने जवाब दिया—

"भगवानने मुझे सजा इसलिए दी कि उनकी आज्ञा मैने टाली थी । मै स्वर्गमें एक देवता था, पर मैने ईश्वरकी आज्ञाका भग किया । ईश्वरने मुझे एक स्त्रीकी आत्मा लेने भेजा था । मै उडकर धरतीपर आया । देखता हू कि स्त्री वह अकेली है बेहाल पडी है, और अभी हाल जुडवा बच्चियोको जन्म देकर चुकी है । बच्चिया माके बराबर पडी अपनी नन्ही-सी जानसे चिचियाकर रो रही है, पर मा उन्हें उठाकर छातीतक नही ले जा सकती । मुझे देखकर वह समझ गई कि मै ईश्वरका दूत हू और उसे लेनेके लिए आया हू । सो वह रोने लगी । बोली—'ओ परमात्माके दूत ! मेरे पतिकी राख अभी ठडी भी नही हुई है । पेड गिरनेसे उसके असमय प्राण गये । मेरे न बहन है, न चाची है, न मा । इन अनाथोको पीछे देखनेवाला कोई नही है । देखो, मुझे अभी मत ले जाओ । बच्चोको दूध पिलाकर पाल-पोस देने दो कि वे पैरो चल जाय । तब बेखटके ले जाना । तुम्ही सोचो, बच्चे मा-बापके बिना भला कैसे रहेंगे ?'

"मेरा जी पसीज आया और मैने माकी विनती रक्खी । उठाकर एक बच्चीको मैने उसकी छातीसे लगा दिया, दूसरीको उसकी बाहोमें दे दिया । वापिस आया । स्वर्ग और ईश्वरके पास पहुचकर कहा कि मै उस माकी आत्माको नही ला सका हू । पति उसका एक पेडके गिरनेसे हाल ही मरा है और उसके अभी दो जुड़वा बच्ची हुई है । सो उसका निवेदन है कि अभी मुझे न ले जाओ । कहने लगी कि मुझे बच्चोको पाल-पोस देने दो कि वे चलने लगें, नही तो बच्चे मा-बापके

बिना कैसे जियेंगे ? मैंने इसलिए उन्हें अपना हाथ नही लगाया ।

"ईश्वरने कहा—'जाओ, उस माकी आत्माको लो और तीन सत्य सीखो। सीखो कि आदमीमें किस तत्त्वका वास है, आदमीका क्या वश नही है, और वह किसका जिलाया जीता है । जब ये तीन बात सीख लोगे तब ही तुम फिर स्वर्ग वापिस आ सकोगे ।'

"सो मैं उडकर फिर धरतीपर आया और माको उठाकर चला। बच्चियाँ तब उसकी छातीसे गिर गईं और अतिम करवट जो ली तो देह उसकी एक बच्चीपर जा रही। उससे उसकी बच्चीकी एक टाग बेकाम हो गई। मै आत्माको लेकर ऊपर उडा कि ईश्वरके पास ले जाऊ। पर जाने कैसा एक हवाका चक्कर आया कि मेरे डैने गिरने लगे। मै उडनेमें असमर्थ हो गया। माकी आत्मा फिर अकेली ईश्वरकी तरफ उड गई और मै धरतीपर सडकके किनारे आ गिरा।"

(११)

ननकू और मानवती अब समझे कि कौन था जो इन सब दिन उनके साथ घरमें रहा-सहा था और घरमें खाया-पिया था । वे गर्व और भयसे भर आये।

देवदूतने आगे कहा—"मै अकेला पडा था। अनजान, न कपडा था न कुछ। आदमी होनेसे पहले मै सर्दी या भूख नही जानता था। आदमीकी कोई जरूरत नही समझता था। लेकिन वहा भूख मालूम हुई और मै ठडमें ठिठुर जाने लगा। जानता नही था कि क्या करू। तभी पास ईश्वरके नामपर बनाया गया आदमियोका एक मदिर मुझे दिखाई दिया । मै वहा गया कि शरण मिलेगी। पर मदिरमें ताला जडा हुआ था और मै अदर जा नही सका। सो हवाकी शीतसे बचनेके लिए मै मदिरके पीछे दीवारके सहारे उकडू बैठ गया । साझ हो रही थी। मै भूखा था । दर्द और ठडसे बदन मेरा अकडा जाता था। तभी एकाएक सडकपर आते हुए एक आदमीकी आहट मुझे मिली। हाथमें उसके एक जोडी जूते लटके थे और वह अपनेआपसे बात करता हुआ जा रहा था। खुद आदमी होनेके बाद पहली बार मैंने मनुष्यका चेहरा देखा। वह मुझे बडा भयानक मालूम हुआ और उधरसे मैंने आखें मोड ली । वह आदमी बात करता जाता था कि कैसे जाड़ोके लिए मुझे कपडे बनवाने है, और बीबीके लिए क्या करना है, और

बच्चोंके लिए क्या करना है। मै सोचने लगा कि मै यहा पास ही सर्दी और भूखके मारे मरा जा रहा हूं और एक आदमी यह है कि अपने और अपनी स्त्रीके लिए ही खाने-पहननेकी बात सोचता है। वह मुझे मदद नही कर सकता। मुझे देखकर उस आदमीकी भवें तन गईं और चेहरा भी भयावना हो आया। वह मुझे कतरा-कर दूसरी राह निकल गया। मेरी आस टूट चली। लेकिन एकाएक जान पडा कि वह लौटा आ रहा है। ऊपर निगाह उठाकर मैंने देखा तो वह वही नही दीखता था। पहले उसके चेहरेपर मौतका डर था अब जीवन वहा था और ईश्वरकी सत्ताका चिन्ह मुझे उस मुखपर मिला। वह आदमी मेरे पास आया। कपडे दिये और मुझे फिर साथ घर भी ले आया। घर आनेपर एक स्त्री मिली और मुह खुलना था कि वह मर्दसे भी ज्यादा भयावनी मालूम हुई। वाणीमें उसकी मौत विराजमान थी और उसमेंसे चारो ओर जो यमकी गध लपटें ले-लेकर फूटती थी, उसमें सास लेना मुझे दूभर हो गया। बाहर मै चाहे सर्दीमें ठिठुर मरू, लेकिन मुझे वह अपने घरसे निकाल बाहर करनेको तैयार थी। मै जानता था कि अगर ऐसा हुआ तो इसमें उसका अनिष्ट है। लेकिन पतिका उसे ईश्वरकी याद दिलाना था कि वह स्त्री एकदम बदल गई। फिर जब वह मेरे लिए खानेको लाई और मुझे करुणाकी आखोसे निहारा तब मौतका वास उसमें नही था, और उसमें विद्यमान ईश्वरकी महिमा मुझे दिखाई दे आई। उस समय मुझे पहली सचाईकी बात याद आई। ईश्वरने कहा था कि यह जानो कि आदमीके अतरमें किसका वास है। और मैंने प्रतीति पाली कि आदमीके अदर प्रेमका वास है। मुझे हर्ष हुआ कि ईश्वरकी कृपा-दृष्टि मुझपर बनी है और सत्य-दर्शनमें वह मेरे सहाई है। तब सहसा मुझसे मुस्कराहट फूट गई। लेकिन अभी सब मैंने नही जाना था। जानना शेष था कि क्या आदमीका वश नही है और आदमी किसके जिलाये जीता है।

"मै फिर आप लोगोके साथ रहने लगा और एक साल बीत गया। तब एक आदमी आया। वह जूते बनवाना चाहता था जो एक सालतक काम दें। न बीचमें कहीसे उधडें, न बिगडें। मैंने उसकी ओर देखा। एकाएक देखता क्या हू कि उस आदमीके ठीक पीछे-पीछे मेरा ही एक साथी है, जो उसे उठा लेनेको आया हुआ है। मेरे सिवा उस यमदूतको किसीने नही देखा। लेकिन मैंने उसे

पहचान लिया और जान गया कि आज का सूरज छिपने न पायगा कि उससे पहले ही मेरा वह साथी उस अमीर आदमीकी आत्माको ले उडेगा। यह देख मैंने सोचा कि देखो, यह आदमी सालभरका बदोबस्त कर रहा है, लेकिन उसे पता नही कि वह कै घडीका मेहमान है। उस समय मुझे ईश्वरका दूसरा वचन याद आया कि यह सीखो कि आदमीका वश क्या नही है ।

"आदमीके अतरमें किसका वास है, यह तो मैं जान गया था । अब जाना कि आदमीका वश क्या नही है । आदमीका यह वश नही है कि वह अपनी आगेकी जरूरतें जाने । इस दूसरी सचाईका दर्शन पानेपर दूसरी बार फिर मुझे हर्षकी मुस्कराहट आ गई । एक बिछोहके बाद अपने स्वर्गके साथीको देखकर भी मुझे आनद हुआ और परम सतोष हुआ कि ईश्वरने मुझे दूसरे सत्यके दर्शन दिये ।

"लेकिन अब भी सब मैं नही जानता था । तीसरा सत्य मुझसे ओझल बना था । वह यह कि आदमी किसके श्वाससे जीता है। फिर कुछ दिन बीते । मैं उत्कठामें रहने लगा कि ईश्वर कब तीसरे सत्यका उद्‌घाटन करते है कि छठे साल जुडवा बहनोको लेकर वह महिला आई। देखते ही उन लडकियोको मैंने पहचान लिया । फिर कथा सुनी कि कैसे वे बच्ची पली और जीती रही । वह सुनकर मैंने सोचा कि माने उन बच्चियोके लिए ही मुझे रोका था । मैंने उसकी यह बात मान ली थी कि बच्चे मा-बापसे जीते है। लेकिन देखो कि एक बिलकुल अनजान औरतने उन्हे पाला-पोसा और बडा किया। जब वह स्त्री उन बच्चियो-को प्यार करती थी, जो उसकी कोखकी नही थी, और उस प्यारमें उसकी आखोमें आसू आ रहते थे, तब साक्षात् अशरण-शरणका रूप उनमें मुझे दिखाई दे आया। मैं समझ गया कि लोग किसके जिलाये यहा जीते है । उस समय मैं धन्य हो गया, क्योकि ईश्वरने तीनो सचाइयोके समाधानका मुझे दर्शन करा दिया था। मेरे बधन कट गये, पाप क्षमा हो गये । और तब मैं तीसरी बार मुस्कराया।"

(१२)

अनंतर उस देवदूतका शरीर दिव्य होकर दसो दिशाओमें मिल गया। अब प्रकाश ही उसका परिधान था और आखें उसपर ठहरती न थी। वाणी गंभीर

सुन पड़ती थी जैसे कि घन-घोष हो और स्वय आकाशसे दिव्य ध्वनि खिरती हो। उसी वाणीमें देवदूतने कहा—

"मै सीख गया हू कि लोग अपनी-अपनी चिंता करके नही रहते हैं, बल्कि प्रेमसे रहते हैं।

"बच्चियोकी माको नही मालूम था कि उनके जीवनको क्या चाहिए, न उस अमीर आदमीको मालूम था कि उसे क्या चाहिए, न किसी आदमीका बश है कि उसको मालूम हो कि शाम होनेतक क्या होनेवाला है। कोई क्या जानेगा कि शामतक भोग भोगना मिलेगा कि राखमें मिलना बदा है।

"आदमी बनकर मै जिंदा रहा तो इसलिए नही कि अपनी परवाह की या कर सका। बल्कि इसलिए जिदा रहा कि एक राहगीरके दिलमें प्रेमका अश था। उसने और उसकी बीबीने मुझपर करुणा की और मुझे प्रेम किया। अनाथ बच्चिया जीती रही, तो माकी चिंताके भरोसे नही, लेकिन इसलिए जीती रही कि एक बिल्कुल अनजान स्त्रीके हृदयमें प्रेमका अकुर था और उसने उनपर दया की और प्यार किया। और सब लोग अगर रहते है तो अपनी-अपनी फिक्र करनेके बलपर वे नही रहते, बल्कि इसलिए रहते है कि उनमें प्रेमका आवास है।

"मै अबतक जान सका था कि ईश्वरने मनुष्यको जीवन दिया कि वे जीयें। लेकिन अब मै उससे आगे भी जानता हूँ।

"मैंने जाना है कि ईश्वर यह नही चाहता कि लोग अलग-अलग जियें। इसलिए हक नही है कि कोई जाने कि किसीकी अपनी जरूरतें क्या है। ईश्वर तो चाहता है कि सब ऐक्य-भावसे जीयें। इसलिए सबको पता है कि सबकी जरूरतें क्या है।

"अब मै समझ गया हू कि चाहे लोगोको लगता हो कि वह अपनी फिक्र करके जीते है, लेकिन सचाईमें तो प्रेम है जो उन्हें जिंदा रखता है। जिसमें प्रेम है, वह भगवानमें है और भगवान उसमें है। क्योकि भगवान प्रेममय है।"

इतना कहकर देवदूतने ईश्वरकी स्तुति की, जिसकी गूजसे मानो सारा वाताकाश हिल गया। तभी ऊपर छत खुली और धरतीसे आसमानतक एक जलती लौकी ज्योति उठती चली गई। ननकू और उसके स्त्री-पुत्र चमत्कारसे

सहमे-से धरतीपर आ रहे । तभी देवदूतमें प्रकाशके पख उग आये और वह आकाशमें उड़कर अंतर्द्धान हो गया ।

ननकूको चेत आया तो मकान ज्यो-का-त्यो खडा था और घरमें उसके कुनबे-वालोके सिवाय कोई न था।

: ८ :

करीम

पुराने राजकी बात है कि एक समय मध्य-देशमें करीम नामका एक काश्तकार रहा करता था। बाप उसका अपने बेटेका ब्याह करनेके एक साल बाद परलोक सिधार गया था । धन-सपदा उसने कुछ बहुत पीछे नही छोडी थी । कुछ जोडी बैल थे, दो गाय और कामको दो घोड़े । पर करीमको इतजाम करना आता था, इससे वह उन्नति करने लगा । पति-पत्नी सवेरेसे रात होनेतक खूब काम करते । औरोसे सवेरे उठ जाते और सोते सबके पीछे थे । इस तरह सालपर साल उनकी दौलतमें बढवारी होती गई। होते-होते थोडा-थोडा करके करीमके पास खूब सपदा हो गई। तीस-पैंतीस बरस बीते होगे कि उसके पास दो-सौसे ऊपर बैल हो गये थे । अस्तबलमें कोडियो घोडे । भेड बकरियोकी तो शुमार क्या । और कामके लिए नौकरानिया और नौकर थे । वे ही सब करते थे । दूध वे काढते और सब तरहकी सेवा भी वे ही करते थे। सबको तनख्वाह मिलती थी। करीमके पास हर चीजकी खूब इफरात थी और दूर-पासके सब उसके भाग्यपर विस्मय और ईर्ष्या करते थे । कहते थे कि किस्मतवाला आदमी तो करीम है। उसके पास सब कुछ है । दुनियाका मजा है तो उसे है ।

अच्छे-अच्छे लोग और ओहदेवाले अफसर करीमकी बडाई सुनते और उसकी जान-पहचान करना चाहते थे । दूर-दूरसे लोग उससे मिलनेको आते थे । करीम सबका स्वागत और सबकी खातिर करता था। खुलकर खिलाता-पिलाता और आवभगत करता था। कोई आओ, उसका भडारा तैयार था जो चाहो, वहा खानेमें पा लो। मेहमान आते तब खास रसोई बना करती थी। जो कही तादाद कुछ ज्यादा हुई तो पूरी ज्यौनारके सामान हो जाते थे ।

, करीमके तीन संतान थी । दो लडके, एक लडकी । सबकी शादी कर उसने छुट्टी पाई थी । जब उसकी हालत ऐसी नही थी, मामूली थी, तो वे बच्चे मा-बापके सग लगकर काम किया करते थे । खुद बैलोकी सानी-पानी देखते-करते थे । लेकिन अमीरी आती गई तो वे बिगडते भी गये । एकको दारूकी लत लग गई । बडा तो कही कोई फौजदारी कर बैठा और वही काम आ रहा । छोटेको ऐसी औरत मिली कि सरकश । सो बापका कहना अब बेटा नही सुनता था और दोनो जनोको अब अधिक काल साथ निभाना मुश्किल होता जाता था।

इससे दोनो अलग हो गये । करीमने बेटेको मकान दे दिया और खासी तादादमें गाय-बैल भी उसकी तरफ कर दिये। इस तरह उसकी चल और अचल सपदा कम पड गई। उसके बाद ही जाने कैसी एक बीमारी फूटी। उससे भेडोके रेवड-के-रेवड सत्यानाश हो गये । फिर अकालका साल आ गया और काश्तमें सूखा पडा। बहुत-से चौपाये अगले जाडोमें बेमौत मर गये । ऊपरसे बनजारोका उत्पात हुआ और वे कई घोडे चुरा ले भागे । इस तरह करीमकी सपदा क्षीण होने लगी । वह घट-घटकर कम पडती जा रही थी । उधर उसकी कायाका कस भी घट रहा था। आखिर सत्तर बरसका होते-होते वह दिन आया कि घरका माल-असबाब नीलाम-बोलीपर चढाना पड गया । कालीन-गलीचे, जीन-तबू और इसी तरहकी और चीजें घरसे निकलकर बाजारमें आने लगी । यहातक कि आखिरी बचे-खुचे बैलोकी जोडियोसे भी जुदा होनेकी नौबत आ गई । अब खानेके भी लाले पड गये। उसकी कुछ समझ न आया कि कैसे क्या हुआ और देखते-देखते सब सपदा हवा हो गई। सो करीम और उसकी बीबीको बुढापेकी उमरमें दूसरे दरकी नौकरीकी सोचनी पडी। करीमके पास कुछ न बचा था; बस तनके कपडे थे, बुढिया बीबी और काम-चलाऊ कुछ बासन-ठीकरे। बेटा अलग होकर एक दूर गाव जा रहा था और बेटी उसकी मर चुकी थी। सो उन बूढोको मदद करनेवाला कोई न था।

उनका पडोसी था एक मोहम्मद शाह। मोहम्मद शाहकी हालत ऐसी थी कि न बहुत इफरात थी, न गरीबी। अपने खाता-पीता था और मनका नेक आदमी था। करीमकी पुराने दिनोकी बढी-चढी मेहमानवाजीकी उसने याद की

और उसके मनमें बडी दया आई। बोला—"करीम, तुम और तुम्हारी बीबी दोनो मेरे मकानपर आकर रहो। गरमीमें मेरी खरबूजोकी पलेजका काम देख लिया करना । जाडोमें चौपायोकी जरा सार-संभार कर देना । बीबी तुम्हारी गायोको थाम लेगी और दुह दिया करेगी । तुम दोनोका खाना-कपडा मेरे जिम्मे । और जब जिस चीजकी जरूरत हो मुझे कह देना । वह मिल जायगी।" करीमने अपने नेक पडोसीका शुक्रिया माना। और वह और उसकी बीबी दोनो मोहम्मद शाहके यहा नौकरीपर हो गये । पहले तो उनको इसमें बडी मुश्किल मालूम हुई। पर धीमे-धीमे वे इसके आदी हो गये । अपने बस बराबर मालिकका काम करते और सबरसे बसर करते ।

मोहम्मद शाहने देखा कि इन लोगोसे उसे बडा आराम हो गया है । पहले अच्छी हालतमें और खुद मालिक रहनेकी वजहसे इतजामकी बाबत ये लोग यो ही सब कुछ जानते है। तिसपर आलसी नही है और कामसे बचते नही हैं। लेकिन उसके मनको दुख रहता था कि देखो, बेचारे किस ऐशपर पहुंचकर आज कैसे मुसीबतके दिन देख रहे है ।

एक बार मोहम्मद शाहके कोई नातेदार लोग दूरसे उसके यहा मेहमान हुए । एक वायज मुल्ला भी उनके साथ थे । मोहम्मद शाहने करीमको कहा कि एक अच्छी भेड लो और आजकी दावतके लिए उसीको जिबह करो '। करीमने मन लगाकर सब तैयारी की । सब तरहका खाना मेहमानोके आगे रक्खा गया। सब लोग दस्तरखानपर बैठे खाना खा रहे थे कि करीमका उधर दरवाजेसे गुज-रना हुआ ।

मोहम्मद शाहने करीमको जाते देखकर एक मेहमानसे कहा—"आपने उन जईफको देखा जो अभी यहासे गुजरके गये है ?"

मेहमानने कहा—"हा । उसमें खास बात क्या है ?"

"खास बात यह", मोहम्मद शाहने कहा, "कि कभी वह यहाके सबसे मालदार आदमी थे । नाम उनका करीम है । वह नाम आपने सुना भी होगा।"

मेहमानने कहा—"जी हा, नाम तो खूब ही सुना है। पहले देखनेका मौका नही आया, लेकिन इस नामकी शोहरत तो दूर-दूरतक फैली हुई है ।"

"जी हा, लेकिन अब उनके पास कुछ नही बचा है और मेरे यहा मजदूर बनकर रहते है। उनकी बुढिया बीबी भी नौकर है। वह दूध दुहती है ।"

मेहमानको बडा अचरज हुआ । उनका मुह खुला रह गया । बोले—"किस्मतका भी एक चक्कर है । एक ऊपर उठता है तो दूसरा नीचे आता है। क्यो साहब, करीम बुढापेकी इस बदकिस्मतीपर रज तो जरूर ही मानते होगे।"

"जी, कौन जानता है । वैसे वह सुकूनसे सजीदा और चुपचाप रहते हैं। और काम सब तनदिहीसे करते है। रजीदा दीखते तो नही हैं।"

मेहमानने कहा—"क्या मै उनसे बात कर सकता हू ? उनकी जिदगीके बारेमें कुछ पूछना चाहूगा।"

"क्यो नही ?" कहकर मेजबानने आवाज देकर करीमको बुलाया । बोला—"बडे मिया, जरा यहा आइए । आइए, इस शर्बतमें तो शरकत कीजिए। अपनी बीबी मोहतरिमाको भी लेते आइयेगा।"

करीम बीबीके साथ वहा आया । मेहमानोको और मालिकको सलाम किया । फिर मुहसे दुआ दुहराता हुआ वही दरवाजेके पास नीचे बैठ गया । बीबी उधर परदेके पीछेसे आई और मालकिनके पास जाकर बैठ गई।

शर्बतका गिलास करीमको दे दिया गया और जवाबमें करीमने झुककर शुक्रिया माना । मुहसे लगाया और फिर गिलास नीचे रख दिया ।

उन मेहमानने कहा—"हजरत यकीन है कि आपको हमें देखकर कुछ रंज हो आता होगा। अपनी पहली खुशबख्तीके बाद आजकी यह बदबख्ती आपको जरूर नागवार गुजरती होगी ।"

करीम मुस्कराया । बोला—"अगर मै आपको कहू कि असलमें खुशी क्या है और खुश-किस्मती क्या है तो आप मेरा यकीन नही करेंगे। इससे बेहतर हो कि आप मेरी बीबीसे पूछकर देखें । वह औरत है और जो मनमें होगा वही उसकी जबान पर आ जायगा। वह आपको सब हकीकत बयान कर देगी ।"

यह सुनकर मेहमान पर्देकी तरफ मुखातिब हुए । बोले—"बड़ी बी, पहले अमीरीके दिनोके मुकाबिले आजकी यह बदबख्ती आपको भला क्योकर बर्दाश्त होती होगी ?"

उन मोहतरिमाने पर्देके पीछेसे इसके जवाबमें कहा—"जनाब, हकीकत उल्टी है और मै अर्ज करती हूं। मैं और मेरे खाविंद, हम दोनो पूरे पचास साल सुखकी तलाशमें रहे। अबतक वह कही पाया नही। पर इन पिछले दो सालोंसे जब हमारे पास कुछ नही रह गया है और मेहनत करके हम जीते है, मालूम होता है कि हमको असली सुख मिला है और जो आज है उससे बढकर हम कुछ नही चाहते।"

मेहमानोको सुनकर अचभा हुआ और मालिक मोहम्मद शाह भी ताज्जुबमें रह गये। वह तो उठतक पडे और पर्देको पीछे खीच दिया ताकि सब नजरभर उन मोहतरिमाको देख सकें।

वह खडी थी, सीनेपर हाथ बधे थे और अपने बूढे खाविंदकी तरफ देख रही थी। मुस्कराहट उनके चेहरेपर थी और उधर बूढे करीमके मुहपर भी मुस्कराहट थी।

वह कहने लगी—"हकीकत कहती हू। इसे मजाक न गिनियेगा। पचास सालतक हम खुशीकी तलाशमें रहे। लेकिन भटकते रहे। दौलत थी, तबतक खुशी नही हासिल हो सकी। अब जब सब जाता रहा है और मेहनतकी नौकरीपर हम लोग रहने लगे है, तब आकर वह खुशी भी मिली है जिसकी तलाश थी। अब हमें और कोई चारा नही है।"

मेहमानने पूछा—"लेकिन उस खुशीका सबब क्या है? राज क्या है?"

"सबब और राज़ यह है", उन्होने कहा, "कि जब दौलत थी तब हम दोनोके पीछे जाने कितनी और क्या फिकरें लगी रहती थी। यहातक कि आपसमें बात करनेका वक्त भी नही मिलता था। न खुदाका नाम ले पाते थे, न अपनी रूहानी भलाईकी कुछ बात सोच पाते थे। मेहमान आयेदिन बने रहते और हमें धुन रहती कि क्या तश्तरिया उनके आगे पेश की जाय, और क्या खातिर की जाय कि वे पीठ-पीछे हमारी बुराई न करें, वाह-वाही करें। उनसे छूटनेपर नौकरोंकी फिक्र हमें लग जाती। वे कामसे आख बचाते और खानेके वक्त अच्छा चाहते थे। उधर हमारी कोशिश रहती कि उनसे ज्यादा-से-ज्यादा काम वसूल किया जाय, और एवज मिले कम-से-कम। इस तरह गुनाहका एक चक्कर चलता

रहता था । फिर बराबर डर बना रहता था कि कोई बछिया न मर जाय, घोडा न जाता रहे । चोरका डर रहता था और जंगली जानवरका डर रहता था । रात जागते बीतती थी कि कही कुछ नुकसान न हो रहा हो । और रह-रहकर और उठ-उठकर हम मालकी चौकसी करते थे । एक फिक्र मिटती कि दूसरी आ दबाती। और नही तो ऐसी ही बात सोचते कि जाडोमें अबके चरीका कैसे पूरा डालना होगा। और फिर हम दोनोमें अक्सर तफरका पड जाया करता।

वह कहते ऐसा होना चाहिए, मैं कहती कि नही वैसा होना चाहिए। इस तरह हम भगडे पैदा किया करते, अगर्चे फिर मिल भी जाते। गर्जे कि एक मुसीबतसे दूसरी मुसीबत और एक गुनाहसे दूसरा गुनाह, सिलसिला इसी तरह चलता रहता और जिसे सुख कहा जाय, वह नामको न मिल पाता ”

“और अब ?”

“अब सवेरे उठते हैं तो हम दोनोके मन हलके रहते हैं। बीचम तनाजकी कोई बात नही रह गई है । अब मुहब्बत और दिलका इत्मीनान हमारा नही टूटता । कोई फिकर अब हमें नही है । यही खयाल रहता है कि मालिककी खिदमत कैसे अजाम दें। जितना कस है उतना हम काम करते है, और इरादा नेक देखते है । सोचते है कि हमारे मालिकको नुकसान न होने पाये, नफा ही हो। कामसे लौटकर आते है तो खाने-पीनेको हमें मिल जाता है, सर्दीमें तापनेको आग मिल जाती है और कपडा भी तनको काफी हो जाता है। अब मनकी दो बात करनेको भी समय है । खुदाका नाम ले सकते है और आकबतकी सोच सकते हैं । पचास बरसतक हम सुखकी तलाशमें भटके । आखिर अब हमें वह मिला है ।”

मेहमान हसने लगे—

लेकिन करीमने कहा—“हसिये नही, मेहरबान । मजाककी बात यह नही है । जिंदगीकी हकीकत बयान की है । हम भी पहले बेवकूफ बने और दौलतके चले जानेपर रज मानने लगे थे। पर अब खुदावदकरीमने असलियत हमपर जाहिर कर दी है । वही आपसे अर्ज की है। अपनी तसल्लीके लिए नही, बल्कि सच पूछिए तो आपकी भलाईके वास्ते ।”

और उनके साथके वायज मुल्लाने उस बातकी ताईद की।

कहा--"बेशक, यह सही है। करीमने हकीकत कही है। कुरानशरीफमें हजरत पैगबरने भी यही फर्माया है ।"

यह सुनकर मेहमानोका हंसना रुक गया और चेहरे सजीदा हो आये ।

: ९ :

आदमी और जानवर

एक दीन किसान सवेरे-तडके हल-बैल लेकर अपने खेतकी तरफ चला। साथ रोटी ले ली। खेतपर पहुचकर उसने हल सभाला और रोटी चादरमें लपेटकर एक झाडीके नीचे रख दी । फिर काममें लग गया। दोपहरतक काम करते-करते बैल थक गया और उसे भी भूख लग आई । तब उसने बैलको चरने खोल दिया, हलको एक तरफ किया और चादरमें रक्खी अपनी रोटी लेने बढा।

चादर उठाई, पर यह क्या ! रोटी क्या हुई ? उसने यहा देखा, वहाँ देखा। चादरको उलटा-पलटा, झाडा। लेकिन रोटी वहा थी कहा ? किसानको माजरा कुछ समझ न आया ।

उसने सोचा कि है यह अचरजकी बात । मुझे दीखा नही तो क्या, पर कोई-न-कोई यहा आया जरूर है और रोटी ले गया है ।

असलमे वहा था पाप-दानवका एक चर । किसान उधर काम कर रहा था कि उसने ही रोटी चुरा ली थी । अब भी वह झाडीके पीछे छिपा बैठा था आशामें था कि किसान रोए-झीकेगा, बकेगा और बददुआयें देगा।

रोटी चले जानेपर कृषक वह दुखी तो हुआ, पर सोचा कि अब हो क्या सकता है । आखिर उसके बिना कोई मैं भूखा तो मर ही नही गया । और जिसने रोटी ली होगी जरूरतकी वजहसे ही ली होगी । सो चलो, उसका ही भला हो।

यह सोच, पासके कुएपर जा, उसने भरपेट पानी पिया और थोड़ा सुस्ताने

लगा। तनिक विश्रामके बाद अपना बैल ले, जोत, फिर खेत गोडने में लग गया।

यह देख वह चर मन-ही-मन बडा फीका पड गया। सोचा था कि किसान मन मैला करेगा और कोसा-कासी करेगा। पर उससे तो किसीके लिए एक बुरा शब्द नही निकला।

सो इसकी खबर उसने जाकर दी अपने मालिक पाप-दानवको। बताया कि मैंने तो उस किसानकी रोटीतक चुरा ली, लेकिन उस भले आदमीने गाली तो क्या देना, उल्टा कहा कि जिसने ली हो चलो, उसीका भला हो।

दानव सुनकर बहुत बिगडा। कहा कि शर्मकी बात है कि आदमी तुमसे बढ जावे। तुम अपना काम नही जानते। अगर किसान लोग और उनकी बीबिया ऐसी नेक होने लगी तो फिर हम दानव-कुलवालोका क्या ठिकाना रहेगा। समझे? फौरन वापिस जाओ और बिगडी बात बनाओ। तीन सालके अदर जो तुमने किसानकी नेकीपर काबू नही पा लिया तो तुमको बैतरनी में फेंक दिया जायगा। सुना? अब जाओ।

चर मालिककी धमकीपर सहमा-सहमा पृथिवीपर वापिस आया। सोचने लगा कि क्या करूँ, क्या न करू, कि मेरा काम पूरा हो। खूब सोचा, खूब सोचा। आखिर एक युक्ति उसे सूझी।

उसने एक मजूरका वेष धरा और जाकर उसी किसानके यहा नौकरी कर ली। पहले साल उसने कहा कि इस बार नीची दलदली जमीनमें नाज बोओ। किसानने उसकी बात पक्की रखकर वैसा ही किया। विधिकी करनी कि उस साल खूब सूखा पडा और सबकी सब फसल धूपके तापमें प्यासी मारी गई। लेकिन इस किसानकी खेती खूब फूली और फली। पौध खूब लंबी हुई और खूब घनी और बालमें दाना भी बडा आया। कटकर इतना नाज हुआ, इतना नाज हुआ कि उस बरसको भी काफी हुआ और आगेके लिए भी बहुतेरा बच गया।

अगले साल उस चरने सलाह दी कि अबकी टीलेवाली जमीनपर बोना चाहिए। बात मानी गई और वही बीज डाला। उस साल वर्षा इतनी हुई कि

बहुत। दूसरे सब लोगोकी खेती झुक गई, गल गई, और बालमें दाना भी नहीं पडा। पर चरके मालिक किसानके खेत टीलेपर बालोकी झूमर पहने लहराते रहे, उनका कुछ नही बिगडा। इस बार पहलेसे भी ज्यादा गल्ला किसानको बचा। अब तो उसके खलिहान इतने अटाअट भर गये कि उसे समझ न आता था कि इस सबका क्या करू।

ऐसे समय उस चरने मालिकको बताया कि इस-इस तरह नाजमेंसे खीच-कर दारू तैयार की जा सकती है। और दारू वह चीज है कि क्या कहा जाय। उसकी निसबत बस किसीसे नही दी जा सकती।

किसानने वही किया। तेज शराब तैयार की। खुद पी और दोस्तोको पिलाई।

इतना करके वह चर अपने मालिक दानवके पास आया। कहा, "मालिक, मैंने कामयाबी पा ली है और आपका काम पूरा हो गया है।"

दानवने कहा, "अच्छा, हम खुद चलकर देखते है कि तुमने क्या किया है।"

दानव और चर दोनो किसानके घर आये। देखते क्या है कि वहा तो पास पडोसके सब आसूदा किसान निमन्त्रित है और शराबकी दावत दी जा रही है। एक जशन समझो। किसानकी स्त्री साकी बनी मेहमानोको शराब दे रही है।

इतनेमें किसीसे टकराकर स्त्री लडखडाई और शराब उसके हाथसे बिखर गई। इसपर पतिने कहा कि कम्बख्त, तुझे कुछ सूझता नही है। इस नियामतको क्या तूने ऐसी-वैसी चीज समझ रक्खा है कि लुढकाती फिरती है? कमीना बेहया!!

चरने धीमेसे कुहनी मारकर अपने मालिकको दिखाया कि देखिए, यही वह आदमी है जिसने अपने मुहकी रोटी छिन जानेपर भी गुस्सा नही किया था!

किसान, औरतको अलग हटाकर, अब भी उसपर तर्राता हुआ, खद जाम भर-भरकर लोगोको देने लगा। इतनेमें एक गरीब, मेहनती कामसे लौटते हुए उधर ही आ निकला। वह पार्टीमें न्यौता नही था। लेकिन सबको जयरामजीकी करता हुआ वह भी वहा आन बैठा। हारा-थका था। सबको पीता देख जी हुआ कि उसे भी एक घूट मिले। वह बैठा रहा, बैठा रहा। मुहमें उसके पानी

आ-आ गया । लेकिन मेजबान किसानने उसे नही पूछा । उल्टे कहा कि हर ऐरा-गैरा आ जाय तो उसे पिलानेको मैं इतनी कहासे लाता फिरूंगा तुम्ही बताओ ?

यह सब देख दानव प्रसन्न हुआ । लेकिन उसके चरने कहा कि अभी क्या हुआ है, आप देखते जाइए। जाने क्या-क्या बाकी है ।

क्या घरके, क्या बाहरके, सबने खुलकर हाथ बटाया। पहले दौरपर उन लोगोने आपसमें चिकनी-चुपडी तकल्लुफकी बातें शुरू की। वह मायाचारीकी बातें थी।

दानव सुनकर खुश हुआ और अपने चरको शाबाशी देने लगा। कहा कि शराबसे कैसा लोमडीका-सा कपट उन्हें आ गया है। इस चीजमें अगर यह सिफत है कि लोग एक-दूसरेको धोखा देना चाहने लगते है, तो बस फिर क्या है, फलह हुई रक्खी है ।

चरने कहा कि आप अभी देखते जाइए। अभी तो वे लोमडीकी तरह एक दूसरेकी तरफ दुम हिला रहे हैं और डोरे डाल रहे हैं। शराबका एक-एक दौर और, फिर तो वे जगली भेडिए बने दीखेंगे ।

सो सबने एक दौर और चढाया । उसके बाद उनकी बातचीत फूहड होती जाने लगी । चिकनी-नमकीन बातोकी जगह अब वे एक दूसरेको तरेरने और गालियां देने लगे । बक-झक हुई और मार-पीटकी उनमें नौबत आ गई। देखते-देखते सब आपसमें झगडने लगे । मेहमान मेजबानका फर्क न रहा। बखेडेमें मेजबान भी शामिल हुए और उनकी भी गत बनी।

दानव इस सब करामातपर खूब खुश हुआ। चरसे कहा कि यह काम तुम्हारा एक नबरका है । मै तुमसे खुश हू।

पर चरने कहा कि अभी और बाकी है। आगे इससे भी बढकर दृश्य आप देखेंगे । अभी भूखे भेडियेकी तरह लड रहे हैं । एक जाम और, और वे सूअरकी मानिद बन जायगे ।

फिर तीसरा दौर चला। उसके बाद उनमें और सूअरमें फिर भेद ही क्या रह गया था। बेसुध, वे चीखते थे और रेंकते थे। कोई किसीकी न सुनता था।

उन्हे सभलना मुश्किल था और एक-दूसरेपर गिरे जाते थे।

फिर जशन बिखरने लगा। लोग लडखडाते गिरते-पडते एक-एक, दो-दो, तीन-तीन करके वहासे गलियोंकी राह विदा हुए। घरका मालिक मेहमानोको रवाना करने बाहर आया कि वह भी मुहके बल औधा कीचमें गिरा। सिरसे पैरतक लिथडा हुआ सूअरकी भाति वह वही बडबडाता हुआ पडा रहा।

पाप-दानव यह सब देखकर अपने चरसे बहुत सतुष्ट हुआ। कहा, "शाबाश, तुमने खूब चीज ईजाद की है। पहली भूल तुम्हारी सब माफ हुई। लेकिन मुझे बताओ कि यह चीज तुमने बनाई कैसे ? पहले तो जरूर उसमें तुमने लोमडीका खून डाला होगा, जिससे लोमडीकी मायाचारी पीनेवालेमें आ गई। फिर मालूम होता है कि भेडियेका खून उसमें तुमने मिलाया होगा। तभी तो भेडियेकी तरह वे खूखार बने दीखते थे। और अतमें सूअरका लहू भी रक्खा ही होगा कि वे सूअरकी तरह बर्राने लगे।

चरने कहा कि नही, उस सबकी जरूरत नही हुई। मैने तो बस इतना किया कि जिससे किसानके पास जरूरतसे ज्यादा नाज हो जाय। जानवरका खून तो आदमीके अदर रहता ही है। खाने जितना अन्न उसके पास रहे तबतक वह असर दबा रहता है। वही इस किसानका हाल था। पहले तो मुहका कौर छिननेपर उसका मन कडवा नही हुआ, पर जब पास जरूरतसे ज्यादा हो गया तो उससे मौज-मज़े करनेकी तबियत उसमें हो आई। बस उस समय मैने उसे मौजकी यह राह दिखा दी—दारू। ईश्वरकी दी हुई नियामतोमेंसे खीचकर अपने मजेके लिए जब वह दारू बनाने लगा तो लोमडी और भेडिया और सूअर सबकी तासीर उसके अदरसे बाहर फूट आई। आदमी बस पीता रहे, फिर तो वह हमेशा जानवर बना रहेगा, इसमें शक नही।

दानवने चरकी पीठ ठोकी। पहली चूकके लिए उसे क्षमा किया और इस कारगुजारीके लिए अपनी नौकरीमें उसे ऊचे पदपर बहाल किया।

: १० :

तीन जोगी

एक धर्माचार्य जहाजपर कलकत्तेसे जगन्नाथ-धामकी यात्राको जा रहे थे । उस जहाजपर और बहुतसे यात्री भी थे । समुद्र शात था, वायु अनुकूल और मौसम सुहावना । यात्री लोगोको कुछ कष्ट नही था। मिल-जलकर खाते-पीते गीत गाते और चर्चा करते वह समय बिताते थे ।

एक बार वह आचार्य डेकपर बाहर आये । वह इधर-उधर घूम रहे थे कि देखते है कि आगे जहाजके मुहानेपर कुछ लोग जमा है। बीचमें उनके एक केवट समदरकी तरफ इशारेसे जाने क्या दिखाकर सुना रहा है। जिधर मछुएने अंगुली उठाकर बताया था, धर्माचार्य भी ठहरकर उधर ही देखने लगे । लेकिन उन्हें कोई खास बात दिखाई नही दी। धूपसे समदरकी सतह ही चमकती दीखती थी। सपर केवटकी कहानी सुननेको वह पास आ गये। लेकिन उस आदमीने उन्हें देखकर अपनी बात बद कर दी और आदर-भावसे प्रणाम किया। और यात्री भी सभ्रमसे प्रणाम करके चुप हो गये ।

"भाइयो", धर्माचार्य बोले, "मै आपका कुछ हर्ज करने नही आया । यह भाई कुछ दिखाकर बतला रहे थे । सो मेरी भी सुननेकी तबियत हुई कि क्या बात है ।"

उनमेंसे एक यात्री जो औरोमे साहसी थे, बोले—"तीन साधुओकी बाबत यह हमें कह रहे थे ।"

"कैसे तीन साधु ?"

धर्माचार्य यह कहते हुए और आगे आ गये और वहा रक्खे एक बक्सपर बैठ गये ।

"मुझे भी बताओ, कैसे साधू ? मै जानना चाहता हू। और तुम इशारेसे दिखला क्या रहे थे ?"

केवटने आगे जरा दाहिनी तरफ इशारेसे बतलाते हुए कहा—"वह वहा छोटा टापू दीखता है न ? जी, जरा दायें । जी, वही । वहा तीन जोगियोका

बास है जो सदा आत्माके उद्धारमें लवलीन रहते हैं ।"

"कहां, कौनसा टापू ! मुझे तो कोई दीखता नही।" धर्माचार्य बोले।

"जी, वह दूर । मेरे हाथकी तरफ देखिए। वह छोटा बादल दीखता है, न, उसीके नीचे जरा दायें, एक बारीक लकीर-सी दिखाई देती है। जी, वही टापू है।"

धर्माचार्यने ध्यानसे देखा । पर आखोको अभ्यास नही था, इससे धूपमें चमकते पानीकी सतहके सिवा उन्हें कुछ दिखाई नही दिया । बोले—"मुझे तो दिखाई नही दिया । पर खैर, वह साधू कौन हैं जो वहा रहते हैं ?"

केवट बोला—"कोई सत लोग हैं । जोगी-ध्यानी । उनकी बाबत सुन तो मुद्दतसे रक्खा था । पर दर्शन पारसालसे पहले नही किये।"

फिर केवटने अपनी कथा सुनाई कि एक बार मैं नाव लेकर दूर निकल गया था । इतनेमे रात हो गई । दिशाका ध्यान मैं सब भूल गया। आखिर उस टापूपर जाकर लगा । सवेरेका समय था । यहा-वहा भटक रहा था । इतनेमें मिट्टीकी बनी हुई एक कुटिया मुझे मिली । उसके पास एक बूढे पुरुष खडे हुए थे। तभी अदरसे दो पुरुष और भी आ गये। सबने मिलकर मुझे वहा खिलाया-पिलाया और फिर मेरी नाव ठीक करनेमें भी मदद दी।

धर्माचार्यने पूछा—"वे साधू दीखते कैसे हैं ?"

"एक तो नाटे कदके हैं और कमर उनकी झुकी है । वह एक कफनी-सी पहने रहते हैं और बहुत बुड्ढे है। मैं समझूं सौ से तो काफी ऊपर होंगे । उनकी इतनी उमर हो गई है कि सफेद दाढी कुछ हरी पडती जा रही है। पर चेहरेपर सदा उनके मुस्कराहट रहती है । और चेहरा ऐसा है कि देवता-स्वरूप । दूसरे उनसे लबे हैं । लेकिन उनकी भी अवस्था बहुत है । वह फटा-टूटा देहाती ढगका कुर्त्ता पहने रहते हैं । दाढी उनकी भरी है और कुछ पीले भूरे रगकी है। कायाके खूब मजबूत । मैं उनकी भला क्या मदद कर सकता, कि उन्होने तो मेरी डोंगीको ऐसे पलट दिया जैसे वह कोई डोलची हो। वह भी हसमुख रहते हैं और चेहरेपर दयाभाव दीखता है । तीसरेका डील खासा है और दाढी बरफ-सी सफेद घुटनोतक आ रही है । सौम्य दीखते हैं और सख्त। भवें घनी, आखोपर झूलती मालूम होती हैं और वह बस कमरसे एक चटाईका टुकडा लपेटे रहते हैं।"

"वे तुमसे कुछ बोले भी ?" धर्माचार्यने पूछा।

"अधिकतर तो वे सब काम चुप रहकर ही करते है । आपसमें भी बहुत ही कम बोलते है। देखकर ही तीनो एक-दूसरेको ममझ जाते है, जैसे आखसे ही बोल लेते है। जो सबसे ज्यादा डीलके है उनसे मैने पूछा कि आप क्या यहा बहुत कालसे रहते है । सुनकर उनकी भवोमें सिकुडन आई और जैसे नाराजीमें कुछ गुनगुनाया । लेकिन जो सबसे वृद्ध थे, उन्होने उनका हाथ अपने हाथमें लिया और मुस्कराने लगे । तब उनका गुस्सा भी एकदम शात हो गया । उन बूढोके मुहसे बस इतना निकला—"हमपर दया रक्खो" और कहकर मुस्करा दिये।

केवट यह कथा सुना रहा था कि टापू पास आने लगा ।

उन माहसी आदमीने उगलीसे दिखाकर कहा—"अब श्रीमान् देखें तो टापू साफ नजर आ सकता है ।"

धर्माचार्यने देखा । सचमुच एक काली लकीर-सी दीखती थी। वही टापू । कुछ देर उधर देखते रहकर आचार्य वहासे आये और जहाजके बडे माझीसे पूछा—"वह कौन टापू है ?"

"वह ?" उसने कहा, "उमका कोई नाम तो नही है । ऐसे तो यहा बहुतेरे टापू है।"

"क्या यह सच है कि वहा अपनी आत्माके उद्धारके लिए तीन फकीर रहते है ?"

"ऐसा मुनता तो हू, महाराज । पर मालूम नही यह सच है, या क्या । मल्लाह लोग कहते है कि उन्होने उन्हे देखा है। पर कौन जाने कि अपना मन-गढन उन्हे दीखतक भी जाता हो।'

"हम उस टापूपर जाना चाहते है और उन आदमियोको देखना चाहते है।" धर्माचार्यने कहा, "क्या यह हो सकता है ?"

उसने जवाब दिया कि ठेठ टापूतक तो जहाज जा नही सकता । हा, नावसे आप जा सकते है । उसके लिए कप्तानसे बोलना होगा।

धर्माचार्यने कप्तानको बुला भेजा । कप्तानके आनेपर कहा—"मै उन फकीरोको देखना चाहता हू। क्या मुझे किनारे पहुचाया जा सकता है ?"

कप्तानने कहा—"जी हा, पहुच तो सकते है । पर इसमें देर हो जायगी और गुस्ताखी न हो तो मैं श्रीमान्‌को कहू कि वे लोग ऐसे नहीं है कि श्रीमान् उनके लिए कष्ट उठायें । सुना है, वे बुड्ढे एकदम नादान है । न कुछ समझते हैं, न जानते है । और बेजुबान ऐसे है जैसे जलचर मछली ।"

धर्माचार्यने कहा—"खैर, हम देखना चाहते हैं । देरकी और कष्टकी चिता न कीजिए । खर्चकी भरपाई हमारे हिसाबसे कर लीजिएगा । लाइए, मुझे एक नाव दीजिए ।"

अब और क्या हो सकता था । लाचार वैसा ही हुक्म दे दिया गया । बादबान फिरे और जहाजको टापूकी तरफ मोड दिया गया । आगे सामने कुर्सी ला रक्खी गई । धर्माचार्य वहा बैठकर आगे देखने लगे और यात्री भी आसपास इकट्ठे हो गये और टापूकी तरफ ताकने लगे । आख जिनकी तेज थी उन्हें जल्दी ही टापूके किनारेके पेड-पहाडिया दीख आई । वही एक मिट्टीकी झोपडी भी दीखी । आखिर एक आदमीको खुद वह फकीर भी दिखाई दिये । कप्तानने दूरबीन निकाली और उसमेंसे देखा । देखकर दूरबीन धर्माचार्यके हाथोमें दी । बोला—"सचमुच तीन आदमी किनारेके पास खडे तो है । वहा, वह जरा चट्टानके बाईं तरफ ।"

धर्माचार्यने दूरबीन लेकर ठीक-ठीक लगाकर उसे देखा कि है तो तीन आदमी । एक लबा है, दूसरा औसत कदका, और एक नाटा, छोटा और झुका हुआ है । तीनो एक-दूसरेका हाथ पकडे किनारे खडे है ।

कप्तानने धर्माचार्यसे कहा कि जहाज इससे आगे नही जा सकता । अगर श्रीमान किनारे जाना चाहते है तो नावपर जा सकते है । हम यही लगर डाले रहेंगे ।

लंगर डाल दिया गया । पाल ढीले हो गये और जहाज झटकेके साथ रुक गया । फिर नाव नीचे उतारी गई और खेनेवाले मल्लाह पतवार लेकर उसपर तैयार हो बैठे । तब धर्माचार्य भी उतरकर वहा अपने आसनपर आ बैठे । मल्लाहोने खेना शुरू किया और नाव किनारेकी तरफ बढ चली । कुछ दूरसे उन्हें तीनो आदमी साफ दिखाई दे आये । जो सबसे लबा था, कमरसे चटाई

लपेटे था । उससे छोटा फटा-टूटा देहाती कुर्त्ता पहने था और नाटा जिसकी उम्र बहुत थी और कमर झुकी थी, सनातन कफनीमें था । तीनो हाथमें हाथ रक्खे खड़े थे ।

मल्लाहोने किनारे नाव लगाई और धर्माचार्यके उतरनेतक उसे थामे रक्खा ।

तीनो बुड्ढोने आचार्यको झुककर नमस्कार किया। धर्माचार्यने आशीर्वाद दिया । आशीर्वाद पाकर वे और भी नीचे झुक आये ।

तब धर्माचार्य उन्हें कहने लगे—"मैंने सुना है कि आप सज्जन पुरुष अपनी आत्माके उद्धारके हेतु यहा रहते है और भगवानसे स्व-पर कल्याणकी प्रार्थना करते हैं । मै भगवानका एक तुच्छ दास हू । उनकी कृपा और आदेशसे जगतके प्राणियोको सन्मार्ग बतानेका काम करता हू । मेरी इच्छा हुई कि आप भगवानके सेवक है, सो आपके पास आकर जो बने आपकी सहायता करू और जो जानता हू बताऊ ।"

वे तीनो वृद्ध इसपर मुस्कराकर एक दूसरेको देखने लगे और चुप रहे।

धर्माचार्यने कहा—"मुझे बताइए कि आप लोग अपनी आत्माकी रक्षाके निमित्त क्या करते है ? और इस द्वीपपर परमात्माकी सेवा-साधना किस प्रकार करते है ?"

इस प्रश्नपर दूसरा फकीर मद भावसे अपने सबसे वृद्ध साथीको देख उठा। इसपर वह पुरातन पुरुष मुस्कराया और बोला—"ईश्वरकी सेवा तो हमको मालूम भी नही है। ईश्वरके दूत, हम तो सब अपनेको पाल लेते है और अपनी सेवा कर लेते है ।"

"लेकिन ईश्वरकी प्रार्थना आप किस प्रकार करते है ?"

"प्रार्थना ! हम तो इस तरह कहते है, 'तीन तुम, तीन हम । हमपर दया रखना, मालिक' ।"

यह कहनेके साथ तीनोने प्रकाशकी तरफ आख उठाई और एक आवाजसे दुहराया—"तीन तुम, तीन हम। हमपर दया रखना, मालिक।"

धर्माचार्य मुस्कराये । बोले—"मालूम होता है आपने त्रिमूर्त्त और त्रि-

गुणात्मककी कोई बात सुनी है। लेकिन आपकी प्रार्थना सही नही है। आप संत पुरुषोंने मेरा प्रेम जीत लिया है। आप ईश्वरकी प्रसन्नता चाहते है। किंतु ईश्वरकी सेवाका मार्ग आपको ज्ञात नही है। प्रार्थनाकी वह विधि नही है। देखिए, सुनिए, मै आपको बताता हूं। मैं कोई अपनी विधि नही बतला रहा हू। शास्त्रोमे सब प्राणियोके मगलके लिए प्रार्थनाकी जो विधि विहित है, वही मैं आपको सिखाना चाहता हू।"

कहकर आचार्यने धर्मका तत्त्व उन फकीरोको समझाना शुरू किया कि कैसे परम पुरुष एक है, वही द्विधा होता है। फिर किस प्रकार प्रकृति, पुरुष और आदि-बीज-पुरुष, यह त्रिविध रूप परमात्माका सपूर्ण स्वरूप कहाता है।

ईश्वरने पृथ्वीपर अवतार धारण किया कि धर्मकी रक्षा हो। उन अवतारोकी वाणीसे हमें प्राप्त हुआ है कि ईश्वरकी कैसे प्रार्थना करनी चाहिए। सुनिए, मेरे साथ-ही-साथ बोलिए—

"हे परम पिता!"

"हे परम पिता!"—पहले वृद्धने दोहराया।

"हे परम पिता!"—दूसरेने कहा।

फिर तीसरेने कहा—"हे परम पिता!"

"—जिनका कि आकाशमें वास है।"

"—जिनका कि आकाशमें वास है।"—पहले साधूने दोहराया।

लेकिन दूसरा फकीर कहते-कहते भूल गया और तीसरेसे उन शब्दोका उच्चारण ही ठीक नही बन पडा। उसके मुहपर बाल बहुत घने थे, इससे आवाज साफ नही निकलती थी। सबमे वृद्ध वह पुरातन सत भी दात न होनेकी वजह से शब्दोको पूरा-पूरा और सही नही बोल पाते थे।

धर्माचार्यने प्रार्थना फिर दोहराई और फिर फकीरोने उसे तिहराया। आचार्य वहा एक पत्थरपर बैठे थे, सामने तीनो बूढे जोगी खडे थे। वे आचार्यके मुहकी हरकतको देख-देखकर उन्हीकी तरह प्रार्थनाके शब्दोका ठीक-ठीक उच्चारण करनेकी कोशिश करते थे। धर्माचार्यने दिनभर प्रयत्न किया। एक-एक शब्दको

बीस-बीस, और कोई तो सौ-सौ बार दोहराया। पीछे-पीछे वे साधु बोलते थे। बार-बार वे लड़खडाते, भूलते, और गलत कहे चलते। लेकिन हर बार धर्माचार्य उन्हे सुधार देते थे और फिर नई बार शुरू करते थे। आचार्यने परिश्रमसे जी नही मोडा। आखिर उस ईश-प्रार्थनाको अब जोगी आचार्यके बिना भी पूरी-की-पूरी बोल सकते थे। सबसे पहले प्रार्थना उस मझले जोगीने सीखी। उन्हें याद हुई कि फिर आचार्यने उन्हीको बार-बार दोहरानेको कहा। सो आखिर बाकी दोनोको भी वह कठ होती गई। प्रार्थना सीख गये, तब आचार्यने शाति पाई।

अब अधियारा हो चला था और चाद ऊपर दीखने लगा था। अब धर्माचार्यने अपने जहाजपर लौट चलनेकी सोची। चले उस समय उन बुड्ढोने उनके सामने धरतीतक झुककर दडवत किया। धर्माचार्यने बडे प्रेमसे उन्हें ऊपर उठाया और सबको गले लगाया। कहा कि आप लोग इसी तरह प्रार्थना किया कीजिएगा। अतमें वह नावपर सवार होकर अपने जहाजको लौट चले। नावमे बैठे थे और मल्लाह नावको जहाजकी तरफ खे रहे थे, तब भी उन्हें फकीरोकी आवाज सुन पडती रही। वे आचार्यकी सिखाई प्रार्थना जोर-जोरसे दुहरा रहे थे। नाव जहाजसे आकर लगी। उस समय उनकी आवाज तो नही सुन पडती थी, पर चादकी चादनीमें वे ज्यो-के-त्यो खडे हुए वहा अब भी दिखलाई देते थे। सबसे छोटे बीचमें थे, मझले बायें और लबे कदके जोगी दायें थे। धर्माचार्यके पहुचनेपर जहाजका लगर उठा दिया गया। पाल खुल गये और जहाज उद्यत हो गया। बादबानोमें हवा भरनी थी कि जहाज चल पडा। धर्माचार्य पीछे बैठकर जहासे आये थे, उस द्वीपके तटको देखते रहे। कुछ देरतक तो वे तीनो साधू निगाहमें रहे। कुछेक देर बाद वे ओझल हो गये। द्वीपका किनारा फिर भी कुछ काल दीखता रहा। फिर शनै शनै वह भी मिट गया। अब बस समदरकी लहराती चादीकी सतह चादकी चादनीमें चमकती दीखती थी।

यात्री लोग जहाजपर सो गये थे। चारो ओर शाति थी। पर आचार्यकी सोनेकी इच्छा नही हुई। वह अपनी जगह अकेले बैठे समदरमें उसी तरफ देख रहे थे जहापर वह टापू था, पर जो दीख नही रहा था। उन्हें उन जोगियोकी

याद आती थी—"कैसे सज्जन सत प्राणी थे वे और ईश प्रार्थनाको सीखकर कैसे कृतार्थ मालूम होते थे।" उन्होने प्रभुको धन्यवाद दिया कि प्रभुने बडी कृपा की कि ऐसे सज्जन पुरुषोकी सहायताका अवसर मुझे दिया और मुझे उन लोगोको वैदिक प्रार्थना सिखानेका सौभाग्य मिला।

आचार्य इस तरह सोचते हुए एकटक समदरकी सतहपर निगाह डाले उस टापूकी दिशामें मुह करके बैठे थे। चादनी चमक रही थी। लहरें यहा-वहा किल्लोलें लेकर कभी धीमी आवाजसे खिलखिल हस पडती थी। ऐसे ही समय अकस्मात क्या देखते है कि चादकी किरणोसे समदरके पानीपर जो चमकीली राह-सी बन आई है, उसपर कोई सफेद झकझकाती वस्तु बढती चली आ रही है। क्या है ? समदरी कोई जतु है, या कि किसी किश्तीके छोरमें लगी धातु ही ऐसी झलक रही है ? अचरजसे आचार्यकी आखें उसपर पड गई।

उन्होने सोचा कि जरूर यह कोई नाव हमारे पीछे आ रही ह। लेकिन यह तो बडी तेजीसे बढी आ रही है। मिनट भर पहले वह जाने कितनी दूर थी, अब कितनी पास आ गई है। नही, नाव नही हो सकती। पाल तो कही दीखते ही नही है। जो हो, वस्तु वह कोई हमारे पीछे आ रही है और हमें पकडना चाह रही है।

लेकिन चीन्ह न पडता था कि क्या है। नाव नही, पक्षी नही, समंदरी कोई जंतु नही। आदमी ?—लेकिन आदमी इतना बडा कहा होता है। फिर वहा समदरके बीच आदमी कहासे आ जाता ? धर्माचार्य उठे और बडे माझीसे बोले—"देखो तो भाई, वह क्या है ?"

धर्माचार्यको मानो दीखा तो कि वे तो तीनो ही साधू मालूम होते है और पानीपर दौडते चले आ रहे हैं। दाढी उनकी चमक रही है और खुद चादनीकी भाति उज्ज्वल दीखते है।

पर देखकर भी, जैसे आखोका भरोसा न हो, आचार्यने दुहराया—"क्या है, क्या चीज है वह, माझी ?"

लेकिन साधू तो ऐसी तेजीसे बढे आ रहे थे कि जहाज मानो चल ही न रहा हो, उनके आगे बिलकुल थिर पड गया हो।

माझी तो उन जोगियोको उस भाति पानीपर चला आता देखकर दहशतके मारे सब भूल गया और पतवारसे हाथ छोड बैठा। बोला—

"बाबा रे, वे जोगी तो हमारे पीछे ऐसे भागे आ रहे है कि मानो पाव-तले उनके सखी धरती ही हो।"

माझीकी आवाज सुनकर और यात्री भी जाग उठे और सब वही घिर आये। देखा तो तीनो साधू हाथमें हाथ डाले चले आ रहे है, और उनमें आगेके दो जहाज-को ठहरने को कह रहे हैं। अचभा देखो कि बिना पैर चलाये पानीकी सतहपर वह तो चलने चले ही आ रहे हैं। जहाज ठहर भी न पाया था कि साधू आ पहुचे। सिर उठाकर तीनो मानो एक स्वरसे बोले—"हे उपकारक, ईश्वरके सेवक, हम लोगोको तुम्हारी सिखाई प्रार्थना याद नही रही है। जबतक दोहराते रहे, वह याद रही। जरा रुके कि एक शब्द ध्यानसे उतर गया। फिर तो सारी कडी ध्यानमेंसे बिखर-कर गिरती जा रही है। अब उसका कुछ भी ओर-छोर हमें यादमे पकड नही आता। हे गुरुवर, हमें प्रार्थना फिर सिखाने की कृपा कीजिये।"

आचार्यने सुनकर मन-ही-मनमें राम-नामका स्मरण किया और कहा—"हे सत पुरुषो, आपकी अपनी प्रार्थना ही ईश्वरको पहुच जायगी। मैं आपको सिखाने योग्य नही हू। मेरी विनय है कि मुझ पापीके लिए भी आप प्रार्थना कीजिएगा।"

कहकर आचार्यने उन वृद्ध जनोके आगे धरतीतक झुककर नमस्कार किया। वे जोगी फिर लौटकर समदर पार कर गये और जहा वे आखसे ओझल हुए, सबेरा फूटनेतक वहा प्रकाश जगमगाता रहा।

: ११ :

आम बराबर गेहूँ

एक बार एक नदीकी अमराईमें कुछ बच्चे खेल रहे थे कि उन्होने एक चीज़ पाई। देखनेमें वह गेहूके दाने जैसी मालूम होती थी। अधबीचमें उसके एक लकीर बनी थी जैसे दो दल जुडे हो। लेकिन दाना वह इतना बडा था जैसे देसी आम।

एक मुसाफिरने बच्चोंके हाथमें उसे देखा तो दो-एक पैसा देकर उसे ले लिया। वह मुसाफिर फिर उसे ले गया और राजधानीके नगरमें वहा राजाके हाथ अजायबातके नामपर उसे बेचकर दौलत बनाई।

राजाने अपने दरबारके नवरत्न पडित बुलाये। कहा कि यह चीज क्या है सो बतावें। पडितोने बहुत सोचा, बहुत विचारा। पर उन्हें उस चीजका कुछ अता-पता नही मिला। आखिर एक दिन वह दाना खिडकीपर रक्खा था कि मुर्गी उडकर आई और उसमें चोंच मारने लगी। इस तरह उसमें छेद हो गया। तब पडितोने देखा कि अरे, यह तो गेहूका ही दाना है। इसपर पडितोने राजासे जाकर कहा—"महाराज, यह दाना अन्नराज गेहूका है।"

यह सुनकर राजाको बडा विस्मय हुआ। उन्होने पंडितोसे कहा कि कहा और कब ऐसा नाज का दाना पैदा हुआ, इसका पता आप लगाकर दें। पंडित लोग फिर सोचमें पड़ गये। उन्होने अपनी पोथिया टटोली और शास्त्र छाने। लेकिन इस बाबत कोई जानकारी हाथ नही आई। आखिर राजाके पास आकर बोले—

"हम कुछ नही बता सकते, महाराज। इस बारेमें हमारी पोथियोमें कोई उल्लेख नही मिला। इसके लिए तो किसानोसे पूछना होगा, महाराज। शायद कोई उनमें अपने पुरखाओसे जानता हो कि कहा और कब गेहूका दाना इतना बड़ा उगा करता था।"

सो राजाने हुक्म दिया कि बड़ी-बडी उमरके किसान लोग उनके सामने लाये जावें। आखिर ऐसा एक आदमी आया जिससे पता चलनेकी आस बधी। वह राजाके सामने हुआ। बुड्ढा था और कमर उसकी झुक गई थी। दात थे नही। चेहरा मुलतानी मिट्टी-सा पीला था। दो बैसाखियोके सहारे ज्यो-त्यो लड़खडाता महाराजकी उपस्थितिमें वह लाया गया।

राजाने यह दाना उसे दिखाया। लेकिन बुड्ढेकी आंख मुश्किलसे देखने लायक थी। उसने उसे हाथमें लेकर टटोलकर देखा।

राजाने पूछा—"बता सकते हो कि ऐसा दाना कहां और कब उगा। क्या

तुमने ऐसे बडे दानोका नाज कभी खरीदा है, या कभी अपने खेतमें बोया या उगाया है ?"

वह बुड्ढा कानका कुछ ऐसा निपट बहरा था कि राजाकी बात मुश्किलसे सुन सका और काफी देर में वह उसकी समझ में आई। आखिर उसने जवाब दिया—"नही, ऐसा नाज न मैंने बोया है, न कभी काटा है, न कभी खरीदा है। जब नाज बेचा-खरीदा करते थे तब भी दाना जैसा आज है उतना ही छोटा होता था। लेकिन मेरे बापसे आप पूछकर देखें। उन्होने शायद सुना होगा कि ऐसा दाना कहा उगता था।"

इसपर राजाने बापको लानेका हुक्म दिया। उसकी खोज-खबर हुई और आखिर महाराजके सामने उसे लाया गया। वह एक बैसाखीसे चलता हुआ आया। राजाने उसे दाना दिखाया। उस किसानने दानेको गौरसे देखा। वह अपनी आखोसे अब भी भली प्रकार देख सकता था।

राजाने पूछा—"अब बतला सकते हो, चौधरी, कि यह कहा पैदा होता है ? क्या इस तरहका नाज कभी तुमने खरीदा-बेचा है या अपने खेतमें बोया-उगाया है ?"

वह आदमी थोडा ऊचा तो सुनता था, लेकिन अपने लडके जैसा उसका बदहाल न था।

उसने कहा—"नही, मैंने ऐसे दानेका नाज अपने खेतमें न बोया, न काटा। और बेचने-खरीदनेकी जो बात आपने कही मैंने नाज कभी खरीदा ही नही और न बेचा। क्योकि हमारे जमानेमें सिक्केका चलन ही नही था। सब अपना नाज उगा लेते थे और कमी होती या और जरूरत होती तो आपसमें बाट-बदल लेते थे। मुझे मालूम नही कि यह नाज कहाकी उपज है। हमारे जमानेका दाना आजके दानेसे तो बेशक काफी बडा होता था और भारी होता था, लेकिन इस जैसा नाजका दाना मैंने आजतक नही देखा। हा, मैंने अपने बापको कहते सुना है कि उनके जमानेमें गेहू बहुत बडा होता था। और एक दाना बहुत चून देता था। आप उनसे पूछें।"

सो राजाने इन बापके बापको भी बुला भेजा। खोज करनेपर वह भी मिल

गये और राजाके सामने लाये गये । वह बिना किसी लठियाके सहारे सीधे चलते हुए वहा आ गये । निगाह उनकी निर्दोष थी । कान ठीक सुनते थे और बोलते भी वह साफ और स्पष्ट थे ।

राजाने उन्हें दाना दिखाया । उन वृद्ध पितामहने उसे देखा और हाथमें लेकर परखा । फिर बोले—"आज कही मुद्दत बाद ऐसा गेहूं हमें देखनेको मिला है ।" यह कहकर उन्होंने कतरकर जरा जीभपर लिया ।

बोले—"हा, यह वही किस्म है ।"

राजाने कहा—"पितामह, बतलाइए कि कब और कहां ऐसा गेहू उगा करता था ? क्या आपने ऐसा अन्न कभी खुद मोल लिया है या अपने खेतमें उगाया है ?"

उन वृद्ध पुरुषने उत्तर दिया—

"राजन्, मेरे जमानेमें ऐसा अन्न सब कही हुआ करता था। मेरी जवानी ऐसे नाजपर ही पली है । औरोंको भी ऐसा ही नाज मैंने खिलाया है। ठीक इसी तरहका दाना हमारे खेतकी बालोमें पडा करता था । उसीको सब बोते, काटते और गाहते थे ।"

राजाने पूछा—"पितामह, यह बताइए कि यह दाना आप कहींसे मोल लाये थे या अपने आप उगा था ?"

वृद्ध पुरुष सुनकर मुस्कराये । बोले—"हमारे जमाने मे अन्न बेचने जैसे पापकी कोई बात भी कभी नही सोच सकता था और सिक्के को हम जानते भी न थे । हरेक के पास अपना काफी रहता था ।"

राजाने कहा—"तो आपके वे खेत कहा थे और ऐसा नाज आप कहाँ जाकर उगाते थे ?"

पितामहने उत्तर दिया—"हमारे खेत क्या ? ईश्वरकी यही धरती तब थी । जहा हल जोता और मेहनत की कि वही हमारा खेत हुआ । जमीन छूटी बिछी थी । मालिक-मिल्कियतकी बात न थी । जमीन ऐसी कोई चीज नहीं थी कि मेरी-तेरी होती । हमारे जमानेमें एक हाथकी मेहनत ही ऐसी चीज थी जिसमें लोग अपना हक मानते थे, नही तो कोई नहीं ।"

राजाने कहा—"दो सवालोका और जवाब दीजिए, पितामह ! पहला सवाल यह कि धरती पहले ऐसा दाना कैसे देती थी और अब देना क्यो बंद हो गया ? दूसरा यह कि आपका पोता तो बैसाखियोसे चलकर यहा आया, बेटा एक लठियाके सहारे पहुचा और आप बिना किसी सहारेके चलते आ गये । आपकी आखोकी रोशनी भी उजली है, दात मजबूत है और बानी साफ और मधुर है यह कैसे हुआ ?"

उन पुरातन पुरुषने उत्तर दिया—

"ऐसा इसलिए हुआ कि आदमियोने आज अपनी मिहनत के भरोसे रहना छोड दिया है और दूसरोकी मेहनतका आसरा थामकर रहते है। पुराने जमानेमें लोग ईश्वरके नियम पालते थे और वैसे रहते थे। जो उनका था, वही उनका था। दूसरेकी मेहनत और उसके फलपर उन्हें लोभ नही होता था।"

: १२ :

काम, मौत और बीमारी

भारतके आदिम लोगोमें एक कथा प्रचलित है—

कहते है कि भगवानने पहलेपहल आदमी बनाया तो ऐसा बनाया था कि उसे काम-धामकी जरूरत नही थी । न रहनेको मकान चाहिए था, न पहननेको कपडे। तन यो ही पलता था और सबकी सौ बरसकी उमर होती थी। और रोग-शोकका किसीको पता न था ।

कुछ काल बाद भगवानने अपनी सृष्टिकी ओर मुह फेरकर देखा कि उसका क्या हाल है । देखते क्या है कि कोई अपने जीवनसे खुश नही है और वहा कलह मची हुई है । सबको अपनी-अपनी लगी है और हालत ऐसी बना डाली है कि जीवन आनदके बदले क्लेशका मूल हो रहा है ।

ईश्वरने सोचा कि यह बात इसलिए हुई कि सब अलग-अलग अपने-अपने लिए रहते है।

इससे हालतको बदलनेके लिए ईश्वरने एक काम किया । ऐसा बदोबस्त

कर दिया कि काम बिना जीवन सभव ही न रहे। सर्दीके दुखसे बचनेके लिए रहनेको जगह बनानी पडे—चाहे खोदकर गुफा बनाओ, चाहे चिनकर मकान खडे करो। और भूख मिटानेके लिए फल या अनाज बोना-उगाना और काटना पड़े।

ईश्वरने सोचा कि कामसे उनमें संघ पैदा होगा और वे सम्मिलित बनेंगे। उन्हें औजार बनाने पडेंगे। यहासे वहा तैयार माल ले जाना होगा। मकान बनायेंगे। खेत जोतें और नाज बोयेंगे। कात-बुनकर कपडा बनायेंगे और इनमें कोई काम एक अकेले हो न सकेगा।

तब उन्हें समझ आ जायगी कि जितने एक मनसे साथ होकर वे काम करेंगे उतनी ही बढवारी होगी और जीवन फले-फूलेगा। यह बात उनमें एका ले आयेगी और सबकी ऐसे बरकत होगी।

कुछ काल बीता और भगवानने फिर सृष्टिकी ओर ध्यान दिया कि अब क्या हाल है। अब लोग पहलेसे चैनसे तो है न।

लेकिन देखनेमें आया कि हालत पहलेसे खराब है। काम तो साथ करते है (क्योंकि और कुछ वश ही नही है)। पर सब साथ नही होते। उनमें दल-वर्ग बन गये है। वे अलग-अलग वर्ग एक-दूसरेसे कामके लिए छीना-झपटी करते है और एक-दूसरेकी राहमें रोक बनते है। इस खीच-तानमें समय और शक्ति बरबाद जाती है। सो सबकी हालत बिगडी है और दिन-दिन बिगडती जाती है।

भगवानने सोचा कि यह भी ठीक नहीं हुआ। अब ऐसा करें कि आदमीको अपनी मौतका कुछ पता न रहे। उसके जाने किसी घडी वह आ जाय। आयु उसकी निश्चित न रहे। ऐसे आदमी आप सभल जायगा।

सो इसी प्रकारकी व्यवस्था भगवानने कर दी। उन्होने सोचा कि मौतका ठीक-ठिकाना आदमी को नही रहेगा तो एक-दूसरेसे छीना-झपटी भी वह नही करेंगे। उन्हें खयाल होगा कि जाने कै घडीकी जिंदगी है, सो ऐसे जिंदगीके थोड़ेसे क्षणोको चलो, क्यो नाहक हम बिगाडें।

लेकिन बात उल्टी हुई। भगवान जब फिर अपनी सृष्टिको देखने आये

तो क्या देखते है कि वहा तो जीवन पहलेसे, बल्कि उससे भी ज्यादा, खराब है।

जो बलवान थे उन्होने यह देखकर कि आदमी तो चाहे जब मर सकता है, कमजोरोको मौत दिखाकर बस कर लिया है । कुछको मार दिया, औरोको उसके डरसे ही डरा लिया । होते-होते यह होने लगा कि वे ताकतवर लोग और उनकी सतान कामसे जी चुराने लगी । उन्हें समय काटना ही सवाल हो गया और अपना आलस बहलानेके नाना उपाय वे करने लगे। और जो कमजोर थे उन्हें इतना काम करना पडने लगा कि दम मारनेकी फुर्सत न मिलती। ऐसे दोनो तरहके लोग एक-दूसरेसे खार खाते थे और बचते और डरते थे। दोनों दुखी थे और आदमीका जीवन पहलेसे गया-बीता और दूभर होता जाता था।

यह देखकर ईश्वरने सुधारकी एक तदबीर की । सोचा कि यह उपाय पक्का होगा । बहुत सोच-समझकर भगवानने आदमीके बीच तरह-तरहकी बीमारिया भेज दी । सोचा कि हरेकके सिरपर जब बीमारिया खेलती रहा करेंगी तो जो अच्छे होगे, वे बीमारपर और दुर्बलपर दया करेंगे और सहाय करेंगे, क्योकि जाने वे खुद बीमारीमें कब न फस जाय। वे औरोपर दया करेंगे तभी अपने लिए दयाकी आस उन्हें हो सकेगी।

यह इतजाम करके भगवान निश्चित हुए । लेकिन फिर जो अपनी उस सृष्टिको देखने वह आये जिसे अपनी करुणामें उन्होने बीमारियोका दान दिया था, तो देखते है कि आदमीकी हालत बदसे बदतर है । उनकी भेजी बीमारियोसे वह मिलना तो क्या, उलटे आपसमें और भी फटने-बटने लगे है। ताकतवर लोग अपनी बीमारीमें कमजोरोसे और भी मेहनत कराने और अपनी सेवा लेने लगे है। लेकिन खुद जब वे सेवक बीमार पडते है तो उन्हें पूछते भी नही है। और जिन्हें इस तरह खूब काममें जोता जाता और बीमारीमें सेवा ली जाती है, वे खिदमत करते-करते थकानसे ऐसे चूर हो जाते है कि बीमारीमें अपनी या अपनोकी कोई मदद नही कर सकते, और बस भाग-भरोसे हो रहते हैं। तिसपर धनी आदमियोने इन गरीब लोगोके लिए खैराती अस्पताल वगैरह खडे कर दिये हैं कि जिससे उनकी अपनी मौजमें विघ्न न पडे और गरीब दूर ही दूर रहें ।

वहा अस्पतालमें गरीब बेचारे अपने सगे-स्नेहियोंकी सेवासे दूर हो जाते हैं कि जिससे थोडा ढारस उन्हें पहुंच सकता था। फिर वहा ऐसे किरायेके आदमियों और नर्सोंके पल्ले वे पडते है कि जो बिना किसी दया-ममताके, बल्कि कभी तो झीक और तिरस्कारके साथ, दवा उनके गले उतार दिया करते हैं। तिसपर कुछ बीमारियोंको छूतकी मान लिया जाता है, और कही वह लग न जाय, इस डरसे बीमारोसे बचा जाता है और जो बीमारके पास रहते है उन तकसे दूर रहा जाता है ।

यह देख भगवानने मन में कहा कि अगर ऐसे भी इन लोगोको यह समझ नही आता है कि इनका सुख किसमें है तो फिर दुख ही उन्हे मिलने दो। दुख भोगकर ही वे समझेंगे । यह सोच भगवानने उन्हें उनपर छोड दिया ।

इस तरह आदमीको आजाद हुए मुद्दतकी मुद्दत बीत गई कि अब कही कुछ उनमेंसे समझे है कि कैसे वे प्रसन्न रह सकते है और रहना चाहिए। काम कुछके लिए हौआ हो और दूसरोके लिए नितका कोल्हू, यह ठीक नही है । बल्कि कामसे तो सब मिलजुलकर आपसमें हेल-मेल और खुशीके साथ रहना सीखने की सुगमता होनी चाहिए । सिरपर जब मौत अडी खडी है और किसी पल भी वह आ सकती है तो वैसी हालतमें आदमीके लिए समझदारीका काम यही हो सकता है कि वह अपनी आयुके क्षण, छिन-पल और वर्ष प्रीति, सेवा और भक्तिमें बिताये। अब कही कुछ समझने लगे हैं कि बीमारी एकसे एकको हटानेको नही है, बल्कि एक-दूसरेको प्रेमके और सेवाके सूत्रमें पास लानेके लिए मिली है ।

: १३ :

तीन सवाल

एक राजा था । एक बार उसने सोचा कि तीन बातें मालूम हो जायं तो कभी कोई मनकी साध अधूरी न रहे और सब काम पूरे हो जाया करें । एक तो यह कि कोई काम कब शुरू किया जाय । दूसरी कि कौन ठीक आदमी है जिनकी सुनी जाय और किनकी अनसुनी छोड़ दी जाय । तीसरी यह कि जरूरी काम कौन-सा है ।

यह विचार आनेपर उसने अपने सारे राजमें ऐलान कर दिया कि जो कोई आकर ये तीन सवाल बतायेगा, उसे खूब इनाम मिलेगा। एक, कि हर कामका ठीक समय क्या है। दो, कि सबसे जरूरी आदमी कौन है। और तीन, कि सबसे महत्त्वका काम कैसे जाना जा सकता है।

सो बडे-बडे विद्वान् दूर-दूर देशसे राजाके पास आये। सबने जवाब दिये। पर सबके उत्तर अलग-अलग थे।

पहले सवालके जवाबमें किन्हीने तो कहा कि हर कामके ठीक वक्तके लिए बरस, महीने, दिनका पहलेसे एक गोशवारा तैयार रखना चाहिए। उसमें सब कामका समय नियत कर देना चाहिए। बस फिर एकदम उसीके अनुसार करना चाहिए। उनकी राय थी कि सिर्फ इसी तरह हर काम अपने ठीक वक्तसे हो सकता है, नही तो नही। दूसरोका कहना था कि पहलेसे हरेक कामका समय बाध लेना ही मुमकिन नही है। असलमें चाहिए यह कि बिना इधर-उधरकी खामखा बातोमें उलझे आदमी अपने आस-पासका खयाल रक्खे। और जो जरूरी उपयोगी हो वही करता चले। कुछ औरोने बताया कि महाराज, आस-पासका कितना भी ध्यान रक्खो, लेकिन वास्तवमें एक आदमी ठीक-ठीक हर कामका सही वक्त नही तै कर सकता। इसके लिए पडितोकी एक सभा होनी चाहिए जो इसमें महाराजकी सहायता किया करे और प्रत्येक कामका उचित समय निर्धारित कर दिया करे।

लेकिन इसपर और बोले कि वाह, कुछ बातें ऐसी नही होती कि सभामें आयें तब कही जाकर उनपर फैसला हो। उनपर तो तभी-के-तभी निर्णय देना होता है कि क्या करें, क्या नही। लें, कि छोड़ें? लेकिन यह तय करनेके लिए पहले कुछ पता होना जरूरी है कि किसका क्या फल होनेवाला है। और आगेकी बात बस ज्योतिषी और तत्र-मत्र जाननेवाले जानते है। सो हरेक कामका ठीक मुहूर्त जाननेको पूछकर चलना चाहिए।

दूसरे सवालके भी जवाब उसी तरह सबके अलग-अलग थे। कुछ बोले कि राजाके लिए सबसे जरूरी लोग है राजदरबारी। किसीने कहा कि पुरोहित। औरोने कहा कि वैद्य। कुछ और बोले कि नही राजमें सबसे जरूरी सिपाही होते हैं।

और तीसरे सवालके जवाबमें कि सबसे जरूरी काम कैसे जाना जाता है, कुछने तो जवाब दिया कि दुनियामें सबसे जरूरी वस्तु है विज्ञान ।

औरोने कहा कि जगतमें रण-चातुरी सबसे बढकर बात है । कुछ अन्य बोले कि धर्मकी पूजासे आगे तो कुछ भी नही है, वही श्रेष्ठ है ।

जवाब सब अलग-अलग थे । सो राजा किन्हीसे राजी नही हुआ। और किसीको इनाम नही दिया। पर सवालोका ठीक जवाब पानेकी साध तो उसके मनमें थी ही । सो एक जोगीसे जाकर पूछनेकी उसने मनमें ठहराई। उस जोगीके ज्ञानकी दूर-दूर शोहरत थी ।

वह जोगी एक बनमें रहता था । कभी बाहर नही आता था। और देहातके सीधे-सादे लोगोके अलावा किन्ही औरसे नही मिलता था । सो राजाने अपना सादा वेष कर लिया और जोगीकी कुटिया आनेसे पहले ही घोडेसे उतर पाव-पाव हो लिया । साथके रक्षक सिपाहियोको वही छोड़ दिया और कुल एक—अकेला होकर चला ।

राजा पास पहुचा तो देखता है कि जोगी कुटियाके आगे धरती खोद रहे है। राजाको देखकर जोगीने स्वागत वचन कहे और फिर उसी तरह अपने ोदनेमें लगे रहे । जोगीकी काया निर्बल थी और वह कृश थे । धरतीमें एक फावडा मारते, कि उनकी सास जोर-जोरसे चलने लगती थी ।

राजाने पास जाकर कहा—"हे ज्ञानी जोगी, मै आपसे तीन सवाल पूछने आया हू । पहला, कि ठीक कामका ठीक वक्त मै कैसे जान सकता हू । दूसरा कि कौन लोग मेरे लिए सबसे जरूरी है और इसलिए किनका ओरोसे मुझे विशेष खयाल रखना चाहिए । और तीसरा कि कौन काम सबसे महत्त्वका है जिधर मुझे पहले ध्यान देना चाहिए ।"

जोगीने राजाकी बात सुनी, पर जवाब नही दिया। हथेलीको थूकसे गीलाकर फावडा ले आपने फिर खोदना शुरू कर दिया ।

राजाने कहा—"आप थक गये है, लाइए, मुझे फावडा दीजिए । कुछ देर मैं ही आपकी जगह काम कर दू।"

"अच्छा—"

कहकर फावडा जोगीने राजाको दे दिया और खुद अलग जमीनपर बैठ सुस्ताने लगे ।

दो क्यारी खोद चुकनेपर राजा रुके और उन्होने फिर अपने सवालोंको दुहराया । जोगीने फिर कोई जवाब नही दिया । पर खडे हो गये और हाथ बढ़ाकर बोले—

"लाओ, अब तुम आराम करो । मैं खोदे लेता हू ।"

पर राजाने फावडा उन्हें नही दिया और आप ही खोदने लगा । एक घंटा बीता, फिर दूसरा बीता । ऐसे पेडोके पीछे सूरज छिपने लगा । आखिर राजाने फावडा धरतीमें लगा छोड , कहा—"हे ज्ञानी पुरुष, मैं अपने प्रश्नोके उत्तरके लिए आपके पास आया था । अगर आप मुझे कोई जवाब नही दे सकते तो वैसा कहिए, मैं घर चला जाऊगा ।"

जोगीने कहा—"देखो, वह कोई भागा आ रहा है । जाने कौन है ?"

राजाने मुडकर देखा तो एक दाढीवाला आदमी वनसे भागा आ रहा था । उसने दोनो हाथोसे पेटको अपने दबा रक्खा था और वहासे लहू बह रहा था। राजाके पास पहुचना था कि वह धीमी आवाजसे कराहता हुआ गिर गया और बेहोश हो गया । राजाने और जोगीने उस आदमीके कपडे खोले । पेटमें उसके एक बड़ा घाव था । जैसे बन पडा राजाने उस घाव को धोया और जोगीका अगोछा ले और अपना रूमाल फाड उसकी पट्टी-वट्टी बाधी । लेकिन खून रुकता नही था । राजाने खूनसे तर-बतर पट्टीको फिर खोला और धोया और फिर पट्टी बाधी ऐसे आखिर खून बहना जब बद हुआ तो आदमी होशमें आया और उसने पीनेको कुछ मागा । राजाने ताजा पानी लाकर उसे पिलाया । इतनेमें सूरज छिप गया था और सर्दी होने लगी थी । सो जोगी की मदद से राजा उस घायल आदमीको कुटियाके अदर ले गया और वहा बिछौनेपर लिटा दिया। बिछौनेपर पहुचकर आदमीने आखें मीच ली और उसे कुछ चैन मालूम हुआ। लेकिन राजा भी अब थक गया था। कुछ तो वह इतना चला था और कुछ कामकी थकान थी । सो वह वही देहलीजके पास चौखटका तकिया लगा गुड़ीमुडी लेट गया। लेटते ही सो गया

और नीद ऐसी गाढी आई कि गरमियोकी वह छोटी रात जरामें कब निकल गई, पता नही चला। सवेरे पलक मीजता जो वह उठा तो कुछ देर तो उसे याद न आई कि कहा हूं और यह आदमी कौन है। वह अजनबी दाढ़ीवाला आदमी बिछौनेपर पडा चमकीली आखोसे गौर बाधकर उसीकी तरफ देख रहा था।

जब देखा कि राजा जग गया है और उसीकी तरफ देख रहा है तो दाढ़ीवाले आदमीने धीमी आवाजमें कहा—"जी, मुझे माफ कीजिए।"

राजा बोला—"भाई, मै तो तुम्हे जानता नही हू। और माफ मै किस बातके लिए तुम्हे कर सकता हू।"

घायल बोला—"आँप मुझे नही जानते है। लेकिन मै आपको जानता हूं। मै वही आपका दुश्मन हू जिसने आपसे बदला लेनेकी कसम खाई थी। आपने मेरे भाईको फासी दी थी और जायदाद छीन ली थी। मुझे मालूम था कि आप यहा जोगीके पास अकेले आये है। मनमें ठहराया था कि लौटते वक्त मै आपका काम तमाम कर दूगा। लेकिन दिन पूरा हो गया और आप लौटे नही। सो मैं अपने छिपनेकी जगह से देखनेके लिए बाहर आया। बाहर आनेपर आपके संतरी लोग मिले। उन्होने मुझे पहचान लिया और घायल कर दिया। ज्यों-त्यो उनसे बच मैं भाग तो आया, लेकिन आप मेरे घावपर पट्टी न बाधते तो मै मर ही चुका था। सो देखो, मैंने तो आपको मारनेकी ठानी और आपने मेरी जान बचाई। अब मैं जीता रहा और आपने चाहा तो मै जन्मभर गुलामकी तरह आपकी ताबेदारी करूगा और अपने बेटोको भी यही ताकीद कर जाऊगा। आप मुझे माफ करदें, यह विनती है।"

राजाको बडी प्रसन्नता हुई। ऐसे सहज दुश्मनसे सुलह ही नही हो गई, बल्कि दुश्मनकी जगह वह आदमी दोस्त हो गया। सो राजाने उसे माफ ही नही किया, बल्कि कहा कि मैं अभी तुम्हारी तीमारदारीमें अपने आदमी और राज-वैद्य भेजे देता हू। और जायदाद भी सब लौटानेका वचन राजाने भरा।

घायल आदमीसे रुखसत लेकर राजा जोगीको देखने बाहर आया। जानेके पहले एक बार वह फिर जोगीसे अपने सवालोका जवाब पानेके लिए निवेदन

करना चाहता था। जोगी बाहर धरतीपर घुटनोके बल बैठे कलकी खुदी क्यारियोंमें बीज बो रहे थे ।

राजा पास आकर बोला—"हे ज्ञानी पुरुष, अतिम बार मैं फिर आपसे अपने प्रश्नोके उत्तरके लिए प्रार्थना करता हू।"

अपनी दुबली टागोपर उसी तरह सिकुडे धरतीपर बैठे जोगीने अपने सामने खडे राजाकी तरफ देखकर कहा—"जवाब तो तुमको मिल गया है, भाई।"

"मिल गया है ?" राजाने पूछा, "कैसे ? आपका क्या मतलब है ?"

जोगी बोले—"देखते नही हो ? अगर कल मेरी दुर्बलतापर तुम दया नही करते, और मेरी जगह इन क्यारियोको नही खोदने लगते, बल्कि वापिस राह लौट जाते, तो वह आदमी तुमपर हमला कर बैठता कि नही ? और फिर यहा न ठहरनेके लिए तुम पीछे पछतावा करते। सो सबसे जरूरी वक्त तुम्हारे लिए था जब तुम क्यारिया खोद रहे थे। और तब सबसे जरूरी आदमी तुम्हारे लिए था मैं। और मेरी भलाई करना तुम्हे उस वक्त सबसे जरूरी काम था। इसके बाद वह आदमी जब भागा-भागा हमारे पास आकर गिरा तो सबसे महत्त्वकी घडी थी जब तुम उसकी परिचर्यामें लगे। क्योकि अगर तब तुम घाव न बाधते तो मनमें वह तुम्हारा वैर साथ लिए-लिए ही मरता। इसलिए उस समय वह तुम्हारे लिए सबसे जरूरी आदमी था और जो उसके अर्थ किया वही तुम्हे सबसे महत्त्वका काम था। इससे याद रक्खो कि एक ही घडी है जो महत्त्वकी है और वह हालकी घडी है। वही सबसे महत्त्वकी है, क्योकि वही घडी है जो हम जीते हैं और जो हमारे हाथमें होती है। और सबसे जरूरी और महत्त्वका आदमी वह है कि जिसके साथ इस घडी हम हो। क्योकि कौन जानता है कि आगे किसी और दूसरेसे मिलना हमारी किस्मतमें बदा भी हो कि नही। और सबसे महत्त्वका काम है उस आदमीकी उस वक्तकी जो सेवा हो कर देना। क्योकि वही एक काम है जिसको आदमीके हाथ देकर उसे यहा भेजा गया है ।

: १४ :

हमसे सयाने बालक

रूस देशकी बात है। ईस्टरके शुरूके दिन थे। बरफ यो गल चला था, पर आंगन बाहर कही-कही अब भी चकत्ते थे। और गल-गलकर बरफका पानी गावकी गलियोंमें होकर बहता था।

एक गलीमें आमने-सामनेके घरोसे दो लडकिया निकली। गलीमें था पानी। पानी वह पहले खेतोमें चलकर आता था इससे मैला था। बाहर गलीके चौडेमें एक जगह एक खासी तलैया-सी बन गई थी। दोनो लडकियोमें एक तो बहुत छोटी थी, एक जरा बडी थी। उनकी माओने दोनोको अभी नये फ्राक पहनाये थे। नन्हीका फ्राक नीला था और बडीका पीली छीटका। और दोनोके सिरपर लाल रूमाल थे। वे अभी गिरजेसे लौटी थी कि आमने-सामने मिल गईं। पहले दोनोने एक-दूसरेको अपनी फ्राक दिखाई और फिर खेलने लगी। जल्दी ही उनका मन हो उठा कि चलें पानीमें उछालें मारें। सो छोटी लड़की जूतो और फ्राक समेत पानीमें बढ जाना चाहती थी कि बडीने रोक लिया।

"ऐसे मत जाओ, निनी" वह बोली, "तुम्हारी मा नाराज होगी। मै अपने जूते मोजे उतारे लेती हू। तुम भी अपने उतार लो।"

दोनोने ऐसा ही किया और अपने-अपने फ्राकका पल्ला ऊपर सभाल पानीमें एक-दूसरेकी ओर चलना शुरू किया। पानी निनीके टखनोतक आ गया और वह बोली, "यहा तो गहरा है, जीजी, मुझे डर लगता है।"

जीजीका नाम था मिशा। बोली—"चली आओ, डरो मत। इससे और ज्यादा गहरा नही होगा।"

जब दोनो पास-पास हुईं तो मिशा बोली—

"खबरदार निनी, पानी न उछालो। जरा देखकर चलो।"

वह कह पाई ही होगी कि निनीका पाव एक गड्ढेमें जाकर पडा और पानी उछलकर मिशाकी फ्राकपर आया। फ्राक पर छीटे-छीटे हो गई और ऐसे ही मिशाकी आख और नाकपर छींट हो गये। मिशाने अपनी फ्राकके धब्बे जो देखे

तो वह नाराज हो उठी और निनीको मारने दौडी। निनी घबरा गई और मुसीबत देख वह पानीसे निकल घर भागनेको हुई। लेकिन ठीक तभी मिशाकी मा उधर आ निकली । अपनी लडकीकी फ्राक और उसकी आस्तीनें छीटे-छीटे गदी हुई देख बोली—

"शैतान कहीकी, गदी लडकी, यह क्या कर रही है ?"

मिशा बोली—"मै नही, निनीने यह खराब किया है—"

सो मिशाकी माने निनीको पकडकर कनपटीपर एक चपत रख दिया । निनी हो-हल्ला करके रोने लगी । ऐसी कि सारी गलीमें आवाज पहुच गई । सो उसकी मा निकल बाहर आ गई ।

"तुम क्यो मेरी बच्चीको मार रही हो जी ?" कहकर वह फिर अपनी पडोसिनको खूब खरी-खोटी कहने लगी । बातपर बात बढी और उन दोनोमें खासा झगडा हो गया । और लोग भी निकल आये । एक भीड ही गलीमें इकट्ठी हो गई । हर कोई चिल्लाता था, सुनता कोई किसीकी नही था। वे झगडा किये ही गई। यहातक कि धक्कम-धक्काकी नौबत आ गई। मामला मार-पीटतक आ लगा था कि मिशाकी बूढी दादी बढकर उनमें आई और समझाने-बुझानेकी कोशिश करने लगी ।

"अरी, क्या कर रही हो, भलीमानसो ? अरी, सोचो तो कुछ । भला कुछ ठीक है, और आज त्यौहार परबके दिन ! यह मगलका दिन है, कि फजीतेका ?"

पर बुढियाकी बात वहा कौन सुनता था ? जमघटके धक्कम-धक्केमें वह तो गिरते-गिरते बची। वह तो निनी और मिशाने ही मदद न की होती तो बुढियाके बसका कुछ न था। वह भला क्या भीडको शात कर पाती ! पर उधर औरतें आपसकी गाली-गलौजमें लगी थी कि इधर मिशाने कीचडके छीटे-छिटक पोछकर फ्राक साफ कर ली थी और फिर पानीकी तलैयापर पहुंच गई थी। पहुचकर क्या किया कि एक पत्थर लिया और तलैयाके पासकी मिट्टीको खरोच-खरोचकर हटाने लगी, जिससे रस्ता बन जाय और पानी गलीमें बहने लगे । यह देख निनी भी झट आकर उसकी कारगुजारीमें हाथ बटाने लगी। लकड़ीकी एक छिपटी ली

और उससे मिट्टी खोदने लगी। सो ठीक जब स्त्रियां हाथा-पाई ही किया चाहती थी, कि पानी उन नन्ही लडकियोंके बनाये रास्ते से निकल गलीकी तरफ बढ़ा वह उधर बहकर चला जहा बुढिया खडी उन्हें समझा रही थी। पानीके साथ-साथ एक इधर तो दूसरी उधर दोनो लडकिया भी चली आ रही थी।

"अरी, पकड इसे निनी, पकड।" मिशाने यह कहा तो, पर निनीको हंसनेसे फुर्सत नही थी। पानीमें बही जाती हुई लकडीकी छिपटीमें वह बड़ी मगन थी। पानीकी धारमें आगे-आगे छिपटीको तैरते देखती, खूब मगन, वे मुन्निया दौड़ी-दौडी उन लोगोके भुडहीमें जा पहुंची। उस समय दादी बुढिया इन्हें देख, भीडसे बोली—

"अरी, तुम लोगोको अपनेपर शर्म नही आती। इन छोकरियोंके लिए लडते जा रहे हो, लडते जा रहे हो। और इन्हें देखो कि कैसी ये सब-कुछ भूल चुकी है। वे तो मिली-जुली खुश-खुश खेल रही है। और तुम—! खुदा के बन्दो, तुमसे तो कही वे ही समझदार है।"

सब लोगोने उन नन्ही लडकियोको देखा और शर्मिदा हुए। फिर खुदपर ही हसते हुए सब अपने-अपने घर चले गये।

सो कहा ही है—"जबतक बदलोगे नही, और बच्चो जैसे ही नही हो जाओगे, किसी तरह रामकृपा और स्वर्गलोक न पा सकोगे।"

: १५ :

कितनी जमीन ?

(१)

दो बहनें थी। बडीका कस्बेमें एक सौदागरसे विवाह हुआ था। छोटी देहातमें किसानके घर ब्याही थी।

बड़ीका अपनी छोटी बहनके यहा आना हुआ। निबटकर दोनों जनी बैठीं तो बातोका सूत चल पडा। बडी अपने शहरके जीवनकी तारीफ करने लगी। देखो, कैसे आरामसे हम रहते है। फैंसी कपडे और ठाठ के सामान! तरह-तरह के स्वादकी खाने-पीनेकी चीजें, और फिर तमाशे-थियेटर, बाग-बगीचे!

छोटी बहनको बात लग गई । अपनी बारीपर उसने सौदागरकी जिंदगीको हेच बताया और किसानका पक्ष लिया । कहा, मैं तो अपनी जिंदगीका तुम्हारे साथ अदला-बदला कभी न करू। हम सीधे-सादे और रूखे-से रहते है तो क्या, चिंता-फिकरसे तो छूटे है । तुम लोग सजी-धजी रहती हो, तुम्हारे यहा आमदनी बहुत है । लेकिन एक रोज वह सब गायब भी हो सकता है, जीजी । कहावत ही है—हानि-लाभ दोई जुडवा भाई। अक्सर होता है कि आज जो अमीर है, कल वही टुकडेको मोहताज है । पर हमारे गाव के जीवनमें यह जोखिम नही है। किसानी जिंदगी फूली और चिकनी नही दीखती तो क्या, आयु लबी होती है और मेहनतसे तदुरुस्ती भी बनी रहती है । हम मालदार न कहलायेंगे, लेकिन हमारे पास खानेकी कमी भी कभी नही होगी।

बडी बहनने तानेसे कहा—"बस, बस, पेट तो बैल और कुत्तेका भी भरता है। पर वह भी कोई जिंदगी है ? तुम्हे जीवनके आराम और अदब और आनन्दका क्या पता है ? तुम्हारा मर्द जितनी चाहे मेहनत करे, जिस हालतमे तुम जीते हो, उसी हालतमें मरोगे । वही चारो तरफ गोबर और भुस और मिट्टी ! और यही तुम्हारे बच्चोकी किस्मत में बदा है ।"

छोटीने कहा—"तो इसमें क्या हुआ । हा, हमारा काम चिकना-चुपडा नही है, लेकिन हमें किसीके आगे झुकनेकी भी जरूरत नही है । शहरमें तुम हजार लालचसे घिरी रहती हो ; आज नही, तो कलकी क्या खबर है, कल तुम्हारे आदमीको पापका लोभ, जुआ, शराब और अन्य व्यसन फसा सकते है। तब घडी भरमें सब बरबाद हो जायगा । क्या ऐसी बातें अक्सर होती नही है ?"

घरका मालिक दीना ओमारेमें पडा औरतोकी यह बात सुन रहा था । उसने सोचा कि बात तो खरी है। बचपनसे मा-धरतीकी सेवामें हम इतने लगे रहते है कि कोई व्यर्थकी बात हमारे मनमें घर नही कर पाती है । बस, है तो मुश्किल एक है । वह यह कि हमारे पास जमीन काफी नही है । जमीन खूब हो तो मुझे किसीकी परवाह न रहे, चाहे शैतान ही क्यो न हो।

औरतोमें फिर इधरकी, उधरकी, घरकी और परिवारकी सब बातचीत

हुई। आखिर अलग होकर वह आराम करने लगी।

लेकिन वही कोनेमें शैतान दुबका बैठा था । उसने सब कुछ सुना । वह खुश था कि किसानकी बीबीने गावकी बड़ाई करके अपने आदमीको डींगपर चढा दिया । देखो न, कहता था कि जमीन खूब हो तो फिर चाहे शैतान भी आ जाय तो परवा नही !

शैतानने मनमें कहा कि अच्छा हजरत, यही फैसला सही। मैं तुमको काफी जमीन दूगा और देखना हूं कि उसीकी बदौलत तुम मेरे चगुलमें होते हो कि नही!

(२)

गावके पास ही जमीदारीकी मालकिनकी कोठी थी। कोई तीनसौ एकड़ उनकी जमीन थी । उनके अपने आसामियोके साथ बडे अच्छे सबध रहते आये थे । लेकिन फिर उन्होने एक कारिदा रक्खा जो पहले फौजमें रहा था । उसने आकर लोगोपर जुर्माने डालने शुरू कर दिये ।

दीनाका यह हाल था कि वह बहुतेरा करता, पर कभी तो उसका बैल जमीदारकी चरीमें पहुच जाता, कभी गाय बगियाको चरती पाई जाती। और नही तो उसकी रखाई हुई घासमें बछिया-बछडा ही जा मुह मारते । और हर बार दीनाको जुर्माना उठाना पडता । जुरमाना तो वह देता, पर बेमन। वह कुनमुनाता और चिढा हुआ-सा घर पहुचता । और अपनी सारी चिढ घरमें उतारता। पूरे मौसम कारिंदेकी वजहसे उसे ऐसा त्रास भुगतना पड़ता । जाडोका पतझड आनेपर वह खुश होता कि चलो, अब जानवरोको अदर बद रखना पडेगा। ढोर तब बाहर चर सकते नही थे और उन्हें घरमें रखकर खिलाना पडता था। पर चलो, दीनाको जुरमानेकी चितासे तो मुक्ति मिल जाती थी ।

अगले जाडोमें गावमें खबर पडी कि मालकिन अपनी जमीन बेच रही हैं और मुशी इकरामअलीसे सौदेकी बातचीत चल रही है । किसान सुनकर चौकन्ने हुए । उन्होने सोचा कि मुशीजीकी जमीन होगी तो वह जमीदारके कारिंदेसे भी ज्यादा सख्ती करेंगे और जुरमाने चढावेंगे । और हमारी तो गुजर-बसर इसी जमीनपर है ।

यह सोचकर किसान मालकिन के पास गये। कहा कि मुशीजीको जमीन

न दीजिए । हम उससे बढती कीमतपर लेनेको तैयार हैं । मालकिन राजी हो गई। तब किसानोने कोशिश की कि मिलकर गाव-पचायतकी तरफसे वह सब जमीन ली जा सके ताकि वह सभीकी बनी रहे । दो बार इसपर विचार करनेको पंचायत जुडी । पर फैसला न हुआ । असलमें शैतानकी सब करतूत थी। उसने उनके बीच फुट डाल दी थी। बस तब वे मिलकर किसी एक मतपर आ ही नही सके । तय हुआ कि अलग-अलग करके ही वह जमीन लें ली जाय । हर कोई अपने बित्तके मुताबिक ले ले । मालकिन पहलेकी तरह इस बातपर भी राजी हो गई ।

इतनेमें दीनाको मालूम हुआ कि एक पडोसी इकट्ठी पचास एकड जमीन ले रहा है और जमीदारिन राजी हो गई है कि आधा रुपया अभी नकद ले लें, बाकी साल भर बाद चुकता हो जायगा।

दीनाके मनमें डाह हुई। उसने सोचा कि देखो, जमीन सब बिकी जा रही है, और उसमें मुझे कुछ भी नही मिलेगा ।

उसने अपनी स्त्रीसे कहा कि और जने खरीद रहे है। सो हमें भी बीस या इतने एकड जमीन लेनी चाहिए। जीना वैसे भार हो रहा है। और वह कारिंदा जुरमाने-पर-जुरमाने करके हमें बरबाद ही कर देगा ।

सो उन दोनोने मिलकर विचार किया कि किस युक्तिसे जमीन खरीदी जाय।

सौ कलदार तो उनके पास बचे हुए रक्खे थे । एक उन्होने उमरपर आया अपना बछडा बेच डाला । कुछ माल बधक रक्खा। अपने बडे बेटेको मजदूरीपर चढाकर उसकी नौकरीके मद्दे कुछ रुपया पेशगी ले लिया । बाकी बचा अपने स्त्रीके भाईसे उधार ले लिया । इस तरह कोई आधी रकम उन्होने इकट्ठी कर ली ।

इतना करके दीनाने एक चालीस एकडका जमीनका टुकडा पसंद किया जिसमें कुछ हिस्सेमें दरख्त भी खडे थे । मालकिनके पास उसका सौदा करने पहुचा । सौदा पट गया और वही-के-वही नकद उसने रकम भी दे दी।

फिर कस्बेमें जाकर लिखा-पढी भी पक्की कर ली गई। आधे रुपये उसने वहीं अदालतके सामने दे दिये। बाकी आधे दो सालके अंदर चुका देनेका पक्का ठहरा।

अब दीनाके पास अपनी निजकी जमीन थी। उसने बीज खरीदा और इसी अपनी जमीनपर बोया। फसल अच्छी हुई और एक सालके अंदर जमीदारिन-का और अपने साल्ेका सब कर्ज चुका दिया। इस तरह वह अब खुद जमीदार हो गया। अपनी जमीन जोतता और बोता था। अपनी जमीनपर चारा उगाता, फलके पेड लगाता। ईधन भी वही हो जाता था और उसके ढोरोको चराईके लिए बाहर नही जाना पड़ता था। अब वह अपने खेतोकी तरफ जाता, या लह-राती फसलको निहारता, या हरी घासकी चरागाहोपर नजर फैलाता तो उसका मन हर्षसे भर जाता था। यह बिछी घास, उगते पौधे, और फलते-फूल ऐसे मालूम होते थे कि और सबसे बढकर। पहले जब वह वहासे गुजरता था तो यह जमीन बिलकुल ऐसी मालूम होती थी जैसी और जमीन। लेकिन अब बात ही दूसरी हो गई थी।

(३)

इस तरह दीना काफी खुशहाल था। उसके संतोषमें कोई कमी न रहती, अगर बस पडोसियोकी तरफसे उसे पूरा चैन मिल सकता। कभी-कभी उसके खेतोंपर पडोसियोंके मवेशी आ चरते। दीनाने बहुत विनयके साथ समझाया, लेकिन कुछ फर्क नही हुआ। उसके बाद, और तो और, घोसी-छोकरे गांवकी गायोको दिन-दहाडे उसकी जमीनमें छोड़ देने लगे। रातको बैल खेतोका नुकसान करते। दीनाने उनको बार-बार निकलवाया और बार-बार उसने उनके मालिको-को माफ किया। एक अर्सेतक वह धीरज थामे रहा और किसीके खिलाफ कार्रवाई नही की। लेकिन कबतक ? आखिर उसका धीरज टूट गया और उसने जिला अदालतमें दरख्वास्त दी। मनमें जानता तो था कि मुसीबतकी वजह असली यह है कि और लोगोके पास जमीनकी कमी है, इरादतन दीनाको सतानेकी मंशा किसीकी नही है। लेकिन उसने सोचा कि इस तरह मैं नरमी दिखाता जाऊगा तो वे लोग शह पाते जायंगे और मेरे पास जितना है सब बरबाद कर देंगे। नही, उनको एक सबक सिखाना चाहिए।

सो उसने ठान ली। एक सबक दिया, दूसरा दिया। नतीजा कि दो-तीन किसानोंपर अदालतसे जुर्माना हो गया। इसपर तो पास-पड़ोसके लोग

दीनासे कीना रखने लगे। अब कभी-कभी इरादतन भी तग करनेके लिए अपने मवेशी उसके खेतोंमें छोड देते। एक आदमी गया और उसे जरूरत अगर घरमें ईंधनकी थी तो उसने रातमें जाकर सात पूरे शीशमके दरख्त काट गिराये। दीनाने सबेरे घूमते हुए देखा कि दरख्त कटे हुए पडे है। वे धरतीसे सटे है और उनकी जगह खडे ठूठ मानो दीनाको चिढा रहे। देखकर उसको तैश आ गया।

उसने सोचा कि अगर दुष्टने एक यहाका तो दूसरा दूरका दरख्त काटा होता तो भी गनीमत थी। लेकिन कम्बख्तने आस-पासके सब दरख्त काटकर बगियाको वीरान कर दिया। पता लगे तो खबर लिये बिना न छोड। उसने जाननेके लिए सिर खुजलाया कि यह करतूत किसकी हो सकती है। आखिर तय किया कि हो-न-हो यह धुन्नू होगा। और कोई ऐसा नही कर सकता। यह सोच धुन्नूकी तरफ गया कि शायद कुछ सूत पकडाई मिले। लेकिन वहा कुछ चोरीका सबूत मिला नही और आपसमे कहा-सुनी और तेजा-तेजीके सिवा कुछ नतीजा न निकला। तो भी उसके मनमें पक्का हो गया कि धुन्नूने ही यह किया है और जाकर रपट लिखा दी। धुन्नूकी पेशी हुई, मामला चला। एक अदालतसे दूसरी अदालत हुई। आखिरमे धुन्नू बरी हो गया, क्योंकि कोई सबूत और गवाह ही नही थे। दीना इस बातपर और भी झल्ला आया और अपना गुस्सा डिप्टी और मजिस्ट्रेटपर उतारने लगा।

बोला—"अफसर चोरोको शह देंगे तो हो लिया इसाफ। पर क्यो नही, वे कौन ईमानदार है!"

इस तरह दीनाका अपने पडोसियो और अफसरोसे मनमुटाव होने लगा। यहातक कि उसके घरमें आग लगानेकी बातें सुनी जाने लगी। सो अगर्चे दीनाके पास अब जमीन ज्यादा थी और जमीदारोमे गिनती थी, पर गावमें और पचोमें पहला-सा उसका मान न रह गया था।

इसी वक्त अफवाह उडी कि कुछ लोग गाव छोड-छोडकर कही जा रहे हैं।

दीनाने सोचा कि मुझे तो अपनी जमीन छोडनेकी जरूरत है नही। लेकिन और कुछ लोग अगर गाव छोडेंगे तो चलो, गावमें भीड ही कम होगी। मै उनकी जमीन खुद ले लूगा। तब ज्यादा ठीक रहेगा। अब तो कुछ तंगी मालूम होती है।

एक दिन दीना घरके ओसारेमें बैठा हुआ था कि एक परदेशी-सा किसान उधरसे गुजरता हुआ उसके घर उतरा । वह वहां रातभर ठहरा और खाना भी वही खाया । दीनाने उससे बातचीत की कि भाई, कहासे आ रहे हो ? उसने कहा कि दरिया सतलजके पारसे आ रहा हू । वहा बहुत काम है । फिर एकमेंसे दूसरी बात निकली और आदमीने बताया कि उस तरफ नई बस्ती बस रही है । उसके अपने गावके कई और लोग वहा पहुंचे है । वे सोसायटीमें शामिल हो गये है और हरेकको बीस एकड़ जमीन मुफ्त मिली है । जमीन ऐसी उम्दा है कि उसपर गेहूकी पहली फसल जो हुई तो आदमीसे ऊंची उसकी बालें गईं और इतनी घनी कि दरातके एक काटमें एक पूला बन जाये । एक आदमीके पास खानेको दाने न थे । खाली हाथ वहा पहुचा कि अब उसके पास निजकी दो गायें है, छ बैल, और भरा खलिहान अलग ।

दीनाके मनमें भी अभिलाषा पैदा हुई । उसने सोचा कि मै यहा तग संकरी-सी जगहमें पडा क्या कर रहा हूं, जब कि दूसरी जगह मौका खुला पड़ा है । यहाकी जमीन घर-बार बेच-बाचकर नकदी बना वही क्यो न पहुचू और नये सिरेसे शुरू करके देखू । यहा लोगोकी गिचपिच हुई जाती है । उससे दिक्कत पडती है और तरक्की रुकती है । लेकिन पहले खुद जाकर मालूम कर आना चाहिए कि क्या बात है । सो बरसातके बाद तैयारी करके वह चल दिया । पहले रेलमें गया, फिर सैकडो मील बैलगाडीपर या पैदल सफर करता हुआ सतलजके पार वाली जगहपर पहुचा । वहा देखा कि जो उस आदमीने कहा था, सब सच है । सबके पास खूब जमीन है । हरेकको सरकारकी तरफसे बीस-बीस एकड जमीन मिली हुई है । या जो चाहे खरीद सकता है । और खूबी यह कि कौडियोके मोल जितनी चाहे जमीन और भी ले लो ।

सब जरूरी बातें मालूम करके दीना जाडोसे पहले-पहले घर आ गया । आकर देश छोडनेकी बातें सोचने लगा । नफेके साथ उसने सब जमीन बेच डाली । घर-मकान, मवेशी-डंगर सबकी नकदी बना ली और पचायतसे स्तीफा दे दिया । सब कुनबेको साथ ले सतलज-पारके लिए रवाना हो गया ।

(४)

दीना परिवारके साथ उस जगह पहुच गया। जाते ही एक बडे गावकी पंचायतमें शामिल होनेकी अर्जी दी। पचोकी उसने खूब खातिर की और दावतें दीं। सो जमीनका पट्टा उसे सहज मिल गया। शामलातकी जमीनमेंसे उसके और उसके बाल-बच्चोके इस्तेमालके लिए पाच हिस्से यानी सौ एकड़ जमीन उसको दे दी गई। वह सब इकट्ठी नही थी, टुकडे कई जगह थे। अलावा इसके पंचायती चरागाह भी उसके लिए खुला कर दिया गया। दीनाने जरूरी इमारतें अपने लिए खडी की और मवेशी खरीद लिये। शामलात जमीनमेंसे ही अब उसको इतना मिल गया था कि पहलेसे तिगुनी, और जमीन उपजाऊ थी। वह पहलेसे कई गुना खुशहाल हो गया। उसके पास चराईके लिए खुला मैदान-का-मैदान पडा था और जितने चाहे वह ढोर रख सकता था।

पहले तो वहा जमने और मकान-वकान बनवानेका उसे रस रहा। वह अपनेसे खुश था और उसे गर्व मालूम होता था। पर जब वह इस खुशहालीका आदी हो गया तो उसे लगने लगा कि यहा भी जमीन काफी नही है, और होती तो अच्छा था। पहले साल उसने गेहूं बुवाया और जमीनने अच्छी फसल दी। वह फिर गेहू ही बोते जाना चाहता था, पर उसके लिए और पडती जमीन काफी न थी। जो एक बार काम आ चुकती थी, वह उस तरफ एक साथ दोबारा गेहू नही देती थी। एक या दो साल उससे गेहू ले सकते थे, फिर जरूरी होता था कि धरतीको आराम दिया जाय। बहुत लोग ऐसी जमीन चाहनेवाले थे, लेकिन सबके लिए आती कहासे? इससे बदाबदी और खीचातानी होती थी। जो सपन्न थे, वे गेहू उगानेके लिए जमीन चाहते थे। जो गरीब थे, वे अपनी जमीनसे जैसे-तैसे पैसा वसूल करना चाहते थे, ताकि टैक्स वगैरह अदा कर सकें। दीना और गेहू बोना चाहता था। इसलिए एक सालके लिए किरायेपर उसने और जमीन ले ली। खूब गेहू बोया और फसल भी खूब हुई। लेकिन जमीन गावसे दूर पडती थी और गल्ला मीलो दूरसे गाडीमें भर-भरकर लाना होता था। कुछ दिनो बाद दीनाने देखा कि कुछ बडे-बडे लोग अलग फार्म डालकर रहते हैं और वे खूब पैसा कमा रहे हैं। उसने सोचा—

"अगर मैं इकट्ठी कायमी जमीन ले लू और वही घर बसाकर रहूं तो बात ही दूसरी हो जाय । तब आराम रहे और दौड-धूप आवा-जाईकी इल्लत भी बच जाय । यही करना चाहिए ।"

इस तरह इकट्ठी और कायमी जमीन खरीदनेका सवाल बार-बार उसके मनमें उठने लगा ।

तीन साल इस तरह निकले । जमीन किरायेपर लेता और गेहू बोता । मौसम मुनासिब गये, काश्त अच्छी हुई और दीनाके पास माल जमा होने लगा । वह इसी तरह सतोषसे बढता जा सकता था । लेकिन हर साल और लोगोसे जमीन किराये-पर लेने और उसके लिए कोशिश और तरद्दुद करनेके कामसे वह थक गया था । जहा जमीन अच्छी होती, वही लेनेवाले दौड पडते । इससे बहुत चौकस-चौकशा और होशियार न रहा जाता तो जमीन मिलना असभव था । यह परेशानीकी बात थी । तिसपर तीसरे साल ऐसा हुआ कि दीनाने एक महाजनके साझेमें कुछ काश्तकारोसे एक जमीन किराये ली । जमीन जोत-गोडकर तैयार हो चुकी थी कि कुछ तनाजा हो गया और किसान लोग झगडा लेकर अदालत पहुचे । अदालतसे मामला बिगड़ गया और की-कराई मेहनत बेकार गई ।

दीनाने सोचा कि अगर कही जमीन मेरी कायमी मिल्कियतकी होती तो मै स्वाधीन होता और काहे को यह पचडा बनता और बखेडा बढता ।

सो वह जमीनके लिए निगाह रखने लगा । आखिर एक किसान मिला जिसने एक हजार एकड जमीन खरीदी थी, लेकिन पीछे उसकी हालत संभली न रही । अब मुसीबतमें पडकर वह उसे सस्ती देनेको तैयार था । दीनाने बात उससे चलाई और सौदा करना शुरू किया । आदमी मुसीबतमें था, इससे दीना भाव-दरमें कसा-कसी भी कर सका । आखिर कीमत एक हजार रुपये तय पाई । कुछ नकद दे दिया जाय, बाकी फिर । सौदा पक्का हो ही गया था कि एक सौदागर अपने घोडेके दाने-पानीके लिए उसके घरके आगे ठहरा । उससे दीनाकी बातचीत जो हुई तो सौदागरने कहा कि मैं नर्मदा नदीके उस पारसे चला आ रहा हू । वहा १५०० एकड उम्दा जमीन कुल पाच सौ रुपयेमें मैंने खरीदी थी । सुनकर दीनाने उससे फिर और सवाल पूछे । सौदागरने कहा—

"बात यह है कि अफसर-चौधरीसे मेल-मुलाकात करनेका हुनर चाहिए। सौसे बढ़ती रुपये तो मैंने रेशमी कपड़े और गलीचे देनेमें खर्च किये होंगे। फिर शराब, फल-मेवोंकी डालिया, चाय-सेट वगैरहके उपहार अलग। नतीजा यह कि फी एकड़ मुझे जमीन आनोंके भाव पड़ गई।" कहकर सौदागरने अपने दस्तावेज सब दीनाके सामने कर दिये।

फिर कहा—"जमीन ऐन नदीके किनारे है और सारे-का-सारा किता इकटठा है। जरखेज इतना कि क्या पूछो।"

दीनाने इसपर उत्सुकतापूर्वक सौदागरसे सवाल-पर-सवाल किये। उसने बताया—

"वहा इतनी जमीन है, इतनी, कि तुम महीनों चलो तो पूरी न हो। वहाके लोग ऐसे सीधे है जैसे भेड और जमीन समझो मुफ्तके भाव तुम ले सकते हो।"

दीनाने सोचा, यह ठीक रहेगा। भला मै अब कुल हजार एकड़के लिए हजार रुपये क्यो फसाऊ? अगर वहा जाकर इतना रुपया जमीनमें लगाऊ तो यहासे कई गुनी ज्यादा जमीन मुझे पड जायगी।

(५)

दीनाने पूछताछ की कि उस जगह कैसे जाया जाय। सौदागरने सब बतला दिया। वह चला गया तो दीनाने भी अपनी तैयारी शुरू की। बीबीको कहा कि घर देखना-भालना और खुद एक आदमी साथ ले यात्राको निकल पड़ा। रास्तेमें एक शहरमें ठहरकर, वहासे चायके डिब्बे और शराब और इसी तरह और उपहारकी चीजें जो सौदागरने बताई थी, ले ली। फिर दोनो बढ़ते गये, बढ़ते गये। चलते-चलते आखिर सातवें रोज वहा पहुंचे जहासे कोल लोगोकी बस्ती शुरू होती थी। देखा तो यहा सौदागरने बताई वही बात थी। दरियाके पास जमीन-ही-जमीन थी। सब खाली। ये लोग उससे काम न लेते थे। कपड़े या सिरकीके तंबूमें रहते, शिकार करते, मवेशी पालते, और ऐसे ही मौज करते थे। न रोटी बनाना जानते थे, न नाज उगाना सीखे थे। दूधका छाछ-मठा बनाते, पनीर बनाते, और उसीकी एक तरहकी शराब भी तैयार

कर लेते थे । ये सब काम औरतें करती । मर्द खाने-पीने और फुर्सतके वक्त चैनकी बसरी बजानेमें रहते । वे लोग मजबूत और स्वस्थ थे और काम-धामके नाम बिना कुछ किये मगन रहते थे। अपनेसे बाहर उन्हें कुछ पता न था। पढ़ना-लिखना सीखे नही थे और हिन्दीतक नही जानते थे। पर थे भले सीधे स्वभावके। दीनाको देखते ही वे अपने तंबुओसे निकल आये और उसके चारो तरफ जमघट लगाकर खडे हो गये । उनमेंके एक दुभाषियेकी मार्फत दीनाने बतलाया कि मैं जमीनकी खातिर आया हू । वे लोग बडे खुश मालूम हुए। बडी आवभगतके साथ वे उसे अपने अच्छे-से-अच्छे डेरेमें ले गये । वहा कालीनपर बिछे गद्देपर बिठाया और खुद नीचे चारो ओर घिरकर बैठ गये । उसे पीनेको चाय दी और दारू भी । उसकी मेहमानीमें ताजा बकरा हलाल किया गया और बढ़-चढ़कर दावत हुई। दीनाने भी गाडीमेंसे अपने पाससे भेंटकी चीजें निकाली और सबको थोडी-थोडी चाय बाटी । कोल लोग बडे खुश थे । उन्होने आपसमें इस अजनबी-की बाबत खूब चर्चा की। फिर दुभाषियेसे कहा कि मेहमानको सब समझा दो।

दुभाषियेने कहा कि ये लोग कहना चाहते है कि हम आपके आनेसे खुश है। हमारे यहाका कायदा है कि मेहमानकी खातिर जो हमसे बन सके करें। आपकी कृपाके हम कृतज्ञ है। आपने जो हमें भेंट दी है, सो अब आप बतलाइए कि हमारे पास कौन-सी चीज है जो आपको सबसे पसंद है, ताकि हम उसीसे आपकी खातिर कर सक ।

दीनाने जवाब दिया कि जिस चीजको देखकर मै बहुत खुश हू, वह आपकी जमीन है। हमारे यहा जमीनकी कमी है और वह उपजाऊ भी इतनी नही होती लेकिन यहा उसका कोई पार नही है और वह जमीन जरखेज भी खूब है। मैने तो अपनी आखो से यहा जैसी धरती दूसरी देखी नही।

दुभाषियेने दीनाकी बात अपने लोगोको समझा दी। कुछ देर वे आपसमें सलाह करते रहे। दीना समझ नही सका कि वे क्या कह रहे है । लेकिन उसने देखा कि वे बहुत खुश मालूम होते है, बडे हस रहे है और जोर-जोरसे बोल रहे है। अनंतर वे चुप हुए और दीनाकी तरफ देखने लगे । दुभाषियेने कहा—

"वे चाहते है कि मैं आपको कहूं कि आपके उपहारके बदलेमें हम बडी

खुशीके साथ जितनी आप चाहते है जमीन आपको देंगे । बस हाथसे बतला दीजिए कि यह और इतनी जमीन आपको चाहिए और वह आपकी हो जायगी।"

कोल लोग फिर आपसमें बात करने लगे। मालूम पडा कि जैसे उनमें कुछ दुविधा है । दीनाने पूछा कि उन लोगोमें अब यह किस बातकी अटक है । दुभाषियेने बताया कि उनमें कुछकी राय है कि सरदारसे जमीन देनेके बारेमें और पृछ लेना चाहिए, गैर-हाजिरीमें कुछ कर डालना ठीक नही है । दूसरोका खयाल है कि इस बातमें सरदारके लौटनेका इतजार देखनेकी जरूरत नही है, जरा-सी तो बात है ।

(६)

यह विवाद चल रहा था कि एक आदमी बडी-सी बालदार टोपी पहिने वहा आन पहुचा । सब चुप होकर उसके सम्मानमें खडे हो गये । दुभाषियेने कहा कि यही हमारे सरदार है ।

दीनाने फौरन अपने सामानमेंसे एक बढिया लबादा निकाला और चायका एक बडा डिब्बा और ये चीजें सरदारको भेंट की । सरदारने भेंट स्वीकार की और अपने आसनपर आ बैठा । बैठते ही कोल लोगोने उससे कुछ कहना शुरू किया । सरदार कुछ देर सुनता रहा । फिर उसने उन्हें चुप रहनेका इशारा किया। उसके बाद दीनाकी तरफ मुखातिब होकर हिन्दुस्तानीमें कहा—

"इन भाइयोने जो कहा ठीक है । जो जमीन चाहे चुन लो । हमारे यहा उसका घाटा नही है ।

दीनाने सोचा कि मै मनचाहे जितनी जमीन कैसे ले सकता हू। पक्का करनेके लिए दस्तावेज वगैरह भी तो चाहिए। नही तो जैसे आज इन्होने कह दिया कि यह तुम्हारी है, पीछे वैसे ही उसे ले भी सकते है ।

प्रकटमें उसने कहा—"आपकी दयाके लिए मै कृतज्ञ हू। आपके पास बहुत धरती है और मुझे थोडी-सी चाहिए। लेकिन मुझे भरोसा होना चाहिए कि मेरा अपना छोटा-टुकडा कौनसा है और यह कि वह मेरा ही है । क्या ऐसा नही हो सकता कि जमीनको नाप लिया जाय और उतना टुकडा फिर मेरे हवाले कर दिया जाय। मरना-जीना ईश्वरके हाथ है और संसारमें यही चक्कर चलता

है। आप दयावान लोग तो मुझे यह देते है, पर हो सकता है कि पीछे आपकी औलाद उसीको वापिस ले लेना चाहे। तब—"

सरदारने कहा—"तुम्हारी बात ठीक है। जमीन तुम्हारे हवाले ही कर दी जायगी।—"

दीनाने कहा—"सुना है यहा एक सौदागर आया था। उसको भी आपने जमीन दी थी और उस बाबत कागज पक्का कर दिया था। वैसे ही मैं चाहता हूं कि कागज पक्का हो जाय।"

सरदार समझ गया।

बोला—"हा, जरूर। यह तो आसानीसे हो सकता है। हमारे यहा एक मुशी है, कस्बेमें चलकर लिखा-पढी पक्की करली जायगी और रजिस्ट्री हो जायगी।"

दीनाने पूछा—"कीमतकी दर क्या होगी ?"

"हमारी दर तो एक ही है। एक दिनके एक हजार रुपये।"

दीना समझा नही। बोला—"दिन! दिनका हिसाब यह कैसा है? यानी आपका मतलब कितने एकड?"

सरदारने कहा—"वह सब गिनना-गिनाना हमसे नही होता। हम तो दिनके हिसाबसे बेचते हैं। जितनी जमीन एक दिनमें पैदल चलकर तुम नाप डालो, वही तुम्हारी। और कीमत है ही दिन भरकी एक हजार।"

दीना अचरजमें पड गया। कहा—"एक दिनमें तो बहुत सारी जमीनके गिर्द चला जा सकता है।"

सरदार हसा। कहा—"हा, क्यो नही। बस, वह सब तुम्हारी।" लेकिन एक शर्त है। अगर तुम उसी दिन उसी जगह नही आ गये, जहासे चले थे तो कीमत जब्त समझी जायगी।"

"लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि मैं इस जगह से चला था।"

"क्यो, हम साथ चलेंगे और जहा तुम ठहरनेको कहोगे ठहरे रहेंगे। उस जगह से शुरू करना और वही लौट आना। साथ फावडा ले लेना। जहा जरूरी समझा निशान लगा दिया। हर मोडपर एक गड्ढा किया और उसपर घासको जरा ऊंचा चिन दिया। पीछे फिर हम लोग चलेंगे और हलस इस

निशानसे उस निशानतक हदबन्दी खीच देंगे । अब दिनभरमें जितना चाहो बड़े-से-बडा चक्कर तुम लगा सकते हो । पर सूरज छिपनेसे पहले जहासे चले थे वहा आ पहुचना। जितनी जमीन तुम इस तरह नाप लोगे वह तुम्हारी हो जायगी ।"

दीना खुश हुआ। तय हुआ कि अगले सवेरे ही चलना शुरू कर दिया जायगा । फिर कुछ गपशप हुई, खाना-पीना हुआ। ऐसे ही करते रात आ गई। दीनाको उन्होने खूब आरामका परोका बिस्तर बना दिया और वे लोग रातभरके लिए विदा हो गये । कह गये कि पौ फटनेसे पहले ही तडके वे आ जायगे ताकि सूरज निकलनेसे पहले-पहले मुकामपर पहुच जाया जाय।

(७)

दीना अपने परोक बिस्तरपर लेटा तो रहा, पर उसे नीद नही आई। रह-रहकर वह जमीनके बारेमें सोचने लगता था ।

"चलकर मैं कितनी जमीन नाप डालूगा, कुछ ठिकाना है! एक दिनमें पतीस मील तो आसानीसे कर ही लूंगा। दिन आजकल लबे होते है। और पैंतीस मील!—कितनी जमीन उसमें आ जायगी! उसमें से घटियावाली तो बेच दूगा या किरायेपर उठा दूंगा। लेकिन उसमें जो चुनी हुई उमदा होगी वहा अपना फार्म बनाऊगा। दो दर्जन तो बैल फिलहाल काफी होगे। दो आदमी भी रखने होगे। कोई डेढ-सौ एकडमें तो काश्त करूगा। बाकी चराईके लिए।"

दीना रातभर पडा कुलाबे मिलाता रहा । गई रात कही थोडी नीद उसे पडी। आख झपी होगी कि उसे एक सपना दिखाई दिया। वह उसी डेरेमें है कि किसीके बाहरसे खिलखिलाकर हसनेकी आवाज उसके कानोमें आई। अचरज हुआ कि यह कौन हो सकता है। उठकर बाहर आकर देखा कि कोल लोगोका वह सरदार ही बाहर बैठा ठट्टा दे-देकर हस रहा है। हसीके मारे अपना पेट पकड-पकड रहता है । पास जाकर दीनाने पूछा—"आप ऐसा हस क्यो रहे है?" लेकिन अभी पूछ पाया नही था कि देखता क्या है कि वहा सरदार तो है नही, बल्कि वह सौदागर बैठा है जो अभी कुछ दिन पहले उसे अपने देश मिला था और जिसने इस जमीनकी बात बताई थी। तब दीना उससे पूछनेको हुआ कि यहा

तुम कैसे हो और कब आये । लेकिन देखा तो वह सौदागर भी नही, बल्कि वह पुराना किसान है जिसने मुद्दत हुई तब सतलज पारकी जमीनका पता दिया था। लेकिन फिर जो देखता है तो वह वह किसान भी नही है, बल्कि खुद शैतान है, जिसके खुर है और सीग है । वही वहा बैठा ठट्ठा मारकर हस रहा है । सामने उसके एक आदमी पडा हुआ है—नंगे पैर, बदनपर बस कुर्त्ता-धोती । जमीनपर वह आदमी औधे मुह बेहाल पडा है । दीनाने सपनेमें ही गौरसे देखा कि ऐसे पडा हुआ आदमी वह कौन है और कैसा है । देखता क्या है कि वह आदमी दूसरा कोई नही, खुद दीना ही है और उसकी जान निकल चुकी है । यह देख मारे डरके वह घबरा गया । इतनेमें उसकी आख खुल गई।

उठकर सोचा कि सपनेमें आदमी जाने क्या-क्या वाहियात बातें देख जाता है । अह! यह सोचकर मुह मोड दरवाजेके बाहर झाककर जो देखा तो सवेरा होनेवाला था । सोचा, समय हो गया । उन्हें अब जगा देना चाहिए । चलनेमें देर ठीक नही।

वह खडा हो गया और गाडीमें सोते हुए अपने आदमीको जगाया । कहा कि गाडी तैयार करो। खुद कोल लोगोको बुलाने चल दिया ।

जाकर कहा, "सवेरा हो गया है । जमीन नापने अब चल पडना चाहिए।" कोल लोग सब उठे और इकट्ठे हुए और सरदार भी आ गये । चलनेसे पहले उन्होंने चायकी तैयारी की और दीनाको चायके लिए पूछा। लेकिन चायमें देर होनेका खयालकर उसने कहा—"अगर जाना है तो हमको चल देना चाहिए । वक्त बहुत हो गया ।"

(८)

कोल तैयार हुए और सब चल पडे । कुछ घोडेपर, कुछ गाडीमें । दीना नौकरके साथ अपनी छोटी बहलीमें सवार था । फावडा उसने साथ रख लिया था । खुले मैदानमें जब वे पहुंचे, तडका फूट ही रहा था । पास एक ऊंची-टेकडी थी, पार खुला बिछा मैदान । टेकडीपर पहुंचकर गाड़ी-घोडोसे सब उतर आये और एक जगह जमा हुए। सरदारने फिर आख आगे जाने कितनी दूरतक फैले मैदानकी तरफ हाथ उठाकर दीनासे कहा कि देखते हो ? यह सब,

आख जाती है वहांतक, हम लोगोकी ही जमीन है। उसमें जो तुम चाहो ले लो।

दीनाकी आखें चमक उठी। धरती एकदम अछूती पडी थी। बस हथेलीकी तरह हमवार और मुलायम। काली ऐसी कि बिनौला। और जहा कही जरा निचान था वहा छाती-छाती जितनी तरह-तरह की हरियाली छाई थी।

सरदारने अपने सिरकी रुएदार टोपी उतारी और धरतीपर रख दी। कहा—

"यह निशान रहा। यहासे चलो और यही आ जाओ। जितनी जमीन चल लोगे बस वही तुम्हारी हो जायगी।"

दीनाने भी रुपये निकाले और टोपीपर गिनकर रख दिये। फिर उसने पहना हुआ अपना कोट उतार डाला, धोतीको कस लिया। अगोछेमें रोटी रक्खी, आस्तीनें चढाई, पानीका बदोबस्त साथ किया, आदमीसे फावडा ले लिया, और चलनेको उद्यत खडा हो गया। कुछ क्षण सोचता रह गया कि किस तरफको चलना बेहतर होगा। सभी तरफका लालच होता था।

उसने तय किया कि आगे देखा जायगा, पहले तो सामने सूरजकी तरफ ही चला चलू। एक बार पूरबकी ओर मुह करके वह खडा हो गया, अगडाई लेकर बदनका प्रमाद हटाया और धरतीके किनारे सूरजके मुह चमकानेका इतजार करने लगा।

सोचने लगा कि मुझे वक्त नही खोना चाहिए और ठड-ठडम रास्ता अच्छा पार हो सकता है। सूरजकी पहली किरनका दिगन्तसे उनकी ओर आना था कि दीना, कंधेपर फावडा सभाल, खुले मैदानमें कदम बढा चला।

शुरूमें वह न धीमे चला, न तेज। हजार-एक गज चलनेपर वह ठहरा। वहा एक गड्ढा किया और घास ऊची चिन दी कि आसानीसे दीख सके। फिर आगे बढा। अब उसके बदनमे फुर्ती आ गई और उसने चाल तेज कर दी। कुछ देर बाद दूसरा गड्ढा उसने खोदा।

अब पीछे मुडकर देखा। सूरजकी धूपमें टेकडी साफ दीखती थी। उसपर आदमी खडे थे और गाडीके पहियोके अरे तक चमकते दीखते थे। कोई अंदाज तीन मील तो वह आ गया होगा। धूपमें ताप आता जाता था। कुर्तेपरसे वास्कट उतारकर उसने कधेपर फेंक ली और फिर चल पडा। अब खासी गरमी होती

जाने लगी। उसने सूरजकी तरफ देखा। वक्त हो गया था कि कुछ खाने-पीनेकी भी सोची जाती।

"एक पहर तो बीत गया। लेकिन दिनमें पहर चार होते हैं। अंह, अभी क्या लौटना। अभी जल्दी है। लेकिन जूते उतार डालू।" यह सोच उसने जूते उतारकर धोतीमें खोस लिये और बढ चला। अब चलना आसान था।

सोचा, "अभी तीन-एक मील तो और भी चला चलू। तब दूसरी दिशा लूंगा। कैसी उम्दा जगह है। इसे हाथसे जाने देना हिमाकत है। लेकिन क्या अजब बात है कि जितना आगे बढ़ो उतनी जमीन एक-से-एक बढकर मिलती जाती है।"

कुछ देर वह सीधा बढा चला। फिर पीछे मुडकर देखा तो टुकडी मुश्किलसे दीख पड़ती थी और उसपरके आदमी रेंगती चींटीसे मालूम होते थे और वहा धूपमें जाने क्या कुछ चिलकता हुआ-सा दीख पडता था।

दीनाने सोचा, "ओह, मैं इधर काफी बढ़ आया हू। अब लौटना चाहिए।" पसीना बेहद आ रहा था और प्यास भी लग आई थी। "चलो लौटूं।"

यहा ठहरकर उसने गड्ढा किया, ऊपर घासका ढेर चिन दिया। उसके बाद पानी पीकर सीधी बाईं तरफ मुड लिया। चला चलता गया, चला चलता गया। घास ऊंची थी और गरमी बढ़ रही थी। वह थकने लगा। उसने सूरजकी तरफ देखा। सिरपर दोपहरी हो आई थी।

सोचा, अब जरा आराम ले लेना चाहिए। वह बैठ गया। रोटी निकालकर खाई और कुछ पानी पिया। लेटा नही कि कही नीद न आ जाय। इस तरह कुछ देर बैठ फिर आगे बढ़ लिया।

पहले तो चलना आसान हुआ। खानेसे उसमें दम आ गया था। लेकिन गरमी तीखी हो चली और आखोमें उसके ऊंच-सी आने लगी। तो भी वह चलता ही चला गया। सोचा कि तकलीफ घडी-दो-घड़ीकी है, आराम जिंदगी भरका हो जायगा।

इस तरह भी उसने काफी लंबी राह नापी। वह बाईं तरफको मुड़नेवाला ही था कि आगे जमीन नशेबकी दिखाई दी। उसने सोचा कि इस टुकड़ेको छोड़ना

तो मूर्खता होगी। यहा सनीकी बाडी ऐसी उगेगी कि क्या कहना। यह सोच उसने उस टुकडेको भी नाप डाला और पार आकर गड्ढेका निशान बना दिया। फिर दूसरी तरफ मुडा। जो टेकडीकी तरफ देखा तो तापके मारे हवा कापती मालूम हुई। उस कपकपीके धुधकारेमेंसे वह टेकडीकी जगह मुश्किलसे चीन्ह पडती थी।

दीनाने सोचा कि क्षेत्रकी ये दो भुजाए मैंने ज्यादा नाप डाली है। अब इधर कुछ कम ही रहने दू। वह तेज कदमोसे तीसरी तरफ बढा। उसने सूरजको देखा। सूरज कोई दो-तिहाई अपना चक्कर काट चुका था और दीना अपने रकबे-की तीसरी सिम्तमें दो मील मुश्किलसे कर पाया था। मुकामसे अभी वह दस मील दूर था। उसने सोचा कि छोडो, जाने भी दो। मेरी जमीनकी एक बाजू छोटी रह जायगी तो छोटी सही। लेकिन अब सीधी लकीरमें मुझे वापिस चले चलना चाहिए। जो ऐसे कही मै दूर निकल गया तो बाजी गई। अरे, इतनी ही जमीन क्या थोडी है ?

सो दीनाने वहा तीसरे गड्ढेका निशान डाल दिया और टेकडीकी तरफ मुह कर ठीक उसी सीधमें चल दिया।

(६)

नाककी सीध बाधकर वह टेकडीकी तरफ चला। लेकिन अब चलते मुश्किल होती थी। धूप उसका सत ले चुकी थी। नगे पैर जगह-जगह कट और छिल गये थे और टागें जवाब दे रही थी। जरा आराम करनेका उसका जी हुआ, लेकिन यह कैसे हो सकता था ? सूर्यास्तसे पहले उसे पहुच जाना था और सूरज किसीकी बाट देखता बैठा नही रहता। वह पल-पल नीचे ढल रहा था।

उसके मनमें सोच होने लगा कि यह मुझसे बडी भूल हुई। मैंने इतने पैर पसारे क्यो ? अगर कही वक्ततक न पहुचा तो ?

उसने फिर टेकडीकी तरफ देखा, फिर सूरजकी तरफ। मुकामसे अभी वह दूर था और सूरज धरतीके पास झुक रहा था।

दीना जी तोड़ चलने लगा। चलनेमें सास फूलती और कठिनाई होती थी। पर तेज-पर-तेज कदम वह रखता गया। बढा चला, लेकिन जगह अब भी दूर

बनी थी। यह देख उसने भागना शुरू किया। कंधेसे वास्टक फेंक दी, जूते दूर हटाए, टोपी अलग की बस साथमें टेकनके तौरपर वह लंबा हल्का फावडा रहने दिया।

रह-रहकर सोच होता कि मैं क्या करूं ? मैंने बिसातसे बाहर चीज हथियानी चाही। उसमें बना काम बिगडा जा रहा है। अब सूरज छिपनेसे पहले मैं वहा कैसे पहुचूगा ?

इस सोच और डरमे वह और हाफने लगा। कुर्त्ता पसीनेमें तर हो गया था, धोती गीली होकर चिपकी जा रही थी और मुह सूख गया था। लेकिन वह भागता जाता था। छाती उसकी लुहारकी धौकनीकी तरह चल उठी, दिल भीतर हथौड़ेकी चोट-सा धडकने लगा। उधर टागें बेबस हुई जा रही थी। दीनाको डर हुआ कि इस थकानके मारे कही गिरकर ढेर ही न हो जाय।

यह हाल था, पर रुक वह नही सका। इतना भागकर भी अगर मै अब रुकूंगा तो वे सब लोग मुझपर हसेंगे और बेवकूफ बनायेंगे। इसलिए उसने दौड़ना न छोडा, दौडे ही गया। आगे कोल लोगोंकी आवाज सुन पडती थी। वे उसको जोर-जोरसे कहकर बुला रहे थे। इन आवाजोपर उसका दिल और सुलग उठा। अपनी आखिरी ताकत समेट वह दौडा।

सूरज धरतीसे लगा जा रहा था। तिरछी रोशनीके सबब वह खूब बडा और लहू-सा लाल दीख रहा था। वह अब डूबा, अब डूबा। सूरज बहुत नीचे पहुच गया था। लेकिन दीना भी जगहके बिलकुल किनारे आ लगा था। टेकडीपर हाथ हिला-हिलाकर बढावा देते हुए कोल लोग उसे सामने दिखाई देते थे। अब तो जमीनपर रक्खी वह टोपी भी दीखने लगी, जिसपर उसकी रकम भी रक्खी थी। वही बैठा सरदार भी दिखाई दिया—वह पेट पकडे हंस रहा था।

दीनाको अपने सपनेकी याद हो आई।

उसने सोचा कि हाय, जमीन तो काफी नाप डाली है, लेकिन क्या ईश्वर मुझे उसके भोगोके लिए बचने देगा ? मेरी आन तो गई दीखती है। मै मुकाम-तक अब नही पहुच सकूगा।

दीनाने हसरत-भरी निगाह से सूरजकी तरफ देखा। सूरज धरतीको छ

चुका था । कुछ हिस्सा डूब भी चुका था। वह बची-खुची अपनी शक्तिसे आगे बढा। कमर झुकाकर भागा, जैसे कि टागें साथ न देती हो। टेकड़ीपर पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो आया था। उसने ऊपर देखा—सूरज छिप चुका था। उसके मुहसे एक चीख-सी निकल गई! ओह, मेरी सारी मेहनत व्यर्थ गई! यह सोचकर वह थमनेको हुआ। लेकिन उसे सुन पडा कि कोल लोग अब भी उसे पुकार रहे है। उसे सहसा याद आया कि वे लोग ऊचाईपर खडे है और उन्हें सूरज अब भी दीख रहा होगा। सूरज छिपा नही है, अगर्चे मुझको नही दीखता। यह सोचकर उसने लबी सास खीची और टेकडीपर बगटुट दौडा। चोटीपर अभी धूप थी। पास पहुचा और सामने टोपी देखी। बराबर सरदार बैठा वही पेट पकडे हस रहा था। दीनाको फिर अपना सपना याद आया और उसके मुहसे चीख निकल पडी। टागोने नीचेसे जवाब दे दिया। वह मुहके बल आगेको गिरा और उसके हाथ टोपीतक जा पहुचे।

"खूब! खूब!!" सरदारने कहा—"देखो, उसने कितनी जमीन ले डाली!"

दीनाका नौकर दौडा आया और उसने मालिकको उठाना चाहा। लेकिन देखता क्या है कि मालिकके मुहसे खून निकल रहा है!

दीना मर चुका था। कोल लोग दयासे और व्यगसे हसने लगे।

नौकरने फावडा लिया और दीनाके लिए कब्र खोदी और उसमें लिटा दिया। सिरसे पावतक कुल छ फुट जमीन उसे काफी हुई!

: १६ :

बदी छले, नेकी फले

पुराने जमानेकी बात है कि एक आदमी रहा करता था। वह नेक और दयालु था। धन-माल सब तरहका उसके पास खूब था और बहुत-से गुलाम थे। गुलाम लोगोको भी अपने इन नेक मालिकपर अभिमान था।

वे कहते थे, "इस धरतीपर तो हमारे मालिक जैसे दूसरे कोई होगे नही। हमें अच्छा खाने-पहननेको देते है और काम भी हमारे बस जितना ही हमें देते है।

मनमें कीना कोई नही रखते । न कभी किसीको सख्त लफ्ज निकालते हैं । और मालिकोंकी तरहके वह नही है, जो गुलामोसे ऐसे बरतते है जैसे जानवर। जो कसूर-बेकसूर उन्हें पीटते रहते है और कभी कोई मीठा बैन मुहसे नही निकालते। हमारे मालिक हमारा हित चाहते है, हमारी भलाईमें ही रहते है और सदा मीठी बानी बोलते है । हमें तो सब सुख है । और इससे बढ़कर इस हालतकी जदगीमें हमें और चाहना क्या हो सकती है ?"

इस तरहके बचनोसे नौकर लोग मालिककी बडाई किया करते थे । पर पाताल-लोकवासी शैतानको इसपर बडी खीझ होती थी कि देखो, ये नौकर-मालिक दोनो कैसे आपसमें हेल-मेलसे रहते हैं। सो नौकरोमेंसे उसने आलिब नामके एक नौकरको फुसलाया। उसे काबूमें करनेके बाद फिर कहा कि अब तुम औरोको भी बहकाओ । सो एक दिन जब सब-के-सब जमा थे और मालिककी बड़ाईकी बातें कर रहे थे, उस समय आलिब ऊची आवाजसे बोला—

"मालिककी नेकीकी इतनी बड़ाई क्यो करते हो, जी। हमी बेवकूफ हैं, नही तो और क्या । देखो, सुनो। अगर पाताल-लोकवासीका सब लोग कहा करो तो वह हमपर बडी कृपा करनेको कहते है। अब तो हम अपने मालिककी खिदमतमें रहते हैं और सब काममें उसकी मरजी निहारा करते है। मनमें उनके कुछ आया नही कि झट दौडकर हम उसे पूरा कर देते है। सो वह हमारी तरफ नेक न होगे तो क्या होगे । बात तो तब देखी जाय कि हम उनका कहा न करें और नुकसान करके रख दें । तब देखना है कि वह क्या करते हैं। उस समय औरोकी तरह गलतीका बदला गालीसे न दें, तब बात है । पर देख लेना कि जैसे बेरहम और मालिक होते है वैसे ही बेरहम हमारे-तुम्हारे मालिक भी निकलेंगे।"

पर और नौकरोने आलिबकी बात नही मानी। बोले कि नहीं जी, यह झूठी बात है। सो मतभेद पडा और बहस होने लगी। आखिर उनमें एक शर्त ठहरी। आलिबने कहा कि अच्छी बात है, मै उनमें गुस्सा लाकर दिखला दूंगा, नाकाम रहू तो मेरी पोशाक तुम्हारी। और जो जीत गया तो तुम सबको अपनी पोशाक मेरे हवाले करनी होगी। यह भी ठहरा कि जीतनेपर सब फिर उसकी हिमायत करेंगे और उसका कुछ बिगड़ने नही देंगे । सजा मिलेगी तो बचा लेंगे।

जो कहीं पांवमें बेडी डालकर हवालातम डाल दिया गया तो खोलकर रिहा कर देंगे। शर्त पक्की हो गई और आलिबने अगले ही दिन मालिकमें अविवेक ला दिखानेका वायदा किया।

आलिबके जिम्मे चराईका काम था। भेडें उसके सिपुर्द थी। उनके रेवडमें कुछ बडी ही कीमती जातकी भेडें भी थी। मालिक उन्हें बहुत चाहते थे और बडी ममता रखते थे। उन भेडोपर उन्हें नाज था।

अगले दिन सवेरेके वक्त मालिकके साथ कुछ मेहमान भेडोके बाडेमें आये। असलमें मालिक उन्हें अपनी बेशकीमती ऊन देनेवाली भेडें बतानेको साथ लाये थे। उनके आनेपर आलिबने साथियोकी तरफ आख मटकाकर इशारा किया कि अब देखो, क्या होता है। देखना, मालिक झल्लाते है कि नही?

नौकर-चाकर लोग बाडेके इधर-उधर घिरकर खडे थे। कोई बाडेके द्वारकी जालीमेंसे देख रहा था, कोई ऊपरसे ही उझककर। और पाताल-लोकसे शैतान महाराज भी आकर ऊपर पेडपर चढकर बैठ गये थे कि देखें, हमारा सेवक अपना काम कैसा करता है।

मालिक बाडेके अदर चलते हुए आये। मेहमानोको मुलायम बालोवाले बबकाने मेमने दिखाते जाते थे। एक उनमें सबसे ही आला किस्मका था, उसे खासतौरसे दिखाना चाहते थे।

बोले कि यो तो ये भेडें भी कम कीमती नही है, लेकिन एक तो बेशकीमती ही है। उसके सीग पास-पास है और ऐसे पेचदार और पैने कि बडे खूबसूरत लगते है। जानवर क्या है, मेरी आखका तो रुकन है।

बाडेमें अजनबी सूरतोको देखकर भेडें और उनके बच्चे इधर-उधर छूट-छूटकर भागते थे। सो मेहमान गौर जमाकर उस बेशकीमती जानवरको नही देख पाते थे। वह कही एक जगह खडा होता कि आलिब अनजान बना नागहानी रेवडको चल-बिचल कर देता था। सो फिर भेडें आपसमें रल जाती और किसी खासपर निगाह रखना मुश्किल हो जाता था। ऐसे मेहमान लोग ठीक-ठीक नजरमें ही नही ला सके कि आला किस्मका वह जानवर उनमें है कौन-सा। आखिर मालिक भी इससे परेशान आ गये। बोले, "भैया आलिब, मेहरबानी

करके उस मेमनेको पकड़कर तो जरा सामने लाओ। हां, वही पेचदार सींगका गौहर। देखो, होशियारीसे पकड़ना और छन दो-एकको उसे हाथोंमें थामे भी रखना।"

मालिकका कहना मुँहसे निकलकर पूरा नहीं हुआ कि आलिब शेरकी तरह उनमें घुसा और जोरसे जाकर गरदनपर उस मुलायम मेमनको धर दबाया। उसकी खालको एक हाथसे जोरसे मुट्ठीमें कसकर दूसरे हाथसे पिछली बाईं टांगसे पकडकर धरतीसे अधरमें उठाकर लटका लिया और मालिककी आंखोंके आगे ला किया। ऐसी झोंक और झटकेके साथ यह किया कि पतली टहनीकी तरह उस बेचारेकी टाँग मोच खा गई। आलिबने इस तरह टांग तोड ही दी और मेमना धरतीपर फड़फड़ाता गिरा। बाईं टांग तकलीफके मारे मुडकर लटक गई थी, कि आलिबने अब दाईं टांगसे पकड लटकाया। मेहमान और आस-पास घिरे नौकर-चाकर उस समय दर्दसे और सहानुभूतिके मारे जैसे चीख ही पडे। मगर ऊपर पेडपर चढकर बैठा हुआ शैतान अपने सेवक आलिबकी चतुराईपर प्रसन्न हुआ। मालिक गुस्सेके मारे ऐसे काले पड़ गये जैसे बिजली भरा बादल। भवें उनकी जुड आईं। पर वह सिर लटकाकर रह गये और एक शब्द भी नहीं बोले। मेहमान भी और नौकर-चाकर भी चुप्पी बाधे रह गये थे। सब शांत थे कि अब जाने क्या होगा, कि कुछ देर गुम-सुम रह कर मालिकने सिर झिटका, जैसे कोई बोझ ऊपरसे अलग किया हो। फिर सिरको सीधाकर आंखें अपनी आसमानकी ओर उठाईं। कुछ देर ऐसे आकाशमें मुह किये वह खड़े रहे कि इतनेमें चेहरेकी सलवट विलय हो गई और वहा नीचे आलिबकी तरफ देखकर मुस्कराहटके साथ बोले—

"ओ आलिब, तुम्हारे मालिकका तुम्हें हुक्म था कि मुझे गुस्सा दिलाओ। पर मेरे भगवान तुम्हारे मालिकसे जबर्दस्त है। मै तुमपर गुस्सा नही करूंगा, कि उल्टे तुम्हारे मालिकको गुस्सा करना हो जावे। तुम डरते हो कि मै तुम्हे सजा दूंगा। तुम्हारे मनमें मुझसे छूटनेकी भी बात रही है। तो सुनो आलिब, मैं सजा नही दूंगा। और जो तुम्हारी छूटनेकी मर्जी है तो अपने मेहमानोंके सामने मैं तुम्हे आजाद करता हूं। जहा चाहे जाओ। और पोशाक और जो पास हो सब साथ ले जा सकते हो।"

इसके बाद मालिक मेहमानोके साथ घर लौट आये । लेकिन शैतान दांत पीसता हुआ पेडसे धरतीपर आ गिरा और गिरकर पातालमें समा गया ।

: १७ :

मूरखराज

(१)

एक समय किसी देशमें एक किसान रहता था। खासी खाती-पीती हालत थी और तीन उसके बेटे थे। बलजीतसिह, धनवीरसिह और प्यारासिह। बलजीत फौजी निकला, धनवीर कुशल कारबारी बना, पर प्यारासिह मूरख था। लोग उसे मूरखराज कहते थे । एक लडकी भी थी, पीतमकौर । वह गूगी और बहरी थी। सो वह बिन व्याही ही रही। बलजीत तो राजाकी तरफसे फौजमें लडाई करने गया, धनवीर शहर जाकर एक सौदागरके साथ व्यापारमें लग गया। और मूरखराज लडकीके साथ घर ही रहा । वहा धरतीके काममें जुटकर रहता और कुनबेका गुजारा चलाता था। इसमें मेहनत उसे इतनी पडती थी कि कमर झुक चली ।

बलजीत ओहदे-पर-ओहदा पाता गया। सो एक अपना इलाका उसने खडा कर लिया और एक सरदारकी बेटीसे व्याह किया। अच्छी उसे तनख्वाह मिलती थी, ऊपरसे भत्ता। और पासका इलाका भी कम नही था, फिर भी खर्चके वक्त हाथ तग ही पाता था। असलमें पति जो लाता श्रीमती सब उडा देती थी। इससे हाथमें कभी पैसा नही बचता था ।

सो बलजीत एक बार अपने इलाकेकी जमीनमें तहसील करने गया, पर वहा कारिंदा बोला कि अजी, आमदनी हो कहा से और पैसा कैसे जमा हो ? पास हमारे न हल-बैल है, न औजार है। गाडी नही, तागा नही। पहले सामान हो, तब तो आमदनी हो।

इसपर बलजीत अपने पिताके पास गया । बोला—"पिताजी, तुम्हारे पास जमीन है, जायदाद है और माल है। लेकिन मुझे कुछ हिस्सा नही मिला। ऐसा

करो कि सब तीन हिस्सोंमें बाट दो और मेरा हिस्सा मुझे दे दो। मैं फिर उससे अपने इलाकेको बढा भी सकूगा।"

बूढे पिताने कहा—"तुमने घरमें कुछ लाकर रक्खा है जो तीसरा हिस्सा मैं तुम्हे दे दू ? और बेचारे मूरखराज और पीतमकौरके हितमें यह अन्याय होगा।"

बलजीत बोला, "मूरख तो मूरख है, और पीतम गूगी-बहरी है। और उमरकी भी काफी हो गई है। इलाके जायदादका वे भला करेंगे भी क्या ?"

बूढेने कहा—"खैर, मूरखसे इस बाबत पूछ तो लें।"

मूरख आया। पिताके पूछनेपर बोला—"पिताजी, जो ये चाहें, इनको दे दीजिए।"

सो बलजीत बापके मालमेंसे अपना तिहाई हिस्सा ले वहांसे चल दिया। उसके बाद फिर वह राजाकी फौजमें लडाईके लिए जा पहुचा।

उधर धनवीरने भी खासा धन पैदा किया और एक बडे व्यापारीकी लडकीसे शादी की। पर तबियत और पानेको भी होती थी। सो वह भी बूढे बापके पास आया और बोला—"मेरा भी हिस्सा मुझ दे दो।"

लेकिन धनवीरको भी हिस्सा देनेकी मर्जी बूढे बापकी नही थी। बोले—तुम क्या घरमें कुछ ले आये हो जो मागते हो? घरमें अब जो है मूरख की कमाई है। सो उसपर और बेचारी लडकीपर अन्याय मैं किस भाति करू ?"

धनवीर बोला—"मूरखको क्या जरूरत है। वह ठहरा मूरख। शादी उसकी हो ही नही सकती। कौन उसे अपनी बेटी देने बैठा है। और न गूगी पीतमके कामका कुछ है।"

यह कहकर धनवीर मूरखराजसे बोला कि सुन मूरख, आधा गल्ला मेरे हवाले कर दो। तुम्हारे हल-औजारमेंसे मुझे कुछ नही चाहिए। और डागरोमेंसे कुछ नही चाहिए। लेकिन वह जो बादामी रगकी घोडी है, बस वह मैं ले लूगा। वह तुम्हारे तो किसी खास कामकी है भी नही।

मूरख हसा, बोला—"जो चाहो, भाई ले लो। और कुछ मुझे चाहियेगा तो मैं मेहनत कर ही लूगा।"

सो धनवीरको भी अपना हिस्सा मिल गया। नाज-माल ढोकर वह अपने

शहर चलता बना और बादामी घोडी भी ले गया । बस एक जोडी बैल और हल लेकर अपने मा-बाप और बहनका भरण-पोषण करने और गुजर-बसर चलानेके लिए मूरखराज घर रह गया ।

(२)

लेकिन पातालमें रहता था एक शैतान । उसको बडी झुंझलाहट हुई कि देखो, तीनों भाइयोमें बटवारेका झगडा भी कोई नही हुआ। सब काम अमन-सुलहसे हो गया। सो उसने अपने तीन चरोको बुलाया।

बोला—"देखो जी, ये है तीन भाई। बलजीत फौजी, धनवीर व्यापारी और प्यारा मूरख। उन तीनोमें कलह होनी चाहिए। उनमें कलह नही हुई और तीनों हेल-मेलसे रहते हैं । असलमें खराबी सब उस मूरखकी है । उसीने मेरा काम बिगाड रक्खा है । देखो, तुम तीनो जाओ और एक-एक करके उन तीनों भाइयोको कब्जेमें लो । ऐसी तदबीर करो कि तीनो आपसमें नोच-खसोट करने लगें और जानके गाहक हो जायं। बोलो, कर सकोगे ?"

तीनो बोले, "जी, कर लेंगे।"

"भला, कैसे करोगे ?"

वे बोले—"पहले तो हम उनका धन-माल बरबाद कर देंगे । जब पास उनके खानेको न रहेगा तो तीनोको इकट्ठे एक जगह कर देंगे। बस फिर आपसमें वे ऐसे लडेंगे कि आप देखिएगा। यह पक्की बात है ।"

"वाह, खूब ठीक, तुम लोग काम समझते हो और होशियार हो। अब जाओ और लौटना तब जब वे एक-दूसरेकी जानके गाहक होचलें। नहीं तो तुम जानते हो तुम्हारी जीती खाल मै खिचवा लूगा ।

वे तीनो चर वहासे चले और एक गढेमें आकर सलाह करने लगे कि काम कैसे शुरू करें । खूब सोचा और खूब बहस की । असलमें सब अपने लिए हलका और दूसरेको भारी काम चाहते थे । आखिर पक्का हुआ कि परची डालकर तय कर लिया जाय कि किसके जिम्मे कौन भाई आता है । यह भी ठहरा कि अगर एक का काम पहले निबट जाय तो वह आकर दूसरेकी मददमें लगे । सो चरोंने परचियां डाली और दिन नियत किया कि उस रोज सब जने फिर इसी गढेमें

आकर जमा हो । तब देखा जायगा कि किसका काम पूरा हुआ और किसको मददकी जरूरत है ।

आखिर वह दिन आया और निश्चय मुताबिक तीनो चर गढेमें आकर जमा हुए । हरेक फिर अपनी बीती सुनाने लगा । पहला, जिसने बलजीत फौजीका जिम्मा लिया था, बोला—"भाई, मेरा तो काम खूब चल रहा है। कल ही बलजीत अपने बापके घर पहुच जायगा।"

औरोने पूछा—"यह तुमने किया कैसे ?"

बोला—"पहले तो बलजीतके अदर मैंने हिम्मत भरी । हिम्मतके साथ घमंड । आखिर इतना बूता उसमें हो आया कि अपने राजासे बोला कि आपको मैं सारी दुनिया फतह करके दे सकता हूं। राजाने इसपर उसे सिपहसालार बना दिया। कहा—"अच्छा, हिन्दुस्तानका मोरचा लो और जाकर वहाके राजाको शिकस्त दो ।" सो दोनोकी फौजें मोरचेपर मिली। पर इधर मैंने क्या किया कि बलजीतकी छावनीकी तमाम बारूद नम कर दी और हिन्दुस्तानी फौजके लिए रात-ही-रातमें फूसके इतने सिपाही बना दिये कि गिनतीसे बाहर।

"सो सवेरे बलजीतकी फौजने उन फूसी सिपाहियोको अपना घेरा डाले, देखा तो वह घबरा गई । बलजीतने गोली चलानेका हुक्म दिया। लेकिन तोप और बदूक चल कहासे सकती थी। सो बलजीतके सिपाही मारे डरके भेडोकी तरह भाग निकले । भागतेमें उन्हें पकड-पकडकर हिन्दुस्तानके राजाने बहुतोको जमके घाट उतार दिया। बलजीतकी बडी ख्वारी हुई। सो उसका सब इलाका छिन गया है और कल फासी चढा देनेकी बात है । बस अब मुझे एक दिनका काम बाकी रह गया है । जाकर उसे बस जेलसे छुडा देना है कि भागकर वह अपने घर आ पहुचे। तुममेंसे जिसे मददकी जरूरत हो कल मैं मददको पहुच सकता हूं।"

उसके बाद दूसरा चर जिसने धनवीरको हाथमें लिया था अपनी बीती सुनाने लगा। बोला—"मुझे तो भाई, किसी मददकी जरूरत है नही । मेरा भी काम खासी कामयाबीसे बढ रहा है। धनवीरको काबूमें लानेमें एक हफ्ता भी नही लगा। पहले तो खूब आराम दे मैंने उसे फुलाकर मोटा कर दिया। फिर तो उसका लोभ इतना बढ गया कि जो दीखे उसीको रुपयेसे खरीद लेनेकी तबियत होने लगी।

अब दुनिया भरका माल खरीदकर उसने भर लिया है। रुपया सारा उसमें गला जा रहा है, पर खरीद अब भी जारी है । अभी कर्जका रुपया वह लगाने लगा है। कर्जा उसके गलेमें पत्थरकी तरह बध गया है। ऐसा वह उसमें उलझता जा रहा है कि छुटकारा हो नही सकता । हफ्ते भरमें रुपया चुकतीका दिन आनेवाला है । उससे पहले ही जो माल उसने जमा किया है सो सब मै सत्यानाश करके रक्खे देता हू । कर्ज वह फिर चुका नही सकेगा और लाचार बापके घर भागा आयेगा।"

इसके बाद वे दोनो प्यारे मूरखवाले चरसे उसकी कहानी पूछने लगे। बोले—"क्यो दोस्त, अब तुम बताओ, तुम्हारा क्या हाल है ?"

वह बोला—"भाई, मेरा मामला तो ठीक रास्तेपर नही आ रहा है। बात कुछ बन ही नही रही है। पहले तो मैने उसके दूधके कटोरेमें कुछ मिला दिया कि पेटमें उसके पीर हो आये। उसके बाद जाकर पीट-पीटकर खेतकी धरतीको ऐसा कर दिया कि पत्थर। जोतो तो वह जुते ही नही। मैने सोचा था कि वह अब इसे क्या जोतेगा । पर मूरख जो अजब ठहरा। देखता क्या हू कि वह तो हल लिये चला आ रहा है । आकर जमीनको गोडना उसने शुरू कर दिया । पेटकी पीरसे कराह-कराह पडता था, पर बदा हल नही छोडता था। मैने फिर क्या किया कि हल तोडकर रख दिया। पर वह मूरख गया और घर जाकर दूसरा हल निकाल लाया और लगा फिर धरतीको गोडने। मै फिर धरतीके अदर घुस गया और हलकी पैडको पकड लिया। पर पकडे रहता कैसे ? हलपर अपना सारा बोझ देकर वह चलाने लगा, पैडकी धार पैनी थी और मेरा हाथ भी जख्मी हो गया । सो उसने सारा खेत जोत डाला है, बस जरा किनारी बची रह गई है । भाई, आकर मेरी मदद करो । क्योकि उसपर काबू नही चला तो हमारी सारी मेहनत अकारथ जायगी। वह मूरख बाज न आया और ऐसे ही धरतीके साथ कामयाब होता चला आया तो उसके भाइयोको भूखकी नौबत न आयेगी और सबके पेटके लायक यह अकेला ही पैदा कर लेगा।"

बलजीतवाले चरने कहा—"अच्छी बात है । मै कल तुम्हारी मददको आ रहे जाता हू ।"

इसके बाद तीनों चर अपने-अपने कामपर चले गये।

(३)

प्यारेने खेतकी सारी धरती गोड डाली थी। कुल एक नन्हीं किनार बची रह गई थी। उसीको पूरा करने वह आ जुटा। पेट पिरा रहा था, पर खेत का काम तो होना ही चाहिए। सो जोता बैल, घुमाया हल, और गुड़ाई शुरू कर दी। एक लीक उसने पूरी कर दी। दूसरेपर लौट रहा था तो हल फिसटता-सा मालूम हुआ, जैसे अदर किसी जडसे अटक गया हो। पर असलमें धरतीमें दुबक-कर बैठा था वह चर। उसने ही हलकी पैंडपर टागें अपनी कसकर लिपटा ली थीं और उसे चलनेसे रोक रहा था।

प्यारेने सोचा कि यह क्या अजब बात है। कल तो यहां कोई जड-वड थी नही। फिर भी यह जड यहा आई तो कहासे आई।

सो भुककर गहरे हाथ देकर धरतीके अदर उसने टटोला। अदर कुछ गीली-गीली और चिकनी चीज उसे छुई। प्यारेने उस चीजको पकडकर बाहर खीच लिया। जडकी तरहकी कोई काली वस्तु थी और कुलबुला रही थी। असलमें वह उस चरकी ही काया थी।

देखकर प्यारे बोला—"छि, क्या गध है।" कहकर हाथ ऊपर उठाया कि उस चीजको हलसे दे मारे।

पर यह देखकर वह चर चीख पडा। बोला—"मुझे मत मारो। जो बताओ मै वही तुम्हारे लिए करूगा।"

"तुम क्या कर सकते हो?"

"जो कहो वही।"

प्यारेने सिर खुजलाया, बोला—"मेरे पेटमें दर्द है। उसे अच्छाकर सकते हो?"

"जरूर कर सकता हूं।"

"तो करो अच्छा।"

सुनकर वह चर वही अदर धरतीमें घुस गया। वहा पंजोसे खरोच-खरोच आसपास टटोल, आखिर एक जड़ी खीचकर बाहर लाया। जडमेंसे उसकी,

तीन शाख निकल रही थी। लाकर प्यारेके हाथमें दे दी।

बोला—"यह देखिए, इनमेंसे जो कोई एक खायेगा उसके सब रोग दूर हो जायंगे।"

प्यारेने जडीको लिया। तीनोको अलग-अलग किया और एक उनमेंसे उसने खा ली। सो पेटका दर्द उसका खाते ही अच्छा हो गया।

इसके बाद चरने कहा—"मुझे अब छोड़ दीजिए। मै अब धरतीमें होकर सीधा पाताल चला जाऊगा और फिर नही लौटूगा।"

प्यारेने कहा—"अच्छी बात है, जाओ। और भगवान तुम्हारा भला करे।

भगवानका नाम प्यारेके मुहसे निकलना था कि जैसे जलमें ककड़ गिरकर गायब हो जाय वैसे ही वह चर धरतीमें गिरकर लोप हो गया। वहा निशानी में बस एक सूराख रह गया।

प्यारेने बाकी बची दोनो जडीको टोपीमें खोस ली और अपने हलमें लग गया। खेतकी बची किनार उसने पूरी कर दी। फिर हल उलटाकर अपने घर लौट चला। बैलोको खोलकर बाध दिया और घरके अंदर आया। वहा देखता है कि बडा भाई बलजीत और उसकी बीबी जीमने थालीपर बैठे है। बलजीतका इलाका-जायदाद सब जब्त हो गया था और जैसे-तैसे वह जेलखानेसे निकल भागकर यहा बापके घर दिन गुजारने आया था।

प्यारेको देखकर बलजीतने कहा—"प्यारे हम तुम लोगोके यहां रहने आये हैं। दूसरा बदोबस्त हो तबतक मै और मेरी बीवी तुम्हारे ऊपर है। खयाल रखना।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है। खुशीके साथ यहा रहिए।"

पर हाथ-मुह धोकर प्यारे जो आकर खाने साथ बैठने लगा तो बलजीतकी श्रीमतीको अच्छा नही लगा। प्यारेके कपडोसे उसे बास आती मालूम हुई। अपने पतिसे बोली—"ऐसे गवार देहातीके साथ बैठकर मुझसे नही खाया जाता।"

सो बलजीतने कहा—"प्यारे तुम्हारी भाभी कहती है कि तुममें बास आती है। सो तुम बाहर जाकर खा सकते हो।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है। यो भी रात मुझे बैलोकी सानी-पानीको

बाहर रहना था ।"

सो रोटी ली और दोहर कंधेपर डाल बाहर ढोरोकी सानी-पानीके काममें वह लग गया ।

(४)

अपना काम निबटाकर बचन मुताबिक उस रात बलजीतका चर मूरखवाले अपने साथीकी तलाशमें आया । वह मूरख-प्यारेको बसमें लानेमें अपने साथीकी मदद करने आया था। पर प्यारेके खेतपर आकर उसने बहुतेरी खोज-ढूंढ की। पर साथी तो मिला नही, मिला वह धरतीका सूराख ।

सोचा—"जरूर कोई मेरे साथीपर विपत पड़ी है । सो मुझे उसकी जगह भरनी चाहिए । खेत तो खैर उसने पूरा खोद दिया है । सो चलकर चराईकी जगह उस मूरखकी खबर लेता हूं।"

सो जाकर शैतानके बच्चेने मूरखकी जमीनको पानी-ही-पानीसे भर दिया जिससे घास सब कीचसे लथपथ हो गई ।

मूरख सवेरेके वक्त बाहर चला। हंसिया उसने पैना लिया कि जाकर घास काटनी है । कटाई उसने शुरू की । पर दो-एक हाथ मारता था कि क्या देखता है कि हसिया मुड-मुड जाता है और घास कटती नही है। कही और धार पैनानेकी तो जरूरत नही आ गई। कुछ देर तो प्यारे कोशिश करता रहा। फिर बोला—"ऐसे नही, घर चलकर कुछ लाऊ कि हसिया सीधा हो जाय। चलो शामकी रोटी भी लिये आता हूं। देखा जायगा जो होगा। हफ्ता भर चाहे क्यो न लगे । मुझे भी घास काटकर ही छोडनी है ।"

चरने यह सुना तो सोचा—"यह मूरख तो लोहेका चना मालूम होता है। ऐसे यह बसमें नहीं आयेगा। कोई दूसरी तरकीब चलनी चाहिए।"

प्यारे लौटा । हसिया सीधा किया और पैनाया और फिर घास काटनेपर आ भिडा । पर चर इस बार धरतीमें घुसकर क्या करता कि हंसियेको बार-बार बेंटसे पकडकर ऐसे घुमाता कि नोक उसकी धरतीमें आकर लगती। सो प्यारेको काममें बडी कठिनाई पडी। पर वह भी लगा ही रहा और दल-दलकी जरासी जगहको छोड़ आखिर सब घास उसने काट ही डाली। तब चर आकर उस दल-

दलकी धरतीमें बैठ गया । बोला—"चाहे मेरे पजे कट जायं, घास मैं उसे नही काटने दूंगा ।"

मूरख अंतमें उस दलदली जमीनपर पहुचा। घास वहा ऐसी घनी तो नही थी, फिर भी हसियाके बस न आती दीखती थी। प्यारेको गुस्सा चढ आया और हंसियाको पूरे जोरसे घुमाकर मारने लगा। वह चर तब हार रहा। हसियाका साथ पकडे रहना उसे दूभर होता जाता था। आखिर देखा कि यह बात भी ठीक नही बनी। सो एक झाडीमें वह घुस बैठा। होते-होते प्यारे उधर भी बढ आया। झाडीको हाथसे पकड हसिया जो उसने चलाया तो चरकी आधी पूछ कटकर अलग हो गई। खैर, घासकी कटाई खतमकर उसने बहनको बताया कि इसकी दबिया कर डालो। फिर खुद जाईके खेतपर पहुचा। हसिया साथ ले गया था। बेपूछका चर वहा पहले जा पहुचा था। उसने जईकी बालोको ऐसा उलझा दिया था कि हसिया उनकी कटाईके लिए बेकाम पड गया । सो मूरख घर गया और दातेदार दरात ले आया । उससे सारी जई उसने काट ली।

फिर बोला—"अब चलो, कल मकई शुरू करेंगे ।"

पुछकटे चरने यह सुना और मनमें कहने लगा कि खैर, यहा काबूमें नही आया तो क्या । चलकर मकईमें देखेंगे । सवेरेतककी ही तो बात है ।

सवेरे जल्दी ही वह चर खेतपर पहुच गया । पर वहा देखता क्या है कि मकई तो सब कटी बिछी है। प्यारेने रात ही रातमें सब काट डाली थी। सोचा था कि ऐसे दाने कम बिखरेंगे और सोफतेमें काम हो जायगा। यह देख चरको बड़ा गुस्सा हुआ।

"देखो न कि कमबख्तने मुझे लहूलुहान कर दिया है और थका मारा है । लडाई न हुई, यह तो आफत हो गई । क्या मूरखसे पाला पडा है कि रातको भी नही सोता । पार पाना उससे मुश्किल हो रहा है । खैर, मैं भी उसके पूलोमें घुसा जाता हू और सब अदरसे सडा दूगा ।"

सो वह चर जईके पूलोमें दाखिल हो गया और सडाद फैलाना शुरू किया । पहले तो वहा गरमी पहुचाई। पर इससे खुदको भी उसे ताप मिला और सरदीमें गरमी पाकर वह चैनमें सो गया।

प्यारे गाडी लेकर बहनके साथ जई ढोने आ पहुंचा। पूलोंके ढेरोंपर आ एक-एककर उन पूलोको उसने गाडीमें फेंकना शुरू किया । ऐसे दो-एक फेंके होगे कि जेली लेकर उसने ढेरको सहलाया । यह करना था कि जेलीकी नोक जाकर ऐन चरक बदनपर पडी और चर उसकी नोकमें छिद गया। जेलीको उठाया तो क्या दखता हूँ कि उसकी नोकपर पुछकटा कोई जतु-सा लिपटा हुआ है, कुलबुला रहा है और छूटनेकी कोशिश कर रहा है ।

"क्यो रे, गंदगीके कीडे, तू फिर यहा ?"

चर बोला—"जी नही, मैं दूसरा हू । पहला मेरा साथी था और मैं अब तुम्हारे भाई बलजीतपर लगा हुआ था।"

प्यारे बोला—"खैर, जो भी हो, तुम्हारी भी वही गति होगी।"

कहकर गाडीके पहियेकी हालसे वह उसे दे मारनेवाला ही था कि चर बोला—"मुझे छोड दीजिए । मै फिर आपको नही सताऊगा। बल्कि जो मुझे कहेंगे वही कर दूगा।"

"तुम क्या कर सकते हो ?"

"चाहे जितने मैं आपको सिपाही बना दे सकता हूं।"

"और सिपाही वे करेंगे क्या ?"

"जो चाहे काम आप उनसे लें । जो कहेंगे वही कर सकेंगे ।"

"गा-बजा भी सकेंगे ?"

"हा।"

"अच्छी बात है। तो बना दो मुझे कुछ सिपाही ।"

चर बोला—"यह देखिए, ऐसे जईका एक पूला ले लीजिए। उसे धरतीपर जमा दीजिए और यह मतर पढिये—

पूले- ले, सुन और मान,
मेरी तुझको यही जुबान ।
जहां-जहां हो तेरी सींक
वहीं हो उठे एक जवान ।"

प्यारेने पूला लिया, धरतीपर जमाया और चरका बताया मंतर पढ़ा।

पूला देखते-देखते बिनस गया और उसकी एक-एक बालकी जगह वर्दीसे लैस सिपाही खड़ा दिखाई दिया। एकके पास ढोल था, दूसरेके पास तुरही—ऐसे पूरे बैंडका सरअजाम था।

देखकर प्यारे खुश हुआ और खूब हसा। बोला—"यह तो बढ़िया बात रही। देखकर लड़किया कैसी खुश होंगी!"

चर बोला—"अब मुझे जाने दीजिए।"

प्यारेने कहा—"नही जी, सिपाही मै खाली पुआलके बनाऊगा। कोई मै भला उसके लिए नाजवाली बाल खराब करनेवाला थोड़े ही हू। सो बताओ कि सिपाही फिर पहले पूलेकी हालतमें कैसे आ सकते है ? सोचो, मुझे उनमेंसे नाज निकालना है कि नही ?"

चर बोला—तो यह मतर पढ़िए—

"सुनता है तू ओरे ज्वान,
मेरी है बस एक जुबान।
सींक-सींक था जैसा पहले
वैसा ही तू हो जा आन।"

प्यारेका यह मंतर कहना था कि सिपाही अतर्धान हो गये और जैसाका तैसा वहा पूला हो आया।

चर फिर हाथ जोडकर कहने लगा कि अब मुझे जाने दीजिए।

सुनकर जेलीकी नोकसे उसे छुडाया और कहा कि अच्छी बात है, जाओ, भगवान तुम्हारा भला करे।

भगवानका नाम मुहसे निकलना था कि ककड पानीमें गिरे, वैसे वह धरती पर छूटकर गायब हो गया। और वहा निशानीमें एक सूराख रह गया।

प्यारे लौटकर घर पहुचा कि वहा देखा कि उसका मझला भाई धनवीर आया हुआ है। साथ बीबी भी है और दोनो जने खानेपर बैठे है।

धनवीर अपना देना चुकता नही कर सकता था। सो साहूकारोसे बचकर वहा भाग आया था और आकर बापके घरमें शरण ली थी। प्यारेको देखकर धनवीरने कहा—"सुनो भाई मूरख, दूसरा काम लगे तबतक मै और मेरी बीबी

यही हैं और हमको कोई कष्ट न हो, यह तुम्हारा काम है ।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है । आप चाहें तबतक यहां रहिए ।"

प्यारे दोहर रख, मुह धो, आकर खानेपर बैठने लगा।

पर धनवीरकी बीबी बोली—"मै उस गंवारके साथ खाना नही खा सकती। सारे बदनमें तो उसके पसीनेकी बू आ रही है ।"

इसपर धनवीर बोला—"प्यारे, तुम्हारे बदनसे गध आती है । जाओ बाहर जाकर खा लो।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है । मुझे तो वैसे भी इस वक्त बाहर जाना था।" कहकर रोटी ले मूरख ओसारेमें बाहर चला आया ।

(५)

धनवीरका चर भी खाली हो गया था। सो ठहरे मुताबिक मूरखको बसमें लानेमें अपने साथियोकी मदद करने वह भी उस रात आ पहुचा। पर खेतमें घूम-फिरकर बहुतेरा देखा, वहा कोई नही था। मिला तो वहा सूराख मिला। वह फिर चरीकी धरतीमें आया। वहा दलदली धरतीमें देखे तो उसके साथीकी पूंछ कटी पडी है और जईवाले खेतमें दूसरा एक सूराख और भी उसे मिला।

सोचा कि साथियोंपर मेरे कोई विपत पडी दीखती है । सो उनका काम अब मुझे सभालना चाहिए और उस मूरखराजको काबूमें लाना चाहिए ।

यह सोच वह चर मूरख प्यारेकी तलाशमें गया। प्यारेने नाज खलिहानमें रख दिया था और अब जगलके पेड गिरा रहा था। बात यह थी कि दोनो भाई बोले—"यहा तो घरमें जगह कम है और गिचपिच मालूम होती है। इससे जाओ प्यारे, पेड गिराकर कुछ जगह साफकर डालो और वहा हमारे लिए नये मकान बनवाकर खडे करो।"

चर दौडा जगलमें पहुचा । वहा दरख्तोकी टहनियोमें लुककर प्यारेके काममें अडचन डालने लगा । प्यारेने उस दरख्तको जडसे काट लिया था और ऐसे काटा था कि वह कुल साफ धरतीपर आ जाय। पर देखता क्या है कि दरख्त गिरा तो नहीं, बल्कि दूसरे पेड़की शाखोसे उलझकर रह गया ।

प्यारेने इसपर बल्लीकी मददसे उसे जड़से कुछ सरकाया । तब कही पेड़ धरतीपर आकर गिरा । और पेडोके गिरानेमें भी ऐसे ही बीती । बहुतेरा करता, पर दरख्त सीधा साफ धरतीपर न गिरता । तीसरा पेड काटा और वही बात हुई ।

उम्मीद थी कि छोटे-मोटे पचास पेड तो आज काट ही गिराऊंगा। पर दस-एक भी नही हुए कि साझ हो चली और वह थककर चूर हो गया । सरदीके मारे बदनसे निकली पसीनेकी भाप जगलमें धुएकी मानिंद फैली दीखती थी। पर उस बदेने भी काम नही छोडा, चिपटा ही रहा। एक और दरख्त उसने काट लिया। लेकिन अब कमर इतनी दुखने लगी कि खड़े रहना मुश्किल था। आखिर कुल्हाडी पेडमें लगी छोड धरतीपर बैठकर वह दम लेने लगा।

चरने देखा कि प्यारे कामसे हार बैठा है । इसपर वह बडा खुश हुआ। सोचा, आखिर अब आकर थका तो। अब आगे भला क्या काम उठायेगा। सो चलो, मुझे भी सुस्तानेका मौका मिल गया ।

यह सोच चर पेडकी शाखपर फैलकर आरामसे हो गया । चैनकी सास ली । पर थोडी ही देरमें प्यारे तो उठ खडा हुआ और कुल्हाडी खीच सिरके ऊपरसे घुमाकर परली तरफ जोरसे जो मारी कि एकदम पेड ढहता हुआ आ गिरा । चरको यह आस न थी । उसे सभलनेका समय नही मिल पाया और पेड़ गिरा तो उसके पजे उसमें फसे रह गये। प्यारे एक-एककर पेडकी टहनिया काटने लगा । इतनेमें देखता क्या है कि दरख्तसे चिपटे यह हजरत जीते-जागते वहा लटके हुए हैं । प्यारेको अचभा हुआ । बोला—"क्यो जी, फिर तुम यहा आ पहुचे ?"

चर बोला—"जी, मैं वह नही, दूसरा हू । अबतक तुम्हारे भाई धनवीरके साथ था ।"

"जो हो । चलो, तुम्हे अपने कर्मोंका फल मिला ।"

यह कहकर कुल्हाडी घुमा मूठ उसकी उसके सिरपर दे मारनेवाला ही था कि वह चर दयाके लिए गिड़गिडाने लगा।

बोला—"मुझे मारो नही। जो कहोगे मैं वही तुम्हारे लिए करूगा।"

"तुम क्या कर सकते हो ?"

"मैं अशर्फी बना सकता हूं। जितनी कहो उतनी।"

"अच्छी बात है, बनाकर दिखाओ।"

वह चर अशर्फी बनानेकी तरकीब बताने लगा। बोला—"उस बड़के कुछ पत्ते हाथमें ले लीजिए और फिर मसलिए। धरतीपर गिरकर बस अशर्फिया ही अशर्फिया हो जायगी।"

प्यारेने कुछ पत्ते लिये और हाथोसे मला। देखता है कि हाथोसे अशर्फियोकी धारकी धार गिर रही है।

बोला—"यह तो खूब बात है। चलो, बाल-बच्चोके मन-बहलावका यह तो अच्छा सामान हो गया।"

चर बोला—"अब मुझे जाने दीजिए।"

प्यारेने उसको पेडसे छुडा दिया। बोला—"अच्छी बात है, जाओ भगवान तुम्हारा भला करे।"

और भगवानका नाम आना था कि पानीमें पत्थरकी तरह वह चर धरतीमें गिरकर अतर्धान हो गया। बस एक सूराख रह गया।

(६)

सो दोनो भाइयोके लिए हवेलिया खडी हो गई और वे अलग-अलग मकानमें रहने लगे। प्यारेने खेतकी कटाई-लुनाई निबटाकर तैयारी की और एक त्यौहारके रोज भाइयोको अपने घर खानेका निमत्रण दिया। पर भाई दोनो उसके घर आनेको राजी नही हुए।

बोले—"बडी आई कहीकी दावत ! जो इन गंवारोको खानेका सलीका भी हो ! सो भला हमी उसमें जानेको रह गये है !"

भाई लोग नही आये तो प्यारेने गावके और स्त्री-पुरुषोको ही जिमाया-जुठाया। बडी हंसी-खुशी रही। दावतके बाद बाहरके चौकमें प्यारे आया। वहां स्त्रिया मगन होकर गरबा नाच रही थी। प्यारे आकर उनसे बोला कि वाह-वाह, एक नाच, भाई, हमारे नामका भी हो जाय। उसके बाद मैं ऐसी चीज तुम्हे बाटूं कि पहले जिदगीमें तुमने देखी भी न हो।

स्त्रिया और भी हँसी और खुश-खुश प्यारेकी तारीफमें गाना गाती नाचने लगी। उसके बाद बोली—"लाओ देखें, तुम्हारी वह क्या चीज है।"

प्यारेने कहा—"अभी लो।"

कह कर उसने नाज भरी एक डलिया ली और चला जगलकी तरफ। स्त्रिया हँसने लगी। बोली—"है असल मूरख।" उसके बाद फिर अपने इधर-उधरकी चर्चा करने लगी।

इतनेमें देखती क्या है कि प्यारे डलिया लिए जगलकी तरफसे भागा चला आ रहा है। डलिया भारी मालूम होती है और किसी चीजसे भरी हुई है।

आकर बोला—"बोलो, दू तुम्हे ?"

"हा-हा, दो न।"

प्यारेने एक मुट्ठी अशर्फिया ली और बीचमें बखेर दी। बस अनुमान कर लीजिए कि कैसी भगदड वहा मची होगी। सब जनी उन्हें बीनने और छीनने झपटने लगी। आस-पासके लोग भी टूट पडे। एक बिचारी बुढियाकी तो जान जाते-जाते बची।

प्यारे बहुत हसा। बोला—"अरे, मूरखो, बुढिया बेचारीको क्यो कुचले डाल रहे हो ? जरा सबर करो। लो, मै और बखेरता हू।"

कहकर उसने एक पस सोना और बिखरा दिया। तब तो और भी लोग आ जुटे और प्यारेने जितनी थी सब मुहरें वहा फेंक बखेरी। उसके बाद लोग फिर और मागने लगे।

पर प्यारे बोला—"अब तो मेरे पास और रही नही। फिर किसी वक्त और सही। आओ, अब नाचें-कूदें। और अजी, तुम लोग रुक क्यो गई ? गाना अपना जारी रक्खो न।"

स्त्रिया पहलेकी भाति गाने लगी।

बोला—"नही जी, ये तो तुम्हारे गीत कुछ बढिया नही है।"

स्त्रिया बोली—"खूब ! बढिया गीत भला हम और कहासे लायें ?"

बोला—"देखो, मै बताता हू।"

कहकर प्यारे खलिहानकी तरफ बढा। एक पूला लिया, नाजके दाने उसके

अलग किये और फिर सकेरकर उसे धरतीपर जमाकर रख दिया ।

बोला—अब देखो—

'पूले-पूले सुन और मान
मेरी तुझको यही जुबान ।
जहां-जहां हो तेरी सींक
वहीं हो उठे एक जवान ।'

उसका यह कहना था कि पूला विलीन हो गया और हरेक सीककी जगह एक-एक सिपाही लैस खडा हो गया। ढोल-नाशे बजने लगे और तुरही बोलने लगी। प्यारेने सिपाहियोंको हुक्म दिया कि हा, ऐसे ही गा-बजाकर सबको खुश करो। इसके बाद आगे-आगे वह और पीछे-पीछे बैंड-पार्टी, ऐसे गली-गली जुलूस घूमा। लोगोको बडा विनोद मालूम हुआ। सिपाही खूब गाते-बजाते थे। अंतमें प्यारेने कहा, "अब कोई साथ मत आना ।" कहकर सिपाहियोको अलग एक तरफ ले गया और फिर सबको सीक बनाकर पूलेमें बाध अपनी जगह डाल दिया।

ऐसे सब हसी-खुशी दिन बीता । उसके बाद रात हुई और प्यारे घर जाकर तबेलेमें धरतीपर अपना कबल डाल चैनसे सो गया।

(७)

अगले दिन फौजी बलजीतके कानमें इस बातकी खबर पडी। सो वह भाईके पास आया । बोला—"प्यारे, यह बताओ कि वह सिपाही तुमने कैसे बनाये थे और फिर उन्हें वहा ले जाकर क्या किया ?"

प्यारेने पूछा—"उससे तुम्हे भला मतलब क्या है ?"

"मतलब क्या है ? क्यो ? सिपाही हो तो कोई कुछ भी कर सकता है। उनसे राजका राज जो जीता जा सकता है ।"

प्यारे अचरजमें बोला—"अच्छा. सचमुच ? पहलेसे तुमने क्यो नही बताया ? लो, जितने कहो उतने सिपाही बनाकर मैं तुम्हें दिये देता हू । बहन और मैंने दोनोने मिलकर कितना ही भूसा छोडा है। सो सिपाहियोकी क्या कमी !"

प्यारे अपने भाईको खलिहानके पास ले गया । बोला, "देखो, मैं सिपाही

बना तो देता हूं, लेकिन सबको अपने साथ ही तुम ले जाना । अगर जो कही उन्हें घरसे खिलाना पड गया तब तो एक दिनमें वे गावका गाव खा जायंगे।"

बलजीतने कहा—"हा, सिपाही सब मै साथ ले जाऊंगा।"

इसपर प्यारे सिपाही बनाने लगा । एक पूला धरतीपर जमाके रक्खा—कि फौजका एक दस्ता तैयार हो गया । दूसरा रक्खा, तो दूसरी टुकडी तैयार। सो इतने सिपाही बना दिये कि वह मैदान तो कुल उनसे भर गया।

फिर पूछा—"क्यो भाई, इतने काफी होगे ?"

बलजीतकी प्रसन्नताका ठिकाना नही था। बोला—"हा, इतने बहुत होंगे । मै तुम्हारा एहसान मानता हूं, प्यारे ।"

प्यारे बोला—"एहसान क्या । और चाहिए तो आ जाना, मै और बना दूगा । इस मौसममें अपने यहा भूसेकी कोई कमी तो है नही।"

फौजी बलजीतने फौरन उन सब टुकडियोका कमान संभाला, उन्हें जमा किया, तरतीब दी और सबको साथ ले जगका मोर्चा लेने चल दिया ।

जगी बलजीतका जाना था कि वैश्य धनवीर आ पहुंचा। उसे भी कलकी बातकी खबर लगी थी। सो आकर भाईसे बोला—"भाई, बताओ सोनेकी मोहरें तुमने कहा और कैसे पाई ? मेरे पास जरा शुरू करनेको भी कुछ धन हो जाता तो उससे मै तमाम दुनियाका पैसा खीचकर दिखा देता ।"

प्यारे अचरजमें भरकर बोला—"अरे, सचमुच ही तुमने पहलेसे मुझे क्यो नही बताया ? लो, जितनी कहो उतनी अशर्फिया मै तुम्हे बनाये देता हू ।"

धनवीर बडा खुश हुआ । बोला—"शुरूमें तो मुझे तीन टोकरी भर अशर्फिया बस हो जायगी।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है । चलो, साथ मेरे जंगलकी तरफ चलो। या बहतर हो घोडा साथ ले लो और गाडी। क्योकि वह सब बोझ तुमसे उठेगा कैसे ?"

सो दोनो जंगल में आये। वहा प्यारे ने बडके पत्ते हाथ में लिये और मलकर सोनेकी धार धरतीपर छोड दी। सो देखते-देखते अशर्फियोका अबार लग गया।

पूछा—"क्यों भाई, इतनी काफी होगी ?"

धनवीरका मन बासों उछल रहा था । बोला—"हां, हाल तो इतनी काफी होगी। तुम्हारा अहसान मानता हूं, प्यारे ।"

"यह कोई बात नहीं", प्यारे बोला, "और जरूरत हो तो आ जाना, मैं और बना दूगा । बडके पेडमें अभी अनगिनत पत्ते बाकी है ।"

धनवीर व्यापारीने वह सारा गाडी भर धन बटोरा, भरा और व्यापार करने चल दिया ।

ऐसे दोनो भाई चले गये । बलजीत युद्ध जीतने गया, धनवीर लेन-देनसे धन बढाने । सो जंगी बलजीतने तो एक राज्य जीत लिया और धनवीरने व्यापारमें खूब धन कमा लिया ।

फिर दोनो भाई मिले तो अपनी-अपनी कहानी सुनाने लगे । बलजीतने बताया कि कैसे मुझे सिपाही मिले और धनवीरने अपनी अशर्फियां मिलनेकी बात बताई ।

बलजीत अपने भाईसे बोला, "धनवीर, राज्य तो मैंने जीत लिया है और ठाट-बाटसे रहता हू । पर सिपाहियोको रखनेके लिए काफी पैसा मेरे पास नही है ।"

इसपर व्यापारी धनवीरने कहा—"धन तो मेरे पास अकूत है । पर मुश्किल यह है कि उसकी रखवालीके लिए सिपाही नही है।"

जंगी बलजीतने कहा—"एक काम करें—प्यारेके पास चलें । मै तो कहूगा कि तुम्हारे धनकी रखवालीके लिए तुम्हे वह कुछ सिपाही बनाकर दे दे । और तुम कहना कि मेरे सिपाहियोके गुजारेके लिए धनकी जरूरत है, सो मुझे मोहरें बना दे ।"

आपसमें यह ठहराकर दोनो प्यारेके पास आये ।

बलजीत बोला—"भाई प्यारे, मेरे पास सिपाही काफी नही है। सो दो-एक टुकडी उनकी मुझे और चाहिए । बना दो।"

प्यारेने सिर हिला दिया । बोला—

"नही, अब मै और सिपाही नही बनाकर दूगा ।"

"लेकिन तुमने वचन दिया था कि बना देंगे ।"

"हां, दिया था । लेकिन अब और नही बनाऊंगा ।"

"बड़े मूरख हो ! क्यो नही बनाओगे ?"

"तुम्हारे सिपाहियोंने एक आदमीकी जान ले ली, मैंने सुना है । उस दिन सड़कके किनारेका खेत मै जोत रहा था, तभी एक औरत गाड़ीमें बैठी जा रही थी । मैंने कहा, क्या बात है, कोई मर गया है ? बोली कि मेरे पतिको लडाईमें बलजीतके सिपाहियोने मार डाला है । मै तो समझता था कि सिपाही अपना गाना-बजाना किया करेंगे और लोगोका मन बहलायेंगे, पर उन्होने तो यह आदमीकी हत्या कर डाली है ! अब मै और सिपाही बनाकर नही दूगा ।"

फिर उस अपनी बातसे प्यारे डिगा नही और सिपाही नही बनाये ।

धनी धनवीरने भी प्यारेको कुछ और सोना बना देनेको कहा । लेकिन उसपर प्यारेने सिर हिला दिया । कहा—

"नही, मै अब सोना भी नही बनाऊगा ।"

"और जो तुमने वायदा किया था ?"

"किया था, लेकिन अब मै नही बनाता ।"

"भला क्यो, मूरख ?"

"क्योकि तुम्हारी सोनेकी मुहरोने हमारे हरियाकी बेटीकी दुधार गाय हर ली है ।"

"सो कैसे ?"

"कैसे क्या, हर ही जो ली है । उसके पास एक गाय थी । बाल-बच्चे उसका दूध पिया करते थे । पर उस दिन हरीचन्दकी धेवती हमारे घर दूध मागने आई । मैंने कहा—"क्यो, तुम्हारी गाय क्या हुई ?" बोली—"महाजन धनवीरका कारिंदा आया था । उसने सोनेके तीन सिक्के अम्माको दिये, सो अम्माने गाय उसे दे दी । अब कहा घरमें दूध रक्खा है ?" मै तो समझता था कि सोनेकी मुहरें लेकर तुम अपना और लोगोका जी बहलाव करोगे । पर उनसे तो तुम बच्चोका दूध छीनने लगे हो । नही, मै और मुहर तुम्हे बनाकर नही दूगा ।"

और इसपर प्यारे अचल होकर अड गया और मोहरें बनाकर नही ही दी । सो दोनों भाई अपने मुह लौटकर चले गये । जाते-जाते आपसमें सलाह-मशवरा

करने लगे कि कैसे अपनी मुश्किल हल करनी चाहिए ।

बलजीतने कहा—"सुनो, मैं बताता हूं । एक काम करो । तुम तो सिपाहियोके लिए मुझे धन दो और मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दिये देता हूं । बस, फिर धनकी रक्षाके लिए काफी सिपाही भी तुम्हारे पास हो जायंगे ।"

धनवीर इसमें राजी हो गया ।

सो दोनो भाइयोंने आपस में बंटवारा कर लिया । इस तरह वे दोनो ही राजा बन गये । दोनोके पास रियासत हो गई और किसीके पास धनकी कमी नही रही।

(८)

प्यारे अपने देहातके घर ही रहा । गूगी बहनके साथ खेतमें काम करता और माता-पिताको पालता था ।

एक दिन ऐसा हुआ कि उनके पालतू कुत्तेको कहीसे खाज लग गई । वह ऐसा क्षीण होने लगा कि जीनेकी आस ही नही रही। बिलकुल मराऊ हो आया। प्यारेको उसपर दया आई। बहनसे कुछ रोटी माग टोपीमें रख कुत्तेको डालने वह बाहर आया । टोपी फटी थी, सो टुकडा जो कुत्तेको फेंका तो उसके साथ उस जडीकी एक जड भी आ गिरी । कुत्तेने रोटी खाई और साथ वह जड भी खा गया । खाना था कि वह तो एकदम चगा हो गया। सब रोग जाता रहा और वह उछल-कूद मचाने लगा । कभी भौंकता और दुम हिलाता और किलोलें करता । यानी बिल्कुल पहलेकी भाति चुस्त तदुरुस्त वह हो गया ।

मा-बापको यह देख बडा अचभा हुआ । पूछने लगे, "कुत्तेका रोग तुमने कैसे छिनमें हर लिया ?"

प्यारे बोला—"मेरे पास एक जडीकी दो जड थी । उनमेंसे एक कोई खा ले तो सब रोग मिट जाय । सो उनमेंसे एक इस कुत्तेने खा ली है ।"

उसी समयकी बात है कि राजाकी बेटी बीमार पडी । राजाने गाव-शहर सब दूर ऐलान कर दिया कि जो बेटीको आराम कर देगा उसे खूब इनाम मिलेगा। और वह कुवारा हुआ तो राजाकी बेटी भी उसे ब्याह दी जायगी। दूसरे गांवोंकी तरह प्यारेके गावमें भी यह ऐलान हुआ।

मा-बापने यह खबर सुनकर प्यारेको बुलाया। बोले—"तुमने राजाकी ड्योढीकी बात सुन तो ली है न ? तुम कहते थे कि जडी है जिससे सब रोग कट जाते है । सो जाओ और उससे राजकुमारीको आराम कर देना । बस जनम-जीतेको फिर चैन हो जायगा ।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है ।"

कहकर वह चलनेको उद्यत हुआ । हाथ-मुह धोया, कपडे पहने, पर द्वारसे बाहर होना था कि वहा एक भिखारिन मिली। उसका हाथ गल रहा था और वह लूली हुई जा रही थी। बोली—"अजी, मैंने सुना है कि तुम रोगोको आराम कर देते हो । बडी दया हो कि मेरी इस बाह को आराम कर दो । मुझसे इसके मारे कुछ भी करते-धरते नही बनता है ।"

"अच्छी बात है ।"

कहकर बाकी बची जडी उसने निकाली और भिखारिनको दे दी । कहा—"लो, इसे खा लो ।"

जडीको मुहके नीचे उतारना था कि भिखारिन अच्छी-भली हो गई। अब वह पहलेकी भाति चल-फिर सकती थी और सब कामके लायक थी।

इतनेमें अदरमे प्यारेके मा-बाप भी राजाके यहा साथ चलनेके लिए आये उन्होने सुना कि जडी तो इस मूरखने गवा डाली है, अब राजाकी बेटीको काहेसे आराम होगा ? सुनकर दोनो प्यारेको खूब झिडकने लगे । बोले—"एक भिखारिनपर दया करते हो ? भला राजाकी बेटीका तुम्हे खयाल नही है ?"

पर राजाकी बेटीके लिए भी प्यारेके मनमें दुख था । सो बैल गाडीमें जोत, पुआल से उसकी बैठक मुलायम बना, उसपर सवार हो, प्यारे आगे बढ लिया।

मा-बाप बोले—"अरे, मूरख अब कहा जा रहा है ?"

प्यारे बोला—"क्यो, राजाकी बेटीका औगुन हरने जा रहा हू ?"

"बडा जा रहा है ! अरे, तेरे पास अब जडी कहा रह गई है, बेवकूफ ?"

बोला—"कोई बात नही। देखा जायगा।"

कहकर वह गाडी हाके चला । चला-चलता राजाके महल आया। पर महलकी देहलीपर उसका पाव रखना था कि राज-कन्याको एकदम आराम हो गया।

राजा उसपर बडा खुश और विस्मित हुआ। प्यारेका आदर-सत्कार किया और कीमती कपडे दिये ।

बोला—"अब तुम ही मेरे जमाई हो।"

प्यारे बोला—"अच्छी बात है।"

और राजकुमारीका प्यारे मूरखके साथ विवाह हो गया । उसके थोडे अरसेके बाद राजाका देहांत हो गया और मूरख ही राजा बना ।

इस तरह अब तीनो भाई राजा हो गये ।

(६)

तीनो अपने-अपने राज्यमें राज करने लगे । जेठा बलजीत खूब कामयाब हुआ । उसने अपने राज्यका विस्तार बढा लिया । जादूके सिपाही तो थे ही, अलावा भी उसने भर्ती किये । सारे राज्यमें दस घर पीछे एक सिपाही देनेका हुक्म था । उसका अच्छा कद हो और बदनमें हट्टा-कट्टा भी। ऐसे जवानोकी बहुत-बडी फौज उसने खडी की और सबको कवायद सिखाई। कोई विरोधमें चू भी करता तो झट बलजीत अपनी फौज भेज देता। सो उसका मनचाहा हो जाता था । इस तरह आस-पासके सब राजा उसका डर मानते थे । इस तरह बलजीतकी खूब आराम और वैभवमें गुजर होती थी। जिसपर नजर पडती, और जो भी चाहता, वही उसका था। क्योकि सिपाही थे और वह मनचाही चीज जीतकर उसको ला सकते थे ।

धनवीर वैश्य भी अपने आनंदसे रहता था। प्यारेसिंहसे जो रकम पाई थी, उसमेंसे उसने रत्ती भी नही खोया था, बल्कि उस दौलतको खूब बढा-चढा लिया था । अपने राज्यमें अमन और आईनका उसने दौर डाल दिया था। पैसा खजानेमें जमा रखता था, ऊपरसे लोगोसे कर उगाहता था । चुगी-कर एक उसने जारी किया था और सडकपर चलने या गाडी ले जानेका भी टैक्स डाला था । कपडा-लत्ता और सामान-रसद इस तरहकी चीजोपर भी, टैक्स था । जो वह चाहता, उसे सुलभ था । पैसेकी खातिर लोग सब उसे ला देते थे और खुद गुलामीको राजी थे। क्योकि हर किसीको पैसेकी चाह थी।

उधर उस मूरख प्यारेकी भी हालत बुरी नही थी। ससुरके क्रिया-कर्मके

अनंतर उसने क्या किया कि राजसी सब पोशाक ली और बीबीसे कहा कि इसे बक्सोमें बंद करके रख दो। खुद वही अपने गाढेका कुर्त्ता तनपर ले लिया और कामपर चल पड़ा । बोला—"ठाली तो मेरा जी नही लगता है। देखो, बदनपर चर्बी भी जमती जा रही है । भूख नही लगती और नीद भी खोई मालूम होती है ।"

सो वह मा-बापको और अपनी गूगी-बहनको भी पास ही ले आया और पहलेकी तरह खेतपर काम करने जाने लगा ।

लोग बोले—"लेकिन आप तो राजा हैं।"

प्यारे बोला—"हा, पर राजा भी तो खानेको चाहता है न ?"

एक दिन राजाका मंत्री आया । बोला—"तनख्वाह देनेके लिए खजानमें पैसा नही है ।"

प्यारे—"अच्छी बात है । तो मत तनख्वाह दो ।"

"ऐसे कोई नौकरी नही करेगा ।"

"अच्छी बात है। मत नौकरी करने दो । ऐसे उन्हें कामका और भी वक्त निकल आयगा । चलो, सब खाद ढोयें। कितना तो घूरा जगह-जगह पडा है । यह सब खाद है कि नही।"

और लोग राजाके पास अपने मुकदमे लेकर आये। एक बोला—"अजी, इसने मेरा धन चुराया है ।"

प्यारेने कहा—"अच्छी बात है। चुरानेसे तो मालूम होता है कि उसके पास कुछ था नही।"

सो इस तरह सब लोग जानते गये कि प्यारेसिह राजा मूरख है।

बीबी उसकी बोली—"लोग कहते है, तुम मूरख हो।"

प्यारेने कहा—"ठीक तो कहते है।"

पतिकी बात सुनकर वह सोचमें रह गई । पर असलमें वह भी मूरख ही थी। मनमें बोली कि पतिके खिलाफ मैं भला कैसे जा सकती हूँ। सुई जहा जाय, धागेको भी तो वहीसे जाना है न। यह कहकर उसने भी अपनी राजसी पोशाक उतारकर बक्समें बद कर दी और अपनी गूगी ननदसे काम सीखने चली। सीखकर

होशियार हो गई और अपने पतिको खूब सहाय देने लगी।

इसका नतीजा यह हुआ कि चतुर-सयाने जितने जन थे, सब प्यारेका राज छोडकर चले गये । बस मूरख-मूरख रह गये ।

किसीके पास कोई पैसा-सिक्का नही था । सब रहते थे और काम करते थे । भरपेट खाते और दूसरोको खिलाकर खुश रहते थे ।

(१०)

और उधर पाताल-लोकमें शैतान बाबा इंतजारमें थे कि अब कुछ खबर मिले, अब मिले । तीनो भाइयोकी बरबादीको तीन चर गये थे । पर गये मुद्दत हुई, खबर उनकी कोई नहीं आई। सो पता लगाने वह बाबा खुद-बखुद नर-लोक आये । यहा बहुत खोज-छान की । पर वे तीन चर तो कही मिले नही। मिले तो उनकी जगह तीन सूराख मिले।

सोचा कि मालूम होता है वे तीनो नाकाम रहे और विपताके शिकार हुए। सो चलो, अब मै उन तीनोको खुद ही भुगतता हूँ।

यह मनमें धार वह उन तीनोकी तलाशमें चला । पर अपनी पहली जगह तो कोई उनमेंसे था नही और देखता क्या है कि तीनो अपने अलग-अलग राज-धानीमें राज्य करते हैं । इससे उस शैतान बाबाको बडी खीझ हुई। बोला—"खैर, अब मै उनपर अपना हाथ आजमाकर देखता हूँ ।"

सो पहले तो वह राजा बलजीतके यहा गया । पर ऐसे नही गया। भेष बदलकर गया । एक फौजी सरदारका बाना उसने बनाया और घोडा-गाडीपर सवार महलपर पहुँचा । वहा जाकर बोला—"हे राजा बलजीत, सुना है कि तुम बडे बहादुर, बडे पराक्रमी हो । मैंने भी कई युद्ध देखे है। जगी मैदानका मुझे अनुभव है और मै तुम्हारी सेवामें काम आना चाहता हूँ।"

राजा बलजीतने उससे पूछ-ताछ की और सवाल किये । देखा कि आदमी होशियार है । सो उसे नौकरीमें रख लिया और सिपहसालार बना दिया।

इन नये सेनापतिने राजा बलजीतको बताया कि कैसे एक मजबूत सेना तैयार करनी चाहिए, ऐसी कि कोई न हरा सके । इसके लिए पहले तो हमें भरती बढानी चाहिए । राज्यमें बहुत-से लोग बेकाम है । जवानोंको तो सबको

फौजमें आना लाजिमी बना देना चाहिए । इस तरह फौजकी ताकत अबसे पचगुनी हो जायगी। फिर तोप और बदूक भी नये बनाने और मंगाने चाहिए। ऐसी बदूक मै ईजाद करूँगा कि एक बारमें सौ छर्रे छोडेगी । और तोप ऐसी कि क्या आदमी और क्या घोडा या सवार और क्या दीवार, जो सामने पडे सब उसकी मारसे भस्म हो जाये । जिसके ध्वसके आगे कुछ नही ठहर सकेगा।

राजा बलजीतने सेनापतिकी बातपर गौर किया । हुक्म हो गया कि अच्छा, जवान लोगोको सबको फौजमें भर्ती होना लाजिमी है और कारखाने बनवाये जहा नई तरहकी बदूक और तोपें बडी तादादमें तैयार हो सकें। यह होते ही पड़ोसके राजासे लडाई ठान दी गई । आमने-सामने दोनो फौजोका मिलना था कि बलजीतने सिपाहियोंको हुक्म दिया कि जवानो, कसकर छर्रे छोडो और तोपोका जौहर दिखाओ । बस क्या था । एक धावेमें दुश्मनकी आधी फौज खेत रही । कुछ कट-कटा गये, बहुत ध्वस हो गये और बाकी भाग निकले। दुश्मन राजा ऐसा भयभीत हुआ कि हथियार डाल दिये और सारा राज्य अपना सौप दिया। राजा बलजीत अपनी विजयपर खुश हुआ।

बोला—"अच्छा अब हिदुस्तानकी सल्तनतकी बारी आनी चाहिए ।"

लेकिन हिदुस्तानके राजाने राजा बलजीतके बारेमें पहलेसे सब हाल-चाल ले रक्खा था । उसने भी वहाकी ईजादोकी नकल कर ली थी और कुछ अपनी नई ईजादें भी की थी । उस तरह खूब तैयारी उसने कर रक्खी थी । सारे जवान मर्द ही नही, बल्कि बिन-ब्याही औरतोको भी सेनामें भरती किया था और फौज उसकी बलजीतसे भी बढी-चढी बन गई थी। हूबहू बलजीत की-सी तोप और बदूक उसने ढलवा ली थी । बल्कि हवामें उडकर ऊपरसे आगके बम फेंकनेका भी तरीका ईजाद कर लिया था।

बलजीत हिदुस्तानकी सीमापर चढाई करके आया । खयाल था कि पहले राजाकी तरह इसे भी हाथो-हाथ हार गिराऊँगा । पर पहली धार अब भोथरी हो गई थी । हिदुस्तानके राजाने बलजीतकी फौजको पास भी न फटकने दिया । पहले ही हवाके रास्ते अपनी जनाना पल्टनको भेज दिया कि बलजीतकी फौजपर जा आगके बम बरसाओ। जनाना पल्टनने वहा जाकर ऐसी आगकी वर्षा की कि

पतंगोंकी तरह बलजीतकी फौजके लोग भुनने लगे । यह देख फौज भाग निकली और राजा बलजीत अकेला ही रह गया। सो हिंदुस्तानके बादशाहने बलजीतका इलाका भी हथिया लिया और बलजीतने जैसे-तैसे भागकर जान बचाई।

इस तरह सबसे जेठेको निबटाकर शैतान अब राजा धनवीरके पास पहुँचा। इस बार व्यापारीका उसने भेष बनाया और धनवीरकी राजधानीमें जाकर डेरा डाला । वहां अपनी फर्म खोल दी और लगा पैसा लुटाने । हर चीज ऊंचे दाम उसने खरीदनी शुरू की। सो ज्यादा कीमत पानेके लिए दौड़-दौड सब लोग उसके पास पहुंचने लगे। बदलेमें लोगोंके पास इतना सिक्का फैल गया कि सबके सब अपना पूरा टैक्स वक्तपर अदा कर देते थे और पहला बकाया भी सब चुका दिया था। राजा धनवीर इस पर खूब खुश हुआ। सोचा कि यह नया व्यापारी तो अच्छा आया है। अब तो और भी धन मेरे पास जुड जायगा और जिंदगी और ऐशसे कटेगी ।

सो धनवीर राजाने नई तामीरके नक्शे बनाये और एक नया महल खडा करनेका हुक्म दिया । ऐलान कर दिया कि लोग लकडी और पत्थर लाकर दें और मजदूरीके लिए भी लोगोकी जरूरत है । दर हर जिसकी ऊँची मिलेगी । धनवीर राजाका खयाल था कि लोग पहलेकी तरह झुंड-के-झुंड आयेंगे । पर अचरजसे देखता क्या है कि पत्थर और लकडी सिर ले-लेकर सब लोग उस व्यापारीके पास पहुँच रहे हैं और मजदूर भी उधर ही जाते हैं । राजाने दर और भी ऊंची चढा दी । लेकिन व्यापारीने उससे भी सवाई कर दी । धनवीरके पास बहुत धन था, लेकिन व्यापारीके पास उससे भी अकूत था । सो हर जगह व्यापारी ऊंचे दाम चढा ले जाता था और बाजी उसके हाथ रहती थी ।

नतीजा यह कि राजाके महलपर सन्नाटा रहने लगा। नये महलकी शुरुआत भी नहीं हो सकी ।

धनवीरके मनमें एक नया बाग तैयार करनेकी आई। सो बारिश बीतते उसने लोगोको बुलाया कि आयें और बाग तैयार करें। पर कोई न फटका। सब लोग उस व्यापारीका एक तालाब खोदकर तैयार करनेमें लगे थे। जाड़ोंके दिन आये, और धनवीरको कुछ पर और मुलायम पशमीनोंकी जरूरत हुई। आदमी

खरीदने बाजार भेजे, लेकिन वे खाली हाथ लौट आये । बोले कि बाजारमें तो ये चीजें मिलती ही नही हैं। सब-की-सब व्यापारीने ले ली है। बढ़ी-चढ़ी कीमत दे उसने बढ़ियासे बढ़िया पशमीने खुद खरीद लिये है और पहिननेकी जगह उन्हें बिछानेके काम लाता है ।

धनवीरने कुछ उम्दा घोड़े खरीदने चाहे । भेजा खरीदारो को। लेकिन उन्होने आकर खबर दी कि अच्छे-अच्छे जानवर तो सब व्यापारीने खरीद लिये है और पानी ढो-ढोकर उसका तालाब भरनेके काम वे आ रहे है।

इस तरह राजाका सारा कारबार रुकने लगा । कोई उसके लिए काम करनेको राजी न होता था, क्योकि सब व्यापारीके काममें लगे थे । बस सब लोग राजाके आगे वक्तपर अपना टैक्स चुकाने चले जाते थे, क्योकि व्यापारीकी कृपासे सिक्केकी उनके पास कमी न थी। बाकी कोई राजाको नही पूछता था।

सो राजाके पास इतना धन जमा हो गया कि समझ न आता था, कहा उन सबको भरके रक्खा जाय। जिंदगी ऐसे दूभर होने लगी। नये मनसूबे बनाने तो उसके छूट ही गये। अब तो गुजारा चल जाता तो बहुत था। लेकिन गुजारे-तककी मुसीबत होने लगी । हर चीजकी उसके पास कमती हो आई । एक-एक कर रसोइये, कोचवान, नौकर उसे छोड़ व्यापारीकी खिदमतमें जाने लगे। ऐसे उसे खानेके भी लाले पड़ आये । बाजारसे खरीदनेको भेजता तो वहा कुछ मिलता ही नही । सब व्यापारीने खरीद लिया था और लोग बस आकर राजाका टैक्स चुका जाते थे, अधिक उन्हें राजासे मतलब नही था।

आखिर राजा धनवीरको इसपर बड़ी झुंझलाहट हुई। उसने व्यापारीको देशनिकाला दे दिया । पर व्यापारी वहासे गया तो देशकी हदके पार ही एक जगह जाकर जम बैठा । यहा भी उसने पहलेकी तरकीब की। पैसेकी खीच थोडी नही होती। सो राजाके बजाय सब लोग व्यापारीके पास जा-जाकर अपने मालके ऊंचे दाम उठाने लगे।

राजा धनवीरकी हालत यो खराब-पर-खराब होती गई । दिनके दिन हो जाते, और खानेको नसीब न होता। अफवाह यहातक उडी कि व्यापारीका कहना है कि ठहरो, अभी मैं खुद राजाको ही जो खरीदे लेता हूँ। धनवीर सुनकर

बडा हैरान था। उसे कुछ समझ न पडता था कि क्या किया जाय।

इसी वक्त बलजीत उसके पास आया। बोला—"हिंदुस्तानके राजाने मुझे हरा दिया है। सो मेरी कुछ सहायता करो।"

लेकिन यहा धनवीर ही गलेतक अपनी मुसीबतोमें डूबा था। बोला—"यहा मुझे ही जो दो दिनसे खानेको नही मिला है, भाई। तुम अपनी कहते हो!"

(११)

इस तरह दोनो भाइयोंको ठिकाने लगा अब शैतान मूरखराजकी तरफ मुडा। उसने फौजी जनरलका वेश बनाया और आकर मूरखको समझाया कि राजाके पास एक फौज जरूर रहनी चाहिए।

बोला—"फौज बिना राजाकी भला शोभा क्या है। बस मुझे आप हुक्म दे दीजिए और मैं आपके राज्यकी प्रजामेंसे ही सिपाही निकाल लूगा और फौज खडी हो जायगी।"

मूरख प्यारेने उसकी बात सुनी। बोला—"अच्छी बात है। बनाओ फौज और उन्हें अच्छे-अच्छे गाने सिखाओ। गाती-बजाती फौज जरूर बडी भली मालूम होगी।"

सो राजाज्ञा पाकर वह शैतान प्यारेके तमाम राजमें फौजकी भरती करता घूमने लगा। कहने लगा कि सिपाही बनोगे तो मौज रहेगी। रोज शराब मिला करेगी। और उम्दा लाल पोशाक मिलेगी और भत्ता और...

लोग सुनकर हँसते थे। कहते थे कि शराब तो घर चाहे जितनी हम खीच सकते है। और पोशाककी जो बात है तो हमारी बहन-बीबी जैसी कहो रंग-बिरंगी पोशाक हमें तैयार कर सकती है। और...

सो कोई भरती नही होता था।

इसपर शैतान आया और प्यारे राजासे बोला—"आपकी प्रजा तो बडी मूरख है। अपने मनसे कोई भरती ही नही होता है। सुनिए, उन्हें भरती कराना होगा।"

प्यारे बोला—"अच्छी तो बात है। करो कोशिश।"

सो उस बूढेने जाहिर ऐलान कर दिया कि सबको भरती होना होगा।

जो इन्कार करेगा, राजाके यहासे उसे मौतकी सजा दी जायगी। लोग सुनकर फौजी जनरलके पास आये और बोले—"तुम कहते हो कि हम भरती नही होगे तो राजासे हमें मौतकी सजा मिलेगी। लेकिन भरती होगे तो क्या होगा, यह भी तो बतलाओ। हमने सुना है कि सिपाही भरती होकर लडाईमें मारे जाते है?"

"हा, ऐसा कभी होता तो है।"

यह सुना तो लोग और हठ पड गये। बोले—"तब तो हम नहीं भरती होगे। हर हालतमें मरना ठहरा ही तो बाहरसे घर मरना अच्छा है।"

"तुम मूर्ख हो, जाहिल हो, बेवकूफ हो।" शैतान बोला, "अरे, सिपाही तो मरे या नही भी मरे। लेकिन भरती नही होगे तो फिर राजाके हाथ तुम्हारी मौत पक्की है।"

सुनकर लोग झमेलेमें पड गये। मूरखराजके पास पूछ-ताछ करने पहुंचे। बोले—"एक जनरल साहब आये है। कहते हैं कि सब फौजमें भरती होओ। सिपाही बनकर तुम मर भी सकते हो और बच भी सकते हो। लेकिन भरतीको राजी नही हुए तो प्यारे राजा तुम्हे जरूर सजा देकर मार देंगे। क्यो जी, यह सच है?"

प्यारे हँसा। बोला—"मैं अकेला तुम सबको कैसे मार दूगा? मूरख न होता तो मैं तुम्हे सब समझा भी सकता था। पर सच तो यह है कि मेरी खुदकी भी समझमें यह मामला नही आता है।

लोग बोले—"तो हम भरती नही होगे।"

प्यारेने कहा—"अच्छी तो बात है। मत होओ।"

सो लोग जनरलके पास गये और भरती होनेसे इन्कार कर दिया।

शैतानने देखा कि यहा तो उसकी दाल गलती नही। सो उसने फतेहिस्तानके शाहके पास जाकर साठ-गाठ शुरू की।

शाहके पास पहुँचकर बोला—"सुनिए शाह साहब, चलकर राजा प्यारेसिहके

इलाकेपर आप हमला क्यों नही करते हैं । धन तो बेशक उस राज्यमें नही है। लेकिन जमीन खूब है और चौपाये हैं, और गल्ला है और सब किस्मके कच्चे मालकी इफरात है ।"

सो फतेहिस्तानके शाहने लडाईकी तैयारी शुरू कर दी । बडी फौज इकट्ठी की। बारूद, और तोप और बंदूक जमा की और दुश्मनके राजपर चढ़ाई बोल दी। फौज कूच करती हुई हद लाघ उस राजके अदर दाखिल हो गई।

प्रजाके लोग अपने प्यारे राजाके पास आये । बोले—"फतेहिस्तानके शाहने हमपर चढ़ाई कर दी है ।"

प्यारे बोला—"अच्छी तो बात है । उन्हें आने दो।"

हदके अंदर आकर फतेहिस्तानके नवाबने पल्टनकी सफरमैना टुकडी आगे भेजी कि देखो दुश्मनकी फौज कहां छावनी डाले हुए है। पर इधर-उधर देखा छाना, दुश्मनकी फौजका कोई पता-निशान न दीखता था। शाह इंतजारमें रहे कि अब कहींसे फौजका सूराग मिले, अब मिले। पर फौजके नाम एक आदमी नजर नही आया कि जिससे लडा जाय । इसपर फतेहिस्तानके राजाने हुक्म दिया कि जाओ, बढकर गावोंपर कब्जा कर लो। सिपाही चलते हुए एक गावपर पहुँचे । गावके मर्द-औरत सब मिलकर अचरजसे सिपाहियोको देखने लगे । सिपाहियोने उनका गल्ला और चौपाये झपटकर काबू करने शुरू किये । पर उन लोगोने कोई बाधा नही दी । बल्कि खुद सब बताकर आसानी कर दी। फिर सिपाही दूसरे गाव गये । वहां भी यही हुआ। इसी तरह दिनभर वे बढ़ते गये । फिर अगले दिन भी सब जगह वही बात हुई। लोग सब माल योही ले-लेने देते थे, कोई विरोध नही करता था। बल्कि सिपाहियोसे लोग कहते थे कि बडी खुशीकी बात है, आओ न, हमारे साथ तुम भी रहो सहो।

लोग कहते, "भाई, तुम्हारे यहा मुश्किल है और धरतीपर खानेको नाज काफी नही है तो अच्छी बात है, सब आकर यहां हमारे साथ क्यो नही रहने लगते हो?"

सिपाही बढते गये । पर फौज कोई न मिली कि लडाई हो। अमनसे रहते लोग मिले जो अपने खुद खाते थे और आब-भगतके साथ औरोंको खिलानेको

तैयार थे । सिपाहियोका उन्होने कोई मुकाबिला नही किया । बल्कि स्वागत-सत्कार किया और अपने साथ आकर रहनेका न्यौता दिया । सो सिपाहियोंका जी इस लूट-मारके काममें लगा नही । वे उकता गये । अपने शाहके पास आकर बोले—"यहा हम नही लडेंगे, कही औरका हुक्म दीजिए। लडाई तो ठीक है, पर यह भी कोई लडाई है । यह तो दूधमें छुरी भौंकनेके समान है। यहां अब बिल्कुल नही लड सकते है ।"

शाह सुनकर बडे झल्लाये । बोले—जाओ, सारा राज्य तहस-नहस कर डालो । गाव लूट लो, मकान जला दो, और नाज भी फूक डालो। चौपाये मारकर खत्म कर दो। अगर हुक्म मेरा न माना तो एक-एकको फांसी दे दूगा।"

सिपाही मारे डरके नवाबके हुक्मके मुताबिक करने लगे । मकानोमें आग लगाई और गल्ला फूका और गायोके गले काटने लगे । पर उस राजकी मूर्ख प्रजाने अब भी मुकाबिला नही किया । बस, वे आसू गिराते थे । क्या बुड्ढे-बुजुर्ग, क्या बूढी स्त्रिया और क्या जवान—आंसू गिरानेसे ज्यादा कोई कुछ नही करते थे ।

बोले—"भले लोगो, हमें क्यो सताते हो ? नाज ईश्वरकी नियामत है और चौपाये कुदरतको बहाल करते है । इन्हें नाहक बरबाद करते हो ? जरूरत हो तो अपने लिए ही तुम उन्हें क्यो नही ले जाते ?"

आखिर सिपाहियोका मन इस अत्याचारको और नही सहार सका । आगे बढनेसे उन्होने इन्कार कर दिया । सो फौज इस तरह तितर-बितर हो गई और भाग गई।

(१२)

शैतानकी यह युक्ति भी काम न आई। सिपाहियोको लेकर प्यारेका कुछ नहीं बिगाडा जा सका । सो उसने दूसरी राह पकडी । इस बार एक भले सौदागरके वेशमें प्यारेसिंहके राजमें पहुँचा और वहा घर बसाकर बैठ गया। सोचा कि ताकतके जोरसे नही तो धनवीरकी तरह पैसेके जोरसे तो वह काबूमें आ ही जायगा।

जाकर राजासे बोला—"मै आपकी भलाई करने आया हूँ। देखिए, एक

नफेकी और उपकारकी बात मैं कहता हूँ। असलमें आपको समझदारी सीखनी चाहिए। मेरा इरादा है कि आपके राजमें एक बड़ा फर्म खोलू और व्यापारका सगठन करूँ।"

प्यारे राजा बोला—"अच्छी तो बात है। मरजी हो तो आइए; क्यों नही, आइए और हम लोगोके साथ रहिए।"

अगले दिन वह भला व्यापारी बडे चौकमें पहुँचा। सोनेकी मोहरोका थैला पासमें रख लिया और लिखते जानेको एक कागजका खरीता। वहा बीच चौक खडे होकर बोला—"ए लोगो, सुनो! तुम पशुओकी भाति रहते हो। मैं तुम्हे सिखाना चाहता हूँ कि कैसे रहना चाहिए। इल्म और अदब मैं तुम्हे बताऊँगा। देखो, इस नक्शे के मुताबिक मेरे लिए एक मकान तैयार किया जाना है। मै बताता जाऊँगा, वैसे काम करते जाना। कामके बदले सोनेकी मुहरें तुम्हे मिलेंगी।"

यह कहकर बोरेमें भरी मोहरें उसने लोगोको दिखाई।

उस राज्यकी प्रजाके मूरख लोग बडे अचरजमें पडे। उनके यहा धातुके सिक्केका चलन नही था। अपना माल अदल-बदल लेते थे और मेहनत करके लेना-देना चुकाते थे। सोनेकी मोहरोको वे अचभेसे देखते रह गये। बोले—"चीज तो भाई, यह खूबसूरत दीखती है।"

सो अपना माल लाकर वह देने लगे या मेहनत करनेको राजी हुए। एवजमें कुछ मोहरें ले लेते थे। धनवीरके राजकी तरह यहा भी शैतान बाबाने हाथ अपना खोल दिया। आओ और लूटो। लोग आ-आकर अशर्फियां ले जाते, बदलेमें अपना सामान दे जाते, या कुछ मेहनतका काम कर देते।

यह देख वह बडा खुश हुआ। मन-मनमें कहने लगा कि इस बार मामला ठीक चल रहा है, बस, धनवीरकी तरह अब इस प्यारेको भी बगलमें लिया। देखते जाओ। क्या दीन, क्या दुनिया, सोनेके मोल कुल-का-कुल उसे खरीदे लिये लेता हूँ।

पर वे लोग थे मूरख। सोनेकी मुहरें पाईं कि उन्होंने अपनी औरतोंको दे दीं। औरतोंने गहने बनवा लिये। लड़कियां उसके जेवर गलेमें पहनतीं

और भांति-भांतिके आकारमें बनाकर अपने जूड़ोमें बांधतीं । होते-होते गली-सड़कमें बालक उन सोनेके टुकडोसे खेलने लगे । सबके पास ही ऐसे टुकड़े बहुतेरे हो चल थे । और अब किसीको उनकी जरूरत न रह गई थी । सो सबने उन्हें लेना बंद कर दिया । लेकिन अभी उन नये महाजनकी हवेली आधी भी नही बनी थी और सालभरके लायक भी माल-सामान उनके पास इकट्ठा नहीं हो पाया था। सो उन्होने ऐलान किया कि अभी काम बहुत बाकी है और लोगोकी जरूरत है । अभी बहुतसे गाय-बैल भी उसे चाहिए और गल्ला भी चाहिए। हर चीज और हर कामका नकद सोना दूगा, और पहलेसे ज्यादा।

पर कोई बंदा काम करने न आया । न कोई कुछ बेचने लाया। हा, कभी हुआ तो कोई लडका या कोई नन्हीं बच्ची हाथमें बेर-अमरूद ले उसके बदलेमें सोनेकी मुहर लेने वहा चली जाती तो चली भी जाती। और तो कोई पास फटकता नही था । सो उस महाजनको खानेके लाले पडने लगे । आखिर मारे भूखके वह भला आदमी गावमें घूमने निकला कि कही कुछ सिक्का देकर खाना मिल जाय । एक घरपर जाकर उसने मुहरें देनी चाही और कहा—"यह मुहर लो और मुझे दो रोटी दे दो।"

लेकिन घरमेंसे स्त्री बोली—मुहरको मैं क्या करूँगी । यह तो वैसे ही मेरे घरमें बहुतेरी पडी है।"

फिर दूसरे मकानपर उसने जाकर कोशिश की । कहा—"यह अशर्फी लो और मुझे एक रोटी दे दो।"

उस घरकी मालकिन विधवा थी । बोली—"अजी, मुझे यह नही चाहिए। मेरे कोई बच्चा भी नही जो इनसे खेल सके। और ऐसे तीन सिक्के तो मुह देखनेको मेरे पास पड़े है।"

फिर एक किसानके घर जाकर उसने आजमाया। पर किसानको भी सिक्के-की जरूरत नही थी । बोला—"यह सिक्का तो तुम्हारा मुझे चाहिए नही। पर रामके नामपर जो मागते हो तो जरा ठहरो। मैं घरमें कह देता हूँ कि तुम्हें दो मुट्ठी चून दे दें।"

रामका नाम सुनना था कि मुह बिचका शैतान वहासे भागा। रामके नामपर

कुछ लेना तो दूरकी बात थी, वह नाम ही उसे ऐसा लगा जैसे बर्छी।

सो उसे खानेको कुछ भी नही मिला। मुहरें सभीके पास हो गईं थीं। जहां-कहीं जाता, वही लोग कहते कि इन ठीकरोकी एवजमें तो देनेको हमारे पास कुछ है नही। या तो कुछ और लाओ, नही तो आओ और मेहनत करो। या चाहो तो हा, रामके नामपर हम जरूर तुम्हें दे सकते हैं।

पर शैतानके पास पैसे-रुपयेके सिवा कुछ था नही। काम करे तो शैतान कैसा। और रामके नामपर जो लेनेकी बात—सो बाबा रे, वह तो उससे बन ही नही सकता था। सो उसको बडी खीझ हुई और झुंझलाहट आई।

बोला—"जब नकद पैसा देता हूँ तो इससे ज्यादा तुम्हें और क्या चाहिए पैसेसे तुम चाहे जो खरीद सकते हो और चाहे जैसा काम निकाल सकते हो।

पर मूरख लोगोने उसकी बातको कानपर नही लिया। बोले—"जी नहीं, हमें पैसा नही चाहिए। हमें किसीका देना नही है और कोई टैक्स नहीं है। सो भला हम इसका बनायेंगे क्या?"

आखिर शैतान भूखे पेट ही रातको पडकर सो गया।

बात यह मूरख राजा प्यारेके पास पहुँची। लोग आये और पूछने लगे—"जी, बताओ हम क्या करें? एक भला सौदागर आया है। वह खाना तो अच्छा-अच्छा चाहता है और आरामका सब सामान चाहता है और ठाठके कपडे। पर काम नही करना चाहता। न रामके नाम कुछ लेनेके वह लायक है। बस हर किसीको हर चीजके बदले नकद सोनेके सिक्के दिखाता है। पहले तो लोगोने उनके चावमें उसे सब कुछ दिया। सिक्के ये देखनेमें बडे सुहावने लगते थे। पर हरेकके पास काफी सिक्के हो गये तो सबका जी भर गया। अब कोई उन्हें नही पूछता है। सो उस भले सौदागर आदमीका बताओ क्या किया जाय? ऐसे तो जल्दी बेचारा भूखो मर जायगा।"

प्यारे ने पूरी बात सुनी। फिर बोला—"अच्छी बात है, उसके पेट पालनेका बंदोबस्त तो हमें करना ही चाहिए। ऐसा करो कि उसकी बारी बाध लो। गांवके चौपाये उसे चराने दे दिये जायं। और एक-एक दिन एक-एक घर से उसे खानेको मिल जाया करे। है न ठीक?"

ऐसा ही हुआ। बेचारेको दूसरा कोई चारा न था। सो वह बारी-बारी एक-एक घरसे रोटी पाकर पलने लगा।

होते-होते प्यारेके घरकी भी एक बेर बारी आई।

शैतान घरके अंदर खाना खानेके लिए पहुँचा तो रसोईमें वह गूगी पीतम बहिन सब तैयारी कर रही थी।

पर वह चतुर थी और अनुभवी थी। जो काम-चोर होते और अपना काम निबटानेसे पहले आकर खानेपर पहुच जाते थे, उनको खूब पहचानती थी। धोखा उसकी आखोंको देना मुश्किल था। उसने असलमें हाथोकी पहचान कर रक्खी थी। जिनकी हथेली खुरदरी और सख्त होती उन्हें वह परोसकर देती थी। औरोंको अलग और पीछे बैठाया जाता था।

वह बूढा शैतान आकर रसोईमें थालीपर बैठ गया। पर गूगी लडकी पकडकर उसका हाथ देखने लगी। देखा तो उसकी हथेलिया मुलायम थी और चिकनी थी। नाखून भी घिसे हुए नही थे। हाथोमें खुरदरापन बिल्कुल नही था। इसपर वह गूगी बहिन गुस्सेमें बडबडाने लगी और खीचकर उसे पटडेसे उठा अलग कर दिया।

इसपर प्यारे राजाकी स्त्री बोली—"इस बातपर आप नाराज न होना, मेरी ननदजी ऐसे आदमीको थाली-पटडेपर नहीं बैठाती जिसके हाथ कामसे खुरदरे न हो। थोडा सबर कीजिए। लोग जब खा चुकेंगे तो पीछे आपको मिलेगा।"

बूढे शैतानको इसपर बडी झुंझलाहट हुई कि राजाके घरमें आकर उसका इस तरह अपमान किया गया। वह मूरखराजसे बोला—"तुम्हारे राज्यमें यह क्या बेवकूफीका कायदा है कि सबको हाथसे काम करना पडे। तुममें अकल नही है। अभी तो ऐसा कानून बनाया है। क्या लोग हाथसे ही काम करते हैं? अक्लमंद लोग किससे काम करते हैं, कुछ जानते हो?"

प्यारे बोला—"हम लोग मूरख हैं। कैसे वह सब जानेंगे। हम तो अपना ज्यादातर काम हाथसे और जिस्मसे करते हैं।"

"तभी तो तुम लोग मूरख हो। लेकिन मैं बताऊंगा कि दिमागसे कैसे काम

किया जाता है, तब तुम्हें पता चलेगा कि हाथसे काम करनेके बजाय सिरसे काम करनेमें ज्यादा फायदा है ।"

प्यारे अचरजमें रह गया । बोला—"अगर ऐसी बात है तब तो ठीक ही है कि हमको मूरख कहा जाता है ।"

पर बूढा शैतान अपनी ही कहता रहा । बोला—"लेकिन एक बात है। दिमागका काम आसान नही होता । मेरे हाथोपर दाग नही हैं सो तुम मुझे थालीपर नही बैठाते हो । लेकिन यह तुमको नही पता कि दिमागका काम उससे सौगुना कठिन होता है। कभी तो सिर उसमें फटने जैसा हो जाता है ।"

प्यारे सुनकर जैसे सोचमें पड गया । बोला—"तो बाबा, इतनी तकलीफ क्यो कोई अपनेको दे ? सिर फटनेको होता है तो क्या यह कुछ अच्छा लगता है ? इससे क्या यह बेहतर न होगा कि हाथ और बदनके सहारे मोटा ही काम कर लिया जावे, जिससे सिर सही रहे ?"

पर शैतान बोला, "यह सब हमें तुम मूरख लोगोकी खातिर करना होता है । अगर अपने सिरपर हम जोर न दें तो तुम लोग हमेशाको मूरख रह जाओ । सिरसे काम लेनेकी वजहसे अब मै तुम्हें कुछ सिखा तो सकता हूँ ।"

प्यारे अचभेमें भरकर बोला—"जरूर सिखाइए । जिससे हाथ दुख आवें तो जी-बहलावके लिए हम अपने सिर भी कभी इस्तेमाल कर लिया करें ।"

बूढे बाबाने बचन दिया कि अच्छा सिखाऊगा । सो प्यारेने सारे राज्यमें डौडी करवा दी कि एक भलेमानस आये हैं । वह सबको सिरसे काम करना सिखायेंगे । बतायेंगे कि कैसे हाथसे ज्यादा सिरसे काम किया जा सकता है। सब लोगोको चाहिए कि आवें और सीखें ।

प्यारेकी राजधानीके नगरमें एक ऊचा मीनार था । काफी सीढिया चढकर उसकी चोटीपर पहुंचना होता था । वहा एक लालटेन थी । प्यारे उन भलेमानस-को वही चोटीपर ले गया कि सब लोग उनके दर्शन कर सकें ।

वह बाबा उस ऊची जगहपर जमकर बैठ गये और बोलने लगे । लोग सुननेके लिए नीचे आये । उनका खयाल था कि उपदेशक महोदय हाथोंको बिना इस्तेमालमें लाये सचमुच सिरसे काम करनेका तरीका बतायेंगे । पर

असलमें जो उन्होंने बताया, वह तो यह था कि बिना काम किये कैसे रहा जा सकता है। लोगोको उनका व्याख्यान कुछ ठीक समझ नही आया। सो पहले तो एक-दूसरेके मुहकी ओर वे ताकते रह गये और विचारमें पड़े रहे। आखिर अपने-अपने काम-धधेपर चले गये।

उपदेशक बाबा मीनारपर पूरे-के-पूरे दिन जमे रहे। उसके बाद दूसरे दिन भी। व्याख्यान उनका बराबर चलता रहता था। पर इतनी देर वहां खडे-खडे उन्हें भूख लग आई थी। पर मूरख लोगोको मीनारपर जाकर उन्हें कुछ खाना देनेकी सूझ ही न होती थी। सोचते थे कि अगर हाथके बजाय यह महोदय सिरसे और भी बढ़कर काम कर सकते है तो उस सिरके जोरसे अपने लिए खानेका इंतजाम तो आसानीसे वह कर ही सकते होगे।

सो तीसरा दिन हुआ और बाबा उसी जगह थे। बराबर उपदेश देते जाते थे। लोग पास आते, थोडा रुकते और सुनते और फिर अपनी राह चले जाते थे।

प्यारेने लोगोसे पूछा—"क्यो भाई, उन महाशयने सिरसे काम करना शुरू अभी किया है कि नही?"

लोग बोले—"अभी तो नही किया दीखता। अभी तो वह मुहसे ही बोल रहे है।"

ऐसे मीनारकी चोटीपर खडे बोलते-बोलते उन्हें एक दिन और बीता। पर कमजोरी बहुत होती जाती थी। सो आखिर वह लडखडाये और उनका सिर लालटेनके खभेमें जाकर लगा। नीचे खडे एक आदमीने यह देखा तो दौड़ा गया और जाकर प्यारे राजाकी रानीको खबर दी। रानी दौडी अपने राजाके पास गई। राजा खेतमें काम कर रहा था।

बोली—"अरे, चलो देखो तो। कहते हैं उन बाबाने अब वहा सिरसे काम करना शुरू कर दिया है।"

प्यारेको अचंभा हुआ। बोला—"सचमुच?"

सो हल-बैल छोड मूरखराज मीनारके पास आया। इस वक्ततक वह बूढा बाबा भूखसे बेहाल हो गया था और लड़खडाकर गिरा जा रहा था। बार-बार खंभेसे आकर सिर उसका टकराता था। प्यारेका वहां पहुंचना था कि शैतान

ढेर होकर वह पडा और धम-धम जीनेकी सीढ़ियोपरसे गिरता-लुढकता आने लगा।

मूरखराज बोला—"भाई, इनका कहना सच था कि सिरके कामसे कभी कभी वह बिलकुल फटने जैसा हो जाता है। छाला-गूमड़ी तो भला ऐसेमें चीज क्या है। अचरज नहीं सिरके ऐसे सख्त कामके बाद मरहम-पट्टीकी जरूरत हो आवे।"

लुढकती-पुढकती वह काया आई और नीचेकी पैड़ीपर धरतीमें धडामसे उसका सिर लगा। प्यारे पास पहुँचकर देखता ही था कि इन महोदयके सिरने कितना कुछ कर्तब किया है, लेकिन तभी धरती फटी और उस कायाका जीव नहीं जाने कहा पातालमें समा गया। बस एक सूराख वहा बाकी रह गया।

यह देख प्यारेने अपना सिर खुजलाया। बोला—"छि, यह तो वही नरककी बघ है। उसी योनिका कोई जीव मालूम होता है। पर राम-राम, यह तो पहले सबका बाप ही रहा होगा।"

मूरखराज अपने राज्यमें अब भी राज करता है और बहुत लोग उसके राजमें जाकर बसने पहुचते हैं। उसके दोनो भाई भी वही आ गये है और वह उनका भी पालन करता है। जो भी परदेशी कोई पहुचे सबको प्यारे राजाका कहना है कि आओ भाई, सब आओ। आओ, रहो। हमारे यहा किसीको कोई कमी नहीं।

बस राजमें एक नियम है। वह यह कि जिसके हाथ कामसे खुरदरे होगे उसे तो मानकी रोटी मिलेगी। बाकीको बचे-खुचेमेंसे ही मिल सकेगा।